Philosophy of Soul

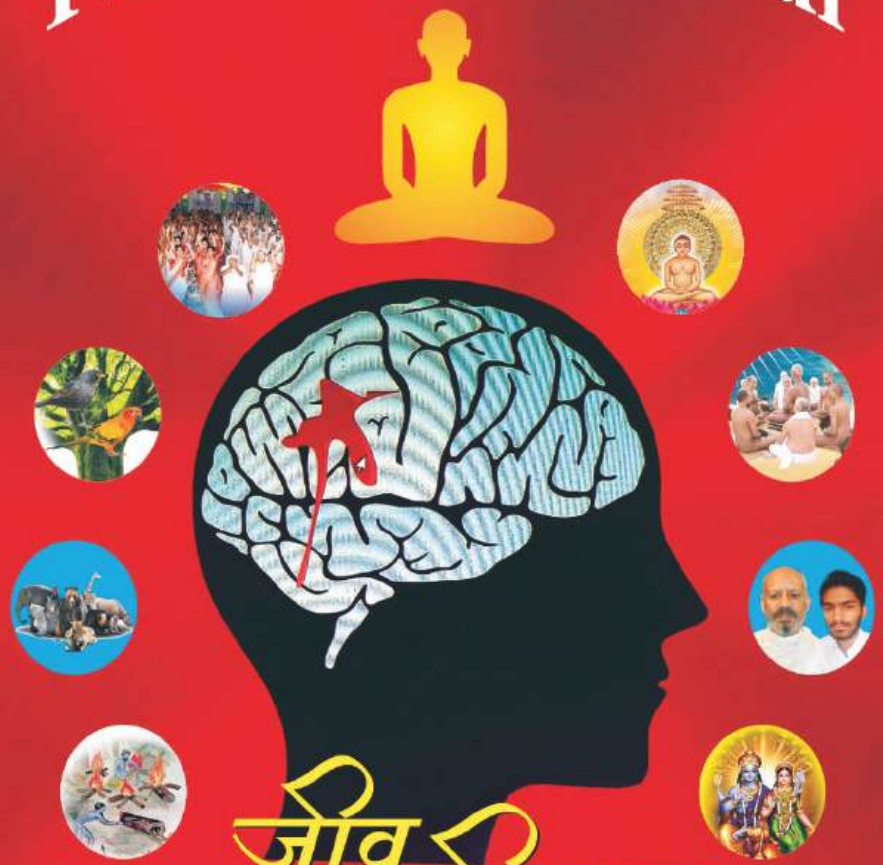

जीव विज्ञान

कृतिकार

भक्तामर महोदधि उच्चारणाचार्य विनम्रसागर

Philosophy of Soul

जीव विज्ञान

कृतिकार
उच्चारणाचार्य विनम्रसागर

कृति– जीव विज्ञान

शुभाशीष – परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य 108 श्री विरागसागर जी महामुनिराज

कृतिकार – उच्चारणाचार्य विनम्रसागर

संपादन – संघ गौरव, सिद्धांतविद्, निर्यापक श्रमण मुनि विज्ञसागर
– श्रमणी आर्यिका विमलश्री माताजी

संकलन – श्रमणी आर्यिका विमुदश्री माताजी

आंग्ल भाषा अनुवाद – बा.ब्र. श्रिया शास्त्री (प्राची दीदी)

प्रकाशक – वीतराग श्रमण श्रुत संवर्धन ट्रस्ट

प्राप्ति स्थान – * वीतराग श्रमण श्रुत ग्रंथालय, भिण्ड (म.प्र.)
* सीपुर समता तीर्थ, सीपुर, सलुम्बर (राज.) मो. 09828613614
* धर्मप्रभावना न्यास, भिण्ड मो. 09826801542
* देवेन्द्र जैन, बीना (म.प्र.) मो. 07580223344

पुन: प्रकाशन हेतु सहयोग अपेक्षित है।

आशीर्वाद

दुनियाँ में कोई भी वस्तु हो जब तक उसके बारे में पूर्ण जानकारी नहीं हो जाती तब तक हम उस वस्तु को बना नहीं सकते अथवा उस वस्तु के विशेषज्ञ नहीं हो सकते वैसे ही यदि हमें अपने आपको, जीवात्मा को, आत्मा और परमात्मा के वास्तविक स्वरुप को जानकर उसके विशेषज्ञ बनना है तो जीव के विशेष ज्ञान को या जीव विज्ञान को बहुत गहनता से जानना परमावश्यक है। आज के वैज्ञानिकों ने सिर्फ पुद्गल पर या परमाणु पर रिसर्च किया है जिस कारण उन्हें वैज्ञानिक कहा जाता है लेकिन भगवान महावीर ने, भगवान राम ने, जीव के विषय में ध्यान के द्वारा और अंतरंग ज्ञान के द्वारा रिसर्च किया इसलिये भगवान महावीर को वैज्ञानिक नहीं Super Scientist (महावैज्ञानिक) कहा जाता है। परमाणु के विषय में हर कोई खोज कर सकता है चाहे वो गृहस्थ हो, भोगी हो अथवा साधारण व्यक्ति हो लेकिन जीव के विषय में खोज करने वाला संत पुरुष, योगी और महायोगी हुआ करता है इसीलिये उन्हें महापुरुष, पुराण पुरुष कहा जाता है,परमाणु की खोज करने वालों से इतिहास बनते हैं लेकिन परमात्मा, जीवात्मा की खोज करने वालों से पुराण बनते हैं जो हर इंसान के लिए एक आदर्श रुप में जाने जाते हैं।

यह जीव संसारमें आकर गलत को सही क्यों स्वीकार कर लेता है और सत्य से अनभिज्ञ क्यों रह जाता है? देखा जाये तो एक करोड़ लोगों में एक-दो व्यक्ति ही ऐसे धरती पर जन्मते है जो गलत धारणा को छोड़कर सत्यधारणा पर काबिज हुआ करते हैं उस सत्य को आत्मसात् करने की हिम्मत तभी हो पाती है जब हम इस जीव के विषय में विशेषज्ञ हों वर्ना पढ़कर-सुनकर भी कई लोग सत्य की अनुभूति से वंचित रह जाते हैं। तभी किसी सत्यान्वेषी महापुरुष की अनुभूति को इस प्रकार लिखा है कि-

चाहकर भी आत्मानुभूति बताई न गई,
सत्य को शब्द की पोषाक पहनाई न गई।
स्वयं में लीन हो गई इतनी आत्मा,
कि स्वयं की कहानी स्वयं से सुनाई न गई।।

सत्य को अथवा आत्मानुभूति को आत्मसात् करने के लिए एक जन्म ही नहीं कई जन्म लग जाते हैं तब कहीं कोई सत्य को आत्मसात् कर पाते हैं। IAS, MBA, M.Tech. IIT, IIM, इंजीनियर ये पढ़ाई शरीर के विषयों की पूर्ति करने के लिए होती हैं लेकिन सत्य को आत्मसात् करने के लिए जीव विज्ञान को पढ़ना उसे समझकर आत्मानुभव करना ये पढ़ाई सच्चे सुख शांति व शक्ति के लिए एवं ज्ञान के लिए होती है। जीव विज्ञान की पढ़ाई के सामने सभी लौकिक पढ़ाई बहुत ही तुच्छ हैं तथा सत्यानुभूति को पढ़ने वालों के सामने लौकिक पढ़ाई पढ़ने वाले भी बहुत कमजोर और हीन हैं इस पुस्तक में हमारे अंदर क्या क्या गुण हैं ? उन गुणों को किसने अवगुण जैसा कर दिया और कौन-कौनसी विशेषताएँ हमारे अंदर शुद्ध व अशुद्ध अवस्था में रहती हैं और हम शैतान से इंसान और इंसान से भगवान् किस तरह बन सकते हैं। हम अभी जी रहे हैं तो कौनसी स्टेज पर हैं और यदि अभी मर जायें तो कहाँ-कहाँ जाकर कौन-कौनसी गति व कौन-कौनसी अवस्थाओं में पैदा हो सकते हैं। कौन से विचारों से इंसान, देवता हो जाता है और कौन से विचारों से देव भी शैतान हो जाता है, कौन से विचारों से आदमी-नारकी हो जाता है और कौन से विचारों से इंसान जानवर हो जाता है इन सभी बातों का ज्ञान इस पुस्तक को पढ़कर पाया जा सकता है इसलिए यह पुस्तक भविष्य वक्ता भी है और भविष्य निर्माणक भी है और आज की युवा पीढ़ी के लिए इसे पढ़ना बहुत ही आवश्यक है।

जीव विज्ञान की पुस्तक का विवेचन महान् ग्रंथ गोम्मटसार जीवकांड में विस्तार रुप में लिपिबद्ध है लेकिन आज की युवा पीढ़ी कम समय में बहुत काम करने का भाव रखती है इसलिए उस महाग्रंथ की बातों को सारभूत रूप में अथवा यूँ कहें गाइड रूप में आपके समक्ष हमने प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। परम पूज्य दिगम्बराचार्य गुरुदेव श्री विरागसागर जी महासंत के परमाशीष से हम इस कार्य को करने में सक्षम हो सके हैं। परम पूज्य गुरुदेव के कर कमलों में सादर समर्पित है।

इस पुस्तक के संकलन में श्रमण मुनि श्री विज्ञसागर जी ने बहुत ही परिश्रम कर श्रेष्ठ योगदान दिया है जो उनके ज्ञानार्जन की वृद्धि में बहुत ही सहायक सिद्ध होगा। श्रमणी आर्यिका विमलश्री माताजी की प्रेरणा से श्रमणी आर्यिका विमुदश्री माताजी ने संयोजन में प्रशंसनीय श्रम किया है जो उनके ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम का श्रेष्ठ कारण सिद्ध होगा एवं हमारे संघ की बा.ब्र. श्रिया शास्त्री (प्राची दीदी) जिन्होंने अथक परिश्रम करके कठिन से कठिन शब्दों को भी अंग्रेजी में अनुवाद किया है जो आज की पीढ़ी के लिए प्रेरणास्पद है। श्रमण, श्रमणी व दीदी के लिए मेरा ज्ञानवृद्धि हेतु बहुत-बहुत आशीर्वाद है। उनकी साधना और ज्ञान उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त होता रहे एवं पुस्तक के प्रकाशन में अपनी चंचला लक्ष्मी का सदुपयोग किया उस परिवार के सभी सदस्यों को शुभाशीष।

-उच्चारणाचार्य विनम्रसागर

प्राक्कथन

तीर्थंकर भगवन्तों ने अपनी पावन पियूष दिव्यध्वनि के द्वारा भव्य जीवों के कल्याणार्थ दिव्य उपदेश दिया उन्होंने उपदेश में सात तत्त्व, नव पदार्थ, छह द्रव्य, पंचास्तिकाय का उपदेश दिया तथा मुनि श्रावक इस प्रकार द्वय विधि धर्म का उपदेश दिया। दसलक्षण धर्म, रत्नत्रय धर्म आदि का उपदेशामृत का भव्य जीवों को रसपान कराया, पश्चात् आचार्य भगवन्तों ने उस वाणी को सहेज सम्हाल कर सुरक्षित रखने के लिए लिपिबद्ध किया जो आज हमें इस भयावह पंचमकाल में भी सहजता से उपलब्ध हो रही है। इस जीव का अनादि काल से संसार परिभ्रमण चल रहा है उसका कारण मात्र अपनी ही अज्ञानता है अपना ही मोह है। कहा भी है **"मोह महामद पिओ अनादि भूल आपको भरमत वादि"** यह जीव अनादि काल से मोह रूपी मदिरा को पीकर भ्रमित हो रहा है। अज्ञान का पर्दा पड़ा है जिसके कारण कुछ भी सूझता नहीं है। अपने स्वरूप को भूला हुआ प्राणी तत्त्वादि को न जानकर उन पर मिथ्या श्रद्धान कर लेता है। आचार्यों ने तत्त्वों को पाँच विभागों में वर्गीकृत किया है ध्येय, ज्ञेय, हेय, उपादेय और परम उपादेय। ध्येय-जीव तत्त्व का ध्यान करना चाहिए, ज्ञेय-अजीव ज्ञेय अर्थात् केवल जानना चाहिए उसमें लिप्त नहीं होना चाहिए, हेय-आस्रव और बन्ध तत्त्व हेय अर्थात् त्यागने योग्य है इनका त्याग करना चाहिए।

संवर, निर्जरा तत्त्व-उपादेय हैं अर्थात् ग्रहण करना चाहिए, मोक्ष तत्त्व-परम उपादेय अर्थात् उत्कृष्टता से ग्रहण करना चाहिए, इस प्रकार हम तत्त्वों के स्वरूप को समझकर अपना निर्णय करते हैं वही सम्यक् दर्शन की नींव है।

जीव तत्त्व को जानना पड़ेगा जीव का कैसा स्वरूप है ध्येय

कौनसा जीव है आदि, जब तक हमें जीव तत्त्व का ज्ञान नहीं होगा तब तक हम निर्णय नहीं कर सकते जब तक ध्येय-ज्ञेय-हेय-उपादेय का निर्णय नहीं है तब तक श्रद्धान भी नहीं है। जीव दो प्रकार का होता है- एक संसारी जीव, एक मुक्त अथवा यूँ कहें एक शुद्ध जीव होता है और एक अशुद्ध जीव होता है। जिस जीव के साथ राग द्वेष आदि भावकर्म ज्ञानावरणादि द्रव्य कर्म तथा शरीरादि नो कर्म लगे हुए हैं वे सभी जीव अशुद्ध हैं। संसारी जीवों के ही गुणस्थान, मार्गणा आदि विकारी भाव पाये जाते है जबकि शुद्ध जीव इन सभी विकारों से रहित हैं उनके न गुणस्थान हैं, न मार्गणा हैं, न द्रव्य, न भाव, न नोकर्म मल हैं वे शुद्ध जीव हैं। यद्यपि शक्ति अपेक्षा से प्रत्येक जीव शुद्ध है क्योंकि जितना ज्ञान अरिहंत को है उतना ही ज्ञान एक मनुष्य को है वह चाहे तो अपने पुरुषार्थ के बल से उसे प्रकट कर सकता (व्यक्त कर सकता है) है जितना ज्ञान एक मनुष्य की आत्मा में है उतना ही ज्ञान एक चींटी की आत्मा में अर्थात् चींटी के अन्दर है, एक वनस्पति की आत्मा में भी है अगर वो मनुष्य पर्याय को प्राप्त कर पुरुषार्थ करे तो वही चींटी की आत्मा वही वनस्पति की आत्मा अरिहंत और सिद्ध बन सकती है। इस प्रकार का ज्ञान हमें सिद्धान्त ग्रंथ पढ़ने से प्राप्त होता है। कौन से जीव में कितनी इन्द्रियाँ, कितनी संज्ञा, कितनी पर्याप्ति, कितने प्राण, कितने ज्ञान, कितने दर्शन आदि पाये जाते हैं इसका ज्ञान हमें सिद्धान्त ग्रंथों के अध्ययन से प्राप्त होता है। जीवकाण्ड, कर्मकाण्ड जैसे ग्रंथ जो वास्तव में जीव की सत्ता का अवबोध कराते हैं यद्यपि द्रव्यानुयोग के ग्रंथों से शुद्ध जीव की सत्ता का भान होता है परन्तु जीव की अशुद्ध सत्ता का भान करना भी आवश्यक है क्योंकि उसको जाने बिना तत्त्व का सही ज्ञान होना असंभव है क्योंकि कहा भी **जो जाणादि अरिहंतं** अर्थात् जो अरिहंत को द्रव्य गुण पर्याय से जान लेता है

वह अपने आप को भी जान लेता है और उसका मोह निश्चित ही नष्ट हो जाता है, वह जीव मात्र को जान लेता है वह अपने समान सभी जीवों को जान लेता है। किंतु अपने आपको जानना तभी संभव है जब हम सिद्धान्त ग्रंथों का अध्ययन करेंगे, बिना सिद्धान्त के जाने द्रव्यानुयोग समझना मुश्किल ही नहीं असंभव है जो लोग अन्य अनुयोगों को नकार कर मात्र द्रव्यानुयोग पर जोर देते हैं वे कभी भी सम्यग्दृष्टि नहीं हो सकते। क्योंकि चारों अनुयोग प्रथमत: जिनेन्द्र की वाणी है और जिसको जिनेन्द्र की वाणी व्यर्थ लगे वो सम्यग्दृष्टि हो ही नहीं सकता। दूसरी बात चारों अनुयोगों का अपने-अपने स्थान पर महत्व है मोक्षमार्ग में चारों अनुयोग कार्यकारी हैं अत: क्रमश: चारों ही अनुयोग का अध्ययन करना चाहिए। जो लोग चारों अनुयोग का विधिपूर्वक अध्ययन करते हैं वे ही सम्यक्त्व के पात्र हैं वे ही सम्यग्ज्ञानी होते हैं उन्हें ही सम्यक् चारित्र प्राप्त होता है। लोग कहते हैं आत्मा का ध्यान करो उसी से हमारा भला हो जायेगा तो मैं कहता हूँ आत्मा का ध्यान तो करना ही चाहिए लेकिन जब तक उसके बारे में समीचीन ज्ञान नहीं होगा तब तक ध्यान भी नहीं हो सकता। जब तक कर्म की सत्ता स्वीकार नहीं होगी, जब तक शुद्ध अशुद्ध सत्ता का ज्ञान नहीं होगा तब तक ध्यान किसका और किसलिए? और इन सबका ज्ञान करने के लिए चारों अनुयोगों का अध्ययन अति आवश्यक है किंतु आज प्राय: कर लोग स्वाध्याय से दूर हटते जा रहे हैं सिद्धांत ग्रंथों का अध्ययन करने वाले लोग तो दिखाई ही नहीं देते लोग कहते हैं जीवकाण्ड कर्मकाण्ड आदि ग्रंथ हमारी समझ में नहीं आते ऐसे समय में हमारे पूज्य गुरुदेव उच्चारणाचार्य श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज ने जीवकाण्ड ग्रंथ के आधार पर जीवविज्ञान नामक एक लघु कृति की रचना कर हमारे ऊपर अनिर्वचनीय उपकार किया है। यह पुस्तक सरल एवं सुबोध शैली में

लिखी गयी है जिसका सम्पादन करने का सौभाग्य मुझ अल्पज्ञ को प्राप्त हुआ तथा संकलन आर्यिका विमुदश्री माताजी ने बड़े परिश्रम व मनोयोग के साथ किया तथा आंग्ल भाषा में अनुवाद हमारे संघ की सबसे छोटी दीदी बा.ब्र. श्रिया शास्त्री (प्राची दीदी) ने बड़े पुरुषार्थ के साथ अपने ज्ञान व समय का सदुपयोग कर सम्प्रति की आवश्यकता को पूर्ण कर रोचक बनाया है इस पुस्तक में गोम्मटसार जीवकाण्ड ग्रंथ जिसके रचनाकार आचार्य श्री नेमिचन्द सिद्धान्त चक्रवर्ती हैं उसमें वर्णित गुणस्थान, जीव समास, पर्याप्ति, प्राण, संज्ञा तथा चौदह मार्गणा का विवेचन प्रश्नोत्तर रूप में किया गया है जिसका पठन पाठन बाल-युवा-वृद्धों के लिए अत्यंत उपयोगी है जिसे पढ़कर सम्पूर्ण जीव का ज्ञान उन्हें प्राप्त होगा व ध्येय को प्राप्त कर शक्ति रूप में छिपे अपने परमात्मा को व्यक्त कर सकेंगे। इस पुस्तक को आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करने में जिन भव्य श्रावकों ने अपनी चंचला लक्ष्मी का उपयोग ज्ञानदान में किया उन्हें अत्यन्त साधुवाद। इन्हीं पावन पुनीत भावनाओं के साथ कृति आपके कर कमलों में समर्पित है।

– निर्यापक श्रमण मुनि विज्ञसागर

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	प्रश्नों की संख्या	पृष्ठ सं.
1.	जीव	16	1
	Soul		3
2.	गुणस्थान	14	6
	Spiritual Development		8
I.	मिथ्यात्व गुणस्थान	36	10
	Flasehood Spiritual Development		15
	Stage of Spiritual Development with Wrong-Belief		
II.	सासादन गुणस्थान	17	20
	Stage of Lingering Faith Spiritual		23
	Development		
III.	सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान	19	26
	Right cum Wrong Faith Stage of		29
	Spiritual Development		
IV.	असंयत गुणस्थान	27	32
	Non-restrained Stage of Faith in		36
	Spiritual Development		
V.	देशविरत गुणस्थान	20	40
	Stage of Partial Abstinence		43
	Spiritual Development		
VI	प्रमत्त संयत गुणस्थान	24	46
	Restrained with Remissness Stage of		50
	Spiritual Development		
VII	अप्रमत्त संयत गुणस्थान	11	54
	Vigilantly Restrained Stage of		56
	Spiritual Development		
VIII	अपूर्वकरण गुणस्थान	15	58
	Stage of Unprecedented Degree of		61
	Purity in Spiritual Development		
IX	अनिवृत्तिकरण गुणस्थान	8	64
	The Stage of Self-Realization Through		66
	Self-Meditation (Suppression of Certain		
	Deluding Karmas) in Spiritual Development		
X	सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान	12	68
	Subtle Passional Influx Stage of		70
	Spiritual Development		
XI	उपशान्त मोह गुणस्थान	14	72
	Subsided Delusion Stage of		74
	Spiritual Development		
XII	क्षीण मोह गुणस्थान	13	76
	Delusion less stage of spiritual development		78
XIII	सयोग केवली गुणस्थान	23	80
	Omniscient with Activity Stage of Spiritual		84
	Development		
XIV	अयोग केवली गुणस्थान	7	88
	Inactive Omniscient Stage of Spiritual		89
	Development		

XV	गुणस्थानातीत जीव	6	90
XVI	गुणस्थानों में जीवों की संख्या [चार्ट-1]		91
XVII	गुणस्थानों में गमनागमन [चार्ट-2]		91
	Above All (State of no Stage)		94
3.	जीव समास	26	96
	Knowing about various kinds of Living Beings		105
4.	पर्याप्ति	23	110
	Completely Developable or Power		114
5.	प्राण	18	118
	Life Force/ Vitality		121
6.	संज्ञा	10	124
	Instinct		126

णमोकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्व साहूणं
एसो पंच णमोयारो सव्वपावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवई मंगलम्।

I bow to all Arihantas.
I bow to all Siddhas.
I bow to all Acharyas.
I bow to all Upadhyayas.
I bow to all Saints in the world.
This Namokar Mantra, about to distroy
all sins and the First is ausicious,
in the all auspicious.

मंगलाचरण

पणमामि णेमिणाहं अट्ठमहा पाडिहारि सहियाणं।
अंतातीद गुणाणं देउ मम बोहि लाहं च।।

अर्थ–नेमिनाथ भगवान को मेरा नमस्कार हो जो अष्ट मघ प्रातिहार्यों से सहित हैं तथा जिनके गुण अंत से रहित है अर्थात् अनंत है, वे नेमिनाथ भगवान मुझे बोधि लाभ प्रदान करें।

पंचाचार पवीणो चउ विह संघस्स पालणं कुसले।
सूरि विरायसायर गुरो चरणे जुगले सया वंदे।।

अर्थ–जो पंचाचारों में प्रवीण है, चारों प्रकार के संघ का पालन करने में अर्थात् चलाने में कुशल हैं, ऐसे गुरुदेव आचार्य विरागसागर जी महामुनिराज के युगल चरणों की मैं सदा वंदना करता हूँ।

गुणजीवा पज्जत्ती पाणा सण्णा य मग्गणाओ य।
उवयोगो वि य कमसो बीसं तु परूवणा भणिया।।

अर्थ–गुणस्थान, जीव समास, पर्याप्ति, प्राण, संज्ञा, चौदह मार्गणा और उपयोग इस प्रकार ये बीस प्ररूपणा पूर्वाचार्यों ने कहीं हैं।

गइ इन्दिये च काये, जोगे वेदे कसायणाणे य।
संजम दंसण लेस्सा, भविया सम्मत्त सण्णि आहारे।।

अर्थ–गति, इन्द्रिय, काय, योग, वेद, कषाय, ज्ञान, संयम, दर्शन, लेश्या, भव्यत्व, सम्यक्त्व, संज्ञित्व और आहार ये चौदह मार्गणा है।

अध्याय–1

जीव

प्रश्न 1. जीव किसे कहते हैं?

उत्तर : जो जीता है, उपयोगमय है, अमूर्तिक है, कर्मों का कर्त्ता है, स्व देह प्रमाण है, कर्मों का भोक्ता है, संसारी है, सिद्ध है और जो स्वभाव से ही ऊर्ध्वगति को गमन करता है वह जीव है। अथवा जिसमें चेतना पाई जाती है उसे जीव कहते हैं।

प्रश्न 2. चेतना किसे कहते हैं?

उत्तर : ज्ञान, दर्शन को चेतना कहते हैं अर्थात् जानना, देखना ही जीव का लक्षण है।

प्रश्न 3. जीव कितने प्रकार के होते हैं? नाम बताओ।

उत्तर : जीव दो प्रकार के होते हैं– (1) संसारी (2) मुक्त।

प्रश्न 4. संसारी जीव किसे कहते हैं?

उत्तर : जो चतुर्गति में भ्रमण करते हैं, जिनका जन्म–मरण होता है तथा जिनमें गुणस्थान, मार्गणा आदि प्ररूपणा पाई जाती हैं उन्हें संसारी जीव कहते हैं।

प्रश्न 5. मुक्त जीव किसे कहते हैं?

उत्तर : जो कर्मों से मुक्त हो चुके हैं अथवा जिनका जन्म–मरण समाप्त हो चुका है अथवा जिनमें गुणस्थान, मार्गणाएँ इत्यादि प्ररूपणा नहीं पाई जाती हैं उन्हें मुक्त जीव कहते हैं।

प्रश्न 6. संसारी जीव कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर : संसारी जीव दो प्रकार के होते हैं– (1) त्रस (2) स्थावर।

प्रश्न 7. स्थावर जीव किसे कहते हैं?

उत्तर : स्थावर नाम कर्म के उदय से होने वाले जीव की अवस्था विशेष को अथवा जो हलन–चलन नहीं करते जिनमें खून, हड्डी, माँस नहीं पाया जाता है उन्हें स्थावर जीव कहते हैं।

प्रश्न 8. स्थावर जीव कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर : स्थावर जीव पाँच प्रकार के होते हैं-पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, वनस्पति कायिक।

प्रश्न 9. स्थावर जीवों में कितनी इंद्रियाँ पायी जाती हैं?

उत्तर : स्थावर जीवों में मात्र एक स्पर्शन इन्द्रिय पायी जाती है।

प्रश्न 10. त्रस जीव किसे कहते हैं?

उत्तर : त्रस नाम कर्म के उदय से होने वाली जीव की अवस्था विशेष को अथवा जिसमें खून, हड्डी, माँस पाया जाता है उन्हें त्रस जीव कहते हैं।

प्रश्न 11. त्रस जीव कितने प्रकार के होते हैं?

उतर- त्रस जीव दो प्रकार के होते हैं-1. सकलेन्द्रिय 2. विकलेन्द्रिय।

प्रश्न 12. सकलेन्द्रिय जीव किसे कहते हैं?

उत्तर : जिन जीवों के सभी इन्द्रियाँ पायी जाती हैं उन्हें सकलेन्द्रिय जीव कहते हैं।

प्रश्न 13. विकलेन्द्रिय जीव किसे कहते हैं?

उत्तर : जिन जीवों के दो-तीन-चार इन्द्रियाँ पायी जाती हैं उन्हें विकलेन्द्रिय जीव कहते हैं।

प्रश्न 14. प्ररूपणाएँ कितनी होती हैं?

उत्तर : प्ररूपणाएँ 20 होती हैं।

प्रश्न 15. बीस प्ररूपणाओं के नाम बताओ।

उत्तर : गुणस्थान, जीव समास, पर्याप्ति, प्राण, संज्ञा, 14 मार्गणाएँ और उपयोग।

प्रश्न 16. विज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर : विशेष ज्ञान को अर्थात् हित-अहित, उचित-अनुचित, हेय-उपादेय के ज्ञान को विज्ञान कहते हैं।

Chapter – 1 Soul

Q.1. What is called soul ?

Ans. One who is living, useful, formless, doer of karmas, equal to the body of the self, enjoyer of the karmas, worldly, liberated, and by nature moves upward is called soul Or in whom consciousness is found is called soul.

Q.2. What is called consciousness?

Ans. Knowledge or activity is called consciousness. In other words, knowing or observing is the characteristic of the soul.

Q.3. How many are the kinds of souls?

Ans. There are two kinds of souls- (1) Mundane and (2) Emancipated.

Q.4. What is called Mundane soul?

Ans. The one who wanders in all the four conditions, takes birth and dies, and in whom stages of spiritual development, presentation and quality of enquiry etc. are found, is called Mundane soul.

Q.5. What are called Emancipated soul?

Ans. The one who is free of karmas, got over the cycle of birth and death or in whom stages of spiritual development, presentation and quality of enquiry are not found, is called Emancipated soul.

Q.6. How many kinds are of Mundane soul?

Ans. There are two kinds of Mundane souls- (1) Mobile being, (2) Stationary.

Q. 7. What are called Stationary souls?

Ans. The specific condition of the soul owing to the rise of stationary name karma or the one which does not move hither and thither and lacks in blood, bone, meat etc. is called Stationary soul.

Q.8. How many are kinds of Stationary souls?

Ans. There are five kinds of Stationary souls- Earth bodied, Water bodied, Fire-bodied, Air bodied, Plant bodied.

Q.9. How many senses are found in Stationary souls?

Ans. There only one touch sense is found in Stationary souls.

Q.10. What is called Mobile being?

Ans. The specific state of the soul arising out of mobile name karma or in whom blood, bone, meat etc. are found is called mobile being.

Q.11. How many types of mobile being?

Ans. There are two types-

1. all sensed souls
2. multilated sensed souls

Q.12. What are all-sensed souls called?

Ans. The souls that have all the senses are called all-sensed souls.

Q.13. What are mutilated- sensed souls(organisms) called?

Ans. The souls that have two-three-four senses are called mutilated-sensed souls(organisms).

Q.14. How many are enunciations?

Ans. There are twenty kinds of enunciations.

Q.15. Tell the names of twenty enunciations.

Ans. Stages of Spiritual Development, classification of living beings, body completion, life, calling names, 14 modes of enquiry, and activity of soul.

Q.16. What is science?

Ans. Specific knowledge is called science or the knowledge of benevolent-non-benevolent, proper- improper, discarded-accepted etc. is called science.

अध्याय–2

गुणस्थान

प्रश्न 1. गुणस्थान किसे कहते हैं?

उत्तर : मोह + योग = गुणस्थान। मोह व योग के निमित्त से होने वाली आत्मा की परिणति को गुणस्थान कहते हैं।

प्रश्न 2. गुणस्थान कितने होते हैं?

उत्तर : गुणस्थान 14 होते हैं।

प्रश्न 3. 14 गुणस्थानों के नाम बताओ?

उत्तर : मिथ्यात्व, सासादन, सम्यग्मिथ्यात्व (मिश्र), अविरत सम्यक्त्व, देशविरत, प्रमत्तविरत, अप्रमत्तविरत, अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्मसाम्पराय, उपशान्तमोह, क्षीणमोह, सयोगकेवली, अयोग केवली।

प्रश्न 4. गुणस्थान क्या है?

उत्तर : गुणस्थान वह मापदण्ड है जिसके माध्यम से हम अपने परिणामों का माप कर सकते हैं। सत्य–असत्य का माप कर सकते हैं जिस प्रकार थर्मामीटर से ज्वर (बुखार) को मापा जाता है उसी प्रकार गुणस्थान से जीवों के परिणामों को मापा जाता है।

प्रश्न 5. सिद्धान्त की भाषा में गुणस्थान को क्या कहते हैं?

उत्तर : ओघ अथवा सामान्य।

प्रश्न 6. गुणस्थान का शाब्दिक अर्थ क्या है?

उत्तर : गुण + स्थान अर्थात् जीव क्रमश: उत्थान की ओर बढ़ता जाए अथवा गुणों को पाने के लिए आगे–आगे बढ़ता जाए उसे गुणस्थान कहते हैं।

अथवा

गुण + स्थान; गुण का अर्थ है विकास व स्थान का अर्थ है सोपान। गुणस्थान अर्थात् विकास के सोपान।

प्रश्न 7. गुणस्थान क्या निर्देशन करते हैं?

उत्तर : पूर्ण अज्ञान या मिथ्या धारणा की अवस्था से लेकर आत्मा की पूर्ण पवित्रता तथा अंतिम मुक्ति का निर्देशन गुणस्थान से होता है।

प्रश्न 8. गुणस्थान व्यवस्था के अनुसार आत्मा को कितने भागों में बाँटा गया है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : गुणस्थान के आधार पर आत्मा को तीन भागों में बाँटा गया हैं-

बहिरात्मा	अन्तरात्मा	परमात्मा
प्रथम गुणस्थानवर्त्ती (उत्कृष्ट)	7-12वें गुणस्थानवर्त्ती (उत्कृष्ट)	सिद्ध (उत्कृष्ट)
द्वितीय गुणस्थानवर्त्ती (मध्यम)	5वें और 6वें गुणस्थानवर्त्ती (मध्यम)	14वें गुणस्थानवर्त्ती (मध्यम)
तृतीय गुणस्थानवर्त्ती (जघन्य)	चौथे गुणस्थानवर्त्ती (जघन्य)	13वें गुणस्थानवर्त्ती (जघन्य)

प्रश्न 9. बहिरात्मा किसे कहते हैं?

उत्तर : जिनमें बंध के पाँचों कारण (मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय, योग) पाये जाते हैं जिन जीवों में मिथ्यात्व कर्म का उदय होता है जो देह/शरीर और आत्मा को एक मानते हैं, वे बहिरात्मा कहलाते हैं।

प्रश्न 10. अन्तरात्मा किसे कहते हैं?

उत्तर : बाह्य इन्द्रिय विषयों से जीव की दृष्टि हटकर जब अन्तर्मुखी हो जाती है और वह आत्मा और देह के भेद को जानने लगता है तब वह अन्तरात्मा कहलाता है।

प्रश्न 11. परमात्मा किसे कहते हैं?

उत्तर : कर्ममल से रहित आत्मा को परमात्मा कहा जाता है जो कि केवलज्ञान से परिपूर्ण होता है।

प्रश्न 12. परमात्मा के कितने भेद हैं?

उत्तर : परमात्मा के दो भेद हैं- सकल व निकल परमात्मा।

प्रश्न 13. सकल परमात्मा किसे कहते हैं?

उत्तर : कल यानि शरीर होता है इसलिए शरीर सहित परमात्मा [अरहंत भगवान] को सकल परमात्मा कहते हैं।

प्रश्न 14. निकल परमात्मा किसे कहते हैं?

उत्तर : नि:कल= निकल गया है शरीर जिनका अर्थात् शरीर रहित परमात्मा को [सिद्ध भगवान] निकल परमात्मा कहते हैं।

Chapter -2- Spiritual Development

Q.1. What is stage of spiritual development called?

Ans. Infatuation+ activity of mind (spiritual evolution or vibration). The modification in the soul due to infatuation and vibration is called stage of spiritual development.

Q.2. How many are the stages of spiritual development?

Ans. There are fourteen stages of spiritual development.

Q.3. Tell the names of fourteen stages of spiritual development.

Ans. Wrong belief, indifference, right cum wrong(mixed), vowless right faith, partial abstinence, non-vigilantly restrained, perfectly vowed, unprecedented operation, suppressing certain deluding karmas, subtle positioned, subsided delusions, delusion less, omniscient with activity, static omniscient.

Q.4. What is stage of spiritual development?

Ans. Stage of spiritual development is a measurement through which we can measure our thought activity. We can measure whether the fact is true or false. As fever is measured by a thermometer, likewise thought activity of the souls are measured by stages of spiritual development.

Q.5. What is stage of spiritual development theoretically?

Ans. Traditional or common of group of conglomerates.

Q.6. What is literal meaning of stage of spiritual development?

Ans. (Spirituality+ stage) or the stage when the soul enhances towards spiritual upliftment or goes ahead to achieve higher stages in spiritual development.

Or

Attribute+stage; the meaning of attribute is development and position means stages of spiritual development.

Q.7. What does the stage of spiritual development direct?

Ans. The stage of spiritual development directs the positions of soul from total ignorance or wrong belief to complete purification and to the ultimate liberation.

Q.8. In how many parts the soul is categorized according to the system of stages of spiritual development? Clarify it.

Ans. The soul is categorized into three parts according to the system of stages of spiritual development-

Outer self	Inner self	Supreme soul
First stager(excellent)	7 to 12 stager(excellent)	liberated(excellent)
Second stager(medium)	5th and 6thstager(medium)	14thstager(medium)
Third stager(lowest)	4th stager (lowest)	13thstager(lowest)

Q.9. What is outer self?

Ans. In whom all the five reasons of bondage (wrong belief, lack of abstinence, negligence, passion, vibration) are found; in such souls there is rise of wrong karma; those who treat physical body as soul, these are called outer self or soul.

Q.10. What is inner self?

Ans. When the soul is diverted from outer sensuous passions to inner being only and starts to differentiate between physical entity and soul, that soul is called inner self.

Q.11. What is Supreme soul?

Ans. The soul which is free of filth of karmas is called supreme soul. Such soul is complete with only omniscience.

Q.12. How many are the supreme souls?

Ans. There are two kinds of supreme souls- omniscient lord with physical body and omniscient lord with liberated body (without physical body).

Q.13. What is omniscient lord with physical body called?

Ans. As the name suggests, omniscient lord who has physical entity is called 'sake' (omniscient lord with physical body).

Q.14. What is omniscient lord without physical body (nikal) called?

Ans. Nikal= physical body which has left, in other words omniscient soul without physical body is called 'nikal' soul.

I. मिथ्यात्व गुणस्थान

प्रश्न 1. मिथ्यात्व किसे कहते हैं?

उत्तर : अतत्त्व श्रद्धान को अथवा विपरीत श्रद्धान को मिथ्यात्व कहते हैं।

प्रश्न 2. विपरीत श्रद्धान क्या है?

उत्तर : सही का गलत, गलत का सही श्रद्धान करना विपरीत श्रद्धान है। जैसे कि जीव का स्वरूप जानना-देखना है लेकिन ऐसा स्वरूप न मानकर कर्त्ता-धर्त्ता-हर्त्ता स्वीकार करना विपरीत श्रद्धान है। जैसे कि कहा जाता है कि ब्रह्मा जी सृष्टि के कर्त्ता हैं। यह सब विपरीत श्रद्धान है।

प्रश्न 3. अतत्त्व किसे कहते हैं?

उत्तर : जो सारभूत न हो उसे अतत्त्व कहते हैं। जैसे - दूध में तत्त्व घी है, शेष वस्तु [दही, मक्खन आदि] सब अतत्त्व हैं, इसी प्रकार जीव में सारभूत तत्त्व] ज्ञान है शेष सभी क्रियाएँ [चलना, फिरना, खाना-पीना आदि] अतत्त्व हैं।

प्रश्न 4. मिथ्यादृष्टि जीव किसका श्रद्धान करता है, किसका नहीं?

उत्तर : गुरु के द्वारा उपदिष्ट प्रवचन का श्रद्धान नहीं करता और अनुपदिष्ट बातों पर श्रद्धान करता है।

प्रश्न 5. मिथ्यादृष्टि जीव को क्या नहीं रुचता है?

उत्तर : मिथ्यादृष्टि जीव को धर्म व धर्म की चर्चा नहीं रुचती। जैसे - मलेरिया बुखार जिसको चढ़ा है उसको मौसमी का जूस कड़वा लगता है।

प्रश्न 6. मिथ्यात्व के कितने भेद हैं?

उत्तर : मिथ्यात्व के दो भेद हैं-1. गृहीत मिथ्यात्व 2. अगृहीत मिथ्यात्व।

प्रश्न 7. गृहीत मिथ्यात्व किसे कहते हैं? व उसके कितने भेद हैं?

उत्तर : परोपदेश के द्वारा जो ग्रहण कराया जाता है वह गृहीत मिथ्यात्व कहलाता है। वह पाँच प्रकार का है- विपरीत, एकान्त, विनय, संशय और अज्ञान।

प्रश्न 8. विपरीत मिथ्यात्व किसे कहते हैं?

उत्तर : जैसा वस्तु का स्वरूप है उससे विपरीत मानना। जैसे - केवली के कवलाहार, द्रव्यस्त्री-मुक्ति, देवताओं को सुरापान अथवा देवताओं को माँसभक्षी कहना इत्यादि मान्यताएँ विपरीत मिथ्यात्व हैं।

प्रश्न 9. एकांत मिथ्यात्व किसे कहते हैं?

उत्तर : अनेक धर्मा वस्तु में एक धर्मा स्वीकार करना अथवा प्रतिपक्षी की अपेक्षा रहित वस्तु (द्रव्य) को सर्वथा एकरूप कहना व मानना एकान्त मिथ्यात्व है। जैसे - जीव सर्वथा नास्तिरूप ही है, सर्वथा नित्य ही है या सर्वथा क्षणिक ही है इत्यादि।

प्रश्न 10. विनय मिथ्यात्व किसे कहते हैं?

उत्तर : मात्र विनय से ही मुक्ति मानना। जैसे - मन-वचन-काय से सुर, नृपति, यति, ज्ञानी, वृद्ध, बाल, माता-पिता इनकी विनय करने से ही मोक्ष की प्राप्ति हो जायेगी।

प्रश्न 11. संशय मिथ्यात्व किसे कहते हैं?

उत्तर : 'ऐसा है या नहीं' इनमें से किसी एक का निश्चय न करना, दोनों में ही डोलता रहता है। जैसे - स्वर्ग नरक आदि हैं या नहीं, यह सीप है या चाँदी है, इत्यादि संशय मिथ्यात्व है।

प्रश्न 12. अज्ञान मिथ्यात्व किसे कहते हैं?

उत्तर : यथार्थ कोई नहीं जानता जैसे - जीव है, ऐसा कौन जानता है? अर्थात् कोई नहीं जानता, इत्यादि अज्ञान मिथ्यात्व है।

प्रश्न 13. अगृहीत मिथ्यात्व किसे कहते हैं?

उत्तर : अनादिकाल के संस्कार वशात् जो अतत्त्वश्रद्धान है वह अगृहीत मिथ्यात्व है।

प्रश्न 14. मिथ्यात्व गुणस्थान में कितने जीव होते हैं?

उत्तर : अनंतानंत

प्रश्न 15. अनंतानंत किसे कहते हैं?

उत्तर : जहाँ व्यय होता रहे किन्तु आय न हो फिर भी वह राशि समाप्त न हो उसे अनंतानंत कहते हैं।

प्रश्न 16. अनंतानंत के कितने भेद हैं?

उत्तर : अनंतानंत के दो भेद हैं-(1) सक्षय अनंत (2) अक्षय अनंत।

प्रश्न 17. सक्षय अनंत किसे कहते हैं?

उत्तर : जिसका व्यय होते-होते एक दिन समाप्त हो जाए उसे सक्षय अनंत कहते हैं।

प्रश्न 18. अक्षय अनंत किसे कहते हैं?

उत्तर : जिसका व्यय होते-होते भी अनंतानंत काल में भी समाप्त न हो उसे अक्षय अनंत कहते हैं।

प्रश्न 19. सक्षय अनंत को अनंत क्यों कहा क्योंकि अनंत का तो अंत ही नहीं होता?

उत्तर : केवलज्ञान का विषय होने के कारण सक्षय अनंत को अनंत संज्ञा प्राप्त होती है। [मति व श्रुतज्ञान संख्यात को, अवधिज्ञान असंख्यात को व केवलज्ञान अनंत को जानता है।]

प्रश्न 20. मिथ्यात्व गुणस्थान में कौनसे जीव नियम से होते ही हैं?

उत्तर : एकेन्द्रिय से असंज्ञी पंचेन्द्रिय तक तथा लब्ध्यपर्याप्तक जीव नियम से मिथ्यात्व गुणस्थान में ही होते हैं।

प्रश्न 21. मिथ्यादृष्टि मनुष्य कम से कम कितने समय में सम्यक्त्व पैदा कर सकता है?

उत्तर : मिथ्यादृष्टि मनुष्य जन्म से 8 वर्ष अन्तर्मुहूर्त के बाद सम्यक्त्व पैदा कर सकता है।

प्रश्न 22. मिथ्यात्व गुणस्थान में मुख्यता से कौन-सा भाव पाया जाता है?

उत्तर : मिथ्यात्व गुणस्थान में मुख्यता से औदयिक भाव पाया जाता है।

प्रश्न 23. मिथ्यात्व गुणस्थान में कौन-कौन सी प्रकृतियों का उदय संभव नहीं है?

उत्तर : मिथ्यात्व गुणस्थान में सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, आहारक शरीर, आहारक आंगोपांग और तीर्थंकर प्रकृति का उदय संभव नहीं है।

प्रश्न 24. कितनी व कौन-सी प्रकृतियों का बंध इसी गुणस्थान में होता है, इससे आगे नहीं?

उत्तर : 16 प्रकृतियों का बंध इसी गुणस्थान में होता है, इससे आगे नहीं, वे हैं-मिथ्यात्व, नपुंसक वेद, नरकायु, नरक गति, नरक गत्यानुपूर्वी, 1-4 इन्द्रियजाति, हुण्डक संस्थान, असम्प्राप्तासृपाटिका संहनन, स्थावर, आतप, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण।

प्रश्न 25. इस गुणस्थान में जीवों की संख्या कितनी होती है?

उत्तर : इस गुणस्थान में जीवों की संख्या अनंतानंत होती है।

प्रश्न 26. मिथ्यात्व गुणस्थान में मनुष्यों की संख्या कितनी होती है?

उत्तर : इस गुणस्थान में सामान्य से मनुष्यों की संख्या जगत् श्रेणी के असंख्यातवे भाग किन्तु पर्याप्त में - 29 अंक प्रमाण होती है।

प्रश्न 27. 29 अंक प्रमाण से क्या तात्पर्य है?

उत्तर : 7 खरब, 92 अरब, 28 करोड़, 16 लाख, 25 हजार, 142 शंख, 64 पद्म, 33 नील, 75 खरब, 93 अरब, 54 करोड़, 39 लाख, 50 हजार 336

प्रश्न 28. इस गुणस्थान का जघन्य व उत्कृष्ट से कितना काल है?

उत्तर : इस गुणस्थान का जघन्य काल - अन्तर्मुहूर्त, उत्कृष्ट काल - कुछ कम अर्द्ध पुद्गल परावर्तन (सादि मिथ्यादृष्टि की अपेक्षा) है।

प्रश्न 29. मिथ्यात्व गुणस्थान में कितनी कषायें हो सकती हैं?

उत्तर : मिथ्यात्व गुणस्थान में सभी (25) कषायें हो सकती हैं।

प्रश्न 30. मिथ्यात्व गुणस्थान में कितने ज्ञान हो सकते हैं?

उत्तर : मिथ्यात्व गुणस्थान में सिर्फ 3 अज्ञान [कुमति, कुश्रुत, कुअवधि] हो सकते हैं।

प्रश्न 31. इस गुणस्थान में कितने संयम हो सकते हैं?

उत्तर : इस गुणस्थान में सिर्फ असंयम ही होता है।

प्रश्न 32. इस गुणस्थान में कितने दर्शन हो सकते हैं?

उत्तर : इस गुणस्थान में सिर्फ दो (चक्षु व अचक्षु) दर्शन हो सकते हैं।

प्रश्न 33. इस गुणस्थान में कितनी लेश्याऐं पायी जाती हैं?

उत्तर : इस गुणस्थान में छह लेश्या [कृष्ण, नील, कापोत, पीत, पद्म, शुक्ल] पायी जाती है।

प्रश्न 34. इस गुणस्थान के जीव भव्य होते हैं या अभव्य?

उत्तर : इस गुणस्थान में भव्य व अभव्य दोनों हो सकते हैं।

प्रश्न 35. इस गुणस्थान में कौनसा सम्यक्त्व पाया जाता है?

उत्तर : इस गुणस्थान में मिथ्यात्व सम्यक्त्व पाया जाता है।

प्रश्न 36. इस गुणस्थान के जीव संज्ञी होते हैं या असंज्ञी?

उत्तर : संज्ञी व असंज्ञी दोनों प्रकार के जीव मिथ्यादृष्टि हो सकते हैं।

I. Flasehood Spiritual Development
Stage of Spiritual Development with Wrong-Belief

Q.1. What is called wrong-belief?

Ans. Belief without logic or perverse faith is called wrong-faith or wrong-belief.

Q.2. What is perverse faith?

Ans. Believing wrong as the right or right as the wrong is perverse faith. As the nature of the self is to know and to watch, however, considering it as the doer (main acting agent) or creator of everything, is perverse faith. As it is said that Brahmaeid is the creator of this universe. This is perverse-faith.

Q.3. What is called illogical or without reality?

Ans. That which has no essence is called illogical or without reality. For example- ghee is the essence of milk, remaining things (curd, butter etc.) are all without essence. In the same manner, in the self, only knowledge is essence, remaining all activities (moving, eating etc.) are without any essence.

Q.4. In whom has wrong-faithed-self believed, and in whom he has not?

Ans. The self does not have faith in the appropriate preaching of the preceptor, and believes in inappropriate facts.

Q.5. What does not interest a wrong-faithed person?

Ans. A wrong-faithed person does not like to listen about religion and religious discussion. For example- the one who suffers from Malaria fever has a bitter taste of sweet lime.

Q.6. How many kinds are there of wrong-belief?

Ans. There are two kinds of wrong-belief.

1. Accepted false hood 2. Unacceptable wrong-belief.

Q. 7. What is the tern accepted falsehood, and how many kinds are there

Ans. The eclipse which is doneky others teach is called the accpted falsehood that five types-opposite one side wrong belief, modest wrong belief, doubtable wrong belief inhorant wrong belief

Q.8. What is perverted belief?

Ans. Contrary to the real nature of things is called perverted belief. For example-considering morsel food of omniscient, freedom from femineity, calling celestial beings as meat-eater etc.are the examples of perverted-belief.

Q.9. What is called one-sided wrong belief?

Ans. Accepting only one faith of the multi-faithed thing or to call something completely identical without the expectation of distortion is one-sided wrong belief. For example- The soul is always bodyless, eternal or it is always momentary etc.

Q.10. What is modest wrong-belief?

Ans. Acceptance of liberation only through modesty. For example- expecting salvation only through showing respect with mind, speech and body to celestial beings, kings, knowledgeable, old, children, parents.

Q.11. What is doubtable wrong-belief?

Ans. When it is not decided whether it is so or not, doubting between both the sides. For example- whether there exists heaven or hell, whether it is silver or oyster, etc. are doubtable wrong-beliefs.

Q.12. What is ignorant wrong-belief?

Ans. Nobody knows the factual reality whether there the soul exists. Who knows this? Means nobody knows this, etc. is the ignorant wrong-belief.

Q. 13. What is unacceptable woring belief?

Ans. The faith in the nonassence through the rites of time immemorial is an unaccepted wrong belief.

Q.14. How many organisms are there in the stage of Wrong Faith Spiritual Development?

Ans. Infinite.

Q.15. What is infinite?

Ans. Where expenditure is continued and there is no income, still the amount is not run over, it is called infinite.

Q.16. How many kinds are of infinity?

Ans. There are two kinds of infinity- 1. Non-renewable infinite, 2. Renewable infinite.

Q.17. What is non-renewable infinite?

Ans. That which gets finished consuming continuously is called non-renewable infinite.

Q.18. What is renewable infinite?

Ans. That which does not get finished even after continuous consumption for the time infinite is called renewable infinite.

Q.19. Why is non-renewable infinite called infinite because infinite is endless?

Ans. Non-renewable infinite being the subject of omniscient knowledge is categorized as infinite. (Ordinary cognition recognizes only sensory scriptural finite knowledge, clairvoyance infinite, and omniscient infinite knowledge).

Q.20. As a rule, which living beings are placed in the stage of wrong faith spiritual development?

Ans. From one sensed to five sensed living beings without mind and absolutely non-developable living beings are placed in the stage of wrong faith spiritual development as a rule.

Q.21. How long does a wrong-faithed living being take to produce right-belief?

Ans. Wrong-faithed living being can produce right-belief after 8 years of anatarmuhoort(appro. 48 minutes or less).

Q.22. Which sense is mainly found in wrong-belief?

Ans. Feeling produced due to fruition of karmas.

Q.23. Which of the characteristics are not possible to rise in the stage of wrong-faith spiritual development?

Ans. Right-belief, right cum wrong belief, assimilative body, assimilative minor limbs, and nature of a ford founder (tirthankara).

Q.24. How many and which characteristics are risen in this stage of spiritual development, and not more than this?

Ans. Sixteen characteristics. Wrong-belief, physically neuter gender, hell-age, hell-condition, hell-gatyanupurvi, 1-4 sensed life, ugly body configuration, asampraptasupatika structure, immobile beings, hot-effulgence, microscopic, non-developed and ordinary plants or bodies.

Q.25. What can be the number of living beings in this stage of spiritual development?

Ans. There can be infinite number of living beings in this stage of spiritual development.

Q.26. What can be the number of human beings in this stage of wrong-belief spiritual development?

Ans. Generally it is infinitieth part of the universe, however, it measures 29 numerically as fully developed.

Q.27. What is the meaning of 29 numerical measure?

Ans. 7 Trillion, 92 billion, 280 million, 16 lakh, 25 thousand, 142 shankh, 64 padma, 33 nile, 75 trillion, 93 billion, 540 million, 39 lakh, 50 thousand 3361.

Q.28. How long are the periods in respect to the lowest and the highest in this stage?

Ans. In this stage there is the lowest period of antarmuhoort and the highest period is a bit less- half matter cyclic change period.

Q.29. What number of toxic emotions can be in this stage of wrong-belief spiritual development?

Ans. In the stage of wrong-belief spiritual development all 25 kinds of toxic emotions can be there.

Q.30. How many kinds of ignorance can be there in the stage of wrong-belief spiritual development?

Ans. There can only be three kinds of ignorance (false sensual, wrong scriptural knowledge, wrong clairvoyance) in this stage of wrong-belief spiritual development.

Q.31. What can be the number of self-restraints in this stage of spiritual development?

Ans. Only non-restraint can be there in this stage.

Q.32. What can be the number of perceptions in this stage of spiritual development?

Ans. Only two perceptions (with vision, except for vision) can be there in this stage of spiritual development.

Q.33. What number of physical colorations can be found in this stage of spiritual development?

Ans. All the six colorations (black, blue, grey, yellow, pink, white) can be found in this stage of spiritual development.

Q.34. Whether the living beings of this stage are salvation able or not?

Ans. Both kinds of living beings can be there - salvation able and non- salvation able

Q.35. Which kind of right-belief is found in this stage of spiritual development?

Ans. Wrong cum right belief is found in this stage of spiritual development.

Q.36. Whether the living beings in this stage of spiritual development are rational or irrational?

Ans. Both kinds of living beings- rational and irrational can be wrong believer.

II. सासादन गुणस्थान

प्रश्न 1. सासादन गुणस्थान किसे कहते हैं?

उत्तर : प्रथमोपशम अथवा द्वितीयोपशम सम्यक्त्व के काल में उत्कृष्ट से 6 आवली जघन्य से एक समय शेष रह जाने पर परिणामों के गिरने से अनंतानुबंधी चतुष्क [क्रोध, मान, माया, लोभ] में से किसी एक का उदय होने पर सासादन गुणस्थान होता है।

प्रश्न 2. सासादन गुणस्थान में किस प्रकार की स्थिति बनती है?

उत्तर : सम्यक्त्व रूपी शिखर से गिरा और मिथ्यात्व रूपी भूमि को स्पर्श नहीं किया हो, उस स्थिति को सासादन गुणस्थान कहते हैं।

प्रश्न 3. सासादन गुणस्थानवर्ती जीव कौन से गुणस्थान में जाता है?

उत्तर : सासादन गुणस्थानवर्ती जीव नियम से गिरता हुआ ही होता है इसलिए यह जीव नियम से मिथ्यात्व गुणस्थान में ही जाता है।

प्रश्न 4. कौन-से सम्यक्त्व से गिरकर जीव सासादन गुणस्थान में आता है?

उत्तर : उपशम सम्यक्त्व से गिरकर जीव सासादन गुणस्थान में आता है।

प्रश्न 5. सासादन गुणस्थान में मोहनीय कर्म की कौन-सी प्रकृति का उदय नहीं होता?

उत्तर : सासादन गुणस्थान में मोहनीय कर्म की मिथ्यात्व प्रकृति का उदय नहीं होता है।

प्रश्न 6. सासादन गुणस्थान में कितने जीव होते हैं?

उत्तर : सासादन गुणस्थान में कम से कम एक जीव अथवा ऐसा भी हो सकता है एक भी जीव न हो और अधिक से अधिक एक समय में पल्य के असंख्यातवें भाग जीव भी हो सकते हैं।

प्रश्न 7. सासादन गुणस्थान का एक जीव की अपेक्षा जघन्य व उत्कृष्ट काल कितना है?

उत्तर : सासादन गुणस्थान का एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल - एक समय, उत्कृष्ट काल - 6 आवली है।

प्रश्न 8. सासादन गुणस्थान का नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य व उत्कृष्ट काल कितना है?

उत्तर : सासादन गुणस्थान का नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य काल - एक समय, उत्कृष्ट काल-पल्योपम का असंख्यातवां भाग है।

प्रश्न 9. सासादन गुणस्थान का अन्तर एक जीव की अपेक्षा जघन्य व उत्कृष्ट कितना है?

उत्तर : सासादन गुणस्थान का अन्तर एक जीव की अपेक्षा जघन्य - पल्योपम का असंख्यातवां भाग, उत्कृष्ट - कुछ कम अर्द्ध पुद्गल परावर्तन है।

प्रश्न 10. एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर पल्योपम का असंख्यातवां भाग क्यों है?

उत्तर : क्योंकि सासादन सम्यक्त्व उपशम पूर्वक ही होता है और उपशम सम्यक्त्व एक बार होने के बाद यदि वह जीव मिथ्यात्व में चला जाए तो पल्योपम के असंख्यातवें भाग तक मिथ्यात्व में रहने पर ही उपशम सम्यक्त्व हो सकता है पहले नहीं।

प्रश्न 11. सासादन गुणस्थान में मुख्यतया से कौन सा भाव पाया जाता है?

उत्तर : सासादन गुणस्थान में मुख्यतया पारिणामिक भाव पाया जाता है।

प्रश्न 12. सासादन गुणस्थानवर्ती मरण करके कौन-कौन सी गति में जा सकता है?

उत्तर : सासादन गुणस्थानवर्ती मरण करके नरक गति को छोड़कर शेष तीन गतियों में जा सकता है।

प्रश्न 13. सासादन गुणस्थानवर्ती पहले समय में मरण करता है तो वह कौन सी गति में जाता है?

उत्तर : सासादन गुणस्थानवर्ती पहले समय में मरण करता है तो वह नियम से देव गति में ही जाता है।

प्रश्न 14. सासादन गुणस्थानवर्ती जीव भव्य होता है या अभव्य?

उत्तर : सासादन गुणस्थानवर्ती जीव नियम से भव्य ही होता है।

प्रश्न 15. सासादन गुणस्थानवर्ती के मोहनीय कर्म की कितनी प्रकृतियों का सत्त्व पाया जाता है?

उत्तर : सासादन गुणस्थानवर्ती के मोहनीय कर्म की 28 प्रकृतियों का सत्त्व पाया जाता है।

प्रश्न 16. सासादन गुणस्थानवर्ती जीवों की स्थिति कैसी होती है?

उत्तर : सासादन गुणस्थान में गिरने वाले जीव का सम्यक्त्व दृढ़ नहीं होता अर्थात् उपशम सम्यक्त्व होता है। यह भस्म में छिपी आग के समान होता है। सम्यक्त्व का आसादन (अवहेलना) करने से इस गुणस्थान की प्राप्ति होती है।

प्रश्न 17. इस गुणस्थान में जीवों की संख्या कितनी हो सकती है?

उत्तर : इस गुणस्थान में जीवों की संख्या असंख्यात (पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग) होती है परन्तु मनुष्य अधिक से अधिक 52 करोड़ हो सकते हैं।

II. Stage of Lingering Faith Spiritual Development

Q.1. What is called the stage of lingering faith spiritual development?

Ans. During right faith first subsidence or second subsidence period one less than six avali less lowest time from the highest time, the rise of any one of the four passions leading to endless mundane existence (anger, ego, illusion, greed) due to the fall of such transformation there occurs the stage of lingering faith spiritual development.

Q.2. What kind of condition takes place in the stage of lingering faith spiritual development?

Ans. The condition which occurs as the result of falling from the peak of right faith and not touching the land of wrong faith is called the stage of lingering faith of spiritual development.

Q.3. For which stage of spiritual development, the dweller of this stage leaves?

Ans. The living being in this condition of stage is always falling, therefore as a rule the same leaves for the stage of wrong faith spiritual development.

Q.4. After falling from which right faith, the living being comes to the stage of lingering faith spiritual development?

Ans. Falling from subsidence right-faithed, the living being comes to the stage of lingering faith spiritual development.

Q.5. Which of the characteristics of the deluding karma does not rise in the stage of lingering faith spiritual development?

Ans. The wrong-faithed characteristic of the deluding karma does not rise in the stage of lingering faith spiritual development.

Q.6. How many living beings are there in the stage of lingering faith spiritual development?

Ans. At least one living being and it may also be that there is no living being and there may be maximum infinitieth part of living beings of the single unit of pit-based time.

Q.7. In respect to one living being what is the lowest and the highest duration in the lowest and the highest duration of time in respect to various living beings is unit time and the infinitieth part of the pit measured time respectively?

Ans. In respect to one living being the lowest and the highest duration is unit time, and 6 avail time respectively in the stage of lingering faith spiritual development.

Q.8. What is the lowest and the highest duration of time in respect to various living beings in the stage of lingering faith spiritual development?

Ans. The lowest and the highest duration of time in respect to various living beings is unit time and the infinitieth part of the pit measured time respectively in the stage of lingering faith spiritual development.

Q.9. What is the lowest and the highest difference in regard to one living being in the stage of lingering faith spiritual development?

Ans. In regard to one living being the lowest and the highest difference in the stage of lingering faith spiritual development is infinitieth part of the pit measured time and half matter cyclic change period respectively.

Q.10. Why is the lowest difference in regard to one living being infinitieth part of the pit measured time?

Ans. Because the stage of lingering faith of spiritual development occurs only due to subsidence and if the living being once comes into subsidence right faith and falls into wrong faith, then only after living in wrong faith for infinitieth part of the pit measured time, there subsidence right faith can occur and not before that.

Q.11. Which feeling is mainly found in the stage of lingering faith spiritual development?

Ans. Mainly the feeling of transformation in thought activity is found in the stage of lingering faith spiritual development.

Q.12. In what conditions can a living being move from the stage of lingering faith spiritual development after dying?

Ans. After dying fromthe stage of lingering faith spiritual development a being can move to any of the remaining three conditions leaving hell conditions.

Q.13. In which condition can a living being leave when dies from the stage of lingering faith spiritual development?

Ans. As a rule, such being moves to celestial condition.

Q.14. Is a living being salvation able or non-salvation able in the stage of lingering faith spiritual development?

Ans. As a rule, a living being is always salvation able in the stage of lingering faith spiritual development.

Q.15. Essence of how many characteristics of deluding karma is found of the dweller in the stage of lingering faith spiritual development?

Ans. The essence of 28 characteristics is found in the dwellers of the stage of lingering faith spiritual development.

Q.16. How is the condition of the living beings of the stage of lingering faith spiritual development?

Ans. The living beings that fall into the stage of lingering faith spiritual development have no rigid right faith, in other words there is subsidence right faith. This is like a spark hidden in the ash. By disregarding right faith this stage of spiritual development is got.

Q.17. What number of living beings can there be in this stage of lingering faith spiritual development?

Ans. There can be infinite number of living beings in this stage of lingering faith spiritual development, however, human beings can be 52 crores at best of the maximum.

III. सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान

प्रश्न 1. सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान किसे कहते हैं?

उत्तर : जहाँ पर न तो शुद्ध सम्यक्त्व रूप परिणाम हों, ना ही शुद्ध मिथ्यात्व रूप परिणाम हों, दोनों के मिले-जुले परिणाम हैं। जैसे कि दही गुड़ के मिले जुले स्वाद के समान क्योंकि दही खट्टा है, गुड़ मीठा है तो ऐसे स्वाद को खट्टा-मीठा कहेंगे। वैसे ही सम्यक्त्व और मिथ्यात्व के मिले-जुले परिणामों को सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान कहते हैं।

प्रश्न 2. यह गुणस्थान किस प्रकृति के उदय से होता है?

उत्तर : यह गुणस्थान सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृति के उदय से होता है।

प्रश्न 3. इस गुणस्थान का काल कितना है?

उत्तर : जघन्य व उत्कृष्ट से इसका काल अन्तर्मुहूर्त है।

प्रश्न 4. इस गुणस्थान को और किन-किन नामों से जाना जाता है?

उत्तर : इस गुणस्थान को मिश्र, उभयदृष्टि, मिश्रदृष्टि नामों से भी जाना जाता है।

प्रश्न 5. इस गुणस्थान में एक समय में कम से कम व अधिक से अधिक कितने जीव रहते हैं?

उत्तर : इस गुणस्थान में अधिक से अधिक पल्य के असंख्यातवें भाग और कम-से-कम एक जीव अथवा ऐसा भी हो सकता है जब एक भी जीव न हो।

प्रश्न 6. इस गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों का सत्त्व पाया जाता है?

उत्तर : इस गुणस्थान में 147 प्रकृतियों का सत्त्व पाया जाता है।

प्रश्न 7. क्या तीर्थंकर प्रकृति के सत्त्व वाला जीव इस गुणस्थान को प्राप्त कर सकता है?

उत्तर : नहीं, तीर्थंकर प्रकृति के सत्त्व वाला जीव इस गुणस्थान को प्राप्त नहीं कर सकता।

प्रश्न 8. इस गुणस्थान में क्या-क्या नहीं होता है?

उत्तर : इस गुणस्थान में आयुबंध, मारणांतिक समुद्घात, संयम के परिणाम तथा मरण नहीं होता है।

प्रश्न 9. नाना जीवों की अपेक्षा इस गुणस्थान का जघन्य व उत्कृष्ट अन्तर कितना हो सकता है?

उत्तर : नाना जीवों की अपेक्षा इस गुणस्थान का जघन्य अन्तर-एक समय, उत्कृष्ट अन्तर-पल्योपम का असंख्यातवां भाग हो सकता है।

प्रश्न 10. एक जीव की अपेक्षा इस गुणस्थान का जघन्य व उत्कृष्ट अन्तर बताइए?

उत्तर : एक जीव की अपेक्षा इस गुणस्थान का जघन्य अन्तर - अन्तर्मुहूर्त व उकृष्ट अन्तर - कुछ कम अर्द्ध पुद्गल परावर्तन हो सकता है।

प्रश्न 11. अर्द्ध पुद्गल परावर्तन क्या कहलाता है?

उत्तर : नो कर्म द्रव्य परावर्तन में लगने वाले समय को आधा करने पर अर्द्ध पुद्गल परावर्तन होता है।

प्रश्न 12. अर्द्ध पुद्गल परावर्तन का कितना समय होता है?

उत्तर : अर्द्धपुद्गल परावर्तन में अनंत वर्ष होते हैं।

प्रश्न 13. अनंत वर्ष क्यों कहा है?

उत्तर : व्यवहार से इसको केवलज्ञान का विषय होने के कारण अनंत कहा है क्योंकि इसको अवधिज्ञान नहीं जानता।

प्रश्न 14. इस गुणस्थान में मुख्यता से कौन सा भाव पाया जाता है?

उत्तर : इस गुणस्थान में मुख्यता से क्षयोपशम भाव पाया जाता है।

प्रश्न 15 इस गुणस्थान में कौन सा ज्ञान पाया जाता है?

उत्तर : इस गुणस्थान में मिश्र ज्ञान पाया जाता है।

प्रश्न 16. मिश्र ज्ञान क्यों होता है?

उत्तर : यद्यपि ज्ञान तो ज्ञान होता है। ज्ञान में न सम्यक्, न मिथ्या, न मिश्र होता है हमारी मान्यता [सम्यक्त्व] के अनुसार सम्यक्त्व, मिथ्यात्व अथवा मिश्र ज्ञान बनता है।

प्रश्न 17. इस गुणस्थान में कितनी कषाय पायी जाती हैं?

उत्तर : इस गुणस्थान में अनंतानुबंधी चतुष्क को छोड़कर शेष [21] सभी कषायें पायी जाती हैं।

प्रश्न 18. सम्यग्मिथ्यात्व अवस्था का वेदन कब होता है?

उत्तर : सम्यक्त्व से गिरते समय या मिथ्यात्व से चढ़ते समय अल्प समय के लिए होता है।

प्रश्न 19. इस गुणस्थान में जीवों की संख्या कितनी हो सकती है?

उत्तर : इस गुणस्थान में जीवों की संख्या असंख्यात हो सकती है परन्तु मनुष्य अधिक से अधिक 104 करोड़ हो सकते हैं।

III. Right cum Wrong Faith Stage of Spiritual Development

Q.1. What is called Right cum Wrong Faith Stage of Spiritual Development?

Ans. Where there exists neither right faith mode nor wrong faith mode; there exists only mixed mode of these two. For example- the taste of the substance comes as a result of mixing jaggery with curd; it is neither sweet like jaggery and nor sour like curd, it has mixed taste of sweet and sour. In the same manner mixed mode of right and wrong faith is Right cum Wrong Faith Stage of Spiritual Development.

Q.2. This stage is due to the rise of which characteristic?

Ans. This stage is due to the rise of right cum wrong characteristic.

Q.3. What is the duration of this Right cum Wrong Faith Stage of Spiritual Development?

Ans. In regard to both lowest and the highest terms, its duration is antarmuhoort (48 minutes or less).

Q.4. With how many more names is it known?

Ans. This stage of spiritual development is also known by the names- mixed, mutual perception, mixed perception.

Q.5. How many maximum and minimum living beings dwell in this stage of spiritual development at a time?

Ans. Maximum infinitieth part of one palya and minimum only one living being dwell at a time in this stage of spiritual development. It may also happen that not a single living being dwells in this stage.

Q.6. The essence of how many characteristics is found in this stage of spiritual development?

Ans. The essence of 147 characteristics is found in this stage of spiritual development.

Q.7. Can a soul of the essence of omniscient characteristic achieve this stage of spiritual development?

Ans. No, a soul of the essence of omniscient characteristic cannot achieve this stage of spiritual development.

Q.8. What doesn't happen in this stage of spiritual development?

Ans. There is no age bond, death bed overflow, mode of restraint and death in this Right cum Wrong Faith Stage of Spiritual Development.

Q.9. What can be lowest and the highest difference of this stage of spiritual development in regard to various living beings?

Ans. The lowest difference- antarmuhoort, and highest difference- infinitieth part of palyopam (pit measured time).

Q.10. What can be the lowest and the highest difference of this stage of spiritual development in regard to single living being?

Ans. The lowest difference- antarmuhoort, and highest difference- less than half matter cyclic change period.

Q.11. What is called half matter cyclic change period?

Ans. Half of the time taken in the transformation of Quasi karma particles is half matter cyclic change period.

Q.12. How long does it take half matter cyclic change?

Ans. It takes infinite number of years.

Q.13. Why the infinite years has been said?

Ans. Since it is a subject of science, therefore, it has been said as infinite because it is not known by clairvoyance.

Q.14. Which sense mainly predominates in this stage of spiritual development?

Ans. Mainly sense of disposition after annihilation and subsidence is found in this stage of spiritual development.

Q. 15. Which kind of knowledge is found in this stage of spiritual development?

Ans. Mixed kind of knowledge is found in this stage of spiritual development.

Q.16. Why is there mixed kind of knowledge?

Ans. Though knowledge is knowledge; it is none of right, wrong and mixed. It is our point of view that makes it right, wrong or mixed.

Q.17. How many toxic emotions are found in this stage of spiritual development?

Ans. Leaving infinite bonding four toxic emotions, remaining all 21 toxic emotions are found in this stage of spiritual development.

Q.18. When does the distress of right cum wrong condition take place?

Ans. It occurs for a very short time during falling from right faith or ascending from wrong faith.

Q.19. What number of living beings can be there in this stage of spiritual development?

Ans. The number of living beings in this stage can be infinite, however, human beings can be at the most 104 crores.

IV. असंयत गुणस्थान

प्रश्न 1. असंयत गुणस्थान किसे कहते हैं?

उत्तर : औपशमिक, क्षायोपशमिक अथवा क्षायिक सम्यक्त्व से सहित होते हुए भी जिस जीव के चारित्र मोहनीय कर्म के उदय से रंच मात्र भी चारित्र नहीं होता है उसे असंयत गुणस्थान कहते हैं।

प्रश्न 2. तीर्थंकर प्रकृति का बंध कौन से गुणस्थान से प्रारम्भ होता है?

उत्तर : तीर्थंकर प्रकृति का बंध चतुर्थ गुणस्थान [असंयत गुणस्थान] से प्रारम्भ होता है।

प्रश्न 3. औपशमिक सम्यक्त्व किसे कहते हैं?

उत्तर : कर्मों को दबाना उपशम कहलाता है। जैसे - जल में बैठा हुआ कीचड़। यह सम्यक्त्व चतुर्थ गुणस्थान से 11वें गुणस्थान तक होता है।

प्रश्न 4. क्षयोपशम सम्यक्त्व किसे कहते हैं?

उत्तर : कुछ कर्मों के उदय क्षय व कुछ का उपशम होने से चल, मलिन, अवगाढ़ रूप अस्थायी श्रद्धा होती है, इसे ही क्षयोपशम सम्यक्त्व कहते हैं। यह सम्यक्त्व चतुर्थ गुणस्थान से सप्तम गुणस्थान तक होता है।

प्रश्न 5. इस गुणस्थान में औपशमिक सम्यक्त्व का काल कितना है?

उत्तर : इस गुणस्थान में औपशमिक सम्यक्त्व का काल अन्तर्मुहूर्त है।

प्रश्न 6. इस गुणस्थान में क्षयोपशम सम्यक्त्व का काल कितना है?

उत्तर : इस गुणस्थान में क्षयोपशम सम्यक्त्व का काल जघन्य से अन्तर्मुहूर्त, उत्कृष्ट से कुछ अधिक 33 सागर है।

प्रश्न 7. क्षायिक सम्यक्त्व किसे कहते हैं?

उत्तर : कर्मों का सर्वथा क्षय करना क्षायिक सम्यक्त्व है। यह सम्यक्त्व

निष्कम्प, निर्मल, अक्षय, अनन्त होता है। यह सम्यक्त्व चतुर्थ गुणस्थान से अन्तिम गुणस्थान तक स्थिर रहता है।

प्रश्न 8. इस गुणस्थान में क्षायिक सम्यक्त्व का काल कितना है?

उत्तर : इस गुणस्थान में क्षायिक सम्यक्त्व का काल क्षयोपशम सम्यक्त्व के समान। [जघन्य - अन्तर्मुहूर्त, उत्कृष्ट, कुछ अधिक 33 सागर]

प्रश्न 9. इस गुणस्थान में सम्पूर्ण जीव राशि कितनी है?

उत्तर : इस गुणस्थान में सम्पूर्ण जीव राशि पल्य के असंख्यातवें भाग है।

प्रश्न 10. इस गुणस्थान में अधिक से अधिक कितने मनुष्य हो सकते हैं?

उत्तर : इस गुणस्थान में अधिक से अधिक 700 करोड़ मनुष्य हो सकते हैं।

प्रश्न 11. एक जीव की अपेक्षा तथा नाना जीवों की अपेक्षा इस गुणस्थान का जघन्य व उत्कृष्ट से अन्तर कितना है?

उत्तर : इस गुणस्थान का अन्तर जघन्य से अन्तर्मुहूर्त, उत्कृष्ट से कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन है तथा नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है।

प्रश्न 12. इस गुणस्थान में मुख्यता से कौन-कौन से भाव पाये जाते हैं?

उत्तर : इस गुणस्थान में मुख्यता से औपशमिक, क्षायिक, क्षयोपशमिक भाव पाये जाते हैं।

प्रश्न 13. जघन्य अन्तरात्मा संज्ञा कौन से गुणस्थान से प्रारंभ होती है?

उत्तर : जघन्य अन्तरात्मा संज्ञा चतुर्थ गुणस्थान [असंयत गुण.] से प्रारंभ होती है।

प्रश्न 14. चतुर्थ गुणस्थान वाला जीव किस पर श्रद्धान करता है?

उत्तर : चतुर्थ गुणस्थान वाला जीव उपदिष्ट प्रवचन पर श्रद्धान करता है।

प्रश्न 15. इस गुणस्थान में कितनी कषाय होती है?

उत्तर : इस गुणस्थान में अनंतानुबंधी को छोड़कर शेष 21 कषाय होती है।

प्रश्न 16. क्या चतुर्थ गुणस्थान में शुद्धोपयोग होता है?

उत्तर : इस गुणस्थान में शुद्धोपयोग कदापि नहीं होता है।

प्रश्न 17. चतुर्थ गुणस्थानवर्ती को कितनी शल्य होती हैं?

उत्तर : चतुर्थ गुणस्थानवर्ती को मिथ्या शल्य को छोड़कर शेष दो शल्य (माया व निदान) होती हैं।

प्रश्न 18. इस गुणस्थान में कितने ज्ञान होते हैं?

उत्तर : इस गुणस्थान में 3 ज्ञान (मति, श्रुत, अवधि) होते हैं।

प्रश्न 19. अपर्याप्तक अवस्था में यह गुणस्थान कौन-कौन सी गतियों में पाया जाता है?

उत्तर : अपर्याप्तक अवस्था में यह गुणस्थान चारों गतियों में पाया जाता है।

प्रश्न 20. यह गुणस्थान अपर्याप्तक अवस्था में कौन से नरक में पाया जाता है?

उत्तर : यह गुणस्थान अपर्याप्तक अवस्था में सिर्फ पहले नरक में [2 से 7 नरक तक सिर्फ पर्याप्त अवस्था में ही] पाया जाता है।

प्रश्न 21. यह गुणस्थान तिर्यंच गति में अपर्याप्तक अवस्था में कहाँ पाया जाता है?

उत्तर : यह गुणस्थान तिर्यंच गति में अपर्याप्तक अवस्था में तो सिर्फ भोगभूमि में ही पाया जाता है लेकिन पर्याप्तक अवस्था में सभी जगह पाया जाता है।

प्रश्न 22. यह गुणस्थान मनुष्य गति में अपर्याप्तक अवस्था में कहाँ पाया जाता है?

उत्तर : यह गुणस्थान मनुष्यगति में अपर्याप्तक अवस्था में भोगभूमि व कर्मभूमि में पाया जाता है।

प्रश्न 23. यह गुणस्थान देवगति में अपर्याप्तक अवस्था में कहाँ पाया जाता है?

उत्तर : यह गुणस्थान सिर्फ कल्पवासी देवों में ही पाया जाता है, भवनत्रिक में नहीं।

प्रश्न 24. अपर्याप्तक अवस्था में यह गुणस्थान कौन-कौन से वेद में पाया जाता है?

उत्तर : अपर्याप्तक अवस्था में यह गुणस्थान नपुंसक वेद व पुरुष वेद में पाया जाता है, स्त्री वेद में कदापि नहीं।

प्रश्न 25. यह गुणस्थान अपर्याप्त मेंनपुंसक वेद में कहाँ पाया जाता है?

उत्तर : यह गुणस्थान नपुंसक वेद में अपर्याप्त में सिर्फ प्रथम नरक में ही (शेष गतियों में यह गुणस्थान अपर्याप्तक अवस्था में सिर्फ पुरुष वेद में ही) पाया जाता है।

प्रश्न 26. इस गुणस्थान में कितनी लेश्याएँ पाई जाती हैं?

उत्तर : इस गुणस्थान में छहों लेश्याऐं पाई जाती हैं। [कृष्ण, नील, कापोत, पीत, पद्म, शुक्ल]

प्रश्न 27. चतुर्थ गुणस्थानवर्ती जीव अगामी काल में कौन सी गति का बंध करता है?

उत्तर : चतुर्थ गुणस्थानवर्ती जीव देव अथवा नारकी है तो मनुष्य गति का तथा तिर्यंच गति का और मनुष्य है तो देवगति का ही बंध करता है।

IV. Non-restrained Stage of Faith in Spiritual Development

Q.1. What is called Non-restrained Stage of Faith in Spiritual Development?

Ans. The stage in which a living being does not even have a bit of right conduct owing to the rise of conduct deluding karma, although having subsidential, dispositional after annihilation cum subsidence or destructional right-faith, is called Non-restrained Stage of Faith in Spiritual Development.

Q.2. From which stage of spiritual development does the bond of tirthankara nature start?

Ans. The bond of tirthankara starts from the fourth non-restrained stage of faith in spiritual development.

Q.3. What is called subsidential right faith?

Ans. Supressing karmas is called subsidence. For example- mud settled in the water. This kind of right faith exists from fourth stage of spiritual development to eleventh stage of spiritual development.

Q.4. What is called annihilation cum subsidence right faith?

Ans. Due to destruction of some karmas and subsidence of some, there occurs temporary deep mobile and vicious faith, which is called annihilation cum subsidence right faith. This kind of right faith exists from fourth to seventh stage of spiritual development.

Q.5. What is the duration of non-restrained right faith in this stage of spiritual development?

Ans. The duration of non-restrained right faith in this stage of spiritual development is antarmuhoort.

Q.6. What is the duration of annihilation cum subsidence right faith in this stage of spiritual development?

Ans. The lowest duration of annihilation cum subsidence in this stage is antarmuhoort, and the highest is more than 33 sagar.

Q.7. What is called destructional right faith?

Ans. Always destructing the karmas is destructional right faith. This kind of right faith is steady, pure, non-perishable, and infinite. This faith exists from the fourth stage of spiritual development to the last stage of spiritual development.

Q.8. What is the duration of destructional right faith in this stage?

Ans. The duration of destructional right faith is equal to annihilation cum subsidence right faith. (lowest- antarmuhoort, highest- more than 33 sagar.)

Q.9. What is the total number of living beings in this stage of spiritual development?

Ans. The total number of living beings in this stage of spiritual development is the infinitieth part of pit based measure.

Q.10. How many human beings can there be in this stage of spiritual development at the most?

Ans. At the most, there can be 700 crore human beings in this stage of spiritual development.

Q.11. What is the difference of this stage of spiritual development with respect to the lowest and the highest?

Ans. The difference of this stage is antarmuhoort in respect to the lowest and some less(half matter cyclic change period) in respect to the highest.

Q.12. What feelings are mainly found in this stage of spiritual development?

Ans. Mainly feelings of subsidence, destruction, annihilation cum subsidence are found in this stage of spiritual development.

Q.13. From which stage of spiritual development the name lowest inner-self is got?

Ans. The name lowest inner-self is got from the fourth stage of spiritual development (non-restrained quality).

Q.14. On whom does a non-restrained living being have faith?

Ans. A non-restrained living being has faith on specified preaching.

Q.15. How many toxic evils are there in this stage of spiritual development?

Ans. There are all the 21 toxic evils in this stage leaving infinite-bonding in this stage of spiritual development.

Q.16. Is there any perfect perception in this stage of spiritual development?

Ans. Not even a little bit of perfect perception is there in this stage of spiritual development.

Q.17. How many stings are there in this fourth stage of spiritual development?

Ans. Leaving sting of falsehood, all the remaining two stings (sting of desire for enjoyment, sting of illusion) are present in this stage of spiritual development.

Q.18. How many kinds of knowledge are there in this stage of spiritual development?

Ans. There are three kinds of knowledge (sensory, scriptural,clairvoyance) in this stage.

Q.19. In which conditions this stage of spiritual development is found in incompletestage?

Ans. This stage of spiritual development is found in incomplete stage in all the four conditions.

Q.20. In which hell is this stage of spiritual development in incomplete condition found?

Ans. This stage of spiritual development is found in incomplete condition only in the first hell (from second to seven hell it is in complete condition).

Q.21. In which biological kingdom is this stage of spiritual development in incomplete condition found?

Ans. This stage of spiritual development in incomplete state is found only in land of enjoyment, however, it is found in complete state in all the stages.

Q.22. In which human destiny is this stage of spiritual development in incomplete state found?

Ans. This stage of spiritual development in incomplete state is found only in land of enjoyment of human destiny.

Q.23. In which celestial destiny is this stage of spiritual development in incomplete state found?

Ans. This stage of spiritual development in incomplete state is found only in holy assembly place of celestial destiny.

Q.24. In which gender is this stage of spiritual development in incomplete state found?

Ans. In incomplete state this stage of spiritual development is found in neuter and masculine genders, not a bit in feminine gender.

Q.25. Where is this stage of spiritual development found in neuter gender?

Ans. In neuter gender it is found only in the first hell (in other destinies, it is found only in masculine gender in incomplete state.)

Q.26. How many colours (aura) are found in this stage of spiritual development?

Ans. All the six colorations are found in this stage of spiritual development(black, blue, grey, yellow, pink and white).

Q.27. Which condition is bound in the next destiny by the dwellers in the fourth stage of spiritual development?

Ans. If the dweller of this stage is celestial being or hell dweller, the same binds for the human destiny and if plant, animal or human being then binds for the celestial destiny.

V. देशविरत गुणस्थान

प्रश्न 1. देशविरत गुणस्थान किसे कहते हैं?

उत्तर : अप्रत्याख्यानावरण कषाय के सर्वघाती स्पर्धकों का उदयाभावी क्षय, उन्हीं का सद्अवस्था रूप उपशम तथा प्रत्याख्यानावरण के सर्वघाती स्पर्धकों का व संज्वलन के देशघाती स्पर्धकों का उदय होना संयमासंयम अथवा देशविरत गुणस्थान कहलाता है।

प्रश्न 2. संयमासंयम का शाब्दिक अर्थ क्या है?

उत्तर : संयम + असंयम = संयमासंयम। संयम अर्थात् त्रस हिंसा का त्याग, असंयम अर्थात् स्थावर हिंसा का त्याग न करना।

प्रश्न 3. इस गुणस्थान को प्राप्त करने के लिए उपशम सम्यक्त्व के साथ कितने करण करना आवश्यक है?

उत्तर : इस गुणस्थान को प्राप्त करने के लिए उपशम सम्यक्त्व के साथ तीन करण [अध:करण, अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण] करना आवश्यक है।

प्रश्न 4. क्षायिक तथा वेदक सम्यक्त्व के साथ कितने करण करना आवश्यक है?

उत्तर : क्षायिक तथा वेदक सम्यक्त्व के साथ दो करण [अध:करण, अपूर्वकरण] करना आवश्यक है।

प्रश्न 5. यह गुणस्थान कहाँ-कहाँ पाया जाता है?

उत्तर : यह गुणस्थान केवल कर्मभूमि के तिर्यंच व मनुष्य गति में ही पाया जाता है।

प्रश्न 6. इस गुणस्थान में कौन-कौन से भाव पाये जाते हैं?

उत्तर : इस गुणस्थान में एक क्षायोपशमिक [चारित्र मोहनीय की अपेक्षा] भाव पाया जाता है।

प्रश्न 7. इस गुणस्थान में शुद्धोपयोग होता है कि नहीं?

उत्तर : इस गुणस्थान में शुद्धोपयोग कदापि नहीं होता।

प्रश्न 8. इस गुणस्थान में कितनी शल्य पायी जाती?

उत्तर : इस गुणस्थान में एक भी शल्य नहीं पायी जाती।

प्रश्न 9. पंचम गुणस्थानवर्ती यदि आयु का बन्ध करे तो कौनसी आयु का बन्ध करेगा?

उत्तर : पंचम गुणस्थानवर्ती यदि आयु का बंध करे तो सिर्फ देव आयु का ही बन्ध करेगा।

प्रश्न 10. इस गुणस्थान में कितनी कषायों का उदय है तथा कितनी का अनुदय?

उत्तर : इस गुणस्थान में 17 कषायों का उदय, 8 कषायो का अनुदय है।

प्रश्न 11. इस गुणस्थान में कितने ज्ञान होते हैं?

उत्तर : इस गुणस्थान में तीन ज्ञान [मति, श्रुत, अवधि] होते हैं।

प्रश्न 12. इस गुणस्थान में कितनी लेश्या पाई जाती हैं?

उत्तर : इस गुणस्थान में 3 शुभ लेश्या [पीत, पद्म, शुक्ल] पाई जाती हैं।

प्रश्न 13. इस गुणस्थान में कितने दर्शन पाये जाते हैं?

उत्तर : इस गुणस्थान में 3 दर्शन [चक्षु, अचक्षु, अवधि] पाये जाते हैं।

प्रश्न 14. पंचम गुणस्थान कौन प्राप्त कर सकता है?

उत्तर : सम्यग्दृष्टि व भद्र मिथ्यादृष्टि जिसने आगामी किसी भी आयु का बन्ध न किया हो अथवा देवायु का बन्ध किया हो और कर्मभूमि का मनुष्य व तिर्यंच हो। [क्योंकि भोगभूमि में यह गुणस्थान नहीं होता।]

प्रश्न 15. इस गुणस्थान को देशविरत क्यों कहा गया?

उत्तर : एक देश संयम की अपेक्षा से इस गुणस्थान को देशविरत कहा गया है।

प्रश्न 16. इस गुणस्थान से आगे कौन-सी प्रकृति का बन्ध नहीं होता?

उत्तर : इस गुणस्थान से आगे प्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभ का बन्ध नहीं होता।

प्रश्न 17. इस गुणस्थान से आगे कौन-सी प्रकृतियों का उदय व उदीरणा नहीं होती?

उत्तर : इस गुणस्थान से आगे तिर्यंचगति, तिर्यंचायु, उद्योत, नीच गोत्र, प्रत्याख्यानावरण चतुष्क का उदय व उदीरणा नहीं होती।

प्रश्न 18. इस गुणस्थान में जीवों की संख्या कितनी हो सकती है?

उत्तर : इस गुणस्थान में असंख्यात अर्थात् पल्योपम के असंख्यातवें भाग प्रमाण असंख्यात, लेकिन मनुष्य अधिक से अधिक 13 करोड़ हो सकते हैं।

प्रश्न 19. इस गुणस्थान का काल कितना है?

उत्तर : इस गुणस्थान का जघन्य काल-अन्तर्मुहूर्त, उत्कृष्ट-अन्तर्मुहूर्त कम 1 पूर्व कोटि होता है।

प्रश्न 20. इस गुणस्थान का अन्तर कितना है?

उत्तर : नाना जीवों की अपेक्षा निरंतर है, एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन काल है।

V. Stage of Partial Abstinence Spiritual Development

Q.1. What is called Stage of Partial Abstinence Spiritual Development?

Ans. Non-operational destruction of fruition group of karmic molecules of partial vow preventing toxic emotions, their good form of subsidence and the rise of the fruition group of karmic molecules of complete vow preventing toxic emotions and perfect conduct destroying toxic emotions is called discipline cum indiscipline stage or the Stage of Partial Abstinence Spiritual Development.

Q.2. What is the literal meaning of discipline cum indiscipline stage?

Ans. Restraint + non-restraint = restraint cum non-restraint. Restraint means to give up violence, non-restraint means not giving up violence of stationary souls.

Q.3. How many operations with subsidence right faith are essential to achieve this stage of spiritual development?

Ans. Three operations (slow, fast, extremely fast) with subsidence right faith are essential to achieve this stage.

Q.4. How many operations with annihilating and destructive subsidence right belief are essential?

Ans. Two operations(slow and fast) with annihilating and destructive subsidence right belief are essential.

Q.5. Where does this stage of spiritual development is found?

Ans. This stage of spiritual development is found only in biological and human lives dwelling on the land of action.

Q.6. How many and what feelings are found in this Stage of Partial Abstinence Spiritual Development?

Ans. In this stage only feeling of inclination due to annihilation cum subsidence of karma(in respect to conduct deluding) is found.

Q.7. Whether perfect perception takes place in this stage or not?

Ans. Not a bit of perfect perception takes place in this stage.

Q.8. How many stings are found in this stage?

Ans. Not a single sting is found in this stage.

Q.9. If the fifth stage of spiritual development forms a age bond, of what age it should form the bond?

Ans. If the fifth stage dweller forms age bond, he will form the bond of celestial age.

Q.10. What number of toxic evils are risen and what number are dropped in this stage of spiritual development?

Ans. There 17 toxic evils are risen and 8 are dropped in this stage of spiritual development.

Q.11. What kinds of knowledge are there in this stage of spiritual development?

Ans. There are three kinds of knowledge (sensory, scriptural, clairvoyance) in this stage of spiritual development.

Q.12. How many colours are found in this stage of spiritual development?

Ans. There are three auspicious colours (yellow, pink, white) in this stage of spiritual development.

Q.13. How many visions are found in this stage?

Ans. There are three visions (ocular perception, perception except for vision, clairvoyance) found in this stage.

Q.14. Who can achieve this fifth stage of spiritual development?

Ans. Right faithed and civilized wrong faithed who has not formed bond of any age or formed the celestial bond. Either a human or a biological entity of land of action (because this stage is not there in the land of enjoyment).

Q.15. Why is this stage of spiritual development called partial abstinence?

Ans. This stage is called partial abstinence in respect of partial restraint.

Q.16. Which characteristic is not bonded ahead of this stage of spiritual development?

Ans. There is no bond formation ahead of this stage like complete vow preventing passions- anger, ego, illusion, greed.

Q.17. Which characteristics do not rise or drop ahead of this stage?

Ans. There is no biological destiny, biological age, cool body, lower status of birth, rise of complete vow preventing four passions and pre mature fruition of karma ahead of this stage.

Q.18. What can be the number of living beings in this stage?

Ans. There can be a num?ber equal to infinitieth part of infinite of pit measured time, however, in respect of human beings, it is13 crores at the most.

Q.19. What is the duration of this stage?

Ans. The lowest duration in this stage is antarmuhoort, and the highest is one antarmuhoort less than poorv koti.

Q.20. What is the diffrance of this spiritual development?

Ans. The enhectation of many beings is constant, " " " a single organism lowest duration in this stage is antarment hoort, and the highest is some less than half matter ayclic change period.

VI. प्रमत्त–संयत गुणस्थान

प्रश्न 1. प्रमत्त संयत गुणस्थान किसे कहते हैं?

उत्तर : प्रत्याख्यानावरण कषाय के सर्वघाती स्पर्धकों का उदयाभावी क्षय, उन्हीं का सद्अवस्था रूप उपशम तथा संज्वलन के देशघाती स्पर्धकों का उदय होना प्रमत्त संयत गुणस्थान कहलाता है।

प्रश्न 2. प्रमत्त संयत गुणस्थान का शाब्दिक अर्थ बताइए?

उत्तर : प्रमत्त यानी प्रमाद, संयत यानी संयमी अर्थात् चारित्र मोहनीय कर्म का क्षयोपशम होते हुए भी जिस मुनि के प्रमाद का सद्भाव पाया जाता है, वह प्रमत्त संयत गुणस्थान कहलाता है।

प्रश्न 3. क्या इस गुणस्थान में हमेशा साधु पाये जाते हैं?

उत्तर : हाँ, इस गुणस्थान में हमेशा साधु पाये जाते हैं।

प्रश्न 4. प्रमाद किसे कहते हैं?

उत्तर : धार्मिक क्रियाओं में अपने कर्त्तव्यों को करने में अनुत्साह होना अथवा आलस करना प्रमाद कहलाता है।

प्रश्न 5. प्रमाद कितने होते हैं?

उत्तर : प्रमाद 15 होते हैं।

प्रश्न 6. 15 प्रमाद के नाम बताइए?

उत्तर : 4 कषाय [क्रोध, मान, माया, लोभ], 4 विकथा [स्त्री कथा, चोर कथा, राज कथा, भोजन कथा], 5 इन्द्रियों के विषय, निद्रा और प्रेम (स्नेह)।

प्रश्न 7. इस गुणस्थान के जीव कहाँ–कहाँ पर निवास करते हैं?

उत्तर : इस गुणस्थान के जीव अढ़ाई द्वीप में ही निवास करते हैं।

प्रश्न 8. अढ़ाई द्वीप क्या है?

उत्तर : एक जम्बूद्वीप, एक धातकीखण्ड द्वीप, आधा पुष्करवर द्वीप अर्थात् $1 + 1 + ½ = 2\frac{1}{2}$ द्वीप।

प्रश्न 9. इस गुणस्थान का काल कितना है?

उत्तर : इस गुणस्थान का जघन्य काल 1 समय, उत्कृष्ट काल – अन्तर्मुहूर्त।

प्रश्न 10. इस गुणस्थान में 1 समय का काल कैसे अथवा कब बनता है?

उत्तर : मरण की अपेक्षा (कोई जीव 6वें गुणस्थान में आया एक समय रहा फिर मरण हो गया) एक समय बनता है।

प्रश्न 11. इस गुणस्थानवर्ती जीवों का नाना जीव व एक जीव की अपेक्षा अंतर कितना है?

उत्तर : इस गुणस्थानवर्ती जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा–निरन्तर, एक जीव की अपेक्षा–जघन्य–अन्तर्मुहूर्त व उत्कृष्ट–कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन अंतर पाया जाता है।

प्रश्न 12. इस गुणस्थान में कितने जीव–समास पाये जाते हैं?

उत्तर : इस गुणस्थान में दो जीव समास पाये जाते हैं–संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक व अपर्याप्तक।

प्रश्न 13. यह गुणस्थान अपर्याप्तक अवस्था में कब बनता है?

उत्तर : जब मुनिराज को तीर्थ यात्रा करनी हो अथवा शंका का समाधान करना हो तब उनके शरीर से एक आहारक पुतला निकलता है जब तक आहारक पुतला पूर्ण अर्थात् पर्याप्त नहीं होता है तब तक अपर्याप्तक अवस्था बनती है।

प्रश्न 14. इस गुणस्थान में योग कितने पाये जाते हैं?

उत्तर : इस गुणस्थान में 11 [4 मन के, 4 वचन के, आहारक, आहारक मिश्र, औदारिक काय] योग पाये जाते हैं।

प्रश्न 15. इस गुणस्थान में कितने सम्यक्त्व पाये जाते हैं?

उत्तर : इस गुणस्थान में तीन सम्यक्त्व (उपशम, क्षायिक व क्षयोपशम सम्यक्त्व) पाये जाते हैं।

प्रश्न 16. इस गुणस्थान में जीवों की संख्या कितनी हो सकती हैं?

उत्तर : इस गुणस्थान में जीवों की संख्या 5,93,98,206 हो सकती हैं।

प्रश्न 17. छठवें गुणस्थान में कितने वेद पाये जाते हैं?

उत्तर : छठवें गुणस्थान में तीनों वेद पाये जाते हैं।

प्रश्न 18. इस गुणस्थान में स्त्री व नपुंसक वेद कैसे हो सकता है?

उत्तर : इस गुणस्थान में द्रव्य से तो पुरुष वेद ही होता है पर स्त्री व नपुंसक वेद भाव से हो सकता है।

प्रश्न 19. इस गुणस्थान में मुख्यता से कौन सा भाव पाया जाता है?

उत्तर : इस गुणस्थान में मुख्यता से क्षयोपशम भाव (चारित्र मोहनीय की अपेक्षा से) पाया जाता है।

प्रश्न 20. इस गुणस्थान में कितनी कषायों का उदय व कितनी का अनुदय रहता है?

उत्तर : इस गुणस्थान में संज्वलन चतुष्क व हास्यादि नो कषायों का उदय व शेष 12 कषायों का अनुदय होता है।

प्रश्न 21. इस गुणस्थान में कितने ज्ञान होते हैं?

उत्तर : इस गुणस्थान में अधिक से अधिक चार तथा कम से कम दो ज्ञान हो सकते हैं।

प्रश्न 22. इस गुणस्थान में चार, तीन व दो ज्ञान किस तरह हो सकते है? विवरण दीजिए।

उत्तर : इस गुणस्थान में यदि चार ज्ञान होते है तो मति, श्रुत, अवधि,

मन:पर्यय ज्ञान, यदि तीन होते है तो मति, श्रुत व अवधिज्ञान अथवा मति, श्रुत व मन:पर्यय ज्ञान और यदि दो होते हैं तो मति और श्रुतज्ञान होते हैं।

प्रश्न 23. 6वें गुणस्थान वाले जीव के कितने मार्ग हैं?

उत्तर : 6वें गुणस्थान वाले जीव के 6 मार्ग हैं। एक ऊपर का सातवाँ गुणस्थान और पाँच नीचे के पाँचों गुणस्थान अर्थात् 6वें गुणस्थानवर्ती जीव 7,5,4,3,2,1 गुणस्थानों में जा सकता है।

प्रश्न 24. इस गुणस्थान से आगे कौन-सी प्रकृतियों का बन्ध नहीं होता?

उत्तर : इस गुणस्थान से आगे असाता, अशुभ, अयशकीर्ति, अस्थिर, अरति और शोक इन 6 प्रकृतियों का बन्ध नहीं होता।

VI. Restrained with Remissness Stage of Spiritual Development

Q.1. What is called Restrained with Remissness Stage of Spiritual Development?

Ans. The rising decay of all destructive karmic super-variform of passion obscuring right conduct, and the rise of karmic matters which obscure partially the good state of subsidence and gleaming passions is called Restrained with Remissness Stage of Spiritual Development.

Q.2. Tell the literal meaning of Restrained with Remissness Stage of Spiritual Development?

Ans. Pramatt- laziness, negligence; sanyam- restrained, self-control. In other words, the monk in spite of destruction cum subsidence of conduct deluding karma having existence of laziness or negligence, he is in Restrained with Remissness Stage of Spiritual Development.

Q.3. Do only monks are found in Restrained with Remissness Stage of Spiritual Development?

Ans. Yes, only monks are found in this stage of spiritual development.

Q.4. What is called laziness or negligence?

Ans. Lack of interest in performing one's duty in religious activities is called laziness or negligence.

Q.5. What is the number of kinds of laziness?

Ans. There are fifteen kinds of laziness.

Q.6. Tell the names of fifteen kinds of laziness?

Ans. 4 passions(anger, ego, illusion, greed), 4 non-religious tales(women tales, thief tales, king's tales, food tales), 5 senses, sleep and affection.

Q.7. Where do the living beings of this stage dwell?

Ans. The living beings belonging to this stage dwell in adhahi dweep (adhai islands).

Q.8. What is Adhai Dweep ?

Ans. One Jumboodweep, one Dhatakikhand, half pushkarvar dweep, in other words 1+1+1/2=2 ½ islands.

Q.9. What is the duration of this stage?

Ans. The duration of this stage of spiritual development is the lowest- single unit, highest- antarmuhoort.

Q.10. How and when is this single unit time formed in this stage of spiritual development?

Ans. In respect to death (some living being came into this stage, lived there for a single time and died) is single unit time is formed.

Q.11. What is the difference in respect of various living beings and single living being with the living beings of this stage?

Ans. The difference of the living beings of this stage in respect to various living beings is continuous and in respect to single living being the lowest is antarmuhoort and the highest is some less than half matter cyclic change period.

Q.12. How many kinds of living beings are found in this stage of spiritual development?

Ans. Two five sensed living beings endowed with mind fully developed and undeveloped.

Q.13. When does this stage of spiritual development get formed undeveloped?

Ans. When the monk has to set for a journey or has to clarify a doubt. Then an assimilative effigy emits out of his body, and this is an undeveloped condition.

Q.14. How many vibrations (thought activities) are found in this stage of spiritual development?

Ans. 11 vibrations are found(4 of the mind, 4 of the speech, assimilative mixed, physical body).

Q.15. How many kinds of right-belief are found in this stage of spiritual development?

Ans. Three kinds of right belief are found in this stage (subsidence, destructional right belief, gained after annihilation and subsidence.).

Q.16. What can be the number of living beings in this stage?

Ans. There can be 5,93,98,206 living beings in this stage of spiritual development.

Q.17. How many genders are present in this stage of spiritual development?

Ans. All the three genders are there in this sixth stage of spiritual development.

Q.18. How are there neuter and feminine genders?

Ans. Materialistically , there can be masculine gender in this stage, however, from emotional point of view there are feminine and neuter genders.

Q. 19. Which disposition is mainly found in this stage of spiritual development?

Ans. Mainly destruction cum subsidence(in respect of conduct deluding) is found in this stage.

Q.20. Which passions are in rising state and which passions are not in rising state in this stage?

Ans. There is rise of four conduct obscuring and laughter etc. nine toxic emotions, and there is norising of remaining 12 passions in this stage of spiritual development.

Q.21. How many kinds of knowledge are there in this stage of spiritual development?

Ans. At the most four kinds of knowledge are there, however, in respect to karmas, the number is two less.

Q.22. How these four, three and two kinds of knowledge can take place in this stage. Give details.

Ans. If there are four kinds of knowledge in this stage, these are- sensory, scriptural, clairvoyance, psychic knowledge; if there are three kinds, these are- sensory, scriptural and

clairvoyance or sensory, scriptural and psychic; and if there two kinds, these are- sensory and scriptural kinds of knowledge.

Q.23. How many paths are there for the dwellers of the sixth stage of spiritual development?

Ans. There are six paths of the living beings belonging to the sixth stage. One is above the existing sixth stage, means seventh stage and all the five of the lower stages, the living being can move to these stages.

Q.24. Which characteristics do not form bonds ahead of this stage of spiritual development?

Ans. Six characteristics- pain-causing, inauspicious, disgrace, unstable, dislike, sorrow do not form bonds ahead of this stage of spiritual development.

VII. अप्रमत्त संयत गुणस्थान

प्रश्न 1. अप्रमत्त संयत गुणस्थान किसे कहते हैं?

उत्तर : संज्वलन कषाय व नो कषाय का मंद उदय होने पर प्रमाद रहित संयम भाव को अप्रमत्त संयत कहते हैं।

प्रश्न 2. अप्रमत्त संयत के कितने भेद हैं? नाम बताइए।

उत्तर : अप्रमत्त संयत के दो भेद हैं- (1) सातिशय अप्रमत्त संयत (2) स्वस्थान अप्रमत्त संयत।

प्रश्न 3. सातिशय अप्रमत्त संयत किसे कहते हैं?

उत्तर : जहाँ जीव 8वें गुणस्थान की ओर अर्थात् श्रेणी चढ़ने के उन्मुख हो अथवा अगले ही समय में वो 8वां गुणस्थान प्राप्त कर ही लेगा उसे सातिशय अप्रमत्त संयत कहते हैं।

प्रश्न 4. स्वस्थान अप्रमत्त संयत किसे कहते हैं?

उत्तर : किसी कारण वश संक्लेश परिणाम हो जाने से 6वें गुणस्थान में आना स्वस्थान अप्रमत्त संयत कहलाता है।

प्रश्न 5. अप्रमत्त संयत गुणस्थानवर्ती जीवों की संख्या कितनी हो सकती है?

उत्तर : अप्रमत्त संयत गुणस्थानवर्ती जीवों की संख्या 2,96,99,103 हो सकती है।

प्रश्न 6. अप्रमत्त संयत गुणस्थानवर्ती जीवों का अन्तर नाना जीवों व एक जीव की अपेक्षा कितना होता है?

उत्तर : अप्रमत्त संयत गुणस्थानवर्ती जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा- निरन्तर, एक जीव की अपेक्षा जघन्य से अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट- अर्द्धपुद्गल परावर्तन अन्तर होता है।

प्रश्न 7. इस गुणस्थान में मुख्यता से कौन सा भाव पाया जाता है?

उत्तर : इस गुणस्थान में मुख्यता से क्षयोपशम भाव पाया जाता है।

प्रश्न 8. इस गुणस्थान में नाना जीव व एक जीव की अपेक्षा जघन्य व उत्कृष्ट काल कितना है?

उत्तर : इस गुणस्थान में नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल, एक जीव की अपेक्षा जघन्य से एक समय, उत्कृष्ट से अन्तर्मुहूर्त काल होता है।

प्रश्न 9. अप्रमत्त संयत जीव संक्लेश परिणामों से व विशुद्ध परिणामों से कहाँ जाता है?

उत्तर : अप्रमत्त संयत गुणस्थानवर्ती जीव संक्लेशता से प्रमत्त संयत नामक 6वें गुणस्थान में तथा विशुद्ध परिणामों से अपूर्वकरण नामक 8वें गुणस्थान में जाता है।

प्रश्न 10. अप्रमत्त संयत गुणस्थानवर्ती जीव कितनी निद्राओं पर विजय प्राप्त कर लेता है?

उत्तर : अप्रमत्त संयत गुणस्थानवर्ती जीव निद्रा-निद्रा, प्रचला-प्रचला, स्त्यानगृद्धि नामक तीन निद्राओं पर विजय प्राप्त कर लेता है।

प्रश्न 11. इस गुणस्थान में कितने ज्ञान पाये जाते हैं?

उत्तर : इस गुणस्थान में चार, तीन, दो ज्ञान पाये जाते है जिसका विवरण पूर्व के गुणस्थान के समान समझना चाहिए।

VII. Vigilantly Restrained Stage of Spiritual Development

Q.1. What is called Vigilantly Restrained Stage of Spiritual Development?

Ans. Restrained without negligence on the slow rise of gleamy and quasi passions is called Vigilantly Restrained Stage of Spiritual Development.

Q.2. How many kinds are there of vigilantly restrained stage? Tell the names.

Ans. There are two kinds of vigilantly restrained stages- 1. Execellent self-control, 2. Self staged total self-control.

Q.3. What is called vigilant excellent self-control?

Ans. The control through which the living being intends to ascend towards the 8 stage or the living being surely achieves the 8 stage, is called vigilant excellent self-control.

Q.4. What is called self-staged total self-control?

Ans. Dropping to the sixth stage due to some depressive cause is called self-staged total self-control.

Q.5. What can be the number of living beings dwelling in Vigilantly Restrained Stage of Spiritual Development?

Ans. The number of living beings dwelling in this stage can be 2,96,99,103.

Q.6. What is the difference of the living beings dwelling in Vigilantly Restrained Stage of Spiritual Development in respect to various living beings and in respect to single living being?

Ans. The difference of the living beings in Vigilantly Restrained Stage of Spiritual Development in respect to various living beings is -incessant, and in respect to single living being, the lowest is antarmuhoort and the highest is half matter cyclic change period.

Q.7. What kind of feeling is mainly found in this stage?

Ans. Mainly feeling of destruction cum subsidence is found in this stage.

Q.8. What is the lowest and the highest duration in this stage in respect to various living beings and single living being?

Ans. In respect to various living beings, the duration is all the time same; in respect to single living being the lowest duration is single unit time and the highest duration is antarmuhoort duration.

Q.9. Where does the living being belonging to this stage leave for with depressive thought activities and with passion free pure activities?

Ans. The living being belonging to this stage with depressive thought activities leaves for 6^{th} stage and with passion free pure activities leaves for the 8^{th} stage named stage of unprecedented degree of purity.

Q.10. On how many sleeps does the living being belonging toVigilantly Restrained Stage of Spiritual Development win over?

Ans. The living being belonging to Vigilantly Restrained Stage of Spiritual Development win over three kinds of sleep-deep sleep, deep drowsiness and somnambulism.

Q.11. What kinds of knowledge are found in this stage?

Ans. Four, three and two kinds of knowledge are found in this stage, in the same manner as these were in the previous stage.

VIII. अपूर्वकरण गुणस्थान

प्रश्न 1. अपूर्वकरण गुणस्थान किसे कहते हैं?

उत्तर : जब मोहनीय कर्म के क्षय या उपशम से जो अपूर्व परिणाम होते हैं उसे अपूर्वकरण गुणस्थान कहते हैं।

प्रश्न 2. अपूर्वकरण का शाब्दिक अर्थ क्या है?

उत्तर : अ यानी नहीं, पूर्व यानि पहले, करण यानी परिणाम अर्थात् पूर्व में कभी भी नहीं हुये हैं, ऐसे अपूर्व-अपूर्व परिणामों का होना अपूर्वकरण गुणस्थान कहलाता है।

प्रश्न 3. अपूर्वकरण गुणस्थानवर्ती जीवों के परिणाम कैसे होते हैं?

उत्तर : यहाँ समान समयवर्ती जीवों के परिणाम समान व असमान दोनों प्रकार के होते हैं किन्तु भिन्न समयवर्ती जीवों के परिणाम भिन्न ही होते हैं, सदृश नहीं होते हैं क्योंकि ये जीव प्रति समय अनन्तगुणी विशुद्धि को लिए हुये होते हैं।

प्रश्न 4. इस गुणस्थान में कितने परिणाम होते हैं?

उत्तर : अपूर्वकरण गुणस्थान के एक समय के परिणाम असंख्यात लोक प्रमाण होते हैं और क्रमशः आगे के समय के परिणाम असंख्यात लोक प्रमाण गुणे-गुणे होते जाते हैं।

प्रश्न 5. अपूर्वकरण गुणस्थान कितने प्रकार का होता है?

उत्तर : अपूर्वकरण गुणस्थान दो प्रकार का होता हैं-(1) क्षपक श्रेणी (2) उपशम श्रेणी।

प्रश्न 6. श्रेणी किसे कहते हैं?

उत्तर : परिणामों की क्रमबद्ध पंक्ति को श्रेणी कहते हैं।

प्रश्न 7. क्षपक श्रेणी किसे कहते हैं?

उत्तर : कर्मों का क्षय करते हुए श्रेणी चढ़ना क्षपक श्रेणी कहलाती है।

प्रश्न 8. उपशम श्रेणी किसे कहते हैं?

उत्तर : कर्मों को दबाते हुए श्रेणी चढ़ना उपशम श्रेणी कहलाती है।

प्रश्न 9. इस गुणस्थान का काल कितना है?

उत्तर : इस गुणस्थान का काल जघन्य से एक समय, उत्कृष्ट-अन्तर्मुहूर्त है।

प्रश्न 10. इस गुणस्थान में कितने विशेष कार्य होने लग जाते हैं?

उत्तर : इस गुणस्थान में 4 विशेष कार्य होने लग जाते हैं।

(1) गुण श्रेणी निर्जरा - प्रत्येक समय में असंख्यात-असंख्यात गुणा द्रव्य उदयावली में दिया जाता है उसे गुण श्रेणी निर्जरा कहते हैं।

(2) गुण संक्रमण - प्रत्येक समय में अबन्ध प्रकृति का द्रव्य स्वजातीय प्रकृति में असंख्यात - असंख्यात गुणा दिया जाता है अथवा बदला जाता है उसे गुण संक्रमण कहते हैं। जैसे - नीच गोत्र का द्रव्य उच्च गोत्र में देना।

(3) स्थितिकांडक घात - पूर्व कर्म की स्थिति को प्रत्येक समय में फाली रूप से नीचे की स्थिति में लाना स्थितिकांडक कहलाता घात है।

(4) अनुभाग कांडक घात - प्रत्येक समय में कांडक रूप से फलदान की शक्ति को कम करना अनुभाग कांडक घात कहलाता है।

प्रश्न 11. उदयावली क्या है?

उत्तर : एक आवली काल में उदय में आने योग्य कर्म निषेकों की पंक्ति को उदयावली कहते हैं।

प्रश्न 12. कांडक किसे कहते हैं?

उत्तर : फाली के समूह को कांडक कहते हैं।

प्रश्न 13. फाली किसे कहते हैं?

उत्तर : एक समय में निकलने वाले कर्म द्रव्य को फाली कहते हैं।

प्रश्न 14. इस गुणस्थान में मुख्यता से कौन से भाव होते हैं?

उत्तर : इस गुणस्थान में मुख्यता से औपशमिक, क्षायिक भाव होते हैं।

प्रश्न 15. इस गुणस्थान में जीवों की संख्या कितनी है?

उत्तर : इस गुणस्थान में उपशम श्रेणी में 299 तथा क्षपक श्रेणी में 598 कुल = 897 जीव हो सकते हैं।

VIII. Stage of Unprecedented Degree of Purity in Spiritual Development

Q.1. What is called stage of unprecedented degree of purity in spiritual development?

Ans. When unprecedented outcome due to the decay or subsidence in deluding karmas is got, this stage is called Unprecedented Degree of Purity in Spiritual Development.

Q.2. What is the literal meaning of Unprecedented Degree of Purity?

Ans. Unprecedented means never done before, therefore, incoming of such unprecedented results at this stage makes it the stage of Unprecedented Degree of Purity in Spiritual Development.

Q.3. How are the thought transition of the living beings in Unprecedented Degree of Purity in Spiritual Development?

Ans. Here the thought transitions of simultaneously living beings are of both kinds- similar and dissimilar, however, the thought transition of the living beings belonging to different times are always dissimilar, not similar. It is because these living beings always bear infinite purity.

Q.4. What thought transitions are there in this stage of Unprecedented Degree of Purity in Spiritual Development?

Ans. The thought transitions in unit time in this stage are infinite expansiveness of universe and become more and more multiplied in the time that follows.

Q.5. What are the kinds of Unprecedented Degree of Purity in Spiritual Development?

Ans. There are two kinds of Unprecedented Degree of Purity in Spiritual Development-1. Ladder of Subsidence, 2- Ladder of Annihilation.

Q.6. What is called ladder?

Ans. Serially arranged thought transitions are called ladder.

Q.7. What is called ladder of destruction?

Ans. Ascending a ladder destroying karmas is called ladder of destruction.

Q.8. What is called ladder of subsidence?

Ans. Ascending a ladder suppressing karmas is called ladder of subsidence.

Q.9. What is the duration of this stage?

Ans. In respect to the lowest, it is unit time and in respect to the highest it is antarmuhoort.

Q.10. What specific karmas start to take place in this stage of spiritual development?

Ans. Four specific karmas start to take place in this stage-

(1). Dissociation of karma from soul in geometrical progression- Every time, infinite times infinite matter of non-bondage nature matter is supplied in fruition time after induction period.

(2). Attributive Transition- Every time, innumerable times non-bondage nature matter is supplied to same nature matter or changed into it, is called attributive transition. For example- The lower caste matter is transited to the higher caste matter.

(3). Destruction of Duration Bondage- Every time, transition of previous karmic matter in a unit time to the lower stage is called destruction of duration bondage.

(4). Destruction of fruition Intensity- Every time, reducing the strength of resulting benefit in innumerable part is called destruction of fruition intensity.

Q.11. What is fruition time after induction period?

Ans. The queue of specific karmic aggregate able to be risen in a time unit (avali) is called fruition time after induction period.

Q.12. What is called Kandaka (innumerable part of angula)?

Ans. Group of Phali (karmic matter emitting in a unit time) is called Kandaka.

Q.13. What is called phali?

Ans. Karmic matter emitting in a unit time is called phali.

Q.14. What are the main dispositions in this stage?

Ans. Destructional disposition is the main disposition in this stage.

Q.15. What are the number of living beings in this stage?

Ans. In subsidence ladder, the number of living beings is 299 and the in destructional ladder it is 598 totaling 897 living beings.

IX. अनिवृत्तिकरण गुणस्थान

प्रश्न 1. अनिवृत्तिकरण गुणस्थान किसे कहते हैं?

उत्तर : जब मोहनीय कर्म की प्रकृतियों के क्षय अथवा उपशम से एक समयवर्ती जीवों के परिणाम व भिन्न समयवर्ती जीवों के परिणाम असमान ही हो तथा समान समयवर्ती जीवों के परिणाम समान ही होंगे असमान नहीं होते है उसे अनिवृत्तिकरण गुणस्थान कहते हैं।

प्रश्न 2. इस गुणस्थान का दूसरा नाम क्या है?

उत्तर : इस गुणस्थान का दूसरा नाम बादर साम्पराय गुणस्थान है।

प्रश्न 3. इस गुणस्थान में कितने परिणाम होते हैं?

उत्तर : इस गुणस्थान का जितना काल है अर्थात् एक समय का एक ही परिणाम होता है, द्वितीय समय का दूसरा परिणाम होता है, इस प्रकार अन्तर्मुहूर्त में जितने समय है उतने ही परिणाम होते हैं।

प्रश्न 4. क्षपक श्रेणी में प्रकृतियों के क्षय की अपेक्षा से इस गुणस्थान को कितने भागों में किस प्रकार बाँटा गया है?

उत्तर : क्षपक श्रेणी में प्रकृतियों के क्षय की अपेक्षा से इस गुणस्थान को 9 भागों में बाँटा गया है वह इस प्रकार है-

(1) पहले भाग में - निद्रा - निद्रा, प्रचला - प्रचला, स्त्यानगृद्धि तथा नरकगत्यादि 13 प्रकृतियों का इस प्रकार 16 प्रकृतियों का क्षय होता है।

(2) दूसरे भाग में - अप्रत्याख्यानावरण, प्रत्याख्यानावरण की कुल 8 प्रकृतियों का क्षय होता है।

(3) तीसरे भाग में - नपुंसक वेद का

(4) चौथे भाग में - स्त्री वेद का।

(5) पाँचवें भाग में - हास्यादि 6 नो कषाय का।

(6) छठवें भाग में - पुरुष वेद का

(7) सातवें भाग में - संज्वलन क्रोध का

(8) आठवें भाग में - संज्वलन मान का

(9) नवमें भाग में - संज्वलन माया का क्षय होता है।

प्रश्न 5. अनिवृत्तिकरण गुणस्थान का शाब्दिक अर्थ क्या है?

उत्तर : भेद रहित वृत्ति को अनिवृत्ति कहते हैं अर्थात् समान-समयवर्ती परिणामों की भेद रहित वृत्ति को अनिवृत्ति कहते हैं।

प्रश्न 6. इस गुणस्थान में मुख्यता से कौन सा भाव पाया जाता है?

उत्तर : इस गुणस्थान में मुख्यता से औपशमिक व क्षायिक भाव पाया जाता है।

प्रश्न 7. इस गुणस्थान में जीवों की संख्या कितनी हो सकती है?

उत्तर : इस गुणस्थान में उपशम श्रेणी में-299, क्षपक श्रेणी - 598 कुल = 897 जीव हो सकते है।

प्रश्न 8. इस गुणस्थान का काल कितना है?

उत्तर : इस गुणस्थान का काल जघन्य - एक समय, उत्कृष्ट से - अन्तर्मुहूर्त होता है।

IX. The Stage of Self-Realization Through Self-Meditation (Suppression of Certain Deluding Karmas) in Spiritual Development

Q.1. What is called Stage of Self-Realization Through Self-Meditation in Spiritual Development?

Ans. When thought-activities of simultaneously living beings and different times living beings due to decay or subsidence of the nature of deluding karma are dissimilar and the thought processes of the simultaneously living being must be similar and not dissimilar, that stage is called the Stage of Self-Realization Through Self-Meditation in Spiritual Development.

Q.2. What is the other name of this stage of Spiritual Development?

Ans. The other name of this stage is called Badar Samparay (Gross Passion stage or the 9th stage).

Q.3. What number of transitions take place in this stage?

Ans. It is equal to the duration of this stage, in other words there is single transition in unit time, the restraint is the second transition, likewise in an antarmuhoort, it is equal to the duration of it.

Q.4. In how many parts this stage of spiritual development is divided in respect of decay in characteristics of the ladder of annihilation?

Ans. It has been divided into 9 parts-

(1). In the first part- decay of deep drowsiness, deep sleep, somnambulism and hellish destiny etc. 13 characteristics,

(2). In the second part- decay of non-renunciation obscuring, renunciation obscuring, along with 8 characteristics,

(3). In the third part- decay of neuter gender,

(4). In the fourth part- decay of feminine gender,

(5). In the fifth part- decay of laughter etc. 6 passions,

(6). In the sixth part- decay of masculine gender,

(7). In the seventh part- decay of anger, passion hindering perfect conduct,

(8). In the eighth part- decay of ego, passion hindering perfect conduct,

(9). In the ninth part there is decay of illusion, passion hindering perfect conduct.

Q.5. What is the literal meaning of self-realization through self-meditation stage of spiritual development?

Ans. Tendency without discrimination is called anivrutti. In other words, tendency without discrimination of the characteristics of thought process of simultaneously living beingsis called self-realization through self-meditation.

Q.6. What sentiment is found mainly in this stage of spiritual development?

Ans. Mainly, the sentiment of destruction is found in this stage of spiritual development.

Q.7. What number of living beings can there be in this stage?

Ans. There can be 299 in subsidence ladder, and 598 in ladder of destruction, totaling 897.

Q.8. What is the duration of this stage of spiritual development?

Ans. The lowest duration of this stage is one unit of time, and the highest duration is one antarmuhoort.

X. सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान

प्रश्न 1. सूक्ष्म साम्पराय गुणस्थान किसे कहते हैं?

उत्तर : जहाँ सूक्ष्म लोभ कषाय का उदय रहता है अर्थात् मोहनीय कर्म की 28 प्रकृतियों में से सूक्ष्म लोभ को छोड़कर शेष 27 प्रकृतियों का क्षय व उपशम हो जाता है उसे ही सूक्ष्म साम्पराय गुणस्थान कहते हैं।

प्रश्न 2. सूक्ष्म साम्पराय गुणस्थानवर्ती जीव अगर उपशम श्रेणी से नीचे की ओर गमन करता है तो उसके कितने मार्ग हैं?

उत्तर : सूक्ष्म साम्पराय गुणस्थानवर्ती जीव अगर उपशम श्रेणी से नीचे की ओर गमन करता है तो उसके दो मार्ग हैं- (1) भव क्षय (2) काल क्षय।

प्रश्न 3. भव क्षय किसे कहते हैं?

उत्तर : भव क्षय अर्थात् मरण होना अर्थात् कोई जीव 10वें गुणस्थान में हैं, अगर मरण करता है तो चौथे गुणस्थान में आ जाता है।

प्रश्न 4. काल क्षय किसे कहते हैं?

उत्तर : काल क्षय अर्थात् गुणस्थान का काल समाप्त होने पर गिरता है तो नौवे में जाता है और चढ़ता है तो उपशांत गुणस्थान अथवा क्षीण मोह गुणस्थान में चला जाता है।

प्रश्न 5. क्षपक श्रेणी वाला जीव इस गुणस्थान से कौन से गुणस्थान में जाता है?

उत्तर : क्षपक श्रेणी वाला जीव इस गुणस्थान से सीधे 12वें गुणस्थान में जाता है। [क्षीण मोह गुणस्थान में]

प्रश्न 6. उपशम श्रेणी वाला जीव इस गुणस्थान से कौन से गुणस्थान में जाता है?

उत्तर : उपशम श्रेणी वाला जीव इस गुणस्थान से 11वें गुणस्थान में जाता है। [उपशान्त कषाय गुणस्थान में]

प्रश्न 7. इस गुणस्थान का काल जघन्य व उत्कृष्ट से कितना है?

उत्तर : इस गुणस्थान का जघन्य काल 1 समय, उत्कृष्ट काल-अन्तर्मुहूर्त है।

प्रश्न 8. इस गुणस्थान का अंतर नाना जीव व एक जीव की अपेक्षा कितना है?

उत्तर : इस गुणस्थान का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य-एक समय, उत्कृष्ट-6 माह, एक जीव की अपेक्षा जघन्य-अन्तर्मुहूर्त, उत्कृष्ट-कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन है।

प्रश्न 9. इस गुणस्थान में उपशम श्रेणी वालों का नाना व एक जीव की अपेक्षा अन्तर कितना है?

उत्तर : इस गुणस्थान में उपशम श्रेणी वालों का नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य अन्तर-एक समय व उत्कृष्ट अन्तर-वर्ष पृथक्त्व तथा एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर-अन्तर्मुहूर्त व उत्कृष्ट अन्तर उपार्द्ध पुद्गल परावर्तन अर्थात् कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन होता है।

प्रश्न 10. इस गुणस्थान में क्षपक श्रेणी वालों का नाना व एक जीव की अपेक्षा कितना अन्तर है?

उत्तर : इस गुणस्थान में क्षपक श्रेणी वालों का नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य अन्तर-एक समय, उत्कृष्ट अन्तर-6 माह तथा एक जीव की अपेक्षा से कोई अन्तर नहीं होता।

प्रश्न 11. एक जीव की अपेक्षा अन्तर क्यों नहीं होता?

उत्तर : एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं होता क्योंकि क्षपक श्रेणी में यह गुणस्थान एक ही बार होता है इसके बाद नियम से मुक्त हो जाता है जबकि अन्तर दो या दो से अधिक बार श्रेणी आरोहण में होता है।

प्रश्न 12. इस गुणस्थान में जीवों की संख्या कितनी हैं?

उत्तर : इस गुणस्थान में उपशम श्रेणी में 299 तथा क्षपक श्रेणी में 598 कुल 897 जीव हो सकते हैं।

X. Subtle Passional Influx Stage of Spiritual Development

Q.1. What is called Subtle Passional Influx Stage of Spiritual Development?

Ans. Where there exists rise of subtle greed passion. In other words, Where leaving subtle greed all the remaining 27 characteristics get decayed and subsided, that is called Subtle Passional Influx Stage of Spiritual Development.

Q.2. If the living being belonging to Subtle Passional Influx Stage of Spiritual Development descends on the ladder of subsidence, what number of paths such living being follows?

Ans. There are two paths-(1). Physical decay, (2) Life period decay.

Q.3. What is called Physical decay?

Ans. Physical decay means to die. In other words, if a living being in 10th stage of Spiritual Development dies, the same descends to the 4th stage of spiritual development.

Q.4. What is called Life period decay?

Ans. After completing the duration of the stage, the living being ascends to the stage of subsided delusion or delusion less stage.

Q.5. To which stage does the living being belonging to ladder of annihilation leaves for?

Ans. The living being belonging to the ladder of annihilation leaves this stage directly to 12th stage of spiritual development.(Delusion less Stage)

Q.6. To which stage does the living being belonging to ladder of subsidence leaves for?

Ans. The living being belonging to the ladder of subsidence leaves this stage for 11th stage of spiritual development. (Stage of Subsided Delusion)

Q.7. What is the duration of this spiritual stage with respect to the lowest and the highest?

Ans. The lowest duration of this stage is single unit of time, the highest duration is Antarmuhoort.

Q.8. What is the difference of this spiritual stage in regard to various living beings and single living being?

Ans. The difference of this spiritual stage in respect to various living beings- the lowest- unit time, the highest- 6 months; in respect to single living being- the lowest- Antarmuhoort, the highest- some part less than half embodiment time cycle.

Q.9. What is the difference between various living beings and single living being belonging to the ladder of subsidence of this stage?

Ans. The difference between various living beings belonging to the ladder of subsidence of this stage is in the lowest- single unit of time, and in the highest- separated year; in respect to single living being- the lowest is antarmuhoort, and the highest- sub half embodiment of the cycle meaning thereby some less than half embodiment time cycle.

Q.10. What is the difference between various living beings and single living being belonging to the ladder of destruction of this stage?

Ans. The difference between various living beings belong to the ladder of destruction of this stage in the lowest- single unit of time, the highest- 6 months; in respect to single living being- there is no difference.

Q.11. Why is there no difference in respect to the single living being?

Ans. There is no difference because in the ladder of destruction this stage of spiritual development occurs only once and thereafter, as per rule it is liberated. While the difference occurs only when movement between two or more ladders.

Q.12. What is the number of living beings in this stage of spiritual development?

Ans. There can be 299 living beings in the ladder of subsidence and 598 in the ladder of destruction, totaling 897.

XI. उपशांत मोह गुणस्थान

प्रश्न 1. उपशांत मोह गुणस्थान किसे कहते हैं?

उत्तर : चारित्र मोहनीय की 21 प्रकृतियों के उपशम [दबाने] से यथाख्यात चारित्र सहित परिणाम को उपशांत मोह गुणस्थान कहते हैं।

प्रश्न 2. उपशांत मोह गुणस्थान से गिरा हुआ जीव अधिक से अधिक कितने काल तक भ्रमण कर सकता है?

उत्तर : उपशांत मोह गुणस्थान से गिरा हुआ जीव अधिक से अधिक अर्द्धपुद्गल परावर्तन काल तक भ्रमण कर सकता है।

प्रश्न 3. अर्द्धपुद्गल परावर्तन काल तक कैसे भ्रमण कर सकता है?

उत्तर : अगर यह जीव मिथ्यात्व में आ जाता है तो मिथ्यात्व के साथ अर्द्धपुद्गल परावर्तन काल तक संसार में भ्रमण कर सकता है।

प्रश्न 4. उपशांत मोह गुणस्थानवर्ती जीव अगर उपशम श्रेणी से गिरता है तो उसके कितने मार्ग हैं?

उत्तर : उपशांत मोह गुणस्थानवर्ती जीव अगर उपशम श्रेणी से गिरता है तो उसके दो मार्ग है- (1) भव क्षय (2) काल क्षय।

प्रश्न 5. काल क्षय होने पर क्या होता है?

उत्तर : इस गुणस्थानवर्ती जीव का काल समाप्त होते ही वह नीचे 10,9,8,7,6वें गुणस्थान में क्रमशः नियम से गिरता ही है।

प्रश्न 6. भव क्षय होने पर क्या होता है?

उत्तर : यदि इस जीव का मरण काल आ जाये तो 11वें गुणस्थान में मरण करके सीधा चौथे गुणस्थान में आ जाता है।

प्रश्न 7. इस गुणस्थान का काल कितना है?

उत्तर : इस गुणस्थान का जघन्य काल-एक समय, उत्कृष्ट काल-अन्तर्मुहूर्त है।

प्रश्न 8. क्या क्षायिक सम्यग्दृष्टि उपशम श्रेणी चढ़ सकता है?

उत्तर : हाँ, क्षायिक सम्यग्दृष्टि उपशम व क्षपक दोनों श्रेणी चढ़ सकता है परन्तु उपशम सम्यग्दृष्टि जीव उपशम श्रेणी ही चढ़ सकता है।

प्रश्न 9. क्षायिक सम्यग्दृष्टि उपशांत मोह गुणस्थान से गिरता है तो कौन से गुणस्थान तक जा सकता है?

उत्तर : क्षायिक सम्यग्दृष्टि उपशांत मोह गुणस्थान से गिरता है तो 6वें गुणस्थान तक जा सकता है।

प्रश्न 10. इस गुणस्थान में कौन सा चारित्र पाया जाता है?

उत्तर : इस गुणस्थान में यथाख्यात चारित्र पाया जाता है।

प्रश्न 11. इस गुणस्थान में कौन सी लेश्या पायी जाती है?

उत्तर : इस गुणस्थान में शुक्ल लेश्या पायी जाती है।

प्रश्न 12. इस गुणस्थान में मुख्यता से कौन से भाव पाये जाते हैं?

उत्तर : इस गुणस्थान में मुख्यता से औपशमिक भाव पाया जाता है।

प्रश्न 13. कितने व कौन-कौन से संहनन वाले जीव उपशम श्रेणी चढ़ सकते हैं?

उत्तर : तीन संहनन [नाराच, वज्रनाराच, वज्रवृषभनाराचसंहनन] वाले जीव उपशम श्रेणी चढ़ सकते हैं।

प्रश्न 14. इस गुणस्थान में जीवों की संख्या कितनी हो सकती हैं?

उत्तर : इस गुणस्थान में 299 जीव हो सकते हैं।

XI. Subsided Delusion Stage of Spiritual Development

Q.1. What is called Subsided Delusion Stage of Spiritual Development?

Ans. Perfect conduct transition due to subsidence of 21 characteristics of conduct deluding is called Subsided Delusion Stage of Spiritual Development.

Q.2. What is its wandering duration?

Ans. The living being fallen from Subsided Delusion Stage of Spiritual Development wanders for half embodiment time cycle at the most.

Q.3. How can it wander for half embodiment time cycle?

Ans. If this living being comes to misbelief then along with misbelief this can wander for half embodiment time cycle.

Q.4. What is the number of paths?

Ans. If a living being belonging to subsided delusion stage falls from ladder of subsidence, the same has two paths- 1. Physical decay, 2. Life duration decay.

Q.5. What happens in the life duration decay?

Ans. After getting life duration completed in this stage, as a rule the same falls to 10, 9, 8, 7 stages of spiritual development respectively.

Q.6. What happens in physical decay?

Ans. After getting life duration completed in this stage, the living being falls from 11th stage to directly 4th stage of spiritual development.

Q.7. What is the duration of this stage of spiritual development?

Ans. The lowest duration of this stage is single unit time and the highest duration is antarmuhoort.

Q.8. Can a destructive right-faithed ascend ladder of subsidence?

Ans. Yes, a destructive right-faithed can ascend both the ladders- subsidence and annihilation, however, subsidence right-faithed living being can ascend only subsidence ladder.

Q.9. Up to which stage such a living being can attain?

Ans. Destructive right-faithed when falls from Subsided delusion stage, such a living being can attain up to 6th stage of spiritual development.

Q.10. What kind of conduct is found in this stage of spiritual development?

Ans. Perfect conduct is found in this stage of spiritual development.

Q.11. What complexion is found in this stage of spiritual development?

Ans. White complexion is found in this stage of spiritual development.

Q.12. What kind of disposition is found in this stage of spiritual development?

Ans. Mainly destructional disposition is found in this stage of spiritual development.

Q.13. How many and what kind of skeletal structured living beings can ascend ladder of subsidence?

Ans. Three kinds of skeletal structured living beings(having bone joints, strong joints, perfect bone-joints) can ascend ladder of subsidence.

Q.14. What can be the number of living beings in this stage of spiritual development?

Ans. There can be 299 living beings in this stage of spiritual development.

XII. क्षीण मोह गुणस्थान

प्रश्न 1. क्षीण मोह गुणस्थान किसे कहते हैं?

उत्तर : मोहनीय कर्म की समस्त प्रकृतियों का क्षय हो जाने से यथाख्यात चारित्र सहित जो निर्मल परिणाम होते हैं उसे क्षीण मोह गुणस्थान कहते हैं।

प्रश्न 2. क्षीण मोह का शाब्दिक अर्थ क्या है?

उत्तर : क्षीण यानी क्षय और मोह-मोहनीय कर्म अर्थात् जहाँ मोहनीय कर्म पूर्ण रूप से क्षय हो गया है।

प्रश्न 3. इस गुणस्थान में कौन सा ध्यान पाया जाता है?

उत्तर : इस गुणस्थान में प्रवेश के समय तो पहला पृथक्त्व वितर्क विचार शुक्ल ध्यान होता है परन्तु बाद में एकत्व वितर्क अविचार शुक्ल ध्यान अंत तक रहता है।

प्रश्न 4. इस गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों का क्षय होता है?

उत्तर : इस गुणस्थान में 5 ज्ञानावरण, निद्रा, प्रचला, 4 दर्शनावरण, 5 अन्तराय इस प्रकार सोलह (16) प्रकृतियों का क्षय होता है।

प्रश्न 5. इस गुणस्थान का काल कितना है?

उत्तर : इस गुणस्थान का काल जघन्य व उत्कृष्ट से अन्तर्मुहूर्त ही है।

प्रश्न 6. इस गुणस्थान का जघन्य व उत्कृष्ट से अन्तर कितना हो सकता है?

उत्तर : इस गुणस्थान का अन्तर जघन्य - एक समय, उत्कृष्ट 6 माह हो सकता है।

प्रश्न 7. क्या क्षपक श्रेणी वाला जीव 11वें गुणस्थान में जाता है?

उत्तर : नहीं, क्षपक श्रेणी वाला जीव तो 10वें से सीधे 12वें गुणस्थान में आता है।

प्रश्न 8. इस गुणस्थान में कितने परिग्रह का अभाव हो जाता है?

उत्तर : यहाँ सम्पूर्ण 24 परिग्रहों का अभाव हो जाता है। 10 बाह्य परिग्रह का अभाव तो पहले हो चुका था पर अन्तरंग परिग्रह का सर्वथा अभाव इस गुणस्थान को प्राप्त होने पर हो जाता है।

प्रश्न 9. इस गुणस्थान में कौन सा चारित्र पाया जाता है?

उत्तर : इस गुणस्थान में यथाख्यात चारित्र [चारित्र की उच्चतम अवस्था] पाया जाता है।

प्रश्न 10. यहाँ मुख्यता से कौन सा भाव पाया जाता है?

उत्तर : यहाँ मुख्यता से क्षायिक भाव पाया जाता है।

प्रश्न 11. इस गुणस्थान में स्थित मुनिराज को क्या कहते हैं?

उत्तर : इस गुणस्थान में स्थित मुनिराजों को निर्ग्रन्थ कहते हैं।

प्रश्न 12. निर्ग्रन्थ किसे कहते हैं?

उत्तर : निः - रहित, ग्रन्थ - परिग्रह अर्थात् जो परिग्रह से रहित हो।

प्रश्न 13. इस गुणस्थान में जीवों की संख्या कितनी हो सकती है?

उत्तर : इस गुणस्थान में जीवों की संख्या 598 हो सकती है।

XII. Delusion less stage of spiritual development

Q.1. What is called Delusion less stage of spiritual development?

Ans. The stage when due to total decay of the characteristics of deluding karma, pure thought activities with perfect conduct takes place, this stage is called Delusion less stage of spiritual development.

Q.2. What is the literal meaning of kshin moha (delusion less)?

Ans. Kshin means less and moha means mohaniya karma or deluding karma, thereby meaning where deluding karma is totally destroyed or decayed.

Q. 3. What kind of disposition is found in this Delusion less stage of spiritual development?

Ans. While entering this stage there exists purest meditation-thought transition on different aspects, but later there exists pure concentration only on one aspect which remains up to the last.

Q.4. What number of characteristics are decayed in this stage?

Ans. Here in this stage, all the characteristics of deluding karma are decayed, however, knowledge and vision are covered(obscured).

Q.5. What is the duration of this stage?

Ans. In both the respects- the lowest and the highest- the duration of this stage is antarmuhoort.

Q.6. What can be the difference in respect to the lowest and the highest in this stage?

Ans. The difference in this stage with respect to the lowest is single unit of time, and the highest can be 6 months.

Q.7. Does the living being belonging to the ladder of annihilation exist in 11th stage of spiritual development?

Ans. No, the living being belonging to the ladder of annihilation directly moves from 10th stage to 12th stage of spiritual development.

Q.8. How many worldly possessions do not exist in this stage of spiritual development?

Ans. All the 24 possessions do not exist in this stage of spiritual development. 10 external possessions have already been in non-existence; however, all the inner possessions also get non-existent in this stage of spiritual development.

Q.9. What kind of conduct is found in this stage of spiritual development?

Ans. Only perfect conduct (the highest state of conduct) is found in this stage of spiritual development.

Q.10. What kind of disposition is mainly found in this stage?

Ans. Destructional disposition is mainly found in this stage.

Q.11. What is called the monk settled in this stage?

Ans. The monks settled in this stage are called monk free of passions.

Q.12. What is called nirgranth?

Ans. The one who is free of all kinds of passions and possessions.

Q.13. What is the number of living beings in this stage?

Ans. There can be 598 living beings in this stage.

XIII. सयोग केवली गुणस्थान

प्रश्न 1. सयोग केवली का शाब्दिक अर्थ क्या है?

उत्तर : स यानि सहित, योग यानि मन-वचन-काय का परिस्पंदन, केवली-केवलज्ञान प्राप्त हो जाने से केवली अर्थात् जीव की वह अवस्था जहाँ तीनों योग पाये जाते हैं और केवलज्ञान को प्राप्त कर परमात्म संज्ञा को प्राप्त कर लिया हो उसे सयोग केवली कहते हैं।

प्रश्न 2. सयोग केवली गुणस्थान किसे कहते हैं?

उत्तर : शरीर सहित जीवनमुक्त अवस्था को अथवा जहाँ चार घातिया कर्मों के क्षय हो जाने से योग सहित अवस्था बनती है उसे सयोग केवली गुणस्थान कहते हैं।

प्रश्न 3. सयोग केवली के एकार्थवाची नाम बताइए।

उत्तर : सयोग केवली के एकार्थवाची नाम है- भाव मोक्ष, केवलज्ञानोत्पत्ति, जीवनमुक्त, अरिहन्त पद आदि।

प्रश्न 4. इस गुणस्थान को भाव मोक्ष क्यों कहा जाता है?

उत्तर : जीव के गुणों का घात करने वाले चार घातिया कर्मों से मुक्त हो जाने से इस गुणस्थान को भाव मोक्ष कहा है।

प्रश्न 5. इस गुणस्थान को केवलज्ञानोत्पत्ति क्यों कहा जाता है?

उत्तर : चार घातिया कर्मों के नष्ट होने पर केवलज्ञान की उत्पत्ति होने पर वे आत्मा को, आत्मा से, आत्मा में अनुभव करते हैं इसलिए इस गुणस्थान को केवलज्ञानोत्पत्ति कहा है।

प्रश्न 6. इस गुणस्थान को जीवनमुक्त क्यों कहा जाता है?

उत्तर : मन वचन काय से सहित होते हुए भी उन्हें मुक्त या परमात्मा कहा जाने से इस गुणस्थान को जीवनमुक्त कहा जाता है।

प्रश्न 7. इस गुणस्थान को अरिहन्त पद क्यों कहा जाता है?

उत्तर : मोहनीय कर्म आदि शत्रुओं का तथा जन्म-मरण का हनन करने के कारण इस गुणस्थान को अरिहन्त पद कहा जाता है।

प्रश्न 8. सयोग केवली गुणस्थानवर्ती जीव के कितने प्राण होते हैं?

उत्तर : सयोग केवली गुणस्थानवर्ती जीव के 4 प्राण [वचनबल, कायबल, आयु और श्वासोच्छवास] होते है तथा पाँच इन्द्रिय व मनबल नहीं होता है।

प्रश्न 9. समुद्घात के समय कितने प्राण रह जाते हैं?

उत्तर : समुद्घात के अंतिम समय में वचनबल और श्वासोच्छवास का भी अभाव हो जाता है। मात्र कायबल व आयु शेष रह जाते हैं।

प्रश्न 10. समुद्घात किसे कहते हैं?

उत्तर : मूल शरीर को छोड़े बिना ही आत्म प्रदेशों को फैलाना समुद्घात कहलाता है।

प्रश्न 11. 12वें गुणस्थान से ऊपर जाते ही इस गुणस्थान में कितनी प्रकृतियाँ नष्ट हो जाती हैं?

उत्तर : 12 वें गुणस्थान से ऊपर जाते ही इस गुणस्थान में कुल 63 कर्म प्रकृतियाँ [घातिया कर्म की 47 व अघातिया कर्म की 16] नष्ट हो जाती हैं।

प्रश्न 12. 63 कर्म प्रकृतियाँ नष्ट होने पर क्या प्रकट हो जाता है?

उत्तर : 63 कर्म प्रकृतियाँ नष्ट होने पर अनन्त चतुष्टय व नव केवल लब्धि प्रकट हो जाती हैं।

प्रश्न 13. अनन्त चतुष्टय कौन-कौन से हैं?

उत्तर : अनन्त दर्शन, अनन्त ज्ञान, अनन्त सुख, अनन्त वीर्य ये चार अनन्त चतुष्टय है।

प्रश्न 14. नव केवल लब्धि कौन-कौन सी हैं?

उत्तर : क्षायिक सम्यक्त्व, चारित्र, ज्ञान, दर्शन, दान, लाभ, भोग, उपभोग और वीर्य ये नव केवल लब्धियाँ हैं।

प्रश्न 15. सयोग केवली को बंधक कहा जाता है या अबंधक?

उत्तर : सयोग केवली को अबंधक कहा जाता है।

प्रश्न 16. सयोग केवली को अबंधक क्यों कहा जाता है?

उत्तर : क्योंकि ये जानते और देखते हुए भी इच्छापूर्वक वर्तन नहीं करते हैं और बन्ध के कारणों में सिर्फ योग रह जाता है और योगजन्य क्रियाओं से बन्ध नहीं होता, बन्ध तो रागद्वेष जनित प्रवृत्ति से होता है, यहाँ रागद्वेष है ही नहीं। योगजनित क्रियाओं से मात्र एक समय का ही बन्ध होता है, इस कारण बन्ध होते हुए भी अबंधक कहा जाता है।

प्रश्न 17. केवली कितने प्रकार के होते हैं? नाम बताते हुए परिभाषित कीजिए।

उत्तर : केवली 7 प्रकार के होते हैं-

(1) सामान्य केवली - जिन्होंने घातिया कर्मों का क्षय कर दिया है, 18 दोषों से रहित है, अनन्त चतुष्य जिनके प्रकट हुये हैं, वे सामान्य केवली होते हैं।

(2) तीर्थंकर केवली - जो तीर्थंकर होकर केवलज्ञान प्राप्त करते हैं।

(3) समुद्घात केवली - जो केवली समुद्घात करते हुए निर्वाण को प्राप्त करते है, वे समुद्घात केवली होते हैं।

(4) उपसर्ग केवली - जो उपसर्ग आने पर उसी समय केवलज्ञान प्राप्त करते हैं।

(5) मूक केवली - केवलज्ञान के बाद जिनकी वाणी नहीं खिरती हैं।

(6) अन्त:कृत केवली - जो अन्तर्मुहूर्त आयु शेष रहने पर केवलज्ञान प्राप्त करके मोक्ष को प्राप्त हो जाते हैं।

(7) अनुबद्ध केवली - जो क्रम क्रम से केवलज्ञान को प्राप्त करते हैं।

प्रश्न 18. सयोग केवली गुणस्थानवर्ती जीवों की संख्या कितनी हो सकती है?

उत्तर : इस गुणस्थान के जीवों की संख्या 8 लाख 98 हजार 502 हो सकती है।

प्रश्न 19. इस गुणस्थान का जघन्य व उत्कृष्ट काल कितना है?

उत्तर : इस गुणस्थान का जघन्य काल - अन्तर्मुहूर्त, उत्कृष्ट - 8 वर्ष अन्तर्मुहूर्त कम 1 पूर्व कोटि है।

प्रश्न 20. तीर्थंकर केवली का जघन्य व उत्कृष्ट काल कितना है?

उत्तर : तीर्थंकर केवली का जघन्य काल-वर्ष पृथक्त्व (7-8 वर्ष), उत्कृष्ट काल - 9 वर्ष अन्तर्मुहूर्त कम 1 पूर्व कोटि है।

प्रश्न 21. वर्ष पृथक्त्व का क्या अर्थ है?

उत्तर : 3 वर्ष से ऊपर व 9 वर्ष से नीचे के काल को वर्ष पृथक्त्व कहते हैं।

प्रश्न 22. 1 पूर्व कोटि का क्या अर्थ है?

उत्तर : 84 लाख × 84 लाख × 1 करोड़ = 1 पूर्व कोटि।
अर्थात् 7 हजार 56 शंख वर्ष का एक कोटि पूर्व (70560000000000000000 होता है। (7056×10^{17})

प्रश्न 23. इस गुणस्थान में कौन सा भाव पाया जाता है?

उत्तर : इस गुणस्थान में क्षायिक भाव पाया जाता है।

XIII. Omniscient with Activity Stage of Spiritual Development

Q.1. What is the literal meaning of Omniscient with activity?

Ans. Here the activity means vibrations in mind, speech and body, and omniscient means the who has acquired absolute knowledge. Therefore, omniscient with activity means that state of the living being where all the three kinds of vibrations are found and having acquired absolute knowledge the same has attained the position of God and is called Omniscient with activity.

Q.2. What is called Omniscient with Activity Stage of Spiritual Development?

Ans. Emancipated state with the body or where owing to the decay of four obscuring karmas the state of the body remains with vibrations is called Omniscient with Activity Stage of Spiritual Development.

Q.3. Tell similar names of omniscient with activity?

Ans. The similar names of omniscient with activity are- psychic salvation, subjective omniscience origination, emancipation, and arahant (one of the five supreme personalities) etc.

Q.4. Why is this stage called psychic salvation?

Ans. Due to liberating from four obscuring karmas responsible for destruction of the stage of spiritual development of the living being, this stage is called psychic salvation.

Q.5. Why is this stage called subjective omniscience origination?

Ans. On the destruction of the four obscuring karmas and on the rise of absolute knowledge, they experience soul as soul and in soul, that is why this stage is called subjective omniscience origination.

Q.6. Why is this stage called emancipated?

Ans. Even with mind, speech and body, these are called liberated or God, that is why this stage is called emancipated.

Q.7. Why are called omniscient?

Ans. Due to the destruction of deluding karmas like enemies and cycle of life and death, this stage is called omniscient

Q.8. How many life forces are there?

Ans. The living being belonging to Omniscient with Activity Stage of Spiritual Development does not have four life forces (speech force, physical force, life period and respiration), five senses and mind force.

Q.9. How many forces are remain at the time of emanation?

Ans. At the time of emanation, even speech force and respiration also get lacked, only physical force and life period remains.

Q.10. What is called emanation?

Ans. Spreading spatial units of soul without leaving the original body is called emanation.

Q.11. How many characteristics of this stage of spiritual development are destroyed as soon as it goes above 12th stage?

Ans. Total 63 karmic characteristics (47 of destructive karmas and 16 of non-destructive karmas) are destroyed as soon as it goes above 12th stage.

Q.12. What does appear on 63 karmic characteristics being destroyed?

Ans. On destruction of 63 karmic tendencies, infinite foursome and nine omnisciently attainments get appeared.

Q.13. What are infinite foursome?

Ans. Infinite perception, infinite knowledge, infinite power, and infinite bliss- these four are infinite foursome.

Q.14. What are nine omnisciently attainments?

Ans. Destructive right-faith, conduct, knowledge, perception, donation, profit, enjoyment, repeated enjoyment and power- these nine are omnisciently attainments.

Q.15. What is Omniscient with activity called- binding or non-binding?

Ans. Omniscient with activity is called non-binding.

Q.16. Why is the Omniscient with activity called non-binding?

Ans. It is because they do not behave according to their will even though they know and see things and only vibration of the reasons of bonding remains, and no binding takes place only by vibrational activities. Binding takes place only by tendencies of attachment and aversion. Here there is no attachment and aversion. Only single time binding Om 3 takes place by vibrational activities, that is why even spite of the presence of binding, it is called non-binding.

Q.17. How many types of omniscient are there? Telling their names define them?

Ans. There are 7 types of omniscient-

1. Tirthankar Kevali (founder of Jain-order)- Those who after becoming founder attains omniscience.
2. Saamanya kevali (Universal omniscient)- Those who have destructed obscuring karmas, are free of 18 flaws, for whom infinite foursome appeared, are called universal omniscient.
3. Samudghat kevali (Emanated omniscient)- Those omniscient who after having emanated get salvation are called emanated omniscient.
4. Upsarg kevali (Misfortune omniscient)- Those who attain absolute knowledge only when fall victim of misfortunes are called misfortune omniscient.
5. Mook kevali (Silent omniscient)- Those who do not propagate after attaining absolute knowledge.
6. Antahkrut kevali (Remover of transmigration omniscient)- Those who attain absolute knowledge only when

antarmuhoort of their age remains and immediately attain salvation are called remover of transmigration omniscient.

7. Anubaddha kevali (Bound Omniscient)- Those who attain absolute knowledge in some order are called bound omniscient.

Q.18. What number of living beings can be there in this Omniscient with Activity Stage of Spiritual Development?

Ans. There can be 8 lakh 98 thousand and 502 living beings in this stage.

Q.19. What is the lowest and the highest duration of this stage?

Ans. The lowest duration- Antarmuhoort, the highest- 1 Poorvkoti less than 8 years Antarmuhoort.

Q.20. What is the lowest and the highest duration of founder of Jains omniscient?

Ans. The lowest duration- year Prathktva-7-8 years, the highest- 1 Poorvkoti less than 8 years Antarmuhoort.

Q.21. What is the meaning of year Prathaktva?

Ans. The duration from 3 years to 8 yearsis calle year Prathaktva.

Q.22. What is the meaning of 1 Poorvkoti?

Ans. 1 Poorvkoti= 84 lakhx 84 lakhx 1 crore.

Q. 23. What kind of disposition is found in this stage of Spiritual Development?

Ans. Destructive disposition is found in this stage of spiritual development.

XIV. अयोग केवली गुणस्थान

प्रश्न 1. अयोग केवली का शाब्दिक अर्थ क्या है?

उत्तर : अयोग यानि योग रहित, केवली यानि केवलज्ञान सहित अर्थात् योग रहित केवलज्ञान सहित जो परिणाम होते हैं वह अयोग केवली गुणस्थान हैं।

प्रश्न 2. अयोग केवली गुणस्थान किसे कहते हैं?

उत्तर : अरिहंत परमेष्ठी के जब योग नष्ट हो जाते हैं तब से लेकर जब तक शरीर से मुक्त नहीं होते हैं तब तक की अवस्था को अयोग केवली गुणस्थान कहते हैं।

प्रश्न 3. इस गुणस्थान का काल कितना है?

उत्तर : 5 ह्रस्व स्वर (अ, इ, उ, ऋ, ऌ) के उच्चारण में जितना समय लगता है उतना ही समय इस गुणस्थान का है। अर्थात् अन्तर्मुहूर्त है।

प्रश्न 4. इस गुणस्थान में कितनी प्रकृतियाँ नष्ट होती हैं?

उत्तर : इस गुणस्थान में 85 प्रकृतियाँ। पहले समय में 72 प्रकृतियाँ नष्ट होती हैं और अन्त समय में 13 प्रकृतियाँ नष्ट होती हैं।

प्रश्न 5. इस गुणस्थान में जीवों की संख्या कितनी हो सकती है?

उत्तर : इस गुणस्थान में 598 जीव हो सकते हैं।

प्रश्न 6. इस गुणस्थान में कौन-कौन से कर्मों का नाश होता है?

उत्तर : इस गुणस्थान में आयु, नाम, गोत्र, वेदनीय इन अघातिया कर्मों का नाश होता है और समस्त कर्मों से मुक्त हो जाता है।

प्रश्न 7. इस गुणस्थान में कौन सा भाव पाया जाता है?

उत्तर : इस गुणस्थान में क्षायिक भाव पाया जाता है।

XIV. Inactive Omniscient Stage of Spiritual Development

Q.1. What is the literal meaning of inactive omniscient?

Ans. As the name itself suggests, thought activities without vibrations with omniscience is called Inactive Omniscient.

Q.2. What is called Inactive Omniscient Stage of Spiritual Development?

Ans. The state of omniscient in between the destruction of the vibrations to the emancipation is called Inactive Omniscient Stage of Spiritual Development.

Q.3. What is the duration of this Inactive Omniscient Stage of Spiritual Development?

Ans. The time taken to pronounce five vowels (a,e,u,ri, lri)(a,e,I,o,u) is the duration of this stage or antarmuhoort.

Q.4. How many characteristics are destroyed in this stage of spiritual development?

Ans. 85 characteristics in this stage. Primarily 72 characteristics are destroyed and later 13 characteristics are destroyed.

Q.5. What can be the number of living beings in this stage?

Ans. There may be 598 living beings in this stage of spiritual development.

Q.6. What karmas are destroyed in this stage of spiritual development?

Ans. Age, name, clan, feeling producing all these karmas are destroyed in this stage of spiritual development and living beings gets freed from all karmas.

Q.7. What kind of disposition is found in this stage of spiritual development?

Ans. Destructive disposition is found in this stage of spiritual development.

XV. गुणस्थानातीत जीव

प्रश्न 1. गुणस्थानातीत जीव किसे कहते हैं?

उत्तर : गुणस्थानों से रहित, समस्त कर्मों से रहित सिद्ध अवस्था को गुणस्थानातीत जीव कहते हैं

प्रश्न 2. सिद्ध भगवान कहाँ विराजमान होते हैं?

उत्तर : सिद्ध भगवान लोक के अग्रभाग में सिद्ध शिला पर अर्थात् ईषत् प्राग्भार 8वीं पृथ्वी के ऊपर अंतिम वातवलय के अंतिम भाग में विराजमान होते हैं।

प्रश्न 3. सिद्ध शिला पर विराजमान सिद्ध भगवान कितने गुणों से सहित होते हैं?

उत्तर : सिद्ध शिला पर विराजमान सिद्ध भगवान 8 गुणों से सहित होते हैं।

प्रश्न 4. सिद्धों के 8 गुण कौन-कौन से हैं?

उत्तर : सम्यक्त्व, अनन्त दर्शन, अनन्त ज्ञान, अनन्त वीर्य, सूक्ष्मत्व, अवगाहनत्व, अगुरुलघुत्व, अव्याबाधत्व ये सिद्धों के 8 गुण है।

प्रश्न 5. किस कर्म के क्षय से कौन सा गुण प्रकट होता है?

उत्तर : मोहनीय कर्म के क्षय से सम्यक्त्व, ज्ञानावरणीय के क्षय से - अनन्तज्ञान, दर्शनावरण के क्षय से - अनन्त दर्शन, अन्तराय कर्म के क्षय से - अनन्त वीर्य, वेदनीय कर्म के क्षय से - अव्याबाध, आयु कर्म के क्षय से - अवगाहनत्व, नाम कर्म के क्षय से - सूक्ष्मत्व, गोत्र कर्म के क्षय से अगुरुलघुत्व गुण प्रकट होता है।

प्रश्न 6. यहाँ कौन सा भाव पाया जाता है?

उत्तर : यहाँ क्षायिक भाव पाया जाता है।

XVI (चार्ट-1) गुणस्थानों में जीवों की संख्या

मिथ्यात्व गुणस्थान में	- अनंत
सासादन से देशसंयम गुणस्थान तक प्रत्येक में	- पल्योपम का असंख्यातवां भाग
प्रमत्त संयत गुणस्थान में	- 5,93,98,206
अप्रमत्त संयत गुणस्थान में	- 2,96,99,103
अपूर्वकरण गुणस्थान में	- 897
अनिवृत्तिकरण गुणस्थान में	- 897
सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान में	- 897
उपशान्त मोह गुणस्थान में	- 299
क्षीण मोह गुणस्थान में	- 598
सयोग केवली गुणस्थान में	- 8 लाख 98 हजार 502
अयोग केवली गुणस्थान में	- 598

XVII (चार्ट-2) गुणस्थानों में गमनागमन

गुणस्थान	गमन (जाना)	आगमन (आना)
मिथ्यात्व	3,4,5,7	2,3,4,5,6
सासादन	1	4,5,6
मिश्र	1,4	1,4,5,6
असंयत	1,2,3,5,7	1,3,5,6 मरण अपेक्षा से 7-11
देशसंयत	1,2,3,4,7	1,4,6
प्रमत्त संयत	1,2,3,4,5,7	7
अप्रमत्त संयत	6, 8 मरण अपेक्षा 4	1,4,5,6,8
अपूर्वकरण	7, 9 (4मरणापेक्षा)	7,9
अनिवृत्तिकरण	7, 10 (..."...)	8,10
सूक्ष्मसाम्पराय	9, 11 (..."...)	9,11
उपशान्त मोह	10 (..."...)	10
क्षीण मोह	12	10
सयोग केवली	14	12
अयोग केवली	0	13
सिद्ध (गुणस्थानातीत)	सिद्ध (गुणस्थानातीत)	14

श्रेणी मांडने वाले जीवों की संख्या के बारे में विभिन्न मत

		प्रथम मत	द्वितीय मत	तृतीय मत
उपशामक	8वें, 9वें, 10वें, 11वें गुणस्थानवर्ती	300	304	299
क्षपक	8वें, 9वें, 10वें, 12वें गुणस्थानवर्ती	600	608	598

सोलसयं चउवीसं, तीसं छत्तीस तह य बादालं।
अडदाल चउवण्णं, चउवण्णं होंति उवसमगे।।627।।
बत्तीसं अडदालं, सट्ठी वावत्तरी य चुलसीदी।
छण्णउदी अट्ठुत्तरसयमट्ठुतरसयं च खवगेसु।।628।।

अर्थ–उपशम श्रेणी पर निरंतर आठ समयों में चढ़ने वाले जीवों की संख्या क्रम से सोलह, चौबीस, तीस, छत्तीस, बयालीस, अडतालीस, चौवन, चौवन होती है।।627।।

अर्थ–क्षपण श्रेणी की संख्या उपशम वालों से दुगुनी होती है। इसलिये निरन्तर आठ समयों में क्षपक श्रेणी चढ़ने वालों की संख्या क्रम से बत्तीस, अड़तालीस, साठ, बहत्तर, चौरासी, छियानवे, एक सौ आठ, एक सौ आठ होती हैं।।628।।

निरंतर 8 समयों में श्रेणी मांडने वाले जीवों की उत्कृष्ट संख्या

समय	जीवों की संख्या	
	उपशामक	क्षपक
I	16	32
II	24	48
III	30	60
IV	36	72
V	42	84
VI	48	96
VII	54	108
VIII	54	108
कुल	304	608

अट्ठेव सयसहस्सा, अट्ठाणउदी तहा सहस्साणं।
संखा जोगिजिणाणं, पंचसयविउत्तरं वंदे।।629।।

अर्थ–सयोगकेवली जिनों की संख्या आठ लाख अट्ठानवे हजार पाँच सौ दो (8,98,502) है। इनकी मैं सदकाल वंदना करता हूँ।।629।।

होंति खवा इगिसमये, बोहियबुद्धा य पुरिसवेदा य।
उक्कस्सेणट्ठुत्तरसयप्पमा सग्गदो य चुदा।।630।।

पत्तेयबुद्धतित्थयरत्थिणउंसयमणोहिणाणजुदा ।
दसछक्कवीसदसवीसट्ठावीसं जहाकमसो।।631।।

जेट्ठावरबहुमज्झिम, ओगाहणगा दु चारि अट्ठेव।
जुगवं हवंति खवगा, उवसमगा अद्धमेदेसिं।।632।।

अर्थ–युगपत्–एक समय में क्षपक श्रेणी वाले जीव उत्कृष्टता से निम्नप्रकार से पाये जाते हैं:– बोधितबुद्ध एक सौ आठ, पुरुषवेदी एक सौ आठ, स्वर्ग से च्युत होकर मनुष्य होकर क्षपक श्रेणी मांडने वाले एक सौ आठ, प्रत्येकबुद्धि ऋद्धि के धारक दश, तीर्थंकर छह, स्त्रीवेदी बीस, नपुसंक वेदी दश, मन:पर्ययज्ञानी बीस, अवधिज्ञज्ञनी अट्ठाईस, मुक्त होने के योग्य शरीर की उत्कृष्ट अवगाहना के धारक दो, जघन्य अवगाहना के धारक चार, समस्त अवगाहनाओं की मध्यवर्ती अवगाहना के धारक आठ। ये सब मिलाकर चार सौ बत्तीस होते हैं। उपशम श्रेणीवाले इसके आधे (216) होते हैं।।630–632।।

श्रेणी में विभिन्न जीवों की एक समय में संभावित उत्कृष्ट संख्या

जीव	क्षपकों की संख्या	उपशामकों की संख्या
बोधितबुद्धि	108	54
पुरुषवेदी	108	54
स्वर्ग से चयकर मनुष्य हो श्रेणी माँडी	108	54
प्रत्येक बुद्धि ऋद्धि के धारक	10	5
तीर्थंकर	6	3
स्त्रीवेदी	20	10
नपुंसकवेदी	10	5
मन:पर्ययज्ञानी	20	10
अवधिज्ञानी	28	14
उत्कृष्ट अवगाहना के धारक	2	1
जघन्य अवगाहना के धारक	4	2
सर्व अवगाहना के मध्यवर्ती अवगाहना के धारक	8	4

XV. Above All (State of no Stage)

Q.1. What is called living being above all?

Ans. Free of all stages of spiritual development, free from all kinds of karmas, liberated state of living being is called omniscient above all stages. (Omniscient of no stage)

Q.2. Where does salvated omniscient (God) reside?

Ans. The salvated God reside on the shila situated at the front part of this realm (world), in other words in the last part of last air-layer on the slightly bent eighth earth.

Q.3. How many qualities does the salvated God residing on the siddha shila have?

Ans. The salvated God residing on the siddha shila have 8 qualities.

Q.4. What are the eight qualities of liberated souls?

Ans. Right belief, infinite perception, infinite knowledge, infinite power, extreme fineness, body size, constancy of individuality, non-disturbing attitude, these are the eight qualities of liberated souls.

Q.5. What quality is manifested by the destruction of what karma?

Ans. Right belief by the decay of deluding karma, infinite knowledge by the decay of knowledge obscuring karma, infinite perception by the decay of perception obscuring karma, infinite power by the decay of obstructive karma, non-disturbance by the decay of feeling producing karma, body size by the decay of age determining karma, extreme fineness by the decay of name karma, constancy by the decay of caste determine karma.

Q.6. What kind of disposition is found here?

Ans. Here destructive disposition is found.

Number of living beings in various stages of spiritual development

Stage of Wrong Faith Spiritual Development	-infinite
Stage of Lingering Faith to Partial Abstinence Spiritual Development	-infinitieth part of pit measured time

Stage of Non-restrained Faith Spiritual Development -5,93,98,206
Stage of Vigilantly Restrained Faith Spiritual Development- 2,96,99,103
Stage of Unpreceded Degree of Purity Faith Spiritual Development- 897
Stage of Self-realization Process of Self-meditation Faith Spiritual Development- 897
Stage of Subtle Passional Influx Spiritual Development- 897
Stage of Subsided Delusion Faith Spiritual Development'- 299
Stage of Delusion less Faith Spiritual Development-598
Stage of Omniscient with Activity Faith Spiritual Development-8 lakh 98 thousand 502
Stage of Inactive Omniscient Faith Spiritual Development-598

Movement in Stages of Spiritual Development	Outgoing	Incoming
Stage of Wrong Faith Spiritual Development	3,4,5,1	-2,3,4,5,6
Stage of Lingering Faith Spiritual Development	1	-4,5,6
Stage of Right cum Wrong Faith Spiritual Development	1,4	-1,4,5,6
Stage of Non-restrained Faith Spiritual Development	1,2,3,5,7	-1,3,5,6*
Stage of Partial Abstinence Faith of Spiritual Development	1,2,3,4,7	-1,4,6
Stage of Non-vigilantly Restrained Faith Spiritual Development	1,2,3,4,5,7	-7
Stage of Vigilantly Restrained Faith Spiritual Development	* 4	-1,4,5,6,8
Stage of Unpreceded Degree of Purity Faith Spiritual Development	6,8	-7,9
Stage of Self-realization Process of Self-meditation Faith Spiritual Development	7,9	-8,10
Stage of Subtle Passional Influx Spiritual Development	8,10	-9,11
Stage of Subsided Delusion Faith Spiritual Development	9,11,12	-10
Stage of Delusion less Faith Spiritual Development	10	-10
Stage of Omniscient with Activity Faith Spiritual Development	13	-12
Stage of Inactive Omniscient Faith Spiritual Development	14	-13
Stage of Living Beings without Spiritual Development		-14

With intention of death 7,11

अध्याय–3
जीव समास

प्रश्न 1. जीव समास किसे कहते हैं?

उत्तर : जिनके द्वारा अनेक जीव तथा उनकी अनेक प्रकार की जाति जानी जाये, उन धर्मों का संग्रह जिसमें किया जाता है उसे जीव समास कहते हैं।

प्रश्न 2. जीव समास का शाब्दिक अर्थ क्या है?

उत्तर : जीव + समास = जीव समास अर्थात् जीवों के समूह को जीव समास कहते हैं।

प्रश्न 3. जीव समास के कितने भेद हैं?

उत्तर : संक्षेप से जीव समास 14 होते हैं और 19,21,38,57,98,406 और विस्तार की अपेक्षा से अनेक भेद हैं।

प्रश्न 4. जीव समासों के नाम बताइए?

उत्तर : एकेन्द्रिय के सूक्ष्म व बादर, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय संज्ञी व असंज्ञी। इस प्रकार 7 भेद हुये, इनके पर्याप्त–अपर्याप्त के भेद से 7 × 2 = 14 जीव समास होते हैं।

प्रश्न 5. सूक्ष्म किसे कहते हैं?

उत्तर : जो किसी को न रोके और न रुके और न ही किसी पर आश्रित रहते हैं वे जीव सूक्ष्म कहलाते हैं।

प्रश्न 6. बादर किसे कहते हैं?

उत्तर : जो किसी के द्वारा रोका जाये और जो अन्य को रोके तथा किसी न किसी के आश्रित होते हैं ऐसे जीव बादर कहलाते हैं।

प्रश्न 7. एकेन्द्रिय बादर पर्याप्तक जीव किसे कहते हैं?

उत्तर : जिन जीवों के मात्र स्पर्शन इन्द्रिय पायी जाती है जो किसी के आधार से रहते हैं जो पर्याप्तियाँ पूर्ण कर चुके हैं जिनके बादर नाम कर्म का उदय होता है, वे एकेन्द्रिय बादर पर्याप्तक जीव कहलाते हैं।

प्रश्न 8. एकेन्द्रिय सूक्ष्म पर्याप्तक जीव किसे कहते हैं?

उत्तर : जो जीव सूक्ष्म नाम कर्म के उदय से सूक्ष्म शरीर को धारण करते हैं अर्थात् जो किसी के आश्रित नहीं रहते मात्र स्पर्शन इन्द्रिय के साथ अपने शरीर की पर्याप्ति को पूर्ण कर चुके हैं, वे एकेन्द्रिय सूक्ष्म पर्याप्तक जीव कहलाते हैं।

प्रश्न 9. एकेन्द्रिय बादर अपर्याप्तक जीव किसे कहते हैं?

उत्तर : जो जीव बादर नाम कर्म के उदय से स्पर्शन इन्द्रिय को धारण कर आयु के प्रथम समय से लेकर जब तक उसके शरीर पर्याप्ति पूर्ण नहीं होती ऐसी अवस्था में स्थित जीव को एकेन्द्रिय बादर अपर्याप्तक कहते हैं।

प्रश्न 10. एकेन्द्रिय सूक्ष्म अपर्याप्तक जीव किसे कहते हैं?

उत्तर : जो जीव सूक्ष्म नाम कर्म के उदय से स्पर्शन इन्द्रिय को धारण कर आयु के प्रथम समय से लेकर जब तक उसके शरीर पर्याप्ति पूर्ण नहीं होती ऐसी अवस्था में स्थित जीव को एकेन्द्रिय सूक्ष्म अपर्याप्तक जीव कहते हैं।

प्रश्न 11. द्वीन्द्रिय पर्याप्तक जीव किसे कहते हैं?

उत्तर : त्रस नाम कर्म के उदय से जीव दो इन्द्रिय में उत्पन्न होकर अपने शरीर आदि पर्याप्ति को पूर्ण कर लेता है उसे द्वीन्द्रिय पर्याप्तक जीव कहते हैं।

प्रश्न 12. द्वीन्द्रिय अपर्याप्तक जीव किसे कहते हैं?

उत्तर : त्रस नाम कर्म के उदय से जीव दो इन्द्रिय को धारण कर आयु

के प्रथम समय से लेकर जब तक उसके शरीर पर्याप्ति पूर्ण नहीं होती ऐसी अवस्था में स्थित जीव को द्वीन्द्रिय अपर्याप्तक जीव कहते हैं।

प्रश्न 13. त्रीन्द्रिय पर्याप्तक जीव किसे कहते हैं?

उत्तर : त्रस नाम कर्म के उदय से जीव तीन इन्द्रिय में उत्पन्न होकर अपने शरीर आदि पर्याप्ति को पूर्ण कर लेता है उसे त्रीन्द्रिय पर्याप्तक जीव कहते हैं।

प्रश्न 14. त्रीन्द्रिय अपर्याप्तक जीव किसे कहते हैं?

उत्तर : त्रस नाम कर्म के उदय से जीव तीन इन्द्रिय को धारण कर आयु के प्रथम समय से लेकर जब तक उसके शरीर पर्याप्ति पूर्ण नहीं होती ऐसी अवस्था में स्थित जीव को त्रीन्द्रिय अपर्याप्तक जीव कहते हैं।

प्रश्न 15. चतुरिन्द्रिय पर्याप्तक जीव किसे कहते हैं?

उत्तर : त्रस नाम कर्म के उदय से जीव चार इन्द्रिय में उत्पन्न होकर अपने शरीर आदि पर्याप्ति को पूर्ण कर लेता है उसे चतुरिन्द्रिय पर्याप्तक कहते हैं।

प्रश्न 16. चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तक जीव किसे कहते हैं?

उत्तर : त्रस नाम कर्म के उदय से जीव चार इन्द्रिय को धारण कर आयु के प्रथम समय से लेकर जब तक उसके शरीर पर्याप्ति पूर्ण नहीं होती ऐसी अवस्था में स्थित जीव को चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तक कहते हैं।

प्रश्न 17. पंचेन्द्रिय संज्ञी पर्याप्तक जीव किसे कहते हैं?

उत्तर : त्रस नाम कर्म के उदय से जीव पाँच इन्द्रिय में उत्पन्न होकर अपने शरीर आदि पर्याप्ति को पूर्ण कर लेता है और जिसके मन होता है उसे पंचेन्द्रिय संज्ञी पर्याप्तक जीव कहते हैं।

प्रश्न 18. पंचेन्द्रिय संज्ञी अपर्याप्तक जीव किसे कहते हैं?

उत्तर : त्रस नाम कर्म के उदय से जीव पाँच इन्द्रिय को धारण कर आयु के प्रथम समय से लेकर जब तक उसके शरीर पर्याप्ति पूर्ण नहीं होती, तब तक की अवस्था में स्थित जीव को पंचेन्द्रिय अपर्याप्तक संज्ञी जीव कहते हैं।

प्रश्न 19. पंचेन्द्रिय असंज्ञी पर्याप्तक जीव किसे कहते हैं?

उत्तर : त्रस नाम कर्म के उदय से जीव पंचेन्द्रिय में उत्पन्न होकर अपने शरीर आदि पर्याप्ति को पूर्ण कर लेता है, पर मन रहित होते हैं, ऐसे जीवों को पंचेन्द्रिय असंज्ञी पर्याप्तक जीव कहते हैं।

प्रश्न 20. पंचेन्द्रिय असंज्ञी अपर्याप्तक जीव किसे कहते हैं?

उत्तर : त्रस नाम कर्म के उदय से जीव पंचेन्द्रिय को धारण कर आयु के प्रथम समय से लेकर जब तक उसके शरीर पर्याप्ति पूर्ण न हो तब तक उस जीव की जो अवस्था होती है उसे पंचेन्द्रिय असंज्ञी अपर्याप्तक जीव कहते हैं।

प्रश्न 21. जीव समास के 19 भेद कैसे बनते हैं?

उत्तर : पृथ्वीकाय, जलकाय, अग्निकाय, वायुकाय, नित्य निगोद, इतर निगोद इन 6 के सूक्ष्म व बादर के भेद से 6 × 2=12 प्रकार हो जाते हैं। सप्रतिष्ठित प्रत्येक, अप्रतिष्ठित प्रत्येक, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय, संज्ञी पंचेन्द्रिय इस प्रकार 12 + 7 = 19 भेद।

प्रश्न 22. जीव समास के 38 भेद कैसे बनते हैं?

उत्तर : उपरोक्त 19 भेदों के पर्याप्तक व अपर्याप्तक का भेद करने पर 19 × 2 = 38 भेद हो जाते हैं।

प्रश्न 23. जीव समास के 21 भेद कैसे बनते हैं?

उत्तर : एकेन्द्रिय सूक्ष्म-बादर, दो इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय, चार इन्द्रिय, संज्ञी पंचेन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय इस प्रकार ये सात हुए इनके पर्याप्तक, अपर्याप्तक, लब्ध्यपर्याप्तक के भेद 7×3=21 भेद हो जाते हैं।

प्रश्न 24. जीव समास के 57 भेद कैसे बनते हैं?

उत्तर : उपरोक्त 19 भेदों के पर्याप्तक, लब्ध्यपर्याप्तक, निवृत्य-पर्याप्तक का भेद करने पर 19 × 3 = 57 भेद हो जाते हैं।

प्रश्न 25. जीव समास के 98 भेद कैसे बनते हैं?

उत्तर : पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, नित्य निगोद, इतर निगोद इनके सूक्ष्म व बादर के भेद से 6 × 2 = 12 भेद और सप्रतिष्ठित प्रत्येक व अप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति कुल = 12 + 2 = 14 भेद एकेन्द्रिय के हैं, इनके पर्याप्तक, निर्वृत्यपर्याप्तक, लब्ध्यपर्याप्तक के भेद करने पर 14 × 3 = 42 भेद एकेन्द्रिय के होते हैं।

द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय ये तीन भेद विकलेन्द्रिय के होते हैं, इनके भी पर्याप्तक, निर्वृत्यपर्याप्तक, लब्ध्यपर्याप्तक भेद करने पर 3 × 3 = 9 भेद होते हैं।

तिर्यंच के 34, मनुष्य के 9, देव के 2, नारकी के 2 कुल = 34 + 9 + 2 + 2 = 47 भेद सकलेन्द्रिय के होते हैं। इस प्रकार एकेन्द्रिय के 42, विकलेन्द्रिय के 9, सकलेन्द्रिय 47 भेद की अपेक्षा से जीव समास के कुल [42 + 9 + 47] = 98 भेद होते हैं।

विस्तार से जानने के लिए चार्ट में देखना चाहिए।

प्रश्न 26. जीव समास के 406 भेद कैसे बनते हैं?

उत्तर : एकेन्द्रिय के 72, विकलेन्द्रिय के 9, सकलेन्द्रिय के 325 भेद की अपेक्षा जीव समास के कुल [72 + 9 + 325] = 406 भेद होते हैं।

विस्तार से जानने के लिए चार्ट में देखना चाहिए।

(चार्ट-1)

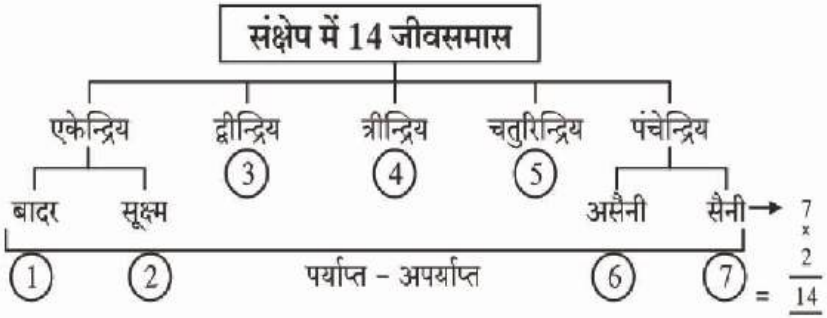

(चार्ट-2)

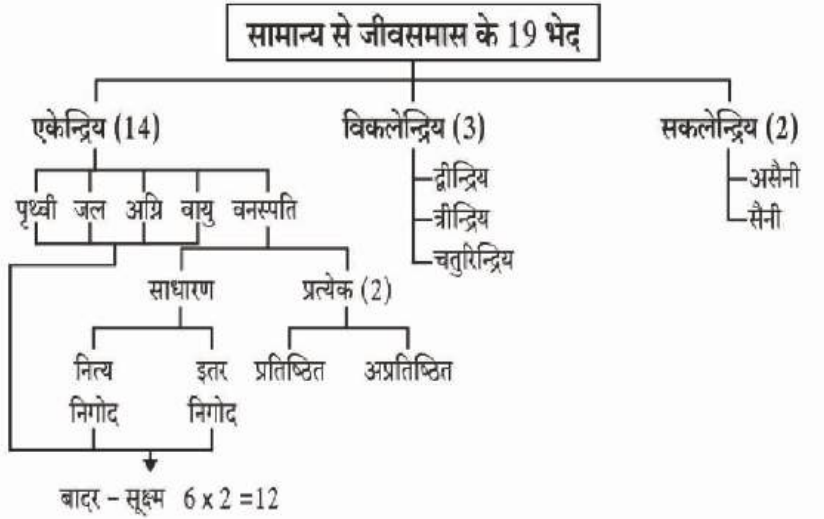

* पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, नित्य निगोद, इतर निगोद	बादर-सूक्ष्म	6 x 2	= 12
* प्रत्येक वनस्पति	प्रतिष्ठित-अप्रतिष्ठित	1 x 2	= 2
* विकलेन्द्रिय			= 3
* सकलेन्द्रिय	सैनी-असैनी	1 x 2	= 2
		कुल	= 19

(चार्ट-3)

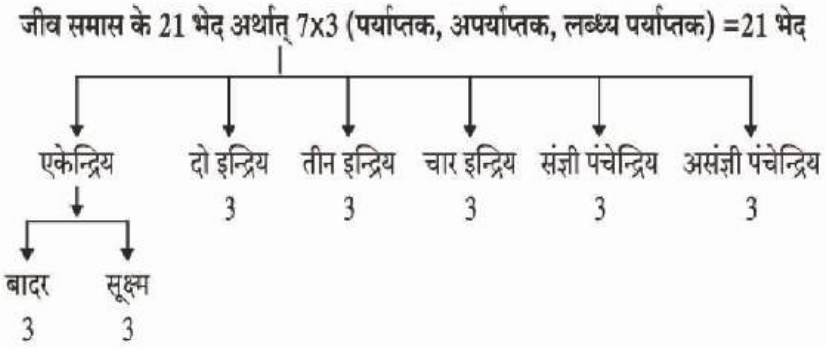

(चार्ट-4)

जीवसमास के 57 भेद

उपर्युक्त 19 x 3 = 57

	पर्याप्त	निर्वत्त्यपर्याप्त	लब्ध्यपर्याप्त
स्वरूप	जिनकी शरीर पर्याप्ति पूर्ण हो	शरीर पर्याप्ति पूर्ण होने से पूर्व	* जिनकी एक भी पर्याप्ति पूर्ण होने से पहले ही मरण हो जाये
किस नाम कर्म का उदय	पर्याप्त		अपर्याप्त

(चार्ट-5)

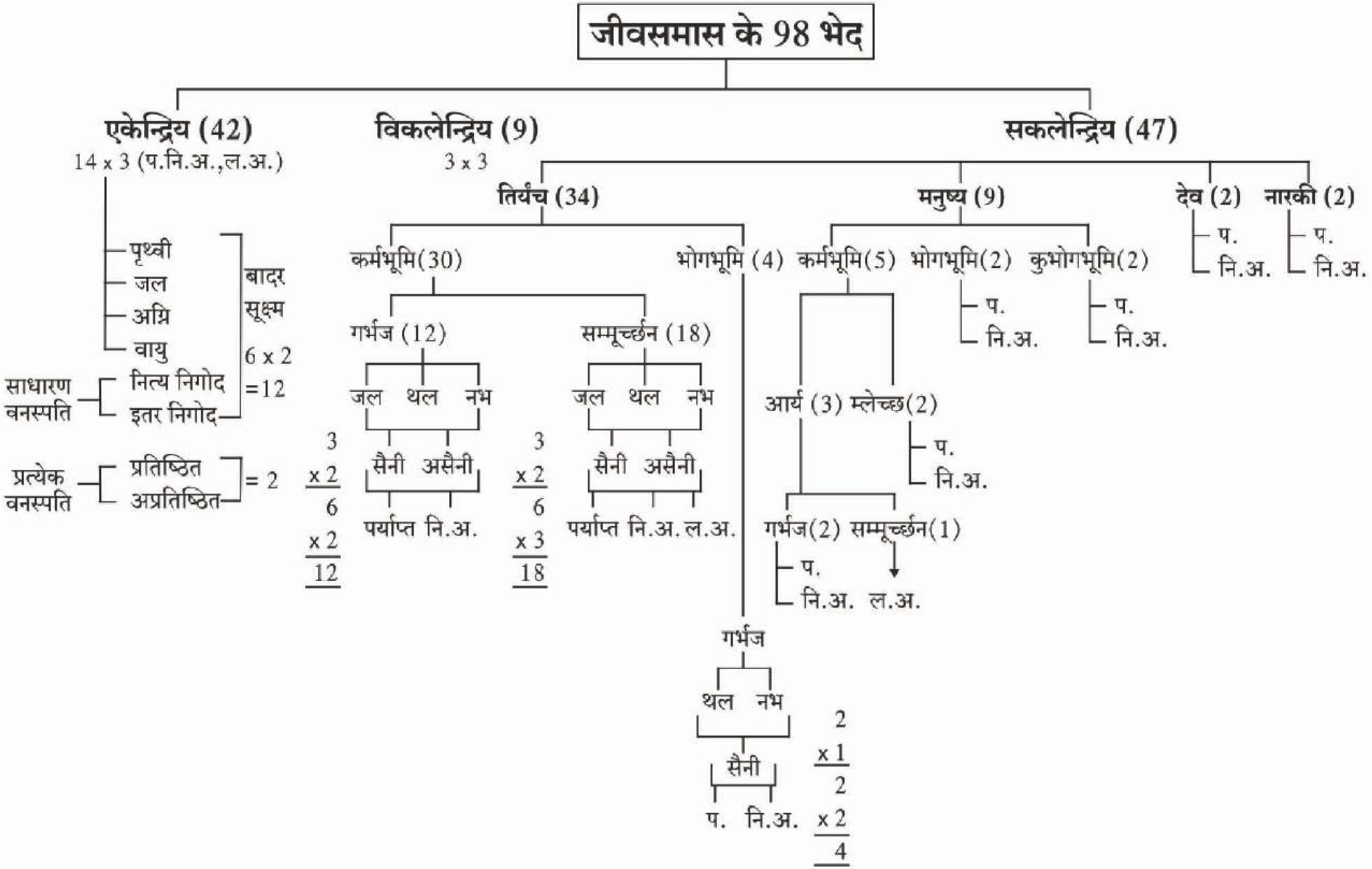
जीवसमास के 98 भेद
एकेन्द्रिय (42)
14 x 3 (प.नि.अ.,ल.अ.)
पृथ्वी
जल
अग्नि
वायु
बादर
सूक्ष्म
6 x 2 =12
साधारण वनस्पति
नित्य निगोद
इतर निगोद
प्रत्येक वनस्पति
प्रतिष्ठित
अप्रतिष्ठित
= 2
विकलेन्द्रिय (9)
3 x 3
सकलेन्द्रिय (47)
तिर्यंच (34)
मनुष्य (9)
देव (2)
प.
नि.अ.
नारकी (2)
प.
नि.अ.
कर्मभूमि(30)
भोगभूमि (4)
कर्मभूमि(5)
भोगभूमि(2)
प.
नि.अ.
कुभोगभूमि(2)
प.
नि.अ.
गर्भज (12)
सम्मूर्च्छन (18)
जल थल नभ
सैनी असैनी
पर्याप्त नि.अ.
3 x 2 6 x 2 12
3 x 2 6 x 3 18
पर्याप्त नि.अ. ल.अ.
आर्य (3) म्लेच्छ(2)
प.
नि.अ.
गर्भज(2) सम्मूर्च्छन(1)
प.
नि.अ. ल.अ.
गर्भज
थल नभ
सैनी
प. नि.अ.
2 x 1 2 x 2 4

(चार्ट-6)

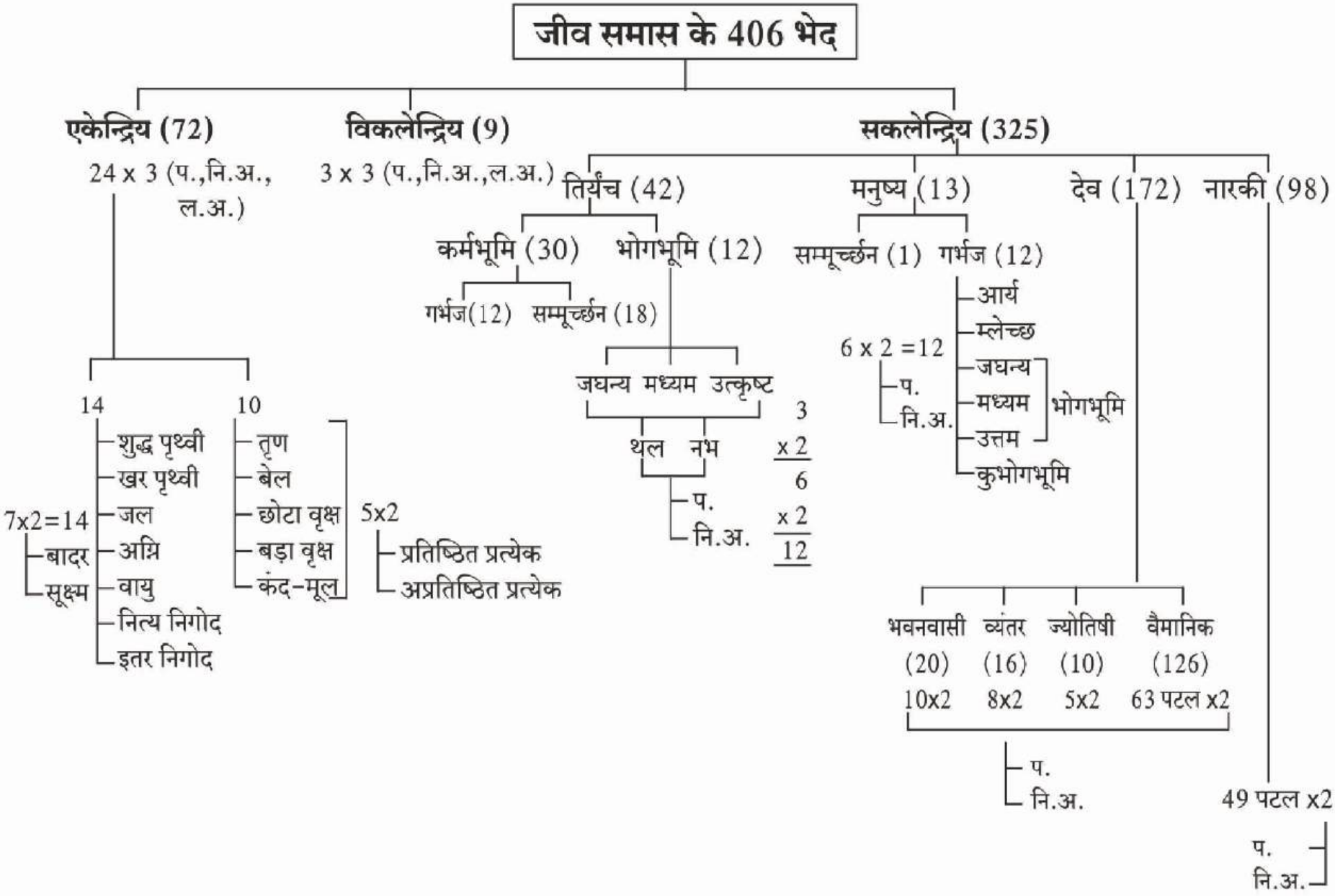
जीव समास के 406 भेद
एकेन्द्रिय (72)
24 x 3 (प.,नि.अ., ल.अ.)
14
शुद्ध पृथ्वी
खर पृथ्वी
जल
अग्नि
वायु
नित्य निगोद
इतर निगोद
7x2=14
बादर
सूक्ष्म
10
तृण
बेल
छोटा वृक्ष
बड़ा वृक्ष
कंद-मूल
5x2
प्रतिष्ठित प्रत्येक
अप्रतिष्ठित प्रत्येक
विकलेन्द्रिय (9)
3 x 3 (प.,नि.अ.,ल.अ.)
सकलेन्द्रिय (325)
तिर्यंच (42)
कर्मभूमि (30)
गर्भज(12)
सम्मूर्च्छन (18)
भोगभूमि (12)
जघन्य मध्यम उत्कृष्ट
3
थल नभ
x 2
6
प.
नि.अ.
x 2
12
मनुष्य (13)
सम्मूर्च्छन (1)
गर्भज (12)
आर्य
म्लेच्छ
6 x 2 =12
प.
नि.अ.
जघन्य
मध्यम
उत्तम
भोगभूमि
कुभोगभूमि
देव (172)
भवनवासी (20) 10x2
व्यंतर (16) 8x2
ज्योतिषी (10) 5x2
वैमानिक (126) 63 पटल x2
प.
नि.अ.
नारकी (98)
49 पटल x2
प.
नि.अ.

Chapter-3

Knowing about various kinds of Living Beings

Q.1. What is called knowing various kinds of living beings?

Ans. Through which various living beings and their multi categories are known, the collection of those religions, it is called knowing various kinds of living beings.

Q.2. What is the literal meaning of knowing various kinds of living beings?

Ans. The group of various kinds of living beings is called compound living beings.

Q.3. How many kinds are of various kinds of living beings?

Ans. In short, there are 14 kinds of living beings and in respect of detail, there are 19, 38, 57, 98, 406 kinds of living beings.

Q.4. Tell the names of the types of living beings?

Ans. Two types- microscopic and gross of the one sensed, two sensed, three sensed, four sensed, five sensed- mind endowed and irrational. In this way, there are seven kinds and all these have developed and undeveloped form totaling 7x2=14 kinds of living beings.

Q.5. What is called microscopic or minute?

Ans. Those which neither prevent nor are prevented by other and are not sheltered by other, are called minute or microscopic living beings.

Q.6. What is called gross?

Ans. Those which are prevented by other and are also sheltered by others, such living beings are called gross.

Q.7. What is single sensed gross complete living being called?

Ans. Those living beings who have only touch sense and live seeking shelter of other and are complete in their form,

and for whom there rises gross name karma are called single sensed completed gross living beings.

Q.8. What is single sensed microscopic complete living being called?

Ans. The living being that gets a microscopic body due to rise of minute physique making karma, or the one that does not depend on others and completed its body formation only with touch sense, such living beings are called single sensed microscopic complete living being.

Q.9. What is called single sensed incomplete gross living being?

Ans. The living being that adopts its body incomplete with a single sense of touch as the result of the rise of gross physique making karma (in fact, the physique of that living being does not get completed till it reaches its full form), in such a state this living being is called single sensed incomplete gross living being.

Q.10. What is called single sensed incomplete microscopic living being?

Ans. The living being that adopts its body incomplete with a single sense of touch as the result of the rise of microscopic physique making karma (in fact, the physique of that living being does not get completed till it reaches its full form), in such a state this living being is called single sensed incomplete microscopic living being.

Q.11. What is called two sensed complete living being?

Ans. The living being that appears with two senses as the result of the rise of mobile being physique karma and gets its body completed is called two sensed complete living being.

Q.12. What is called two sensed incomplete living being?

Ans. The living being that appears with two senses as the result of the rise of mobile being physique karma and from the preliminary stage of its life till it gets it finally completed,

in that stage the living being is called two sensed incomplete living being.

Q.13. What is called three sensed complete living being?

Ans. The living being that is born with three senses due to the result of the rise of mobile being physique karma and complete in its body is called three sensed complete living being.

Q.14. What is called three sensed incomplete living being?

Ans. The living being that is born with three senses due to the result of the rise of mobile being physique karma and from its initial stage of life till gets it finally completed, in that stage the living bring is called three sensed incomplete living being.

Q.15. What is called four sensed complete living being?

Ans. The living being that is born with four senses due to the result of the rise of mobile being physique karma and is complete in its body is called four sensed complete living being.

Q.16. What is called four sensed incomplete living being?

Ans. The living being that is born with four senses due to rise of mobile being physique karma and from its initial stage of life till it gets its body completed, in that stage the living being is called four sensed incomplete living being.

Q.17. What is called five sensed rational complete living being?

Ans. The living being that is born with five senses due to rise of mobile being physique karma and is complete in its body having mental faculty, is called five sensed rational complete living being.

Q.18. What is called five sensed rational incomplete living being?

Ans. The living being that is born with five senses due to rise of mobile being physique karma and has mental faculty,

from its initial stage till it gets its body completed, in that stage the living being is called five sensed rational incomplete living being.

Q.19. What is called five sensed irrational complete being?

Ans. The living being that is born with five senses due to rise of mobile being physique karma and is complete in its body lacking in mental faculty, is called five sensed irrational complete being.

Q.20. What is called five sensed irrational incomplete living being?

Ans. The living being that is born with five senses due to rise of mobile being physique karma and lacks in mental faculty, from its initial stage of life till gets its body completed, in that stage the living being is called five sensed irrational incomplete living being.

Q.21. How are there 19 kinds of compound living beings?

Ans. Earth bodied, water bodied, fire bodied, air bodied, permanent lowest form of life, variable lowest form of life- these six in their gross and microscopic forms totaling 6x2=12, well-grounded each, weak grounded each, two sensed, three sensed, four sensed, irrational five sensed, rational five sensed, in this way totaling 12+7= 19 kinds.

Q.22. How are there 38 kinds of compound living beings?

Ans. The above described 19 kinds of living beings when considered in their complete and incomplete form, the total becomes 19x2=38 kinds.

Q. 23.

Q.24. How are there 57 kinds of compound living beings?

Ans. Of these 19 kinds of living beings, their developable, absolutely non-developable, retiring incompletely developed, considering these three forms of each, the number becomes 19x3=57 kinds.

Q.25. How are there 98 kinds of compound living beings?

Ans. In respect of earth, water, fire, air, permanent lowest form of life, variable lowest form of life and their gross and microscopic forms, there are 12 kinds and supported and unsupported plants each equaling to 14 kinds of single sensed, their developable, non-developable and cessation and absolutely non-developable biological kinds when included, the number becomes 14x3=42 kinds of single sensed.

Three kinds of two sensed, three sensed, four sensed are mutilated, again, these have developable, cessation, non-developable and absolute non-developable kinds each, totaling 3x3=9.

Biological kingdom has 34, human 9, celestial beings 2, hell dwellers 2 totaling 34+ 9+ 2+ 2= 47 kinds are of all sensed. In this one sensed have 42, mutilated 9, all sensed 47 = 98 kinds.

To know in detail please consult the chart.

Q.26. How are there 406 kinds of compound living beings?

Ans. One sensed= 72, mutilated= 9, all sensed= 325, totaling 406 kinds.

To know in detail please consult the chart.

अध्याय–4

पर्याप्ति

प्रश्न 1. पर्याप्ति किसे कहते हैं?

उत्तर : आहारादि वर्गणा को शरीरादिरूप परिणमाने की जीव की शक्ति की पूर्णता को पर्याप्ति कहते हैं।

प्रश्न 2. पर्याप्ति के कितने भेद होते हैं?

उत्तर : पर्याप्ति के 6 भेद होते हैं– (1) आहार (2) शरीर (3) इन्द्रिय (4) श्वासोच्छवास (5) भाषा (6) मन।

प्रश्न 3. आहार पर्याप्ति किसे कहते हैं?

उत्तर : नवीन शरीर के लिए कारणभूत नो कर्म वर्गणा को जीव ग्रहण करता है, उनको खल, रस भाग रूप परिणमाने की शक्ति के निमित्तभूत आगत पुद्गल की प्राप्ति को आहार पर्याप्ति कहते हैं।

प्रश्न 4. शरीर पर्याप्ति किसे कहते हैं?

उत्तर : जिन परमाणुओं को खल रूप परिणमाया था उन्हें हड्डी आदि कठोर अवयव रूप और जिसको रस रूप परिणमाया था उन्हें रुधिरादि रूप में परिणमाने के कारणभूत जीव की शक्ति की पूर्णता को शरीर पर्याप्ति कहते हैं।

प्रश्न 5. इन्द्रिय पर्याप्ति किसे कहते हैं?

उत्तर : आहार वर्गणा के परमाणु को इन्द्रिय का आकार रूप परिणमाने के कारणभूत जीव की शक्ति की पूर्णता को इन्द्रिय पर्याप्ति कहते हैं।

प्रश्न 6. श्वासोच्छवास पर्याप्ति किसे कहते हैं?

उत्तर : आहार वर्गणा के परमाणुओं को श्वासोच्छ्वास रूप परिणमाने

में कारणभूत जीव की शक्ति की पूर्णता को श्वासोच्छवास पर्याप्ति कहते हैं।

प्रश्न 7. भाषा पर्याप्ति किसे कहते हैं?

उत्तर : शब्द वर्गणा के परमाणुओं को वचन रूप परिणमाने के कारणभूत जीव की शक्ति की पूर्णता को भाषा पर्याप्ति कहते हैं।

प्रश्न 8. मन: पर्याप्ति किसे कहते हैं?

उत्तर : मनोवर्गणा के परमाणुओं को हृदय में 8 पांखुड़ी के कमलाकार रूप मन की रचना करने की शक्ति तथा उसके द्वारा यथावत् विचार करने में कारणभूत जीव की शक्ति की पूर्णता को मन पर्याप्ति कहते हैं।

प्रश्न 9. अपर्याप्त किसे कहते हैं?

उत्तर : अपर्याप्त नामकर्म के उदय से आहार, शरीर आदि के योग्य वर्गणाओं को ग्रहण कर आहारादि छ: पर्याप्तियों को पूर्ण नहीं करने की शक्ति को अपर्याप्त कहते हैं।

प्रश्न 10. अपर्याप्तक के कितने भेद होते हैं?

उत्तर : अपर्याप्तक के दो भेद होते हैं– (1) निर्वृत्त्यपर्याप्तक (2) लब्ध्यपर्याप्तक।

प्रश्न 11. निर्वृत्त्यपर्याप्तक किसे कहते हैं?

उत्तर : पर्याप्ति नामकर्म के उदय से जीव अपनी पर्याप्तियों से पूर्ण होता है फिर भी जब तक उसकी शरीर पर्याप्ति पूर्ण नहीं होती तब तक उसको पर्याप्त नहीं कहते किन्तु निर्वृत्त्यपर्याप्तक कहते हैं।

प्रश्न 12. लब्ध्यपर्याप्तक किसे कहते हैं?

उत्तर : अपर्याप्त नामकर्म का उदय होने से जीव अपने–अपने योग्य पर्याप्तियों को पूर्ण न करके अन्तर्मुहूर्त काल में ही मरण को प्राप्त हो जाये इसको लब्ध्यपर्याप्तक कहते हैं।

प्रश्न 13. क्या सभी पर्याप्तियाँ एक साथ पूर्ण होती हैं या क्रम-क्रम से?

उत्तर : नहीं, सभी पर्याप्तियों की शुरुआत तो एक साथ होती है परन्तु पूर्णता क्रम-क्रम से होती है।

प्रश्न 14. किस जीव के कितनी पर्याप्तियाँ होती हैं?

उत्तर : एकेन्द्रिय जीवों के शुरू की 4 [आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छवास], द्वीन्द्रिय से असैनी पंचेन्द्रिय तक - मन को छोड़कर शेष 5 पर्याप्तियाँ, सैनी पंचेन्द्रिय के - छहों पर्याप्तियाँ होती हैं।

प्रश्न 15. निर्वृत्त्यपर्याप्तक में कौन-कौन से गुणस्थान पाये जाते हैं?

उत्तर : निर्वृत्त्यपर्याप्तक में 1,2,4,6 गुणस्थान पाये जाते हैं।

प्रश्न 16. लब्ध्यपर्याप्तक में कौन-कौन से गुणस्थान पाये जाते हैं?

उत्तर : लब्ध्यपर्याप्तक में सिर्फ पहला मिथ्यात्व गुणस्थान ही पाया जाता है।

प्रश्न 17. जीव कौनसी पर्याप्ति की पूर्णता अपूर्णता से पर्याप्त अपर्याप्त की पहचान होती है?

उत्तर : जीव शरीर पर्याप्ति की पूर्णता पर पर्याप्तक व अपूर्णता पर अपर्याप्तक कहलाता है।

प्रश्न 18. पर्याप्तियाँ पूर्ण होने का काल क्या है?

उत्तर : पूर्व-पूर्व की अपेक्षा उत्तरोत्तर पर्याप्ति का काल कुछ कुछ अधिक है फिर भी सामान्य की अपेक्षा सबका काल अन्तर्मुहूर्त ही है।

प्रश्न 19. कौन-कौन से योग में जीव अपर्याप्तक होता है?

उत्तर : मिश्र काय योग व कार्माण काय योग में जीव अपर्याप्तक होता है।

प्रश्न 20. 13वें गुणस्थान में जीव अपर्याप्तक कैसे कहलाता है? क्योंकि वहां तो पर्याप्तियाँ रहती हैं, न पर्याप्तियाँ प्रारम्भ करता है और न ही पूर्ण करता है, वो फिर कैसे?

उत्तर : 13वें गुणस्थान में कपाट समुद्घात के समय मिश्र काय योग होने के कारण अपर्याप्तक अवस्था बनती है।

प्रश्न 21. लब्ध्यपर्याप्तक जीव का काल कितना होता है?

उत्तर : लब्ध्यपर्याप्तक जीव एक अन्तर्मुहूर्त में 66336 बार जन्म मरण कर सकता है। इन भवों को क्षुद्रभव कहा गया है।

प्रश्न 22. कौन-कौन से जीव लब्ध्यपर्याप्तक के अधिक से अधिक कितने-कितने भव धारण कर सकते हैं?

उत्तर : एकेन्द्रिय जीव - 66132 भव, द्वीन्द्रिय - 80 भव, त्रीन्द्रिय के - 60 भव, चतुरिन्द्रिय - 40 भव, पंचेन्द्रिय - 24 भव धारण कर सकते हैं, इनसे अधिक नहीं।

प्रत्येक जीव के क्षुद्रभव

जीव	प्रत्येक जीव के भव	कुल भव
सूक्ष्म पृथ्वी, जल,अग्नि,वायु,साधा.वन.	6012	6012 × 5 = 30060
बादर पृथ्वी,जल,अग्नि,वायु, साधा.वन.	6012	6012 × 5 = 30060
बादर प्रत्येक वनस्पति	6012	6012 × 1 = 6012
एकेन्द्रिय कुल भव		66132
द्वीन्द्रिय	80	80 × 1 = 80
त्रीन्द्रिय	60	60 × 1 = 60
चतुरिन्द्रिय	40	40 × 1 = 40
असैनी पंचेन्द्रिय तिर्यंच	8	8 × 1 = 8
सैनी पंचेन्द्रिय तिर्यंच	8	8 × 1 = 8
मनुष्य	8	8 × 1 = 8
कुल क्षुद्रभव		66336

प्रश्न 23. क्षुद्रभव का अर्थ क्या है?

उत्तर : सबसे छोटी आयु का भव क्षुद्रभव कहलाता है।

Chapter- 4

Completely Developable or Power

Q.1 What is completely developable?

Ans. The capability of transformation of body of living being developing into its completeness through group of intake food atoms is called completely developable or power.

Q.2. How many kinds are of completely developable?

Ans. There are six kinds of completely developable (power)- 1. Food power, 2. Body power, 3. Senses power, 4. Respiratory power, 5. Speech power and 6. Mind power.

Q.3. What is called food power?

Ans. The living being accepts quasi karma group of atoms which is responsible for new body transformation, for the purpose of accumulating incoming energy or matter and transforming it into power is called food power.

Q.4. What is called body power?

Ans. The food particles, whichwere collected in quantities, are now transformed into bones, etc, body parts. The liquefied portion is converted as bloodand fluid parts of the body. This all gives completeness to the body, that is why it is called body power.

Q.5. What is called senses power?

Ans. The food particlescollected are now transformed into specific senses and thus giving completeness to the body of living being and is called senses power.

Q.6. What is called respiratory power?

Ans. The soul of the living being becomes an instrumental cause in converting foodparticles into the respiratory organs and functions giving completeness to body, so it is called respiratory power.

Q.7. What is speech power?

Ans. The soul becomes aninstrumental cause in the food particles becoming convertedto speech particles which provides completeness to body and is called power of speech.

Q.8. What is mind power?

Ans. The soul becomes aninstrumental cause in the transformation of material particlesinto specific mind particles. These particles set as the eightpetals of lotus at the heart. Consequently, living being now has a mind as well as thecapacity to think, so it is called mind power.

Q.9. What is called incompletely developed?

Ans. Due to the rise of non-developability genetic code, the living being is incapable to accumulate atoms of food, body etc. six developable into complete form that is why it is called incompletely developed.

Q.10. What are the kinds of incompletely developed?

Ans. There are two kinds of incompletely developed- 1. Cessation non-developable, 2. Absolutely non-developable.

Q.11. What is called cessation non-developable?

Ans. Due to the rise of physique making karma responsible for complete development of the body, the living being gets his body completed, even then till he does not get his body completed, he is not called completely developed, but is called cessation non-developable.

Q.12. What is called Absolutely non-developable?

Ans. Due to the rise of incomplete physique karma, the living being not completing physique for which he is able and gets died within an antarmuhoort, this is called absolutely non-developable.

Q.13. Are all the powers or developable met together or sequentially?

Ans. No, all these powers or developable begin at the same time, but get completed sequentially.

Q.14. Which living being has how many powers or sufficiency or developable?

Ans. Single sensed has four (food, body, senses, respiration), from two sensed to irrational five sensed- leaving mind, five powers, rational five sensed being has six developable.

Q.15. What stages of spiritual development are formed in cessation non-developable?

Ans. 1,2,4 and 6th stages of spiritual development are formed in cessation non-developable.

Q.16. What stages of spiritual development are formed in absolutely non-developable?

Ans. Only 1st stage of spiritual development (wrong belief stage of spiritual development is formed in absolutely non-developable.

Q.17. The completeness or incompleteness of which developable distinguishes between sufficient or insufficient (complete or incomplete)?

Ans. On the completion of developable, the body is called complete and on incompletion of developable, the body is called incomplete.

Q.18. What is the duration of completeness of developable?

Ans. The duration of completeness of developable increases gradually, however, from general point of view it is antarmuhoort.

Q.19. In which vibrations the living being is incomplete or non-developable?

Ans. In mixed bodily activities and karmic matter body activities, the living being is non-developable.

Q.20. How in thirteenth stage of spiritual development the living being is called incomplete? Since there dwell complete souls, the living being neither starts developing nor gets completed, then how?

Ans. In the thirteenth stage of spiritual development, at the time of passionate emanation due to mixed body activity the state of incompleteness remains.

Q.21. What is the duration of absolutely non-developable living being?

Ans. The absolute non-developable living being can have 66336 life cycles within one antarmuhoort. These dispositions are called lower births (lowest life span).

Q.22. Which living beings can adopt how many births at the most in absolutely non-developable stage?

Ans. One sensed can adopt 66132 births, two sensed- 80 births, three sensed- 60 births, four sensed- 40 births, five sensed- 24 births, and not more than these.

The lowest time span of births of every living being

Living beings	Births of every living being	Total births
Micro-earth, water, fire, air, simple veg.	6012	6012x5=30060
Macro-earth, water, fire, air, simple veg.	6012	6012x5=30060
Macro- each vegetable	6012	6012x2=6012
One sensed total births		66132
Two sensed	80	80x1=80
Three sensed	60	60x1=60
Four sensed	40	40x1=40
Irrational five sensed	8	8x1=8
Rational five sensed	8	8x1=8
Human	8	8x1=8
		66336

Q.23. What is the meaning of the lowest birth?

Ans. The birth having the lowest life span is called the lowest birth.

अध्याय–5

प्राण

प्रश्न 1. प्राण किसे कहते हैं?

उत्तर : जीव जिनके संयोग से जीता है और वियोग से मर जाता है उन्हें प्राण कहते हैं।

प्रश्न 2. प्राण के कितने भेद होते हैं?

उत्तर : प्राण के दो भेद होते हैं- (1) भाव प्राण (2) द्रव्य प्राण।

प्रश्न 3. भाव प्राण किसे कहते हैं?

उत्तर : आत्मा की वह शक्ति जिससे इन्द्रियादि अपने कार्य रूप प्रवर्ते उन्हें भाव प्राण कहते हैं। अथवा चेतना ही जिसके प्राण हो उसे भाव प्राण कहते हैं।

प्रश्न 4. भाव प्राण के कितने भेद होते हैं?

उत्तर : भाव प्राण के दो भेद होते हैं- (1) इन्द्रिय प्राण (2) बल प्राण।

प्रश्न 5. द्रव्य प्राण किसे कहते हैं?

उत्तर : पुद्गल द्रव्य से उत्पन्न द्रव्य इन्द्रियादि को द्रव्य प्राण कहते हैं।

प्रश्न 6. द्रव्य प्राण के कितने भेद होते हैं?

उत्तर : द्रव्य प्राण के 10 भेद होते हैं- इन्द्रिय प्राण - 5, बल प्राण - 3, श्वासोच्छवास, आयु।

प्रश्न 7. 5 इन्द्रियप्राण कौन–कौन से हैं?

उत्तर : स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु, कर्ण ये 5 इन्द्रिय प्राण हैं।

प्रश्न 8. 3 बल प्राण कौन–कौन से हैं?

उत्तर : मन, वचन, काय ये बल प्राण हैं।

प्रश्न 9. इन्द्रिय प्राण किसे कहते हैं?

उत्तर : वीर्यान्तराय और मतिज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से उत्पन्न इन्द्रियों को इन्द्रिय प्राण कहते हैं।

प्रश्न 10. मनोबल प्राण किसे कहते हैं?

उत्तर : वीर्यान्तराय और मतिज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से उत्पन्न मन को मनोबल प्राण कहते हैं।

प्रश्न 11. वचन बल प्राण किसे कहते हैं?

उत्तर : वीर्यान्तराय एवं स्वर नाम कर्म के उदय से उत्पन्न शक्ति विशेष को वचन बल प्राण कहते हैं।

प्रश्न 12. काय बल प्राण किसे कहते हैं?

उत्तर : वीर्यान्तराय कर्म के क्षयोपशम व शरीर नाम कर्म के उदय से प्राप्त शक्ति विशेष को काय बल प्राण कहते हैं।

प्रश्न 13. श्वासोच्छवास प्राण किसे कहते हैं?

उत्तर : श्वासोच्छवास व शरीर नाम कर्म के उदय से उच्छवास व नि:स्वास प्रवृत्ति की शक्ति विशेष को श्वासोच्छवास प्राण कहते हैं।

प्रश्न 14. आयु प्राण किसे कहते हैं?

उत्तर : आयु कर्म के उदय से नर–नरकादि पर्याय विशेष को आयु प्राण कहते हैं।

प्रश्न 15. कौन–कौन से प्राण पर्याप्तकों के होते हैं और कौन–कौन से अपर्याप्तकों के?

उत्तर : इन्द्रिय प्राण, काय बल प्राण, आयु प्राण ये तीन प्राण पर्याप्तक व अपर्याप्तक दोनों के होते हैं किन्तु श्वासोच्छवास प्राण पर्याप्तक के ही होता है। वचन बल प्राण पर्याप्त द्वीन्द्रियादि के ही होता है, एकेन्द्रिय के नहीं होता है। मनोबल प्राण संज्ञी पर्याप्तक के ही होता है।

प्रश्न 16. किस जीव के कितने व कौन-कौन से प्राण होते हैं?

उत्तर :

जीव	अपर्याप्त अवस्था में प्राण	पर्याप्त अवस्था में प्राण
एकेन्द्रिय	3 प्राण (स्पर्शन इन्द्रिय, काय बल, आयु)	4 प्राण (स्पर्शन इन्द्रिय, काय बल, आयु, श्वासोच्छवास
द्वीन्द्रिय	4 प्राण (उपरोक्त 3+रसना इन्द्रिय)	6 प्राण (उपरोक्त 4+रसना इन्द्रिय+वचन बल)
त्रीन्द्रिय	5 प्राण (उपरोक्त 4+घ्राण इन्द्रिय)	7 प्राण (उपरोक्त 6+घ्राण इन्द्रिय)
चतुरिन्द्रिय	6 प्राण (उपरोक्त 5+चक्षु इन्द्रिय)	8 प्राण (उपरोक्त 7+चक्षु इन्द्रिय)
असैनी पंचेन्द्रिय	7 प्राण (उपरोक्त 6+कर्ण इन्द्रिय)	9 प्राण (उपरोक्त 8+कर्ण इन्द्रिय)
सैनी पंचेन्द्रिय	7 प्राण (उपरोक्त 7 प्राण)	10 प्राण (उपरोक्त 9+मन बल)

प्रश्न 17. सयोग केवली व अयोग केवली के कितने प्राण होते हैं?

उत्तर : सयोग केवली के - 4,3,2,1 प्राण व अयोग केवली के-1 प्राण [आयु प्राण] होता है।

प्रश्न 18. सयोग केवली के 4,3,2,1 प्राण कैसे बनते हैं?

उत्तर : पर्याप्त अवस्था में - 4 प्राण, अपर्याप्त अवस्था में दण्ड समुद्घात में 3 प्राण [आयु, कायबल, श्वासोच्छवास], कपाट समुद्घात में 2 प्राण [कायबल, आयु], प्रतर और लोकपूरण समुद्घात में 1 प्राण [आयु प्राण] क्योंकि कार्माण काय योग में पहुँचने पर एक प्राण रह जाता है।

Chapter- 5

Life Force/ Vitality

Q.1. What is called life force or vitality?

Ans. That with which a living being lives and without which dies, is called life force or vitality.

Q.2. What are the kinds of vitality?

Ans. There are two kinds of vitality- 1. Psychic vitality, 2. Physical vitality.

Q.3. What is called psychic vitality?

Ans. The power of the soul with which all the senses perform their work, is called psychic vitality. Or, whose vitality is his consciousness, it is called psychic vitality.

Q.4. What are the kinds of psychic vitality?

Ans. There are two kinds of psychic vitality- 1. Sensory vitality, 2. Strength vitality.

Q.5. What is Physical vitality?

Ans. The material senses produced from the matter particles are called physical vitality.

Q.6. How many kinds are there of physical vitality?

Ans. There are 10 kinds of physical vitality- vitality of senses- 5, strength vitality- 3, respiration, age.

Q.7. What are five vitality of senses?

Ans. To touch, to taste, to smell, to see, to hear- these 5 are the vitality of senses.

Q.8. What are three strength vitality?

Ans. Mind, speech and body these three are strength vitality.

Q.9. What is called sensory vitality?

Ans. The senses produced through annihilation and subsidence of power obscuring karma and cognitive knowledge obscuring karma are called sensory vitality.

Q.10. What is mental vitality?

Ans. The mind powers produced by annihilation and subsidence of power obscuring karma and cognitive knowledge obscuring karma is called mental vitality.

Q.11. What is speech power vitality?

Ans. The specific strength produced due to rise of speech name karma and power obscuring karma is called speech power vitality.

Q.12. What physical power vitality?

Ans. The specific physical strength produced due to annihilation cum subsidence of power obscuring karma and rise of physique name karma is called physical power vitality.

Q.13. What is called respiratory vitality?

Ans. The specific power of inhaling and exhaling produced due to rise of physique name karma and respiratory name karma is called respiratory vitality.

Q.14. What is age vitality?

Ans. The human or hell birth due to rise of age name karma is called age vitality.

Q.15. Which vitalities are complete and which are incomplete?

Ans. Developed and incompletely developed both living beings have senses vitality, physical vitality and age vitality. But respiratory vitality is borne by only complete living beings. Speech vitality is borne by two senses complete living being, and not by single sensed living being. Mind vitality is borne only by rational complete living being.

Q.16. Which living beings do have what kinds of vitality?

Ans.

Living being	Vitality in incomplete stage	Vitality in complete stage
Single sensed	3vitality (touch sense, physical,age)	4 vutality(touch, physical,age,respiration

Two sensed	4 vitality(above 3 + taste)	6 vitality(above 4+ taste+ speech)
Three sensed	5 vitality(above 4+ smell)	7 vitality(above 6+ smell)
Four sensed	6 vitality(above 5+ eyes)	8 vitality(above 7+ eyes)
Irrational Five sensed	7 vitality(above 6+ ears)	9 vitality(above 8+ ears)
Rational Five sensed	7 vitality(above 7)	10 vitality(above 9+ mind power)

Q.17. What number of vitalities are there in omniscient with activity and omniscient with inactivity?

Ans. Omniscient with activity has 4,3,2,1 vitality and omniscient with inactivity has 1 vitality (age).

Q.18. How are there 4,3,2,1 vitality of omniscient with activity?

Ans. In complete stage 4 vitality, in incomplete stage of violent emanation 3 vitality (age, physical, respiration), in tricky emanation 2 vitality (physical power, age), in real emanation and in public emanation 1 vitality (age) because in reaching karmic body activities, it remains only one vitality.

अध्याय–6
संज्ञा

प्रश्न 1. संज्ञा किसे कहते हैं?

उत्तर : जिनसे संक्लेषित होकर जीव इस लोक में दारुण (घोर) दु:खों को प्राप्त करता है उसे ही संज्ञा कहते हैं। अथवा भोजनादि की अभिलाषा/इच्छा/वांछा को संज्ञा कहते हैं।

प्रश्न 2. संज्ञा के कितने भेद हैं?

उत्तर : संज्ञा के 4 भेद हैं- (1) आहार (2) भय (3) मैथुन (4) परिग्रह।

प्रश्न 3. आहार संज्ञा किसे कहते हैं?

उत्तर : अन्तरंग में असाता वेदनीय की उदीरणा से, बाह्य में आहार आदि के दर्शन से जो आहार की इच्छा होती है उसे आहार संज्ञा कहते हैं।

प्रश्न 4. आहार संज्ञा कौन से गुणस्थान तक पायी जाती है?

उत्तर : आहार संज्ञा 1 से 6 गुणस्थान तक पायी जाती है।

प्रश्न 5. भय संज्ञा किसे कहते हैं?

उत्तर : अन्तरंग में भय नो कषाय की उदीरणा तथा बाह्य में भयोत्पादक वस्तु देखने से जो भय उत्पन्न होता है अथवा भय से भयभीत होकर भागने, छिपने की इच्छा को भय संज्ञा कहते हैं।

प्रश्न 6. भय संज्ञा कौन से गुणस्थान तक पायी जाती है?

उत्तर : भय संज्ञा 1 से 8 गुणस्थान तक पायी जाती है।

प्रश्न 7. मैथुन संज्ञा किसे कहते हैं?

उत्तर : अन्तरंग में वेद नो कषाय की उदीरणा से और बाह्य में कामोत्तिक

चित्र आदि देखने सुनने से जीव के हृदय में जो कामवासना उत्पन्न होती है उसे मैथुन संज्ञा कहते हैं।

प्रश्न 8. मैथुन संज्ञा कौन से गुणस्थान तक पायी जाती है?

उत्तर : मैथुन संज्ञा 1 से 9 गुणस्थान तक पायी जाती है।

प्रश्न 9. परिग्रह संज्ञा किसे कहते हैं?

उत्तर : अन्तरंग में लोभ कषाय की उदीरणा होने से बाह्य में भोगोपभोग के साधनभूत पदार्थों को देखने से जीवों के हृदय में जो परिग्रह रक्षण व संग्रह की बुद्धि होती है उसे परिग्रह संज्ञा कहते हैं।

प्रश्न 10. परिग्रह संज्ञा कौन से गुणस्थान तक पायी जाती है?

उत्तर : परिग्रह संज्ञा 1 से 10 गुणस्थान तक पायी जाती है।

Chapter- 6

Q.1. What is called Instinct?

Ans. With what passionate activity the soul gets absorbed in painful miseries in this world, is called instinct. Or the intense desire for foodetc. is called instinct.

Q.2. What are kinds of instinct?

Ans. There are four kinds of instinct- 1. Food, 2. Fear, 3. Sex indulgence, 4. Accumulation.

Q.3. What is food instinct?

Ans. Due to premature fruition of unpleasant feeling producing karma in the inner self, and the food desired by its sight is called food instinct.

Q.4. Up to which stage of spiritual development food instinct is found?

Ans. Food instinct is found from 1st stage of spiritual development to 6th stage of spiritual development.

Q.5. What is called fear instinct?

Ans. Fruition of quasi-passion internally and on watching a fearful thing externally, the feeling which is produced is called fear instinct, or the desire to hide or running away with fear seeing a terrible thing is called fear instinct.

Q.6. Up to which stage of spiritual development fear instinct is found?

Ans. Fear instinct is found from the 1st stage to 8th stage of spiritual development.

Q.7. What is called sex indulgence instinct?

Ans. Fruition of quasi-passion internally and on viewing sex inciting paintings or pictures externally, the sexual feelings that arouse in the mind of the living being is called sex indulgence instinct.

Q.8. Up to which stage of spiritual development this instinct of sex indulgence is found?

Ans. Sex indulgence instinct is found from 1st stage to 9th stage of spiritual development.

Q.9. What is called accumulation instinct?

Ans. Due to the fruition of greed passion internally and the feeling of possession of things what the living being sees for the purpose of enjoyment and re-enjoyment, such feeling is the instinct of accumulation.

Q.10. Up to which stage of spiritual development the instinct of accumulation is found?

Ans. The instinct of accumulation is found from 1st stage to 10th stage of spiritual development.

भाग–II

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	प्रश्नों की संख्या	पृष्ठ संख्या
1.	मार्गणा	8	130
	Investigation·		132
I.	गति मार्गणा	8	134
	Investigation in the realm of existence		135
	(क) नरकगति मार्गणा	39	136
	(A) Exploration of Hell Destiny		142
	(ख) तिर्यंचगति मार्गणा	36	147
	(B) Investigation of Botanical kingdom (Botanical beings)		152
	(ग) मनुष्यगति मार्गणा	49	157
	(c) Investigation in Human Destiny		165
	(घ) देवगति मार्गणा	49	172
	(D) Enquiry Into Celestial Destiny		179
II.	इन्द्रिय मार्गणा	35	185
	Enquiry through Senses		191
III.	कार्य मार्गणा	30	196
	Investigation into Physical body		200
IV.	योग मार्गणा	30	204
	Investigation into activity of the soul		209
V.	वेद मार्गणा	22	215
	Investigation into Gender		218
VI.	कषाय मार्गणा	29	221
	Investigation into Passion		225
VII.	ज्ञान मार्गणा	20	229
	Knowledge investigation		232

	(क) मतिज्ञान मार्गणा	16	235
	(A) Knowledge investigation		238
	(ख) श्रुतज्ञान मार्गणा	25	241
	(B) Scriptural Knowledge Investigation		251
	(ग) अवधिज्ञान मार्गणा	19	257
	(C) Clairvoyance Investigation		260
	(घ) मन:पर्यय व केवलज्ञान मार्गणा	9	263
	(D) Telepathy and Omniscience Investigation		265
VIII.	संयम मार्गणा	41	267
	Restraint Investigation		273
IX.	दर्शन मार्गणा	8	280
	Perception/ Faith (System of Philosophy) Investigation		282
X.	लेश्या मार्गणा	30	284
	Investigation of Attitudes of Beings (Leshya Margana)		292
XI.	भव्य मार्गणा	10	300
	Investigation into beings Worthy of Liberation		302
XII.	सम्यक्त्व मार्गणा	66	304
	Investigation right belief		318
XIII.	संज्ञी मार्गणा	12	332
	Investigating Beings with consciousness (sangyiya margana)		334
XIV.	आहार मार्गणा	17	336
	Investigation expressed about Assimililative, Non-assimilative Stage of Beings		339
2.	उपयोग	13	342
	Cognition		344

अध्याय–1

मार्गणा

प्रश्न 1. मार्गणा किसे कहते हैं?

उत्तर : जिन परिणामों के द्वारा जीव का अन्वेषण (विचार–खोज) किया जाता है उसे मार्गणा कहते हैं।

प्रश्न 2. मार्गणाओं के कितने भेद हैं?

उत्तर : मार्गणाओं के 14 भेद हैं।

प्रश्न 3. 14 मार्गणाऐं कौन–कौन सी होती हैं? नाम बताइए।

उत्तर : गति, इन्द्रिय, काय, योग, वेद, कषाय, ज्ञान, संयम, दर्शन, लेश्या, भव्यत्व, सम्यक्त्व, संज्ञी, आहार।

प्रश्न 4. इन मार्गणाओं के कितने भेद हैं?

उत्तर : इन मार्गणाओं के दो भेद हैं– (1) सान्तर मार्गणा (2) निरन्तर मार्गणा।

प्रश्न 5. सान्तर मार्गणा किसे कहते हैं?

उत्तर : सान्तर यानी अन्तर सहित। विवक्षित मार्गणा में किसी समय में किसी भी जीव का प्राप्त न होना सान्तर मार्गणा है।

प्रश्न 6. निरन्तर मार्गणा किसे कहते हैं?

उत्तर : जिन मार्गणाओं में जीव हमेशा रहते हैं उन्हें निरन्तर मार्गणा कहते हैं।

प्रश्न 7. सान्तर मार्गणाएँ कितनी होती हैं?

उत्तर : सान्तर मार्गणाएँ चार होती हैं– (1) गति मार्गणा में लब्ध्यपर्याप्तक मनुष्य, (2) सम्यक्त्व मार्गणा में सासादन सम्यक्त्व, मिश्र सम्यक्त्व, उपशम सम्यक्त्व (3) संयम मार्गणा

में सूक्ष्मसाम्पराय संयम, (4) योग मार्गणा में आहारक काययोग, आहारक मिश्र काय योग, वैक्रियक मिश्र काय योग।

शेष सभी मार्गणाएँ निरन्तर मार्गणाएँ होती हैं।

प्रश्न 8. सान्तर मार्गणाओं का जघन्य व उत्कृष्ट अन्तर काल कितना है?

उत्तर : लब्ध्यपर्याप्तक मनुष्य, सासादन सम्यक्त्व, मिश्र सम्यक्त्व का उत्कृष्ट अन्तर काल पल्य के असंख्यातवें भाग, उपशम सम्यक्त्व का काल चतुर्थ गुणस्थान में 7 दिन, पंचम गुणस्थान में 14 दिन, छठवें–सातवें गुणस्थान में 15 दिन अथवा 24 दिन, सूक्ष्मसाम्पराय संयम का काल 6 महीना, आहारक व आहारक मिश्र का काल वर्ष पृथक्त्व, वैक्रियक मिश्र का काल 12 मुहूर्त और जघन्य अन्तर काल सभी का एक समय है।

Chapter-1
Investigation

Q.1. What is called investigation?

Ans. Thought activity by which the living being is explored (investigated), is called maarganaa (investigation).

Q.2. What are kinds of investigation?

Ans. There are 14 kinds of investigation.

Q.3. What are these 14 investigations, tell their names?

Ans. Motion, senses, physical body, activity, sex, passion, knowledge, restraint, perception, colouration, salvation able, righteousness, rational, food.

Q.4. How many kinds are of these investigations?

Ans. There are two kinds of these investigations- 1. Investigation with difference, 2. Continuous Investigation.

Q.5. What is investigation with difference?

Ans. Saantar means with difference. At any time in implied investigation non-availability of living being is investigation with difference.

Q.6. What is continuous investigation?

Ans. Those investigations in which living beings always remains, are called continuous investigation.

Q.7. What are the number of investigations with difference?

Ans. There are four investigations with difference- 1. Absolutely non-developable human being in motion investigation, 2. Indifferent right faith in right investigation, 3. Micro passionate restraint in restraint investigation, 4. Assimilative body activity, assimilative mixed body activity, karmic bondage for fluid activity in vibrational investigation.

Rest all investigations are continuous investigations.

Q.8. What is the lowest and highest duration of the investigation with difference?

Ans. The highest duration of absolutely non-developable, lingering right-faith, mixed right-belief is infinitieth part of palya, the duration of subsidence right belief in the fourth stage of spiritual development is 7 days, in the fifth stage of spiritual development is 14 days, in the sixth and seventh stages of spiritual development is 15 days or 24 days, in the subtle passion stage is 6 months, in assimilative and assimilative mixed stages is one year, the stage of fluid body associated with karmic body is 12 muhoort and the lowest duration is same for all the stages.

I. गति मार्गणा

प्रश्न 1. गति किसे कहते हैं?

उत्तर : * गति नामकर्म के उदय से होने वाली जीव की अवस्था विशेष को गति कहते हैं।
* गमन करने को गति कहते हैं।
* भव से भवान्तर को गति कहते हैं।

प्रश्न 2. गति मार्गणा किसे कहते हैं?

उत्तर : जहाँ गतियों के माध्यम से जीवों की खोज की जाती है उन्हें गति मार्गणा कहते हैं।

प्रश्न 3. गति मार्गणा के कितने भेद हैं?

उत्तर : गति मार्गणा के चार भेद हैं– (1) नरक गति (2) तिर्यंच गति (3) मनुष्य गति (4) देव गति।

प्रश्न 4. नरक गति किसे कहते हैं?

उत्तर : नरक गति नामकर्म के उदय से होने वाली जीव की अवस्था विशेष को नरक गति कहते हैं।

प्रश्न 5. तिर्यंच गति किसे कहते हैं?

उत्तर : तिर्यंच गति नामकर्म के उदय से होने वाली जीव की अवस्था विशेष को तिर्यंच गति कहते हैं।

प्रश्न 6. मनुष्य गति किसे कहते हैं?

उत्तर : मनुष्य गति नामकर्म के उदय से होने वाली जीव की अवस्था विशेष को मनुष्य गति कहते हैं।

प्रश्न 7. देव गति किसे कहते हैं?

उत्तर : देव गति नामकर्म के उदय से होने वाली जीव की अवस्था विशेष को देव गति कहते हैं।

प्रश्न 8. ऐसा कौन सा शरीर है जो सभी गति के जीवों में पाया जाता है?

उत्तर : तैजस और कार्माण शरीर ऐसे हैं जो सभी गति के जीवों में पाये जाते हैं।

I. Investigation in the realm of existence

Q.1. What is realm of existence?

Ans. The specific condition of the living being due to rise of existence name karma is investigation or exploration of realm of existence. The movement is known as motion. Change in life-destiny is transition or movement from one state to the other.

Q.2. What is exploration in the realm of existence?

Ans. Where exploration is done on the basis of the changes in life-destiny, it is called investigation in the realm of existence.

Q.3. What are the kinds of realm of existence?

Ans. There are four kinds of realm of existence- 1. Hell destiny, 2. Destiny of Biological kingdom, 3. Human destiny, Celestial destiny.

Q.4. What is hell destiny?

Ans. The specific condition of the living being due to rise of hell destiny name karma is called hell destiny.

Q.5. What is plant and animal destiny?

Ans. The specific condition of the living being due to rise of biological kingdom name karma is called plant and animal destiny.

Q.6. What is human destiny?

Ans. The specific condition of the living being due to rise of human name karma is called human destiny.

Q.7. What is Celestial destiny?

Ans. The specific condition of the living being due to rise of celestial destiny name karma is called celestial destiny.

Q.8. Which body is found in the living beings of all kinds of destiny?

Ans. Luminous and Karmic matter bodies are bodies which are found in the living beings of all kinds of destiny.

नरक गति मार्गणा (क)

प्रश्न 1. नारकी का स्वरूप क्या है?

उत्तर : जो द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव में स्वयं तथा परस्पर में प्रीति को प्राप्त नहीं होते हैं उनको नारकी कहते हैं। अथवा जो हमेशा आर्त्त, रौद्र ध्यान में रत रहते हैं वे नारकी हैं।

प्रश्न 2. नारकी को और क्या कहते हैं?

उत्तर : नारकी को नारत भी कहते है।

प्रश्न 3. नारत का शाब्दिक अर्थ क्या है?

उत्तर : ना - नहीं, रत - रति [प्रेमभाव] अर्थात् जो कभी भी रति [प्रेमभाव] को प्राप्त नहीं होते हैं, उन्हें नारकी/नारत कहते हैं।

प्रश्न 4. नरक कितने होते हैं? नाम बताइए।

उत्तर : नरक सात होते हैं- धम्मा, वंशा, मेघा, अंजना, अरिष्टा, मघवा, माघवी।

प्रश्न 5. नरक गति में पर्याप्त व अपर्याप्त अवस्था में कितने गुणस्थान पाये जाते हैं?

उत्तर : नरक गति में पर्याप्त में 1 से 4 व अपर्याप्त में सासादन और मिश्र को छोड़कर शेष दो गुणस्थान पाये जाते हैं।

प्रश्न 6. नारकी जीवों के कौन सा शरीर होता है?

उत्तर : नारकी जीवों के वैक्रियक शरीर होता है।

प्रश्न 7. नारकी जीवों के कौन सा वेद होता है?

उत्तर : नारकी जीवों के नपुंसक वेद होता है।

प्रश्न 8. नारकी जीवों के अधिकतम कितनी कषाय हो सकती है?

उत्तर : नारकी जीवों के 23 कषाय (पुरुष व स्त्री वेद बिना) हो सकती हैं।

प्रश्न 9. नारकी जीवों के कौन-सा संयम पाया जाता है?

उत्तर : नारकी जीवों के असंयम पाया जाता है।

प्रश्न 10. नारकी जीवों के कौन-कौन से दर्शन पाये जाते हैं?

उत्तर : नारकी जीवों के चक्षु-अचक्षु-अवधिदर्शन पाये जाते हैं।

प्रश्न 11. क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीव कौन से नरक तक जा सकता है?

उत्तर : क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीव सिर्फ पहले नरक तक ही जा सकता है।

प्रश्न 13. तीर्थंकर प्रकृति का बन्धक जीव कौन से नरक तक जा सकता है।

उत्तर : तीर्थंकर प्रकृति का बन्धक जीव तीसरे नरक तक ही जा सकता है।

प्रश्न 13. नारकी जीव मरण करके कौन सी गति में जा सकते हैं तथा कौन-कौन सी गति से आ सकते हैं?

उत्तर : नारकी जीव तिर्यंच व मनुष्य गति में ही जा सकते हैं और आ भी सकते हैं, देव गति व नरक गति से न तो आ सकते हैं और ना ही जा सकते हैं क्योंकि वैक्रियक शरीर से वैक्रियक शरीर में आना जाना निषेध है।

प्रश्न 14. नारकी जीव कितने इन्द्रिय होते हैं?

उत्तर : नारकी जीव नियम से पंचेन्द्रिय ही होते हैं।

प्रश्न 15. नारकी जीवों की उत्कृष्ट आयु कितनी होती है?

उत्तर : नारकी जीवों की उत्कृष्ट आयु सातों नरकों में क्रमशः 1,3,7,10,17,22,33 सागर होती है।

प्रश्न 16. नारकी जीवों की जघन्य आयु कितनी होती है

उत्तर : नारकी जीवों की जघन्य आयु सातों नरकों में क्रमशः 10,000 वर्ष, 1,3,7,10,17,22 सागर होती है।

प्रश्न 17. नरक की सातों पृथ्वीयों के नाम क्या हैं?

उत्तर : नरक की सातों पृथ्वीयों के नाम क्रमश: रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, बालुकाप्रभा, पंकप्रभा, धूमप्रभा, तम: प्रभा, महातम: प्रभा है।

प्रश्न 18. नरक में कितने बिल होते हैं?

उत्तर : नरक में 84 लाख बिल होते हैं।

प्रश्न 19. कौन-कौन से नरक में कितने-कितने बिल होते हैं?

उत्तर : नरकों में बिल क्रमश: 30 लाख, 25 लाख, 15 लाख, 10 लाख, 3 लाख, 99995 और 5 बिल होते हैं।

प्रश्न 20. नरकों में पटल कितने होते हैं?

उत्तर : नरकों में 49 पटल होते हैं।

प्रश्न 21. कौन-कौन से नरक में कितने-कितने पटल होते हैं?

उत्तर : नरकों में पटल क्रमश: 13,11,9,7,5,3 और 1 पटल होते हैं।

प्रश्न 22. नरकों में सर्दी होती है या गर्मी?

उत्तर : ऊपर के 3 नरकों में भयंकर गर्मी ही होती है और चौथे नरक के ऊपर के कुछ भाग में भयंकर गर्मी और चौथे नरक के निचले भाग से 7वें नरक तक भयंकर सर्दी ही होती है।

प्रश्न 23. नारकीयों के शरीर की जघन्य व उत्कृष्ट अवगाहना कितनी होती है?

उत्तर : नारकीयों की जघन्य अवगाहना- 3 हाथ।
उत्कृष्ट अवगाहना - 500 धनुष होती है।

प्रश्न 24. नारकीयों में कौन-कौन सी लेश्या पाई जातीं हैं?

उत्तर : नारकीयों में कृष्ण, नील व कापोत लेश्या पाई जातीं हैं।

प्रश्न 25. नारकी जीव को कितने ज्ञान हो सकते हैं?

उत्तर : नारकीयों में 3 ज्ञान [मति, श्रुत, अवधि] 3 अज्ञान [कुमति, कुश्रुत, कुअवधि] हो सकते हैं।

प्रश्न 26. नारकीयों में कौन-कौन से सम्यक्त्व होते हैं?

उत्तर : नारकीयों में पर्याप्तक अवस्था में - छहों सम्यक्त्व।
अपर्याप्तक अवस्था में तीन सम्यक्त्व (मिथ्यात्व, क्षायिक, कृतकृत्य वेदक की अपेक्षा से क्षयोपशम सम्यक्त्व) होते हैं।

प्रश्न 27. नारकी जीव कितने होते हैं?

उत्तर : नारकी जीव असंख्यात होते हैं।

प्रश्न 28. कितनी प्रकार की जाति वाले नारकी जीव होते हैं?

उत्तर : 4 लाख जाति वाले नारकी जीव होते हैं।

प्रश्न 29. नारकीयों में कितनी कुल कोटियाँ पाई जाती हैं?

उत्तर : नारकीयों में 25 लाख करोड़ कुल कोटियाँ पाई जाती हैं।

प्रश्न 30. नरक गति के जीव लोक के कितने भाग को स्पर्श कर सकते हैं?

उत्तर : नरक गति के जीव लोक के असंख्यातवें भाग को और कुछ कम 6/14 राजू को स्पर्श कर सकते हैं।

प्रश्न 31. नरक से निकला जीव कितनी इन्द्रिय वाला होता है?

उत्तर : नरक से निकला जीव केवल संज्ञी पंचेन्द्रिय में ही जन्म लेता है।

प्रश्न 32. नरक में कितनी इन्द्रिय वाले जीव जा सकते हैं?

उत्तर : संज्ञी व असंज्ञी पर्याप्तक पंचेन्द्रिय जीव ही नरक में जा सकते हैं।

प्रश्न 33. सम्यग्दृष्टि नारकी जीव जघन्य आयु कितनी प्राप्त कर सकता है?

उत्तर : सम्यग्दृष्टि नारकी जीवों की जघन्य आयु 84000 वर्ष हो सकती है।

प्रश्न 34. सम्यग्दृष्टि नारकी जीव की उत्कृष्ट आयु कितनी होती है?

उत्तर : सम्यग्दृष्टि नारकी जीव की उत्कृष्ट आयु पल्योपम का असंख्यातवां भाग कम 1 सागर होती है।

प्रश्न 35. तीर्थंकर प्रकृति का बंधक जीव उत्कृष्ट से नरक गति की कितनी आयु प्राप्त कर सकता है?

उत्तर : तीर्थंकर प्रकृति का बंधक जीव उत्कृष्ट से नरक गति की कुछ अधिक 3 सागर की आयु प्राप्त कर सकता है।

प्रश्न 36. तीर्थंकर प्रकृति का बन्धक जीव जघन्य से नरक गति की कितनी आयु प्राप्त करता है?

उत्तर : तीर्थंकर प्रकृति का बन्धक जीव जघन्य से नरक गति की 84000 वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

प्रश्न 37. नारकी जीवों के अपर्याप्तक अवस्था में कौन-कौन से सम्यक्त्व पाये जा सकते हैं?

उत्तर : नारकी की अपर्याप्तक अवस्था में तीन सम्यक्त्व पाये जाते हैं- 1. मिथ्यात्व, 2. क्षयोपशम 3. क्षायिक।

प्रश्न 38. कौन-कौन सी गतियों के जीव सम्यक्त्व के साथ नरक जा सकते हैं?

उत्तर : सम्यक्त्व के साथ नरक केवल मनुष्य ही जा सकते हैं अन्य कोई नहीं।

प्रश्न 39. नरक में जीव किस-किस प्रकार की वेदना का अनुभव करते हैं?

उत्तर : नारकी जीवों को नरक भूमि के स्पर्श मात्र से हजारों बिच्छु व साँप काटने जैसी वेदना होती है, गेंद की तरह योजनों तक

उछलते हैं, गिरते हैं, भूख प्यास की वेदना, सर्दी-गर्मी की वेदना, मारकाट आदि कई प्रकार की वेदनाओं को असंख्यात वर्ष तक सहन करते हैं। भूख से पीड़ित हो ऐसा लगता है कि तीनों लोक का अनाज भी खा लें तो भी भूख शान्त न हो, तब उन्हें खाने के लिए थोड़ी सी मिट्टी मिलती है। उस मिट्टी में इतनी दुर्गन्ध आती है कि मध्यलोक में पहले नरक के प्रथम पटल का एक कण मिट्टी से ½ कोश के जीव मरण को प्राप्त हो जाते हैं, इस प्रकार ½-½ कोश बढ़ाने पर सातवें नरक की एक कण मिट्टी से 24½ कोश के जीव मरण को प्राप्त हो जाते हैं। पूरे समुद्र का पानी भी पी जाये इतनी प्यास लगती है परन्तु एक बूँद भी पानी नहीं मिलता है। वैतरणी नदी में जाते हैं तो वहाँ भी दाह को उत्पन्न होते हैं। वह नदी खून व पीव से भरी होती है। गर्मी से व्याकुल जीव सेमर वृक्ष के नीचे बैठते हैं तो उसके पत्ते से शरीर के टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं। नारकी कुज्ञान से पूर्वभव का स्मरण करके एक-दूसरे को मारते काटते रहते हैं और अनन्त दुखों को भोगते हैं, जिसका वर्णन असक्य है।

(A) Exploration of Hell Destiny

Q.1. What is the nature of hell destiny?

Ans. Those who do not love themselves and do not mutually love in matter, space, duration instinct, are called in hell destiny. Or who are always in sorrowful and angered meditation called in hell destiny.

Q.2. What is the other name of hell dwellers or those who are in hell destiny?

Ans. Hell dwellers are also known as Naarat.

Q.3. What is the literal meaning of Naarat?

Ans. Naa means no, and rat mean love, hence naarat means who is never in love, that is why they are called Naarat.

Q.4. How many are the hells? Tell their names?

Ans. There are seven hells. Dhamma, Vansha, Megha, Anjana, Arishta, Madhava, Madhavi.

Q.5. How many stages of spiritual development are found in complete and incomplete form in the hell destiny?

Ans. In complete form stages from 1 to 4 and in incomplete form leaving lingering and mixed stages remaining two stages of spiritual development are found in hell destiny.

Q.6. Which body do the hellish living beings have?

Ans. Hellish living beings have fluid body.

Q.7. Which gender do the hellish beings have?

Ans. Hellish beings have neuter gender.

Q.8. How many toxic emotions at the most the hellish beings can have?

Ans. There may be 23 toxic emotions (leaving male and female genders).

Q.9. Which kind of restraint is found in hellish beings?

Ans. Non-restraint is found in hellish beings.

Q.10. Which kinds of perception are found in hellish beings?

Ans. Visual- non-visual- clairvoyance perceptions are found in hellish beings.

Q.11. To which hell destructional right faith being can go?

Ans. Destructional right faith being can go only to the first hell.

Q.12. To which hell spiritually victor nature being can go?

Ans. The spiritually victor natured being can go to third hell.

Q.13. To which destiny a hell being can go after dying and from which destiny they can come?

Ans. Only from and to human, animal and plant destiny a hell being can go and come after dying, they can neither go or come from and to hell and celestial destiny because transition from fluid body to fluid body is restricted.

Q.14. How many senses do a hellish being have?

Ans. As a rule, hellish beings have only five senses.

Q.15. What is the highest age of hellish beings?

Ans. The highest age of hellish beings in seven hells is 1, 3, 7, 10, 17, 22, 33 sagar respectively.

Q.16. What is the lowest age of hellish beings?

Ans. The lowest age of hellish beings in seven hells is 10,000 years 1,3,7,10,17,22 sagar respectively.

Q.17. What are the names of seven earths of hell?

Ans. The names of the seven earths are- Ratnaprabha, Sharkaraprabha, Balukaprabha, Pankprabha, Dhoomprabha, Tamprabha, Mahatamprabha respectively.

Q.18. How many Bills are there in Hell?

Ans. There are 84 lakh Bills in Hell.

Q.19. Which hell does have how many Bills?

Ans. The bills in Hells are respectively 30 lakh, 25 lakh, 15 lakh, 10 lakh, 3 lakh, 99995 and 5.

Q.20. How many Patals are there in hells?

Ans. There are 49 Patals in hells.

Q.21. How many patals are there in various hells?

Ans. There are 13,11,9,7,5,3, and 1 patals in hells respectively.

Q.22. Is it winter or summer in hells?

Ans. The upper three hells are extremely hot, and in fourth the upper part is hot and the lower part is cool, and in remaining hells from the lower part of the fourth to 7th hell, it is extremely cool.

Q.23. What is the lowest and the highest occupancy of the body of hellish beings?

Ans. The lowest occupany of the hellish beings is 3 hands, and the highest is 500 Dhanush.

Q.24. Which colouration is found in hellish beings?

Ans. Black, blue and grey complexion are found in hellish beings.

Q.25. How many kinds of knowledge do the hellish beings have?

Ans. Hellish beings may have 3 kinds of knowledge (sensory, scriptural and clairvoyance) and 3 kinds of ignorance (false sensory, false scriptural, false clairvoyance).

Q.26. Which right-beliefs are there in hellish beings?

Ans. All the six right-beliefs are there in the hellish beings if in complete form and the three beliefs are there incomplete form.

Q.27. What is the number of hellish beings?

Ans. They are innumerable.

Q,28. How many species are there in hellish beings?

Ans. Hellish beings have their 4 lakh species(kinds).

Q.29. How many categories are there in hellish beings?

Ans. 25 lakh crore categories are found in hellish beings.

Q.30. What part of the universe can be contacted by the living beings belonging to the hell?

Ans. The hellish beings can contact 6/14 Raju less than infinitieth part of the universe.

Q.31. How many senses have the living being came out of the hell?

Ans. The living beings came out of the hell are born only as five sensed rational being.

Q.32. With how much senses a living being can go to hell?

Ans. Both rational and irrational complete living beings with five senses can go to hell.

Q.33. What is the lowest age of right faithed hellish being?

Ans. The lowest age of a right faithed hellish being is 84,000 years.

Q.34. What is the highest age of right faithed hellish being?

Ans. The highest age of a right faithed hellish being is 1 sagar less than infinitieth part of pit measured time(palyopam).

Q.35. What is the highest hellish age of a supreme being natured living being?

Ans. The highest hellish age of a supreme natured living being is a bit more than three sagar.

Q.36. What is the lowest hellish age of a supreme natured living being?

Ans. The lowest hellish age of a supreme natured living being is 84000 years.

Q.37. Which right belief are there in hellish being in in incomplete form?

Ans. There are three right beliefs-

1. Wring belief 2. Jained after annihilation 3. Destructional right faith.

Q.38. In which realm of enistence the souls can go to hell with right faith?

Ans. Only the human realm of eristence can go to hell with right faith.

Q.39. What kind of sufferings are experienced by a living being in hell?

Ans. Only by touching the land the hellish beings experience pain as if bitten by scorpions and snakes; bounces off and falls down like a ball for many yojans; experiences pain of hunger and thirst; experiences pain of extreme hot and cold; experiences pain of battue etc. for infinite number of years. If the being suffers from hunger, it seems that even if the being eats the grains of the three worlds, his hunger will not be satisfied, till then he gets some dust to eat which smells so bad that only single particle of the dust of middle universe makes the living being die even at a distance of ½ kosa, thus increasing gradually ½ kosa, the single particle of the dust of the seventh hell makes the living beings die at a distance of 3 ½ kosa. He experiences hunger and it seems that even if he drinks the water of the entire ocean, but there is not a single drop of water. When he reaches Vaitarini river, even there he feels burning. That river is full of blood and pus. Tired of the heat when such living being sits under the shadow of semar tree, its leave breaks him into pieces. The hellish beings remembering their previous births take revenge by beating and killing one another and in this way experience infinite pains, the description of which is impossible.

तिर्यंच गति मार्गणा (ख)

प्रश्न 1. तिर्यंचों का स्वरूप क्या है?

उत्तर : जो मन वचन काय की कुटिलता को प्राप्त हो, जो हित अहित का विचार नहीं कर सकता। पाप बाहुल्य हो, मायाचारी के परिणाम हो, जो षट्कर्मों को न करके चारों प्रकार के पुरुषार्थों को नहीं कर सकते हैं, वे तिर्यंच कहलाते हैं।

प्रश्न 2. तिर्यंच का शाब्दिक अर्थ क्या है?

उत्तर : तिरः + अंच् = तिर्यंच। तिरः यानि तिरोभाव, अंच यानि प्राप्त होना, जो तिरोभाव/कुटिल भाव को प्राप्त हो, वे तिर्यंच हैं।

प्रश्न 3. तिर्यंचों के कितने भेद हैं?

उत्तर : तिर्यंचों के 5 भेद हैं- (1) सामान्य तिर्यंच (2) पंचेन्द्रिय तिर्यंच (3) पर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यंच (4) योनिमति तिर्यंच (5) अपर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यंच।

प्रश्न 4. पंचेन्द्रिय तिर्यंच किसे कहते हैं?

उत्तर : जो तिर्यंच सिर्फ पंचेन्द्रिय हो उन्हें पंचेन्द्रिय तिर्यंच कहते हैं।

प्रश्न 5. पर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यंच किसे कहते हैं?

उत्तर : पर्याप्त नामकर्म के उदय से प्राप्त तिर्यंचों के शरीर को पर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यंच कहते हैं।

प्रश्न 6. अपर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यंच किसे कहते हैं?

उत्तर : अपर्याप्त नामकर्म के उदय से प्राप्त तिर्यंचों के शरीर को अपर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यंच कहते हैं।

प्रश्न 7. योनिमति तिर्यंच किसे कहते हैं?

उत्तर : जो द्रव्य से पुरुष वेदी हो परन्तु भाव से स्त्री वेदी हो उन्हें योनिमति तिर्यंच कहते हैं।

प्रश्न 8. तिर्यंच कहाँ-कहाँ रहते हैं?

उत्तर : तिर्यंच कर्म भूमि व भोग भूमि में पाये जाते हैं।

प्रश्न 9. कर्म भूमि के तिर्यंचों के कितने गुणस्थान हो सकते हैं?

उत्तर : कर्मभूमि के तिर्यंचों के 1 से 5 गुणस्थान हो सकते हैं।

प्रश्न 10. भोग भूमि के तिर्यंचों के कितने गुणस्थान हो सकते हैं?

उत्तर : भोगभूमि के तिर्यंचों के 1-4 गुणस्थान [क्योंकि भोगभूमि में 1-4 गुणस्थान ही होते हैं।] हो सकते हैं।

प्रश्न 11. कर्म भूमि के तिर्यंचों के कितनी इन्द्रियाँ हो सकती हैं?

उत्तर : कर्म भूमि में एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक के जीव पाये जाते हैं।

प्रश्न 12. क्या भोग भूमि में भी पाँचों इन्द्रिय के जीव पाये जाते हैं?

उत्तर : नहीं, भोग भूमि में सिर्फ एकेन्द्रिय व पंचेन्द्रिय जीव ही होते हैं।

प्रश्न 13. तिर्यंच गति के जीव मरण करके कौन-कौन सी गति में जा सकते हैं और आ सकते हैं?

उत्तर : तिर्यंच गति के जीव चारों गतियों में जा सकते है व चारों गतियों से आ भी सकते हैं।

प्रश्न 14. तिर्यंचों के कौन-सा शरीर होता है?

उत्तर : तिर्यंचों के औदारिक शरीर होता है।

प्रश्न 15. तिर्यंचों में कितने दर्शन पाये जाते हैं?

उत्तर : तिर्यंचों में चक्षु-अचक्षु-अवधिदर्शन पाये जाते हैं।

प्रश्न 16. तिर्यंच गति में कितने वेद पाये जाते हैं?

उत्तर : तिर्यंच गति में तीनों वेद [स्त्री, पुरुष, नपुंसक वेद] पाये जाते हैं।

प्रश्न 17. तिर्यंचों में कितने ज्ञान हो सकते हैं?

उत्तर : तिर्यंचों में 3 ज्ञान व 3 अज्ञान हो सकते हैं।

प्रश्न 18. तिर्यंचों के कौन-कौन से संयम हो सकते हैं?

उत्तर : तिर्यंचों के असंयम और संयमासंयम दो संयम हो सकते हैं।

प्रश्न 19. तिर्यंचों में कितनी लेश्याएँ पाई जाती हैं?

उत्तर : तिर्यंचों में छहों लेश्याएँ [कृष्ण, नील, कापोत, पीत, पद्म, शुक्ल] पायी जाती हैं।

प्रश्न 20. तिर्यंचों में कौन-कौन से सम्यक्त्व पाये जाते हैं?

उत्तर : तिर्यंचों में छहों (मिथ्यात्व, सासादन, मिश्र, क्षायिक, उपशम, क्षयोपशम) सम्यक्त्व पाये जाते हैं।

प्रश्न 21. कर्मभूमिज तिर्यंचों में कितने सम्यक्त्व हो सकते हैं?

उत्तर : क्षायिक को छोड़कर शेष पाँच सम्यक्त्व कर्मभूमिज तिर्यंचों में हो सकते हैं।

प्रश्न 22. भोगभूमिज तिर्यंचों में कितने सम्यक्त्व हो सकते हैं?

उत्तर : भोगभूमिज तिर्यंचों में छहों सम्यक्त्व हो सकते हैं।

प्रश्न 23. अपर्याप्तक तिर्यंचों में कितने सम्यक्त्व हो सकते हैं?

उत्तर : भोगभूमिज की अपेक्षा से अपर्याप्तक में मिथ्यात्व, सासादन, क्षायिक और क्षयोपशम ये चार सम्यक्त्व हो सकते हैं किन्तु कर्मभूमि के अपर्याप्तक तिर्यंचों में मिथ्यात्व व सासादन दो ही सम्यक्त्व हो सकते हैं।

प्रश्न 24. लब्ध्यपर्याप्तक में कितने सम्यक्त्व हो सकते हैं?

उत्तर : लब्ध्यपर्याप्तक तिर्यंचों में एक मिथ्यात्व सम्यक्त्व ही हो सकता है।

प्रश्न 25. क्षयोपशम सम्यक्त्व अपर्याप्तक तिर्यंचों में किस प्रकार होता है?

उत्तर : कृतकृत्य वेदक की अपेक्षा भोगभूमि जाने वाले तिर्यंचों के अपर्याप्तक अवस्था में क्षयोपशम सम्यक्त्व पाया जाता है।

प्रश्न 26. जिस जीव ने तिर्यंच आयु का बंध कर लिया हो क्या वह उस भव में तीर्थंकर प्रकृति का बंध कर सकता है?

उत्तर : नहीं, जिस जीव ने तिर्यंच आयु का बंध कर लिया हो वह उस भव में तीर्थंकर प्रकृति का बंध नहीं कर सकता है।

प्रश्न 27. सम्यग्दृष्टि तिर्यंच मरण करके कौनसी गति में जाता है?

उत्तर : सम्यग्दृष्टि तिर्यंच मरण करके सिर्फ देव गति में ही जाता है।

प्रश्न 28. तिर्यंच गति से मरण करके तिर्यंच गति में जाने वाला जीव क्या सम्यग्दृष्टि हो सकता है?

उत्तर : नहीं, वह नियम से मिथ्यादृष्टि ही होता है।

प्रश्न 29. कितनी प्रकार की जाति वाले तिर्यंच होते हैं?

उत्तर : 62 लाख जाति वाले तिर्यंच होते हैं।

प्रश्न 30. तिर्यंचों में कितनी कुल कोटियाँ पाई जाती हैं?

उत्तर : तिर्यंचों में 134½ लाख करोड़ कुल कोटियाँ पाई जाती हैं।

प्रश्न 31. तिर्यंच गति में जीव कितने होते हैं?

उत्तर : तिर्यंच गति में अनन्त जीव होते हैं।

प्रश्न 32. तिर्यंच गति के जीव लोक के कितने भाग को स्पर्श कर सकते हैं?

उत्तर : तिर्यंच गति के जीव सर्वलोक को [क्योंकि तिर्यंच गति के जीव तीनों लोकों में ठसाठस भरे पड़े हैं।] स्पर्श कर सकते हैं।

प्रश्न 33. तिर्यंचों की जघन्य व उत्कृष्ट से अवगाहना कितनी है?

उत्तर : तिर्यंचों की जघन्य-घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग, उत्कृष्ट-1000 योजन [महामत्स्य की अपेक्षा] अवगाहना होती है।

प्रश्न 34. तिर्यंचों की जघन्य व उत्कृष्ट से आयु कितनी होती है?

उत्तर : तिर्यंचों की जघन्य आयु-क्षुद्रभव, उत्कृष्ट - 3 पल्य [भोग भूमि की अपेक्षा] आयु होती है।

प्रश्न 35. क्षयोपशम व क्षायिक सम्यक्त्व के साथ तिर्यंच गति में कौन-कौन जा सकते हैं?

उत्तर : केवल मनुष्य ही क्षयोपशम व क्षायिक सम्यक्त्व के साथ तिर्यंचों में जा सकते हैं अन्य नहीं।

प्रश्न 36. तिर्यंच गति के जीव किस-किस प्रकार की वेदना का अनुभव करते हैं?

उत्तर : ताकतवर पशु सिंह, व्याघ्र आदि बनते हैं तो वे कमजोर पशुओं को खा जाते हैं। कमजोर पशु, जीव-जन्तु आदि ताकतवर पशुओं के द्वारा मारे जाते हैं, खाये जाते हैं। भूख-प्यास, छेदन-भेदन आदि के अनेक दु:ख हैं। शक्ति से अधिक बोझा ढोने का, शीत, उष्ण, बध-बंधन आदि का दु:ख सहन करना पड़ता है। वर्तमान में तो पूरे देश में प्रतिदिन बूचड़खानों में लाखों पशु काटे जाते हैं। मुक जानवर क्या कर सकते हैं। सब कुछ सहना पड़ता है। इस प्रकार तिर्यंच गति में अनेकों दु:ख हैं जिनको करोड़ों जिह्वाओं के द्वारा भी नहीं कहा जा सकता है।

(B) Investigation of Botanical kingdom (Botanical beings)

Q.1. What is the nature of botanical being?

Ans. The one who gets the wickedness of mind, speech and body butcannot differentiate between beneficial and non-beneficial. Who is a sinner, whose intention is debauchery, who not doing religious karmas and can not makefour kinds of spiritual efforts are called beings of botanical kingdom.

Q.2. What is the literal meaning of tiryanch?

Ans. Tir=unmanifested, anch= gain, the one who has unmanifested disposition is tiryanch(being belonging to botanical kingdom).

Q.3 What are the kinds of botanical beings?

Ans. There are five kinds of biological beings-1. General biological beings, 2. Five sensed biological beings, 3. Five sensed completed biological beings, 4. Mixed type of biological beings, 5. Incomplete five sensed biological beings.

Q.4. What is called five sensed botanical being?

Ans. The biological being with five senses only is called five sensed botanical being.

Q.5. What is complete five sensed botanical being?

Ans. The body of the botanical being due to rise of complete name karma is called complete five sensed botanical being.

Q.6. What is incomplete five sensed botanical being?

Ans. The body of the botanical being due to rise of incomplete name karma is called incomplete five sensed botanical being.

Q.7. What is called mixed type botanical being?

Ans. The one whose physical gender is male and dispositional gender is female is called mixed type botanical being.

Q.8. Where do botanical beings dwell?

Ans. Botanical beings are found both in land of action and land of enjoyment.

Q.9. What number of stages of spiritual development can the botanical beings of land of action have?

Ans. The botanical beings of land of action can have 1 to 5 stages of spiritual development.

Q.10. What number of stages of spiritual development can the botanical beings of land of enjoyment have?

Ans. The botanical beings of land of enjoyment can have 1 to 4 stages of spiritual development (because land of enjoyment has only 1 to 4 stages of spiritual development).

Q.11. How many senses can the botanical beings of land of action have?

Ans. One sensed to five sensed living beings are found in land of action.

Q.12. Are five sensed living beings also found in land of enjoyment?

Ans. No, in land of enjoyment only one sensed and five sensed living beings are found.

Q.13. After dying from which destinies can the botanical living beings come and to which destinies they go?

Ans. The botanical beings can go or come to any of the four stages of spiritual development after dying.

Q.14. What kind of body do botanical beings have?

Ans. Botanical living beings have physical bodies.

Q.15. How many perceptions are found in botanical beings?

Ans. Ocular, non-ocular, and clairvoyance perceptions are found in botanical beings.

Q.16. How many genders are found in botanical beings?

Ans. All three genders (feminine, masculine and neuter) are found in botanical beings.

Q.17. What kinds of cognition can botanical beings have?

Ans. Three kinds of knowledge and three kinds of ignorance.

Q.18. What kinds of restraint can botanical beings have?

Ans. Botanical beings can have two kinds of restraints- non-restraint and restraint cum non-restraint.

Q.19. What complexions are found in botanical beings?

Ans. All six complexions (black, blue, grey, yellow, pink, white) are found in botanical beings.

Q.20. What kinds of right-beliefs are found in botanical beings?

Ans. All the six right-beliefs (misbelief, indifferent, mixed, destructional, subsidence and annihilation cum subsidence) are found in botanical beings.

Q.21. What number of right-beliefs can there be in biological beings of land of action?

Ans. Leaving destructional, remaining five kinds of right-beliefs can be had by the biological beings of land of action.

Q.22. What number of right-beliefs can there be in biological beings of land of enjoyment?

Ans. All the six kinds of right-beliefs can be had by biological beings of land of enjoyment.

Q.23. What number of right-beliefs can there be in incomplete biological beings?

Ans. In land of enjoyment , incomplete biological beings can have wrong, lingering, destructional and subsidence cum annihilation- these four right-beliefs, however, in land of action, incomplete biological beings can have only two right beliefs- wrong-belief and lingering faith.

Q.24. What number of right-beliefs can be there in absolutely non-developable?

Ans. Only one kind - wrong right-belief can an absolutely non-developable have.

Q.25. How annihilation cum subsidence type of right-belief occurs in biological beings?

Ans. In respect of krutkrut experiencer, in the biological beings belonging to land of enjoyment, annihilation cum subsidence kind of right-belief is found.

Q.26. The living being who has formed a bond with the botanical destiny, can he form the bond with the tirthankara nature in the same destiny?

Ans. No, the living being who has formed a bond with the botanical destiny, he in the same birth can not form bond with the tirthankara nature.

Q.27. In which destiny does a right faithed botanical being transit after dying?

Ans. A right faithed botanical being transit to celestial destiny after dying.

Q.28. Can a living being which transit to botanical destiny from botanical destiny after dying be right faithed?

Ans. No, as a rule such living being is only wrong-faithed.

Q.29. How many kinds are of botanical beings?

Ans. There are 62 lakh kinds of botanical beings.

Q.30. How many total categories are found in botanical beings?

Ans. Total 134 ½ lakh crore categories are found in botanical beings.

Q.31. How many living beings are there in botanical beings?

Ans. There are infinite number of living beings in botanical beings.

Q.32. What part of the universe can be contacted by the living beings belonging to biological kingdom?

Ans. The living beings belonging to biological kingdom can contact the entire universe (because all the three worlds are packed with such kinds of living beings.).

Q.33. What are the lowest and the highest occupancy by the biological beings?

Ans. The lowest occupancy by the biological beings is infinitieth part of cubic finger (ghanangul) and the highest occupancy is 1000 yojan (in regard to Mahamatsya).

Q.34. What is the lowest and the highest age of biological beings?

Ans. The lowest age of biological beings is kshudrabhav (petty age) and the highest age is 3 palya(in respect of land of enjoyment).

Q.35 In which destiny does a cum subsiblence and destructional with botaincal being?

Ans. Only human being goes in botanical being with cum subsiblence and destructional right belief.

Q.36. What kinds of suffering are experienced by the biological beings?

Ans. The mighty becomes lions, tigers etc. and make weak animals their food. The weak become weak animals and insects etc. which are killed by the mighty animals, and are eaten by them. They suffer hunger, thirst, beating, piercing, killing etc. many kinds of pains. They are made to carry load heavier than their capacity; they suffer extreme het and cold, pain of slavery etc. At present lakhs of animals are slaughtered in slaughter houses daily. But such beings are helpless. In this way there are numerous kinds of pains and sufferings in tiryanch destiny which can not be described by thousands of tongues.

मनुष्य गति मार्गणा (ग)

प्रश्न 1. मनुष्यों का स्वरूप क्या है?

उत्तर : जिसे हेय-उपादेय का ज्ञान हो, जो शिल्पादि कलाओं में प्रवीण होते हैं, जो मनु अर्थात् कुलकरों से उत्पन्न हुये हैं वे मनुष्य कहलाते हैं।

प्रश्न 2. मनुष्य के कितने भेद हैं?

उत्तर : मनुष्य के 4 भेद हैं - (1) सामान्य मनुष्य (2) पर्याप्त मनुष्य (3) मनुष्यनी (4) अपर्याप्त मनुष्य।

प्रश्न 3. सामान्य मनुष्य किसे कहते हैं?

उत्तर : जिसमें पर्याप्तक, अपर्याप्तक, स्त्री-पुरुष-नपुंसक तीनों वेदी कर्मभूमिज व भोगभूमिज आदि सभी प्रकार के मनुष्य सम्मिलित हो उन्हें सामान्य मनुष्य कहा है।

प्रश्न 4. पर्याप्तक मनुष्य किसे कहते हैं?

उत्तर : जिनके पर्याप्तक नाम कर्म का उदय हो, जिनने पर्याप्तियाँ पूर्ण कर ली हो उन्हें पर्याप्तक मनुष्य कहते हैं।

प्रश्न 5. अपर्याप्तक मनुष्य किसे कहते हैं?

उत्तर : जिनके अपर्याप्तक नामकर्म का उदय हो, जो पर्याप्तियों को पूर्ण करने से पहले ही मरण को प्राप्त हो जाते हैं वे अपर्याप्तक मनुष्य कहलाते हैं।

प्रश्न 6. मनुष्यनी किसे कहते हैं?

उत्तर : जो द्रव्य से तो पुरुष वेदी है परन्तु भावों से स्त्री वेदी होते हैं उन्हें मनुष्यनी कहते हैं।

प्रश्न 7. मनुष्य कहाँ-कहाँ रहते हैं?

उत्तर : मनुष्य मध्यलोक के अढ़ाई द्वीप में कर्म भूमि व भोग भूमि में रहते हैं।

प्रश्न 8. कर्म भूमि के मनुष्यों के कितने गुणस्थान हो सकते हैं?

उत्तर : कर्मभूमि के मनुष्यों के 1 से 14 सभी गुणस्थान और मोक्ष भी जा सकते हैं।

प्रश्न 9. भोगभूमि के मनुष्यों के कितने गुणस्थान हो सकते हैं?

उत्तर : भोगभूमि के मनुष्यों के 1 से 4 गुणस्थान हो सकते हैं।

प्रश्न 10. मनुष्य गति से मरण करके जीव कौन-कौन सी गति में जा सकते हैं तथा आ सकते हैं?

उत्तर : मनुष्य गति से मरण करके जीव चारों गति से आ सकते हैं और चारों ही गतियों में जा भी सकते हैं और पंचम गति अर्थात् मोक्ष भी जा सकते हैं।

प्रश्न 11. मनुष्य गति के जीवों का कौन सा शरीर होता है?

उत्तर : मनुष्य गति के जीवों का औदारिक, वैक्रियक व मुनिराजों के आहारक शरीर भी हो सकता है।

प्रश्न 12. मनुष्यों में औदारिक शरीर तो जन्म से ही होता है परन्तु वैक्रियक व आहारक शरीर कब होता है?

उत्तर : वैक्रियक शरीर ऋद्धि से प्राप्त होता है। जो मुनिराज विशेष तपस्वी होते हैं, उनको यह ऋद्धि प्राप्त होती है। किन्हीं-किन्हीं महापुरुषों को भी प्राप्त होता है। जैसे - चक्रवर्ती आदि। और आहारक नामकर्म का बन्ध 7वें गुणस्थान में होता है, उदय 6वें गुणस्थान में होता है, उस समय सिर से 1 हाथ अवगाहना वाला जो पुतला निकलता है वह आहारक शरीर कहलाता है। आहारक शरीर सिर्फ प्रमत्त संयत मुनिराज के ही होता है।

प्रश्न 13. मनुष्यों में एक साथ कितने शरीर पाये जाते हैं?

उत्तर : मनुष्यों में चार शरीर एक साथ पाये जा सकते हैं- औदारिक,

वैक्रियिक, तैजस, कार्माण अथवा औदारिक, आहारक, तैजस, कार्माण शरीर।

प्रश्न 14. मनुष्यों में कितने वेद पाये जाते हैं?

उत्तर : मनुष्यों में तीनों वेद पाये जाते हैं।

प्रश्न 15. मनुष्यों में कितने ज्ञान पाये जाते हैं?

उत्तर : मनुष्यों में पाँचों ज्ञान व तीनों अज्ञान पाये जाते हैं।

प्रश्न 16. मनुष्य में कितने संयम पाये जाते हैं?

उत्तर : मनुष्यों में सातों संयम (असंयम, संयमासंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहार विशुद्धि, सूक्ष्म साम्पराय, यथाख्यात) पाये जाते हैं।

प्रश्न 17. मनुष्यों में कितनी कषायें पायी जाती हैं?

उत्तर : मनुष्यों में सभी 25 कषायें पाई जाती हैं।

प्रश्न 18. मनुष्यों में कितने दर्शन पाये जाते हैं?

उत्तर : मनुष्यों में चारों दर्शन [चक्षु, अचक्षु, अवधि, केवलदर्शन] पाये जाते हैं।

प्रश्न 19. मनुष्यों में कितनी लेश्याएँ पायी जाती हैं?

उत्तर : मनुष्यों में छहों लेश्याएँ [कृष्ण, नील, कापोत, पीत, पद्म, शुक्ल] पायी जाते हैं।

प्रश्न 20. मनुष्यों में कितने सम्यक्त्व हो सकते हैं?

उत्तर : मनुष्यों में छहों सम्यक्त्व [मिथ्यात्व, सासादन, मिश्र, उपशम, क्षायिक, क्षयोपशम सम्यक्त्व] हो सकते हैं।

प्रश्न 21. मनुष्य गति से मरण करके कर्म भूमि के मनुष्यों में और तिर्यंचों में जाने वाले जीव सम्यग्दृष्टि होते हैं या मिथ्यादृष्टि।

उत्तर : मनुष्य गति से मरण करके कर्म भूमि के मनुष्यों में और तिर्यंचों

में जाने वाले जीव नियम से मिथ्यादृष्टि और सासादन सम्यग्दृष्टि ही होते हैं।

प्रश्न 22. मनुष्य गति से मरण करके नरक गति में व देव गति में जाने वाले जीव सम्यग्दृष्टि होते हैं या मिथ्यादृष्टि।

उत्तर : मनुष्य गति से मरण करके नरक गति में व देव गति में जाने वाले जीव दोनों तरह के हो सकते हैं।

प्रश्न 23. मनुष्य गति से मरण करके भोग भूमि के मनुष्यों व तिर्यंचों में जाने वाले जीव मिथ्यादृष्टि होते हैं या सम्यग्दृष्टि।

उत्तर : मनुष्य गति से मरण करके भोग भूमि के मनुष्यों व तिर्यंचों में जाने वाले जीव दोनों तरह के हो सकते हैं।

प्रश्न 24. कितनी प्रकार की जाति वाले मनुष्य होते हैं?

उत्तर : 14 लाख जाति मनुष्यों में पायी जाती हैं।

प्रश्न 25. मनुष्यों में कितनी कुल कोटियाँ पायी जाती हैं?

उत्तर : 14 लाख करोड़ कुल कोटि मनुष्यों में पायी जाती हैं।

प्रश्न 26. मनुष्य कितने होते हैं?

उत्तर : मनुष्य असंख्यात होते हैं।

प्रश्न 27. मनुष्य जाति के जीव लोक के कितने भाग को स्पर्श कर सकते हैं?

उत्तर : मनुष्य लोक का असंख्यातवाँ भाग व सर्वलोक को [समुद्घात की अपेक्षा से] स्पर्श कर सकते हैं।

प्रश्न 28. पर्याप्तक मनुष्यों की संख्या कितनी होती हैं?

उत्तर : पर्याप्तक मनुष्यों की संख्या 29 अंक प्रमाण [792281625142,64337593543950336] सात खरब, 92 अरब, 28 करोड़, 16 लाख, 25 हजार, 142 शंख, 64

पद्म, 33 नील, 75 खरब, 93 अरब, 54 करोड़, 39 लाख, 50 हजार 336 हैं।

प्रश्न 29. अपर्याप्तक मनुष्यों की संख्या कितनी होती हैं?

उत्तर : अपर्याप्तक मनुष्यों की संख्या जगच्छ्रेणी का असंख्यातवाँ भाग है।

प्रश्न 30. मनुष्यों के शरीर की अवगाहना कितनी हो सकती हैं?

उत्तर : मनुष्यों की जघन्य अवगाहना-लब्ध्यपर्याप्तक की अपेक्षा घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग हैं।

उत्कृष्ट अवगाहना-भोगभूमिज मनुष्य की अपेक्षा 3 कोस हैं।

प्रश्न 31. प्रकारांतर मनुष्य कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर : मनुष्य दो प्रकार के होते हैं- (1) भोगभूमिज (2) कर्मभूमिज।

प्रश्न 32. भोगभूमिज मनुष्य किसे कहते हैं?

उत्तर : जिन्हें आजीविका सम्बन्धी कार्य नहीं करने पड़ते, जिन्हें कल्पवृक्षों से भोग सामग्री प्राप्त होती है, जिनकी असंख्यात वर्ष की आयु होती है, वे भोगभूमिज मनुष्य कहलाते हैं।

प्रश्न 33. कर्मभूमिज मनुष्य किसे कहते हैं?

उत्तर : जो आजीविका सम्बन्धी कार्य करते हैं, षट्कर्त्तव्यों का पालन करते हुए चार पुरुषार्थों को सिद्ध करते हैं, जिनकी संख्यात वर्ष की आयु होती है उन्हें कर्मभूमिज मनुष्य कहते हैं।

प्रश्न 34. भोगभूमिज मनुष्यों की विशेषताएँ बताइए?

उत्तर : भोगभूमिज मनुष्यों की विशेषताऐं निम्न प्रकार से हैं-

* युगल जन्म होता है।
* 49 दिन में ही युवा अवस्था को प्राप्त कर लेते हैं।
* कल्पवृक्षों से भोग-उपभोग की सामग्री प्राप्त करते हैं।

* बच्चों का मुख नहीं देख पाते हैं क्योंकि बच्चों का जन्म होते ही माता पिता का मरण हो जाता है।
* मरण के समय महिला को जम्हाई व पुरुष को छींक आती है और मरण हो जाता है।
* यहाँ जन्म मरण सम्बन्धी दु:ख नहीं होता है।

प्रश्न 35. कर्मभूमिज मनुष्यों की विशेषताएँ बताइए?

उत्तर : कर्मभूमिज मनुष्यों की विशेषताऐं निम्न प्रकार से हैं-

* जो असि, मसि, कृषि आदि कर्त्तव्यों को करते हो।
* जो धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों को करने में समर्थ होते हैं।

प्रश्न 36. कर्मभूमिज मनुष्य कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर : कर्मभूमिज मनुष्य दो प्रकार के होते हैं- (1) आर्य (2) म्लेच्छ।

प्रश्न 37. आर्य किसे कहते हैं?

उत्तर : जो आर्य खण्ड में रहते हैं, जिनका साधु कुल है अर्थात् जो दीक्षा आदि को ग्रहण करके मोक्ष को प्राप्त करते हैं वे आर्य कहलाते हैं।

प्रश्न 38. म्लेच्छ किसे कहते हैं?

उत्तर : जो धर्म-कर्म से दूर रहते हैं, जिनका साधु आचरण नहीं है अर्थात् दीक्षा आदि ग्रहण नहीं कर सकते हैं उन्हें म्लेच्छ कहते हैं।

प्रश्न 39. म्लेच्छ कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर : म्लेच्छ दो प्रकार के होते हैं- (1) क्षेत्र म्लेच्छ (2) जाति म्लेच्छ

प्रश्न 40. जाति म्लेच्छ किसे कहते हैं?

उत्तर : जो जाति से म्लेच्छ हैं किन्तु आर्य खण्ड में रहते हैं। जैसे - शूद्र मनुष्य आदि।

प्रश्न 41. क्षेत्र म्लेच्छ किसे कहते हैं?

उत्तर : जो म्लेच्छ खण्ड में उत्पन्न हुये हैं किन्तु जाति से क्षत्रिय हैं, उन्हें क्षेत्र म्लेच्छ कहते हैं।

प्रश्न 42. मनुष्य जीवन का सार क्या है?

उत्तर : 'णाणं णरस्य सारो' ज्ञान ही मनुष्य जीवन का सार है।

प्रश्न 43. मनुष्य गति श्रेष्ठ क्यों है?

उत्तर : संयम धारण करने की योग्यता होने के कारण मनुष्य गति श्रेष्ठ है।

प्रश्न 44. कर्मभूमिज मनुष्यों की जघन्य व उत्कृष्ट आयु कितनी हो सकती है?

उत्तर : कर्मभूमिज मनुष्यों की जघन्य आयु - अन्तर्मुहूर्त, उत्कृष्ट आयु - एक कोटि पूर्व हो सकती है।

प्रश्न 45. भोगभूमिज मनुष्यों की जघन्य व उत्कृष्ट आयु कितनी हो सकती है?

उत्तर : भोगभूमिज मनुष्यों की जघन्य आयु- एक समय अधिक एक कोटि पूर्व, उत्कृष्ट 3 पल्य आयु हो सकती है।

प्रश्न 46. मनुष्य गति के जीव कैसी-कैसी वेदना को सहन करते हैं?

उत्तर : मनुष्य गति में यह जीव माता के गर्भ में नौ माह तक रहता है। जहाँ शरीर के सिकुड़े रहने से बहुत कष्ट पाता है। गर्भ से निकलते समय जो अपार कष्ट होते हैं, उनको कहना असंभव है। बाल्यावस्था अज्ञानता में बीत जाती है। जवानी कामभोग-वासना के चकाचौंध में गुजर जाती है और वृद्धावस्था अधमरे

के समान होती है। नेत्र स्पष्ट देख नहीं पाते, कर्ण स्पष्ट नहीं सुन पाते, पैर लड़खड़ाते हैं, सारी इन्द्रियाँ शिथिल हो जाने से धर्म-कर्म सब छूट जाता है। इस प्रकार मनुष्य गति के जीव अनेक कष्टों को सहन करते हैं।

प्रश्न 47. मनुष्य गति के जीव किस प्रकार के सुखों को भोगते हैं?

उत्तर : मनुष्य गति के जीव इन्द्रिय जनित सुख व अतिन्द्रिय सुख दोनों प्रकार के सुखों को भोगते हैं।

प्रश्न 48. इन्द्रिय जनित सुख कौन-कौन से होते हैं?

उत्तर : राज्य, वैभव, पाँचों इन्द्रिय जनित विषयों सम्बन्धी सुख आदि।

प्रश्न 49. अतिन्द्रिय सुख किसे कहते हैं?

उत्तर : आत्मिक सुख को अतिन्द्रिय सुख कहते हैं।

(C) Investigation in Human Destiny

Q.1. What is the nature of human being?

Ans. The one who can distinguish between what is acceptable and what is not; who is expert in various creative arts; those who is born in ethical families or with mental faculty is called human being.

Q.2. What are the kinds of human beings?

Ans. There are four kinds of human beings- 1. General human being, 2. Complete human being, 3. Manushyani (mixed type), 4. Incomplete human being.

Q.3. Who is called a general human being?

Ans. The human beings that include in them complete, incomplete, manushyani (male-female-neuter gender), living in land of action and land of enjoyment are called general human beings.

Q.4. Who is called complete human being?

Ans. Whose complete name karma is risen, those who have completed their development are called complete human beings.

Q.5. Who is called incomplete human being?

Ans. Whose incomplete name karma is risen and who has not completed his development before dying, is called incomplete human being.

Q.6. Who is called Manushyani?

Ans. The one who is masculine physically and feminine in feelings is called manushyani.

Q.7. Where do human beings dwell?

Ans. Human beings dwell in the land of action , land of enjoyment and two and half islands of middle universe

Q.8. How many stages of spiritual development can human beings of land of action have?

Ans. The human beings of land of action can have 1 to 14 stages of spiritual development and can attain salvation also.

Q.9. How many stages of spiritual development can human beings of land of enjoyment attain?

Ans. The human beings belonging to land of enjoyment can attain 1 to 4 stages of spiritual development.

Q.10. Which destiny can human being transit to and from after dying?

Ans. A human being can transit to and from any of the four destinies and can attain the fifth destiny- salvation also.

Q.11. What kind of body do human beings have?

Ans. Human beings have physical bodies, fluid bodies and monks can also have assimilative bodies.

Q.12. Human beings have physical bodies since birth, but when do they have fluid and assimilative bodies?

Ans. Fluid body is got by prodigy. The monks who are specifically devoted to penance, they attain that prodigy. Some great men also attain it. For example- monarchs etc.The assimilative name karma occurs in seventh stage of spiritual development, it rises in sixth stage of spiritual development, at that time the effigy that appears is called assimilative body. Assimilative body comes out only from monks restrained with remissness.

Q. 13. Howmany bodies are found some time in human being?

Ans. There are four bodies are found an human beings at the some time.

1. Physical 2. Transformational 3. Assimilative. 4. Electric 5. Karmic.

Q.14. How many genders are found in human beings?

Ans. Human beings have three genders.

Q. 15. What kinds of knowledge are found in human beings?

Ans. Human beings have all five kinds of knowledge and three kinds of ignorance.

Q.16. What kinds of restraints are found in human beings?

Ans. All the seven kinds of restraints (non-restraint, restraint cum non-restraint, equanimity, propitiatory, purificatory course, subtle passion, perfect) are found in human beings.

Q.17. How many toxic evils are found in human beings?

Ans. All 25 toxic evils are found in human beings.

Q.18. What kinds of perception are found in human beings?

Ans. All four kinds of perception (ocular, in ocular, clairvoyance, omniscience) are found in human beings.

Q.19. What kinds of coloration are found in human beings?

Ans. All six kinds of coloration (black, blue, grey, yellow, pink, white) are found in human beings.

Q.20. How many kinds of right-faith can occur to human biengs?

Ans. Human beings can have all six kinds of right-faith(misbelief, lingering, mixed, subsidence, destructive, destruction cum subsidence).

Q.21. Are the living beings when they die in human destiny and leave for human destiny on land of action and for other biological destiny right-faithed or wrong-faithed?

Ans. As a rule, the human beings when they die and leave for human destiny on land of action and for another biological destiny are wrong-faithed and lingering right-faithed.

Q.22. Are the living beings when they die in human destiny and leave for hell destiny and celestial destiny right-faithed or wrong-faithed?

Ans. The living beings when they die in human destiny and leave for hell or celestial destiny are of both kinds.

Q.23. Are the living beings when they die in human destiny and leave for human and for another biological destiny of land of enjoyment right-faithed or wrong-faithed?

Ans. The living beings when they die in human destiny and leave for human and another biological destiny of land of enjoyment are of both kinds.

Q.24. What kinds of genus do human beings have?

Ans. Fourteen lakh kinds of genus are found in human beings.

Q.25. How many categories are found in human beings?

Ans. Fourteen lakh crore categories are found in human beings.

Q.26. What number of human beings are there?

Ans. There are infinite number of human beings.

Q.27. What part of the universe can be contacted by the living beings belonging to human destiny?

Ans. They can touch infinitieth part of the universe and the entire universe (in respect of emanation).

Q.28. What is the number of complete human beings?

Ans. The number of complete human beings is measured to 29 figures (79228162514264337593543950336) seven trillion, 92 billion, 28 crore, 16 lakh, 25 thousand, 142 shankha, 64 padma, 33 nile, 75 trillion, 93 billion, 54 crore, 39 lakh, 50 thousand 336.

Q.29. What is the number of incomplete human beings?

Ans. The number of incomplete human beings is infinitieth part of Jagachhreni.

Q.30. How much is the occupancy of human body?

Ans. The lowest occupancy of the human body is infinitieth part of ghanangul in respect of absolutely non-developable. The highest occupancy is 3 kosa in respect of human beings belonging to land of enjoyment.

Q.31. What are the kinds of human beings?

Ans. Human beings are of two kinds- 1. Dwellers of land of action, 2. Dwellers of land of enjoyment.

Q.32. Who is called human beings, dwellers of land of enjoyment?

Ans. Who have not to do any work for livelihood; who get their food material from Kalpa trees; who live for infinite years of age; they are called human beings of land of enjoyment.

Q.33. Who are called human beings of land of action?

Ans. Those who work for their livelihood; Perform four duties while fulfilling the four purusharthas (focused efforts); who age is limited to finite years are called human beings of land of action.

Q.34. Tell the characteristics of human beings of land of enjoyment?

Ans. Following are the characteristics of human beings of land of enjoyment-

1. Born by couple.
2. They attain youth only in 49 days.
3. They get their food material from Kalpa trees.
4. They can't see the faces of the children because the parents die as soon as the children are born.
5. At the time of death female yawns and man sneezes and soon they die.
6. Here are no sorrows related to birth and death.

Q.35. Tell the characteristics of human beings of land of action?

Ans. Following are the characteristics of human beings of land of action-

1. They do some occupation to earn their livelihood using penetrating tools, writing tools, tools of farming etc.
2. They are able to practice four kinds of efforts- religious, financial, sexual, salvation.

Q.36. How many kinds are there of human beings of land of action?

Ans. There are two kinds of the human beings of land of action- 1. Arya/Civilized people, 2.Mlekchcha/ Uncivilized people.

Q.37. Who are called Aryas?

Ans. Those who live in Aryakhand, belong to genus of saints who after seeking initiation attain salvation, are called Arya (civilized people).

Q.38. Who are called Mlekcha?

Ans. Those who keep aloof from religious practices, have unsaintly conduct, or who can not seek initiation are called Mlekcha (uncivilized people).

Q.39. What are the kinds of Mlekcha?

Ans. There are two kinds of Mlekchas- 1. Mlechchhas belonging to a particular region, 2. Mlechchhas belonging to a particular genus.

Q.40. Who are called Jati Mlechchha?

Ans. Those who are mlechchhas by genus, but live in Aryakhand. For example- Shudra human beings.

Q.41. Who are called kshtra mlechchhas?

Ans. Those who are born in Mlechchha Khand but are kshatriya by genus are called kshetra mlechchas.

Q.42. What is the essence of human life?

Ans. 'Gnaanam narasya saaro', knowledge is the essence of human life.

Q.43. Why is human destiny supreme?

Ans. Human destiny is supreme because he has the power and ability of adopting restraint.

Q.44. What can be the lowest and the highest age of the human beings of the land of action?

Ans. The lowest age of the human beings of land of action is antarmuhoort, and the highest is one koti poorva.

Q.45. What can be the lowest and the highest age of the human beings of land of enjoyment?

Ans. The lowest age of the human beings of land of enjoyment is one time more one koti poorva, and the highest is 3 palya.

Q.46. What kinds of sufferings are bore by the living beings of human destiny?

Ans. The living being of human destiny stays in mother's womb for nine months where he suffers due to shrinking of the body. It is impossible to tell about the pains of getting out of the womb. Childhood is spent in ignorance. Youth is spent in the glare of sex and lust, and the old age is just like half dead. Eyes can not see clearly, ears can not hear clearly, legs wobble, religious activities go away due to weakness in senses. In this way numerous sufferings are faced by the living beings in human destiny.

Q.47. What kinds of pleasures are enjoyed by the living beings in human destiny?

Ans. The living beings in human destiny enjoy both sensuous pleasures and extra sensory pleasures.

Q.48. Which are the sensuous pleasures?

Ans. Kingdom, splendor, pleasures generated by the five senses etc.

Q.49. What is called extra sensory pleasure?

Ans. Spiritual happiness is called extra ordinary pleasure.

देव गति मार्गणा (घ)

प्रश्न 1. देवों का स्वरूप क्या है?

उत्तर : जो दैदीप्यमान, मनोहर शरीर सहित हो, अणिमादि गुणों से सहित हो, जो अनके प्रकार के वैभव से युक्त हो, वे देव कहलाते हैं।

प्रश्न 2. देव शब्द किस धातु से बना है?

उत्तर : देव शब्द दिव् धातु से बना है।

प्रश्न 3. 'दिव्' का क्या अर्थ है?

उत्तर : दिव् का अर्थ है- क्रीड़ा, कान्ति।

प्रश्न 4. देवों के कितने भेद हैं?

उत्तर : देवों के 4 भेद हैं - (1) भवनवासी (2) व्यन्तर (3) ज्योतिषी (4) कल्पवासी (वैमानिक)।

प्रश्न 5. देव कहाँ-कहाँ रहते हैं?

उत्तर : देव तीनों लोक में रहते हैं। [उर्ध्वलोक, मध्यलोक, अधोलोक]

प्रश्न 6. अधोलोक में कौन से देव रहते हैं?

उत्तर : अधोलोक में भवनवासी देव तथा व्यन्तरदेव रहते है।

प्रश्न 7. मध्यलोक में कौन-कौन से देव रहते हैं?

उत्तर : मध्यलोक में व्यंतरवासी देव तथा ज्योतिषी देव रहते हैं और वैमानिक, भवनवासी देव भी मध्यलोक में किसी विशेष अवसर पर [भगवान के कल्याणक आदि में] आते हैं। तीर्थंकर भगवान के समवशरण में भी सभी जाति के देव आते हैं।

प्रश्न 8. भवनवासी देवों के कितने भेद हैं नाम बताइए?

उत्तर : भवनवासी देवों के 10 भेद हैं - असुर कुमार, नाग कुमार,

विद्युतकुमार, सुपर्णकुमार, अग्निकुमार, वातकुमार, स्तनितकुमार, उदधिकुमार, द्वीपकुमार, दिक्कुमार।

प्रश्न 9. व्यंतरवासी देव के कितने भेद हैं? नाम बताइए।

उत्तर : व्यंतरवासी देवों के 8 भेद हैं - किन्नर, किंपुरुष, महोरग, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, भूत, पिशाच।

प्रश्न 10. ज्योतिषी देवों के कितने भेद हैं? नाम बताइए।

उत्तर : ज्योतिषी देवों के 5 भेद हैं - सूर्य, चन्द्रमा, ग्रह, नक्षत्र, प्रकीर्णक तारें।

प्रश्न 11. वैमानिक देव कितने प्रकार के हैं?

उत्तर : वैमानिक देव 2 प्रकार के होते हैं- (1) कल्पोपपन्न (2) कल्पातीत।

प्रश्न 12. कल्पोपपन्न किसे कहते हैं?

उत्तर : जिनमें इन्द्र आदि की कल्पना की जाती है अर्थात् आज्ञा, ऐश्वर्य, भोग आदि की हीनाधिकता पायी जाती है उन्हें कल्पोपपन्न देव कहते हैं।

प्रश्न 13. कल्पातीत किसे कहते हैं?

उत्तर : जिनमें इन्द्र, सामानिक आदि की कल्पना नहीं की जाती है अर्थात् वे अहमिन्द्र कहलाते हैं।

प्रश्न 14. अहमिन्द्र का क्या अर्थ है?

उत्तर : अहं + इन्द्र अर्थात् मैं स्वयं इन्द्र हूँ अथवा जिनके ऊपर किसी की आज्ञा/आदेश नहीं चलता उन्हें अहमिन्द्र कहते हैं।

प्रश्न 15. भवनवासी और कल्पवासी देवों की श्रेणियाँ किस प्रकार होती हैं?

उत्तर : भवनवासी और कल्पवासी देवों की 10 प्रकार की श्रेणियाँ

होती हैं - इन्द्र, सामानिक, त्रायस्त्रिंश, पारिषद्, आत्मरक्ष, लोकपाल, अनीक, प्रकीर्णक, आभियोग्य, किल्विषक।

प्रश्न 16. इन्द्र किसे कहते हैं?

उत्तर : जो ऐश्वर्यवान, सामर्थ्यवान होते हैं, जिनकी आज्ञा में सभी देव रहते हैं, जो राजा के समान होते हैं वे इन्द्र कहलाते हैं।

प्रश्न 17. सामानिक किसे कहते हैं?

उत्तर : जिनका ऐश्वर्य इन्द्र के समान होता है, आज्ञा आदि में कुछ हीनता पाई जाती है ये गुरु के समान होते हैं।

प्रश्न 18. त्रायस्त्रिंश किसे कहते हैं?

उत्तर : ये देव मंत्री के समान होते हैं तथा संख्या में 33 होते हैं। इसलिए इनको त्रायस्त्रिंश कहते हैं।

प्रश्न 19. पारिषद् किसे कहते हैं?

उत्तर : जिस प्रकार सभा में पार्षद् होते हैं उसी प्रकार से ये देव होते हैं अर्थात् किसी क्षेत्र विशेष पर आधिपत्य होता है ये सभी देव इन्द्र की आज्ञा में रहते हैं।

प्रश्न 20. आत्मरक्ष देव किसे कहते हैं?

उत्तर : जिस प्रकार राजा के अंगरक्षक होते हैं उसी प्रकार ये इन्द्र के अंगरक्षक होते हैं।

प्रश्न 21. लोकपाल देव किसे कहते हैं?

उत्तर : ये देव कोतवाल के समान होते हैं।

प्रश्न 22. अनीक देव किसे कहते हैं?

उत्तर : पैदल आदि सात प्रकार की सेना में विभक्त देवों को अनीक कहते हैं।

प्रश्न 23. प्रकीर्णक देव किसे कहते हैं?

उत्तर : ये देव नगर निवासी जनता के समान होते हैं।

प्रश्न 24. आभियोग्य देव किसे कहते हैं?

उत्तर : जो देव राजा की सेवा में तत्पर रहते हैं वाहनादि बनने का काम करते हैं। जैसे - ऐरावत हाथी आभियोग्य नामक देव ही बनता है।

प्रश्न 25. किल्विषक देव किसे कहते हैं?

उत्तर : जो शुद्र के समान होते हैं, नगर के बाहर निवास करते हैं वे किल्विषक देव कहलाते हैं।

प्रश्न 26. व्यंतर व ज्योतिषी देवों में किस प्रकार की श्रेणियाँ होती हैं?

उत्तर : त्रायस्त्रिंश व लोकपाल को छोड़कर शेष आठ प्रकार की श्रेणियाँ होती हैं।

प्रश्न 27. भवनवासी देवों की ऊँचाई कितनी होती है?

उत्तर : भवनवासी देवों में असुर कुमार देवों की - 25 धनुष, शेष देवों की 10 धनुष होती है।

प्रश्न 28. व्यंतरवासी देवों व ज्योतिषी देवों की ऊँचाई कितनी होती है?

उत्तर : व्यंतरवासी देवों व ज्योतिषी देवों की ऊँचाई क्रमश: 10 धनुष व 7 धनुष होती है।

प्रश्न 29. कल्पवासी देवों की ऊँचाई कितनी होती है?

उत्तर : सौधर्म इन्द्र की - 7 हाथ, पुन: क्रमश: घटते-घटते सर्वार्थ सिद्धि के देवों की 1 हाथ रह जाती है।

प्रश्न 30. देवों की जघन्य व उत्कृष्ट आयु कितनी होती है?

उत्तर : देवों की जघन्य आयु - 10 हजार वर्ष, उत्कृष्ट - 33 सागर होती है।

प्रश्न 31. देवों की संख्या कितनी होती है?

उत्तर : देवों की संख्या असंख्यात जगत् श्रेणी प्रमाण होती है।

प्रश्न 32. जगत् श्रेणी किसे कहते हैं?

उत्तर : 1 प्रदेश मोटी, 7 राजू लम्बी आकाश प्रदेशों की पंक्ति को जगत् श्रेणी कहते हैं। एक जगत् श्रेणी में असंख्यात आकाश प्रदेश पाये जाते हैं।

प्रश्न 33. देवों में कितने गुणस्थान हो सकते हैं?

उत्तर : देवों में 1 से 4 गुणस्थान हो सकते हैं।

प्रश्न 34. देवगति से मरण करके कौन सी गति में जा सकते हैं और आ सकते हैं?

उत्तर : देवगति से मरण करके मनुष्य और तिर्यंच गति में जा भी सकते हैं और आ भी सकते हैं और नरक व देवगति में ना तो जा सकते हैं और ना ही आ सकते हैं।

प्रश्न 35. देवों में कौन सा शरीर पाया जाता है?

उत्तर : देवों में वैक्रियक शरीर पाया जाता है।

प्रश्न 36. देवों में कौन-कौन से वेद पाये जाते हैं?

उत्तर : देवों में पुरुष व स्त्री वेद पाये जाते हैं।

प्रश्न 37. देवों में कितने व कौन-कौन से ज्ञान पाये जाते हैं?

उत्तर : देवों में तीन ज्ञान [मति, श्रुत, अवधि] व तीन अज्ञान (कुमति, कुश्रुत, कुअवधि) पाये जाते हैं।

प्रश्न 38. देवों में कौन-कौन से संयम पाये जाते हैं?

उत्तर : देव असंयमी ही होते हैं।

प्रश्न 39. देवों में कितनी कषायें पायी जाती हैं?

उत्तर : देवों में 24 कषायें [नपुंसक वेद बिना] पाई जाती हैं।

प्रश्न 40. देवों में कितने दर्शन पाये जाते हैं?

उत्तर : देवों में 3 दर्शन [चक्षु, अचक्षु, अवधि] पाये जाते हैं।

प्रश्न 41. देवों में पर्याप्तक अवस्था में कितनी लेश्याऐं पायी जाती हैं?

उत्तर : देवों में पर्याप्तक अवस्था में तीन [पीत, पद्म, शुक्ल] लेश्याऐं पायी जाती हैं।

प्रश्न 42. देवों में अपर्याप्तक अवस्था में कितनी लेश्याऐं पायी जाती हैं?

उत्तर : देवों में अपर्याप्तक अवस्था में छहों लेश्याऐं, भवनवासी, व्यंतर, ज्योतिष देवों में तीन अशुभ लेश्याऐं पायी जाती हैं तथा कल्पवासियों में तीनों शुभ लेश्याऐं पायी जाती हैं।

प्रश्न 43. देवों में कितने सम्यक्त्व हो सकते हैं?

उत्तर : पर्याप्तक अवस्था में छहों सम्यक्त्व हो सकते हैं।

प्रश्न 44. देवों में अपर्याप्तक अवस्था में कितने सम्यक्त्व हो सकते हैं?

उत्तर : भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिषी देवों में अपर्याप्तक अवस्था में मिथ्यात्व व सासादन सम्यक्त्व पाये जाते हैं तथा कल्पवासियों में अपर्याप्तक अवस्था में सम्यग्मिथ्यात्व को छोड़कर शेष पाँच सम्यक्त्व पाये जाते हैं।

प्रश्न 45. कितनी प्रकार की जाति वाले देव होते हैं?

उत्तर : 4 लाख जाति वाले देव होते हैं।

प्रश्न 46. देवों में कितनी कुल कोटियाँ पायी जाती हैं?

उत्तर : 26 लाख करोड़ कुल कोटियाँ देवों में पायी जाती हैं।

प्रश्न 47. देवगति के जीव लोक के कितने भाग को स्पर्श करते हैं?

उत्तर : देवगति के जीव लोक के असंख्यातवें भाग को और कुछ कम 8/14 राजू को स्पर्श करते हैं।

प्रश्न 48. देवगति के जीव किस प्रकार के सुखों को भोगते हैं?

उत्तर : देवों के पास अनेक प्रकार का वैभव होता है, ऋद्धियों से सहित होते हैं, भूख-प्यास की वेदना नहीं होती है, कंठ में अमृत झरता है, स्वतंत्र विचरण करते हैं। नंदीश्वर द्वीप-पंचमेरू आदि अकृत्रिम जिनालयों के दर्शन-पूजन करके अत्यन्त सुख का अनुभव करते हैं।

प्रश्न 49. देवगति के जीव कैसी-कैसी वेदना को सहन करते हैं?

उत्तर : भवनत्रिक देव इन्द्रिय - विषयों की चाह रूपी भयानक अग्नि में जलता रहता है। और मरते समय छह माह पूर्व मन्दारमाला के मुरझाने से तथा शरीर और वस्त्रालंकारों की कान्ति क्षीण हो जाने से अपना मरण निकट जानकर बिलख-बिलख कर रोते हैं, दु:खी होते हैं और विमानवासी देव, व्यन्तर, ज्योतिषी, भवनवासी देव सम्यग्दर्शन के बिना दु:खों को भोगते है। आर्त्त रौद्र ध्यान के कारण मरण कर एकेन्द्रियों में पैदा हो जाते है। सम्यग्दृष्टि जीव नियम से मनुष्यगति में ही पैदा होते हैं।

(D) Enquiry Into Celestial Destiny

Q.1. What is the nature of celestial beings?

Ans. Those who shine brightly, have attractive bodies, full of auspicious virtues, are full of splendor, are called celestial beings.

Q.2. Of which 'dhatu' the term 'dev' is formed?

Ans. The term 'dev' is formed of 'div' dhatu.

Q.3 What is the meaning of 'div'?

Ans. The meaning of div is – merriment, luster.

Q.4. What are kinds of celestial beings?

Ans. There are four kinds of celestial beings- 1. Residential, 2. Peripatetic, 4. Stellar, 4. Empyrean.

Q.5. Where do the celestial beings live?

Ans. Celestial beings live in all the three universes. (Upper universe, Middle universe, Lower universe).

Q. 6. Which kinds of celestial beings live in Lower universe?

Ans. Residential and Peripatetic celestial beings live in Lower universe.

Q.7. Which celestial beings live in Middle universe?

Ans. Peripatetic celestial beings live in middle universe, residential celestial beings also present themselves there at the specific occasions of celebration of Lord etc. In the omniscient preaching hall, all kinds of celestial beings present themselves.

Q.8. What are kinds of residential celestial beings, tell their names?

Ans. There are ten kinds of residential celestial beings- fiendish youths, serpentine youths, lightning youths, vulturine youths, fiery youths, stormy youths, thundering youths, oceanic youths, island youths, guardian of carinal points youths.

Q.9. What are kinds of peripatetic celestial beings? Tell their names.

Ans. There are 8 kinds of Peripatetic celestial beings- deformed humans, deformed persons, great serpent, musician, treasure keeper, demon, devil, goblin.

Q.10. What are the kinds of stellar celestial beings? Tell their names.

Ans. There are five kinds of stellar celestial beings- The Sun, The moon, planets, constellations, scattered stars.

Q.11. What are the kinds of empyrean celestial beings?

Ans. There are two kinds of empyrean celestial beings- graded celestial beings(heavenly celestial beings), non-graded celestial beings(.

Q.12. Who are called graded celestial beings?

Ans. In whom the lord of heaven is imagined. In other words, in whom the qualities of ordering, supremacy, enjoyment etc. are found in falsely excessiveness.

Q.13. Who are called non-graded celestial beings?

Ans. In whom the lord of heaven is not imagined. In other words, such celestial beings are called non-graded celestial beings.

Q.14. What is the meaning of Ahamindra?

Ans. Aham+ indra or I am lord of heaven. In other words, who do not follow the orders of others are called Ahamindra.

Q.15. What kinds of categories residential and heavenly celestial beings?

Ans. There are ten categories of residential and heavenly celestial beings- lord, common, tristrial, councilor, self-defensive, ombudsman, non-sticking, miscellany, especially able, sinful.

Q.16. Who is called Lord of deities or heaven?

Ans. Those who are prosperous, powerful, in whose supervision other celestial beings live and live like kings are called lords of heaven.

Q.17. Who is called Samanik(Mentor)?

Ans. Those whose prosperity is like the prosperity of Indra, but are weak in supervision, these are like perceptors.

Q.18. Who is called tristrival ?

Ans. These celestial beings are like ministers and thirty three in number, that is why these are called tristrial.

Q.19. Who is called councilor?

Ans. These celestial beings are like the councilors in a corporation. In other words, these celestial beings have authority on some specific region. All these celestial beings live under the supervision of their lord.

Q.20. Who are called self-defensive celestial beings?

Ans. These are body guards of their lord in the same manner as a king has his bodyguards.

Q.21. Who are called ombudsman celestial beings?

Ans. These celestial beings are like superintendent of police.

Q.22. Who are called non-sticking celestial beings?

Ans. The seven kinds of army as one kind is infantry of celestial beings are called non-sticking celestial beings.

Q.23. Who are called miscellany celestial beings?

Ans. These celestial beings are like the public of the town.

Q.24. Who are called especially able celestial beings?

Ans. These celestial beings are ever ready in the service of their lord and use to make their vehicles etc.. For example- Airawat elephant later transforms into such kind of celestial being.

Q.25. Who are called sinful celestial beings?

Ans. They are like lower strata of society and use to live in the outskirts of the town, are called sinful celestial beings.

Q.26. What kind of categories are there in peripatetic and stellar celestial beings?

Ans. Leaving tristrial and ombudsman, remaining eight kinds of categories are there in peripatetic and stellar celestial beings.

Q.27. How tall are residential celestial beings?

Ans. Among them, fiendish are 25 dhanush tall and remaining celestial beings are 10 dhanush tall.

Q.28. How tall are peripatetic and stellar celestial beings?

Ans. Peripatetic and stellar celestial beings are 10 and 7 dhanush tall respectively.

Q.29. How tall are heavenly celestial beings?

Ans. Saudharm/ Righteous lord is 7 hands tall, then decdreasing gradually it remains I hand tall for the sarvaarthasiddha devas.

Q.30. What is the highest and the lowest age of celestial beings?

Ans. The lowest age of the celestial beings is 10 thousand years and the highest is 33 sagaras.

Q.31. What is the number of celestial beings?

Ans. The number of celestial beings is infinite number of temporal worlds(series of universe) in measurement.

Q.32. What is called series of universe?

Ans. The series of sky spaces, One Pradesh thick, 7 Raju in length is called series of universe. Innumerable space points are found in a series of universe.

Q.33. How many stages of spiritual developments can belong to celestial beings?

Ans. Celestial beings can have 1 to 4 sages of spiritual development.

Q.34. In which destinies can celestial beings come and go after their death in celestial destiny?

Ans. After dying in celestial destiny, they can move to human and subhuman destinies, but they can neither move to hell destiny nor to celestial destiny.

Q.35. What kind of body is found in celestial beings?

Ans. Fluid body is found in celestial beings.

Q.36. Which genders are found in celestial beings?

Ans. Masculine and feminine genders are found in celestial beings.

Q.37. What kind of and how many knowledge are found in celestial beings?

Ans. Three kind of knowledge (sensory, scriptural and clairvoyance) and three kinds of ignorance (wrong cognitive knowledge, wrong scriptural knowledge and wrong clairvoyance) are found in celestial beings.

Q.38. What kind of restraints are found in celestial beings?

Ans. Celestial beings are non-restraint.

Q.39. How many passions are found in celestial beings?

Ans. 24 passions (leaving neuter gender) are found in celestial beings.

Q.40. How many perceptions are found in celestial beings?

Ans. 3 kinds of perceptions are found in celestial beings (with vision, except for vision, clairvoyance).

Q.41. How many complexions are found in completed celestial beings?

Ans. Three (yellow, pink, and white) complexions are found in completed celestial beings.

Q.42. How many complexions are found in incomplete celestial beings?

Ans. All six complexions are found in incomplete type of celestial beings. However, in residential, peripatetic and stellar celestial beingsthree inauspicious complexions are found and in heavenly celestial beings three auspicious complexions are found.

Q.43. How many kinds of right faith can complete type of celestial beings have?

Ans. Complete type of celestial beings can have all six kinds of right faith.

Q.44. How many kinds of right faith can incomplete type of celestial beings have?

Ans. Wrong and lingering right faith are found and in residential, peripatetic and stellar incomplete type of celestial beings and in heavenly incomplete type of celestial beings leaving wrong-right faith all five kinds of remaining right faith are found.

Q.45. How many castes are found in celestial beings?

Ans. 4 lakh castes are found in celestial beings.

Q.46. How many total kinds of categories are found in celestial beings?

Ans. 26 lakh crore categories are found in celestial beings.

Q.47. What part of the universe is touched by the living beings of celestial destiny?

Ans. Infinitieth less $8/24^{th}$ Raju part of the universe is touched by the living beings of celestial destiny.

Q.48. What kind of pleasures are enjoyed by the living beings of celestial destiny?

Ans. Celestial beings have many kinds of grandeur. They have miraculous powers. They do not feel pain of hunger and thirst, elixir is there in their throat. They move freely. They feel extreme pleasure in visiting and worshiping unnatural temples of Lord Jin like Nandishwar island and Panchmeru etc.

Q.49. What kinds of suffering are faced by the living beings of celestial destiny?

Ans. Residential celestial beings always keep burning in dreadful want of desires. And six months before the time of leaving their destiny, due to withering of mandaarmaala and weakness in their bodies and fading away of the glory of their clothes and ornaments and knowing their end near, they cry badly. They become sad and face many pains without having right faith. Due to violent and painful meditation, they are born as single sensed beings. Right faithed are born in human destiny as per rule.

II. इन्द्रिय मार्गणा

प्रश्न 1. इन्द्रिय किसे कहते हैं?

उत्तर : * शरीर के चिह्न विशेष को इन्द्रिय कहते हैं।
* जो अहमिन्द्र के समान अपने-अपने विषयों में स्वतंत्र होतीं हैं उन्हें इन्द्रिय कहते हैं।

प्रश्न 2. इन्द्रिय मार्गणा किसे कहते हैं?

उत्तर : इन्द्रियों के द्वारा जीवों की खोज करना इन्द्रिय मार्गणा है।

प्रश्न 3. इन्द्रिय के कितने भेद हैं?

उत्तर : इन्द्रिय के दो भेद हैं- (1) द्रव्येन्द्रिय [बाह्य चिह्न] (2) भावेन्द्रिय [क्षयोपशम ज्ञान]

प्रश्न 4. द्रव्येन्द्रिय किसे कहते हैं?

उत्तर : शरीर नामकर्म के उदय से बनने वाले शरीर के चिह्न विशेष को द्रव्येन्द्रिय कहते हैं।

प्रश्न 5. भावेन्द्रिय किसे कहते हैं?

उत्तर : मतिज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से उत्पन्न होने वाली विशुद्धि अथवा उस विशुद्धि से उत्पन्न होने वाले उपयोगात्मक ज्ञान को भावेन्द्रिय कहते हैं।

प्रश्न 6. द्रव्येन्द्रिय के कितने भेद हैं?

उत्तर : द्रव्येन्द्रिय के दो भेद हैं - (1) निर्वृत्ति (2) उपकरण

प्रश्न 7. निर्वृत्ति किसे कहते हैं?

उत्तर : इन्द्रियाकार रचना को निर्वृत्ति कहते हैं। जैसे - आँख, नाक, कान का आकार।

प्रश्न 8. उपकरण किसे कहते हैं?

उत्तर : जो निर्वृत्ति का उपकार करे उसे उपकरण कहते हैं। जैसे - नेत्र की पलकें, भौहें आदि।

प्रश्न 9. भावेन्द्रिय के कितने भेद हैं?

उत्तर : भावेन्द्रिय के दो भेद हैं - (1) लब्धि [ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम] (2) उपयोग (वर्तमान में चेतना का परिणाम विशेष)।

प्रश्न 10. प्रकारान्तर से इन्द्रियों के कितने भेद हैं?

उत्तर : इन्द्रियों के 5 भेद हैं - एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय।

प्रश्न 11. कौन-कौन से जीवों के कौन-कौन सी इन्द्रियाँ पायी जाती हैं?

उत्तर : एकेन्द्रिय के-स्पर्शन इन्द्रिय, द्वीन्द्रिय के-स्पर्शन व रसना, त्रीन्द्रिय के-स्पर्शन, रसना, घ्राण, चतुरिन्द्रिय के-स्पर्शन, रसना, घ्राण व चक्षु और पंचेन्द्रिय के - स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण इन्द्रियाँ होती हैं।

प्रश्न 12. कौन-कौन सी इन्द्रिय के कौन-कौन सा विषय होता है और उनका क्षेत्र कितना है?

उत्तर : एकेन्द्रिय के स्पर्श विषय का उत्कृष्ट क्षेत्र 400 धनुष, द्वीन्द्रिय के स्पर्श व रस के विषय होते हैं। इसका उत्कृष्ट क्षेत्र में स्पर्श का 800 धनुष, रस का - 64 धनुष, त्रीन्द्रिय के स्पर्श, रस, गंध तीन विषय है इनका उत्कृष्ट क्षेत्र में स्पर्श का - 1600 धनुष, रस का - 128 धनुष, गंध का - 100 धनुष, चतुरिन्द्रिय के स्पर्श, रस, गंध, रूप चार विषय हैं। इनका उत्कृष्ट क्षेत्र में स्पर्श का -3200 धनुष, रस का - 256 धनुष, गंध का - 200 धनुष, रूप अर्थात् चक्षु इन्द्रिय का - 2954 योजन, असैनी पंचेन्द्रिय के स्पर्श, रस, गंध, रूप, शब्द पाँचों विषय हैं। इनका उत्कृष्ट क्षेत्र में स्पर्श का - 6400 धनुष, रस का -

512 धनुष, गंध का 400 धनुष, चक्षु का 5908 योजन, शब्द 8000 धनुष, सैनी पंचेन्द्रिय के भी पाँचों विषय होते हैं। स्पर्श, रस, गंध, का विषय - 9-9 योजन है, चक्षु इन्द्रिय का उत्कृष्ट विषय क्षेत्र - 47263 योजन से कुछ अधिक अथवा 47263 7/20 योजन तथा कर्ण इन्द्रिय का - 12 योजन होता है।

चार्ट

विषय/इन्द्रिय	एकेन्द्रिय	द्वीन्द्रिय	त्रीन्द्रिय	चतुरिन्द्रिय	असैनी पंचेन्द्रिय	सैनी पंचेन्द्रिय
स्पर्शन	400 धनुष	800 धनुष	1600 धनुष	3200 धनुष	6400 धनुष	9 योजन
रसना		64 धनुष	128 धनुष	256 धनुष	512 धनुष	9 योजन
घ्राण			100 धनुष	200 धनुष	400 धनुष	9 योजन
चक्षु				2954 धनुष	5908 धनुष	47263 7/20 योजन
कर्ण					8000 धनुष	12 योजन

प्रश्न 13. कौन-कौन सी गति में कितने-कितने इन्द्रिय जीव होते हैं?

उत्तर : नरक गति, देव गति, मनुष्य गति में संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव ही होते हैं और तिर्यंच गति में - एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक सभी प्रकार के जीव होते हैं।

प्रश्न 14. इन्द्रियों की अपेक्षा से जीव कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर : इन्द्रियों की अपेक्षा से जीव 3 प्रकार के होते हैं- (1) एकेन्द्रिय (2) विकलेन्द्रिय (3) सकलेन्द्रिय।

प्रश्न 15. एकेन्द्रिय जीव किसे कहते हैं?

उत्तर : जिसके मात्र स्पर्शनेन्द्रिय होती है उसे एकेन्द्रिय जीव कहते हैं।

प्रश्न 16. विकलेन्द्रिय/विकलत्रय जीव किसे कहते हैं?

उत्तर : 2 इन्द्रिय से 4 इन्द्रिय तक के जीवों को विकलत्रय/विकलेन्द्रिय जीव कहते हैं।

प्रश्न 17. सकलेन्द्रिय जीव किसे कहते हैं?

उत्तर : जिस जीव के सम्पूर्ण इन्द्रियाँ होती हैं उसे सकलेन्द्रिय जीव कहते हैं।

प्रश्न 18. एकेन्द्रिय जीव स्थावर काय होते हैं या त्रसकाय?

उत्तर : एकेन्द्रिय जीव स्थावर काय होते हैं।

प्रश्न 19. दो इन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक के जीव त्रस होते हैं या स्थावर?

उत्तर : दो इन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक के जीव त्रसकाय ही होते हैं।

प्रश्न 20. कितनी-कितनी इन्द्रियों के जीव में कौन-कौन सा वेद होता है?

उत्तर : एकेन्द्रिय से चतुरिन्द्रिय तक के जीव तो नपुंसक वेदी ही होते हैं और पंचेन्द्रिय जीवों के तीनों वेद हो सकते हैं।

प्रश्न 21. एकेन्द्रियों में कितने ज्ञान होते हैं?

उत्तर : एकेन्द्रियों में 2 अज्ञान होते हैं- (1) कुमति (2) कुश्रुत।

प्रश्न 22. विकलेन्द्रियों में कितने ज्ञान होते हैं?

उत्तर : विकलेन्द्रियों में 2 अज्ञान होते हैं- (1) कुमति (2) कुश्रुत।

प्रश्न 23. सकलेन्द्रियों में कितने ज्ञान होते हैं?

उत्तर : सकलेन्द्रियों में 8 ज्ञान होते हैं- कुमति, कुश्रुत, कुअवधि, मति, श्रुत, अवधि, मन:पर्यय, केवलज्ञान।

प्रश्न 24. कितनी-कितनी इन्द्रिय के जीव में कौन सा संयम होता है?

उत्तर : एकेन्द्रिय से चार इन्द्रिय तक तो नियम से असंयम ही होता है और पंचेन्द्रियों के सातों संयम हो सकते हैं।

प्रश्न 25. एकेन्द्रियों में कौन सा दर्शन पाया जाता है?

उत्तर : एकेन्द्रियों में एक अचक्षु दर्शन पाया जाता है।

प्रश्न 26. विकलेन्द्रियों में कौन सा दर्शन पाया जाता है?

उत्तर : दो इन्द्रिय व तीन इन्द्रिय के जीवों में अचक्षु दर्शन व चार इन्द्रिय जीवों के चक्षु व अचक्षु दो दर्शन होते हैं।

प्रश्न 27. सकलेन्द्रियों में कौन-कौन से दर्शन हो सकते हैं?

उत्तर : सकलेन्द्रियों में चारों दर्शन। [चक्षु, अचक्षु, अवधि व केवल दर्शन] हो सकते हैं।

प्रश्न 28. कितनी-कितनी इन्द्रिय के जीवों के कितनी-कितनी लेश्याएँ हो सकती हैं?

उत्तर : एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक के सभी जीवों के छहों लेश्याएँ हो सकती हैं।

प्रश्न 29. कितनी-कितनी इन्द्रिय जीवों के कितने-कितने सम्यक्त्व हो सकते हैं?

उत्तर : एकेन्द्रिय से चार इन्द्रिय तक के जीवों के तो नियम से मिथ्यात्व सम्यक्त्व ही होता है और पंचेन्द्रिय जीवों के छहों सम्यक्त्व [उपशम, क्षायिक, क्षयोपशम, मिश्र, सासादन व मिथ्यात्व] हो सकते हैं।*

प्रश्न 30. कितने इन्द्रिय जीव संज्ञी-असंज्ञी होते हैं?

उत्तर : एकेन्द्रिय से चार इन्द्रिय तक तो सभी जीव नियम से असंज्ञी ही होते हैं और पंचेन्द्रिय जीव संज्ञी व असंज्ञी दोनों हो सकते हैं।

प्रश्न 31. एकेन्द्रिय जीवों की संख्या कितनी है?

उत्तर : एकेन्द्रियों में निगोदिया जीव तो अनंतानंत हैं और शेष एकेन्द्रिय जीव असंख्यातासंख्यात हैं।

---

* नोट- कर्मकाण्ड ग्रन्थ के अनुसार एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रियों के अपर्याप्तक अवस्था में सासादन सम्यक्त्व भी पाया जाता है लेकिन पर्याप्त अवस्था में नियम से मिथ्यात्व सम्यक्त्व ही होता है।

प्रश्न 32. दो इन्द्रिय आदि जीवों की संख्या कितनी है?

उत्तर : दो-तीन-चार-पाँच इन्द्रिय जीवों की संख्या प्रत्येक की असंख्यातासंख्यात हैं।

प्रश्न 33. एकेन्द्रियादि तिर्यंच जीवों की जघन्य व उत्कृष्ट से आयु कितने-कितने वर्ष की है?

उत्तर : सभी जीवों की जघन्य आयु अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट आयु एकेन्द्रिय की 22000 वर्ष, दो इन्द्रिय की - 12 वर्ष, तीन इन्द्रिय की - 49 दिन, चार इन्द्रिय की 6 मास, पंचेन्द्रिय जलचर जीवों की - 1 कोटि पूर्व, सरीसर्प, रेंगने वाले जीवों की - 9 पूर्वांग, सर्प की - 42000 वर्ष, पक्षियों की - 72000 वर्ष, चौपाये पशुओं की - 3 पल्य की आयु होती है। शेष गति वाले जीवों की आयु गति मार्गणा में अपनी अपनी गति में दर्शायी गयी है।

प्रश्न 34. स्पर्शन आदि इन्द्रियों का आकार कैसा होता है?

उत्तर : स्पर्शनेन्द्रिय का - अनेक, अनियत आकार, रसना इन्द्रिय का - खुरपाकार, घ्राण इन्द्रिय का - तिल के फूल के समान, चक्षु इन्द्रिय का - मसूर के समान, कर्ण इन्द्रिय का - यवनाली के समान आकार होता है।

प्रश्न 35. एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक के जीवों की अवगाहना कितनी होती है?

उत्तर : एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक के जीव की अवगाहना जघन्य - घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग

उत्कृष्ट से - 1000 योजन होती है।

II. Enquiry through Senses

Q.1. What is called a sense?

Ans. The specific sign of body is called a sense.

That which are free in their own sensualities like Ahimindra, are called senses.

Q.2. What is called enquiry through senses?

Ans. To explore living beings through senses is called enquiry into senses.

Q.3. How many kinds of senses are there?

Ans. There are two kinds of senses- 1. Physical senses (external signs), 2. Psychic sense (destruction cum subsidence knowledge).

Q.4. What is called physical sense?

Ans. Specific sign of body that appears due to rise of physique making karma is called physical sense.

Q.5. What is called psychic sense?

Ans. Impurity produced due to destruction cum subsidence of obscuring karma of sensory knowledge or cognitive consciousness produced as the result of that impurity is called psychic sense.

Q.6. How many kinds are there of physical senses?

Ans. There are two kinds- 1. Quietude or peace of mind or the constitution of main sense organ, 2. Constitution of helping modes to main sense organs.

Q.7. What is called Nivrutti(main sense organ)?

Ans. Constitution of the shape of sense organ is called nivrutti. For example- shape of eyes, nose, ear etc.

Q.8. What is called upakaran (helping sense organ)?

Ans. That which helps the main sense organ is called upakaran. For example- eye lashes, brows etc.

Q.9. How many kinds of psychic senses?

Ans. There are two kinds of psychic senses- 1. Attainment (destruction cum subsidence of knowledge obscuring karma), 2. Specific consciousness in present.

Q.10. What are the kinds of senses?

Ans. There are five kinds of senses- single sensed, double sensed, triple sensed, quadrilateral or four sensed, five sensed.

Q.11. Which living beings have which senses?

Ans. One sensed has sense of touch, double sensed have touch and taste, triple sensed have touch, taste, smell, four sensed have touch, taste, smell and seeing, and five sensed have touch, taste, smell, seeing, and hearing senses.

Q.12. Which living beings have which objects and what are their regions?

Ans. One sensed has its highest contact area of 400 Dhanush; two sensed has touch and taste as its object and the highest contact region is 800 Dhanush; the region of taste is 64 Dhanush; Three sensed has touch, taste, and smell as their objects and their highest contact regions are- touch- 1600 Dhanush, taste- 128 Dhanush, Smell- 200 Dhanush; Four sensed has touch, taste, smell and look as their objects and their highest contact region is touch- 3200 Dhanush, taste- 256 Dhanush, Smell- 200 Dhanush, look- 2954 Yojan; Incomplete five sensed has touch, taste, smell, seeing and hearing as their objects and their highest region of contact is touch- 6400 Dhanush; taste 512 dhanush, smell 400 dhanush, eyes 5908 yojan, word 8000 dhanush and complete five sensed also have five objects; taste, smell and touch each has 9 Yojan, eyes have the highest region of contact more than 47263 Yojan or 472637/20 Yojan and the ears have 12 Yojan.

Q.13. How many sensed beings are there in different destinies?

Ans. In Hellish destiny, celestial destiny, human destiny only five sensed living beings with mind and in the destiny belonging to biological kingdom- from one sensed to five sensed- all kinds of living beings exist.

Q.14. What kinds of living beings are there in respect of senses?

Ans. In respect of senses, living beings are of three kinds- 1. One sensed,2. Cripple sensed, 3. All-sensed.

Q.15. Which are called one sensed living beings?

Ans. The one having only touch sense is called single sensed living being.

Q.16. What are called cripple sensed living beings?

Ans. Those having two to four senses are called cripple sensed living beings.

Q.17. What are called all-sensed living beings?

Ans. The living beings having all senses are called all-sensed living beings.

Q.18. Is single sensed living being immobile beings or mobile beings?

Ans. Single sensed living beings are immobile beings.

Q.19. Are two sensed to five sensed living beings mobile beings or immobile beings?

Ans. From two sensed to five sensed living beings are only mobile beings.

Q.20. Which genders are found in different sensed living beings?

Ans. From single sensed to four sensed living beings are of neuter gender, and five sensed have all the three genders.

Q.21. How many kinds of knowledge do one sensed living beings have?

Ans. There are two kinds of knowledge in single sensed living beings- 1. Wrong cognitive knowledge,2. Wrong scriptural knowledge.

Q.22. How many kinds of knowledge do mutilate living beings have?

Ans. Crippled living beings have two kinds of knowledge- 1. Wrong cognitive knowledge, 2. Wrong scriptural knowledge.

Q.23. How many kinds of knowledge do all sensed living beings have?

Ans. All-sensed living beings have 8 senses- wrong cognitive, wrong scriptural, wrong clairvoyance, cognitive, scriptural, clairvoyance, telepathic, omniscience knowledge.

Q.24. Which kind of restraint is found in various sensed living beings?

Ans. As per rule single sensed to four sensed living beings have non-restraint and five sensed have all the seven kinds of restraints.

Q.25. Which kind of perception is found in single sensed living beings?

Ans. Single sensed living beings have only perception except for vision.

Q.26. What kind of perception is found in crippled living beings?

Ans. Two sensed and three sensed living beings have perception except for vision, four sensed have both kinds of perceptions- vision as well as except for vision.

Q.27. What kinds of perception is found in all-sensed living beings?

Ans. All-sensed living beings have all four perceptions- vision, except for vision, clairvoyance and omniscience.

Q.28. What kind of complexions are found in various sensed living beings?

Ans. All six complexions can be found in all living beings from single sensed to five sensed.

Q.29. How many right-faiths can there be in different living beings of different senses?

Ans. As per rule, single sensed to four sensed living beings have only wrong-faith and five sensed living beings can have all the six kinds of right faith(subsidence, destructive,

destruction cum subsidence, mixed, lingering faith stage, and wrong-belief).

Q.30. Which kind of living being (what sensed) are with consciousness and unconsciousness?

Ans. One sensed to four sensed- all living beings are as per rule with unconsciousness and the five sensed living beings can be both with consciousness and unconsciousness.

Q.31. What is the number of single sensed living beings?

Ans. Among single sensed, micro living beings are infinitely infinite and the remaining single sensed living beings are innumerable.

Q.32. What is the number of two sensed etc. living beings?

Ans. Two- three-four-five sensed living beings each are innumerable in number.

Q.33. What is the lowest and the highest age of single sensed etc. living beings?

Ans. All living beings have their lowest age is Antarmuhoort and the highest age of single sensed is 22000 years, two sensed- 12 years, three sensed- 49 days, four sensed- 6 months, five sensed aquatic living beings- 1 koti purva, reptiles- 9 poorvang, snakes- 42000 years, birds-72000 years, quadrupedal animals- 3 palya.

Q.34. How is the shape of touch etc. senses?

Ans. Touch sense- many, indefinite shape, taste sense- scalloped, smell senses- like sesame flowers, seeing senses- lentil like, hearing senses- similar to Yavanali.

Q.35. What is the occupancy of single sensed to five sensed living beings?

Ans. The lowest occupancy of single sensed to five sensed living beings is infinitieth part of ghanangul and the highest is 1000 Yojan.

III. काय मार्गणा

प्रश्न 1. काय किसे कहते हैं?

उत्तर : * जाति नामकर्म के अविनाभावी त्रस और स्थावर नामकर्म के उदय से होने वाली आत्मा की पर्याय को काय कहते हैं।

* दो या दो से अधिक परमाणुओं के पिण्ड को काय कहते हैं।

* आत्मा के द्वारा संग्रहीत किए गए पुद्गल पिण्ड को काय कहते हैं।

प्रश्न 2. काय मार्गणा किसे कहते हैं?

उत्तर : काय के माध्यम से जीवों की खोज करना काय मार्गणा है।

प्रश्न 3. काय के कितने भेद होते हैं?

उत्तर : काय के दो भेद होते हैं- (1) स्थावर (2) त्रस

प्रश्न 4. स्थावर काय किसे कहते हैं?

उत्तर : जो हलन चलन नहीं करता, जिसमें खून, हड्डी, माँस नहीं पाया जाता है तथा स्थावर नामकर्म के उदय से होने वाली जीव की अवस्था विशेष को स्थावर काय कहते हैं।

प्रश्न 5. त्रस काय किसे कहते हैं?

उत्तर : जिसमें खून, हड्डी, माँस पाया जाता है तथा त्रस नामकर्म के उदय से होने वाली जीव की अवस्था विशेष को त्रस काय कहते हैं।

प्रश्न 6. स्थावर कायिक के कितने भेद हैं?

उत्तर : स्थावर कायिक के पाँच भेद हैं- पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और वनस्पतिकायिक।

प्रश्न 7. षट्काय किसे कहते हैं?

उत्तर : पाँच स्थावर और एक त्रस को षट्काय कहते हैं।

प्रश्न 8. वनस्पति कायिक के कितने भेद हैं?

उत्तर : वनस्पति कायिक के दो भेद हैं- (1) साधारण वनस्पति, (2) प्रत्येक वनस्पति।

प्रश्न 9. प्रत्येक वनस्पति किसे कहते हैं?

उत्तर : एक शरीर का एक ही जीव स्वामी हो उसे प्रत्येक वनस्पति कहते हैं।

प्रश्न 10. प्रत्येक वनस्पति के कितने भेद हैं?

उत्तर : प्रत्येक वनस्पति के दो भेद हैं- (1) सप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति (2) अप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति।

प्रश्न 11. सप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति किसे कहते हैं?

उत्तर : जिस वनस्पति के पत्ते, फल, फूल आदि के भंग करने पर समान भंग हो जाय तथा जिनमें रोयें हों, धारियाँ न बनी हों, बीजादि की उत्पत्ति न हुई हो, वे सब सप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति हैं। इनके आश्रित असंख्यात निगोदिया जीव रहते हैं बुद्धिमान लोगों को ये खाने योग्य नहीं हैं।

प्रश्न 12. अप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति किसे कहते हैं?

उत्तर : जिन वनस्पतियों के पत्ते, फल, फूल, कोपल आदि के भंग समान न हों। जो परिपक्व हो चुके हैं धारियाँ आदि बन चुकी हैं, बीज उत्पन्न हो चुके हैं, वे सब अप्रतिष्ठित वनस्पति हैं। इनके आश्रित कोई जीव राशि नहीं होती अत: बुद्धिमानों के लिए भक्ष्य हैं।

प्रश्न 13. साधारण वनस्पति किसे कहते हैं?

उत्तर : जिनके साधारण नामकर्म का उदय हो। एक शरीर के अनन्त जीव स्वामी हो। जिन जीवों का आहार श्वासोच्छवास, जन्म-

मरण, समान हो अर्थात् एक साथ हो उन्हें साधारण वनस्पति कहते हैं। जैसे - आलू आदि कन्दमूल। बुद्धिमानों को ये सर्वथा त्याज्य है।

प्रश्न 14. साधारण वनस्पति को अन्य किस नाम से जाना जाता है?

उत्तर : साधारण वनस्पति को निगोद नाम से भी जाना जाता है।

प्रश्न 15. निगोद के कितने भेद हैं?

उत्तर : निगोद के दो भेद हैं- नित्य निगोद, इतर निगोद और प्रत्येक के दो-दो भेद हैं बादर व सूक्ष्म।

प्रश्न 16. नित्य निगोद किसे कहते हैं?

उत्तर : जो अनादि से निगोद पर्याय को ही धारण करते आये हैं, अब तक त्रस पर्याय को प्राप्त ही नहीं किया है उसे नित्य निगोद कहते हैं।

प्रश्न 17. इतर निगोद किसे कहते हैं?

उत्तर : जो निगोद से निकलकर अन्य पर्याय प्राप्त करके पुन: निगोद में आ गए हैं उन्हें इतर निगोद कहते हैं।

प्रश्न 18. नित्य निगोद की संख्या कितनी होती है?

उत्तर : नित्य निगोद की संख्या अक्षय अनंत है।

प्रश्न 19. नित्य निगोद के कितने भेद हैं?

उत्तर : नित्य निगोद के दो भेद हैं- (1) अनादि अनंत, (2) अनादि सांत।

प्रश्न 20. अनादि अनंत नित्य निगोद किसे कहते हैं?

उत्तर : जिन जीवों ने निगोद अवस्था छोड़ी नहीं और आगे भी नहीं छोड़ेगें, उन्हें अनादि अनंत नित्य निगोद कहते हैं।

प्रश्न 21. अनादि सांत नित्य निगोद किसे कहते हैं?

उत्तर : जिन जीवों ने निगोद अवस्था छोड़ी नहीं परन्तु आगे छोड़ देंगे, उन्हें अनादि सांत नित्य निगोद कहते हैं।

प्रश्न 22. मृदु पृथ्वीकायिक जीवों की उत्कृष्ट आयु कितनी होती है?

उत्तर : मृदु पृथ्वीकायिक जीवों की उत्कृष्ट आयु 12,000 वर्ष होती है।

प्रश्न 23. कठोर पृथ्वीकायिक जीवों की उत्कृष्ट आयु कितनी है?

उत्तर : कठोर पृथ्वीकायिक जीवों की उत्कृष्ट आयु 22,000 वर्ष होती है।

प्रश्न 24. जलकायिक जीवों की उत्कृष्ट आयु कितनी होती है?

उत्तर : जलकायिक जीवों की उत्कृष्ट आयु 7,000 वर्ष होती है।

प्रश्न 25. वायुकायिक जीवों की उत्कृष्ट आयु कितनी होती है?

उत्तर : वायुकायिक जीवों की उत्कृष्ट आयु 3,000 वर्ष होती है।

प्रश्न 26. अग्निकायिक जीवों की उत्कृष्ट आयु कितनी होती है?

उत्तर : अग्निकायिक जीवों की उत्कृष्ट आयु 3 दिन होती है।

प्रश्न 27. वनस्पति कायिक जीवों की उत्कृष्ट आयु कितनी होती है?

उत्तर : वनस्पति कायिक जीवों की उत्कृष्ट आयु 10,000 वर्ष होती है।

प्रश्न 28. त्रसकायिक जीवों की उत्कृष्ट आयु कितनी होती है?

उत्तर : त्रसकायिक जीवों की उत्कृष्ट आयु 33 सागर होती है।

प्रश्न 29. त्रस व स्थावर जीवों की जघन्य आयु कितनी होती है?

उत्तर : त्रस व स्थावर जीवों की जघन्य आयु अन्तर्मुहूर्त होती है।

प्रश्न 30. बादर कायिक जीव किसे कहते हैं?

उत्तर : जो किसी के आश्रित रहते हैं तथा किसी को रोके तथा रुके किसी का घात करें, किसी से घाते जाए वे सभी बादर जीव हैं इनके विपरीत सभी सूक्ष्म जीव हैं।

III. Investigation into Physical body

Q.1. What is called body?

Ans. The present physical condition of the soul due to rise of immobile name karma and inherent mobile name karma of caste is called body.

*According to Karmakaand text lingering faith is also found in incomplete single sensed and mutilate living beings, however, in complete condition there is only wrong-faith, as per rule.

*The material lump constituted by two or more atoms is called body.

*The material lump collected by the soul is called body.

Q.2. What is called investigation into body?

Ans. To explore living beings through the medium of body is called investigation into body.

Q.3. How many kinds are there of body?

Ans. There are two kinds of body-1. Immobile, 2. Mobile.

Q.4. What is called immobile body?

Ans. That which does not move, does not contain blood, bone and meat, and the specific condition of the living being due to rise of physique making karma of immobile being is called immobile body.

Q.5. What is called mobile body?

Ans. That which contain blood, bone and meat and the specific condition of the living being due to rise of physique making karma of mobile being is called mobile body.

Q.6. What are the kinds of immobile bodied living being?

Ans. There are five kinds of immobile bodied living beings-earth-bodied, water-bodied, fire-bodied, air-bodied, and flora-bodied.

Q.7. What is called six kinds of body forms of living beings?

Ans. Five immobile and one mobile body forms of living beings are called six kinds of body forms of living beings.

Q.8. How many kinds are of flora bodied living beings?

Ans. There are two kinds of flora bodied- 1. General plant souls, 2. Solitary plant souls.

Q.9. What is called solitary plant soul?

Ans. When the single soul is the master of single body, it is called solitary plant soul.

Q.10. What are the kinds of solitary plant souls?

Ans. Solitary plant souls are of two kinds- 1. Supporting individual body, 2. Un-supporting individual body.

Q.11. What is called supporting individual body?

Ans. The plant which is destroyed when its leaves, fruits and flowers are plucked and which have hair, in which stripes are not formed, and which are seedless, all such kinds of flora are called supporting individual body.

Q.12. What is called un-supporting individual body?

Ans. The plant which has no equality among its leaves, fruits, flowers and saplings, which are mature and in which stripes are formed, all such plants are called un-supporting individual body.

Q.13. What is called general plant soul?

Ans. That which has rise of general physique name karma. Multi souls are the masters of single plant (body). Those which have similar feeding, breathing, birth and death. These are called general plant soul. For example- potato etc. bulbs, roots and tubers.

Q.14. With which another name general plant soul is known?

Ans. It is also known by 'nigod' (lowest form of life).

Q.15. What are the kinds of 'nigod'?

Ans. There are two kinds of 'nigod'- 1. Baadar (Gross), 2. Sukshma(micro).

Q.16. What is called 'nitya nigod' (permanent lowest form of life)?

Ans. Those who have adopted nigod destiny since time immemorial. These have not transformed into mobile form till now, are called 'nitya nigod.

Q.17. What is Itar nigod (variable lowest from of life)?

Ans. Those who after leaving nigod and transmit to some other destiny and re-entered in nigod are called 'itar nigod'.

Q.18. What is the number of nitya nigod?

Ans. The number of 'nitya nigod' is non-perishable infinite.

Q.19. What are the kinds of 'nitya nigod'?

Ans. There are two kinds of nitya nigod- 1. Anadi anant(which has neither beginning, nor end/ eternal), 2. Anadi saant(beginning less but with end).

Q.20. What is called anadi anant nitya nigod(eternal lowest form of life)?

Ans. The living beings which have not left their lowest form and are not going to leave it in future are called eternal lowest form of life.

Q.21. What is called anadi anant saant nigod(beginning less eternal form of life)?

Ans. The living beings which have not left their lowest form but will leave it in future are called beginning less eternal form of life.

Q.22. What is the highest age of soft earth-bodied living beings?

Ans. The highest age of soft earth-bodied living beings is 12,000 years.

Q.23. What is the highest age of hard earth-bodied living beings?

Ans. The highest age of hard earth-bodied living beings is 22,000 years.

Q.24. What is the highest age of water-bodied living beings?

Ans. The highest age of water-bodied living beings is 7000 years.

Q.25. What is the highest age of air-bodied living beings?

Ans. The highest age of air-bodied living beings is 3000 years.

Q.26. What is the highest age of fire-bodied living beings?

Ans. The highest age of fire-bodied living beings is 3 days.

Q.27. What is the highest age of flora-bodied living beings?

Ans. The highest age of flora-bodied living beings is 10000 years.

Q.28. What is highest age of mobile bodied living beings?

Ans. The highest age of mobile bodied living beings is 33 Sagaras.

Q.29. What is the lowest age of mobile and immobile living beings?

Ans. Mobile and immobile beings both have antarmuhoort as their lowest age.

Q.30. What is called baadar (Gross) body?

Ans. Those who depend on someone and stop someone and kill someone and killed by someone, they are all baadar (Gross) creatures, unlike the mall are suksham (micro) organisms.

IV. योग मार्गणा

प्रश्न 1. योग किसे कहते हैं?

उत्तर : पुद्गल विपाकी शरीर नामकर्म के उदय से मन, वचन, काय से युक्त जीव की जो कर्मों के ग्रहण करने में कारणभूत शक्ति है, उसको योग कहते हैं।

प्रश्न 2. योग का अर्थ क्या है?

उत्तर : हलन-चलन अथवा परिस्पंदन को योग कहते हैं।

प्रश्न 3. योग कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर : योग दो प्रकार के होते हैं- (1) भाव योग (2) द्रव्य योग।

प्रश्न 4. भाव योग किसे कहते हैं?

उत्तर : कर्म व नो कर्म को ग्रहण करने की जीव की शक्ति विशेष को भाव योग कहते हैं।

प्रश्न 5. द्रव्य योग किसे कहते हैं?

उत्तर : मन-वचन-काय के द्वारा आत्मप्रदेशों में होने वाले हलन-चलन [परिस्पंदन, कम्पन] को द्रव्य योग कहते हैं।

प्रश्न 6. योग मार्गणा किसे कहते हैं?

उत्तर : योगों के द्वारा जीवों की खोज करना योग मार्गणा है।

प्रश्न 7. योग के भेद बताइए?

उत्तर :

मनोयोग (4)	वचनयोग (4)	काय योग (7)
सत्यमनोयोग (समीचीन पदार्थ को विषय करना)	सत्यवचनयोग (10 प्रकार के सत्य वचन)	औदारिक, औदारिक मिश्र काययोग
असत्यमनोयोग (मिथ्या, झूठा)	असत्यवचनयोग (सत्य के विपरीत वचन)	वैक्रियिक, वैक्रियिक मिश्र काययोग
उभयमनोयोग (सत्य भी, असत्य भी)	उभयवचनयोग (मिश्र)	आहारक, आहारक मिश्र
अनुभयमनोयोग (न सत्य,न असत्य)	अनुभयवचनयोग (न सत्य, न असत्य, अनक्षरी भाषा)	कार्माण काययोग

असंज्ञियों की अनक्षरात्मक भाषा, संज्ञियों की आमंत्रणी आदिभाषाऐं होती हैं।

प्रश्न 8. 10 प्रकार के सत्य कौनसे हैं? नाम बताइए।

उत्तर : जनपद सत्य, सम्मति सत्य, स्थापना सत्य, नाम सत्य, रूप सत्य, प्रतीत्य सत्य, व्यवहार सत्य, संभावना सत्य, भाव सत्य, उपमा सत्य ये दस प्रकार के सत्य हैं।

प्रश्न 9. अनुभयात्मक भाषाएँ कितनी व कौन-सी होती हैं?

उत्तर : अनुभयात्मक भाषाएँ 9 भाषाएँ होती है- आमन्त्रणी, आज्ञापनी, याचनी, अपृच्छनी, प्रज्ञापनी, प्रत्याख्यानी, संशयवचनी, इच्छानुलोभी तथा दो इन्द्रियादि असंज्ञी जीवों की अनक्षरी भाषाएँ अनुभयात्मक होती हैं।

प्रश्न 10. केवली भगवान के कितने योग हैं?

उत्तर : केवली भगवान के 7 योग होते है- सत्य वचन, अनुभय वचन, सत्य-अनुभय मनोयोग, औदारिक, औदारिक मिश्र, कार्मण काय योग।

प्रश्न 11. औदारिक काय योग किसे कहते हैं?

उत्तर : औदारिक वर्गणाओं के द्वारा रचित शरीर को औदारिक शरीर कहते हैं अथवा जो सप्त धातु से बना हो, जो किसी को रोके अथवा किसी के द्वारा रुके उसे औदारिक शरीर कहते हैं। इस औदारिक शरीर के द्वारा होने वाले परिस्पंदन को औदारिक काय योग कहते हैं।

प्रश्न 12. औदारिक मिश्र काय योग किसे कहते हैं?

उत्तर : औदारिक और कार्मण दोनों की मिश्र वर्गणाओं से उत्पन्न शरीर से जो आत्मप्रदेशों में परिस्पंदन होता है उसे औदारिक मिश्र काय योग कहते हैं।

प्रश्न 13. वैक्रियककाय योग किसे कहते हैं?

उत्तर : वैक्रियक शरीर वर्गणाओं के द्वारा रचित अनेक गुण व ऋद्धियों से युक्त देव व नारकीयों के शरीर को वैक्रियक शरीर व इससे होने वाले आत्मप्रदेशों के परिस्पंदन को वैक्रियक काय योग कहते हैं।

प्रश्न 14. वैक्रियक मिश्र काय योग किसे कहते हैं?

उत्तर : वैक्रियक और कार्माण दोनों की मिश्र वर्गणाओं से उत्पन्न शरीर से जो आत्मप्रदेशों में परिस्पंदन होता है उसे वैक्रियक मिश्र काय योग कहते हैं।

प्रश्न 15. आहारक काय योग किसे कहते हैं?

उत्तर : 6वें गुणस्थानवर्ती मुनिराज के मस्तक से निकलने वाला सप्त धातु से रहित, संहनन से रहित एक हाथ प्रमाण धवल वर्ण का पुतला निकलता है वह आहारक शरीर कहलाता है और उससे होने वाले आत्म प्रदेशों में परिस्पंदन को आहारक काय योग कहते हैं।

प्रश्न 16. आहारक मिश्र काय योग किसे कहते हैं?

उत्तर : औदारिक व आहारक दोनों की मिश्र वर्गणाओं से उत्पन्न शरीर से जो आत्मप्रदेशों में परिस्पंदन होता है उसे आहारक मिश्र काय योग कहते हैं।

प्रश्न 17. कार्माण काय योग किसे कहते हैं?

उत्तर : ज्ञानावरणादि 8 कर्मों के स्कंध को कार्माण शरीर कहते हैं, इसके द्वारा जो परिस्पंदन होता है उसे कार्माण काय योग कहते हैं।

प्रश्न 18. कौन-कौन से काय योग का कितना-कितना काल होता है?

उत्तर : औदारिक काय योग का काल - एकेन्द्रिय का शरीर पर्याप्ति पूरी होने से लेकर आयु पर्यंत शेष सभी जीवों का काल - अन्तर्मुहूर्त।

औदारिक मिश्र काय योग का काल - जन्म से शरीर पर्याप्ति पूरी होने तक का काल - अन्तर्मुहूर्त।

वैक्रियक काय योग का काल - जघन्य-एक समय, उत्कृष्ट-अन्तर्मुहूर्त।

वैक्रियक मिश्र काय योग का काल – अन्तर्मुहूर्त

आहारक काय योग का काल – जघन्य–एक समय, उत्कृष्ट–अन्तर्मुहूर्त।

आहारक मिश्र काय योग का काल – अन्तर्मुहूर्त

कार्माण काय योग का काल – विग्रह गति में – 1, 2 या 3 समय और केवली समुद्घात के समय यह योग रहता है।

प्रश्न 19. विक्रिया किसे कहते हैं?

उत्तर : स्वभाविक आकार के सिवाय विभिन्न आकार बनाना विक्रिया है।

प्रश्न 20. विक्रिया के कितने भेद हैं?

उत्तर : विक्रिया के दो भेद हैं– (1) पृथक् विक्रिया (2) अपृथक् विक्रिया।

प्रश्न 21. पृथक् विक्रिया किसे कहते हैं?

उत्तर : अपने शरीर से पृथक् अनेक शरीरादिक विक्रिया रूप करना पृथक् विक्रिया कहलाती है।

प्रश्न 22. अपृथक् विक्रिया किसे कहते हैं?

उत्तर : अपने शरीर को ही अनेक विकार रूप करना अपृथक् विक्रिया कहलाती है।

प्रश्न 23. वैक्रियक शरीर के धारी देव व नारकी जीव किस प्रकार की विक्रिया करते हैं?

उत्तर : वैक्रियक शरीर के धारी देव व नारकी जीव पृथक् व अपृथक् दोनों प्रकार की विक्रिया करते है।

प्रश्न 24. औदारिक शरीर के धारी कौन–कौन से जीव हैं जो विक्रिया करते हैं?

उत्तर : औदारिक शरीर के धारी बादर अग्नि व वायुकायिक, कर्मभूमिया

चक्रवर्ती व शेष मनुष्य व सैनी पर्याप्त तिर्यंच व भोगभूमिया मनुष्य व तिर्यंच जीव विक्रिया करते हैं।

प्रश्न 25. उपरोक्त जीवों में से कौन से जीव कौन–कौन सी विक्रिया करते हैं?

उत्तर : बादर अग्नि कायिक व वायु कायिक व चक्रवर्ती के सिवाय शेष मनुष्य व सैनी पर्याप्त तिर्यंच जीव = अपृथक् विक्रिया करते हैं। चक्रवर्ती और भोगभूमिया तिर्यंच व मनुष्य = पृथक् व अपृथक् दोनों प्रकार की विक्रिया करते हैं।

प्रश्न 26. एक समय में कितने योग हो सकते हैं?

उत्तर : एक समय में एक ही योग होता है।

प्रश्न 27. अयोगी किसे कहते हैं?

उत्तर : जिनके पुण्य और पाप के कारणभूत शुभाशुभ योग नहीं हैं और जो अनुपम और अनन्त बल से युक्त होते हैं उनको अयोगी कहते हैं।

प्रश्न 28. शरीर कितने होते हैं? नाम बताइए।

उत्तर : शरीर 5 होते है– 1. औदारिक, 2. वैक्रियक, 3. आहारक, 4. तैजस, 5. कार्माण

प्रश्न 29. पाँचों शरीर की उत्कृष्ट स्थिति बताइए।

उत्तर : औदारिक शरीर की – 3 पल्य, वैक्रियक शरीर की – 33 सागर, आहारक शरीर की – अन्तर्मुहूर्त, तैजस शरीर की – 66 सागर, कार्माण शरीर की – सामान्य से – 70 कोड़ा कोड़ी सागर उत्कृष्ट स्थिति होती है।

प्रश्न 30. आहारक काय योग वाले व आहारक मिश्र काय योग वाले जीव एक समय में अधिक से अधिक कितने हो सकते हैं?

उत्तर : आहारक काय योग वाले जीव– 54, आहारक मिश्र काय योग वाले – 27 जीव एक समय में अधिक से अधिक हो सकते हैं।

IV. Investigation into activity of the soul

Q.1. What is called Yoga (activity of the soul or activity of mind, speech and body)?

Ans. The power responsible for accumulation of karmas through activity of mind, speech and body of the living beings owing to the rise of physique making karma of mattery maturing.

Q.2. What is the meaning of yoga?

Ans. Activity or vibration is called yoga.

Q.3. What are the kinds of yoga?

Ans. Yoga are of two kinds- 1. Bhhav yog (psychical vibration), 2. Dravya yog (vibrations due to physical activity of the soul).

Q.4. What is called psychical vibrations?

Ans. With the vibratory activity of the soul's space point there is a specialcharacteristic happens in the soul by which he is able to attract karma and quasikarma. This special characteristic is known as psychical vibrations.

Q.5. What is called dravya yog(vibrations due to physical activity of the soul)?

Ans. Vibration in soul's space points owing to the physical activities is called dravya yog.

Q.6. What is called investigation into activity of the soul?

Ans. Exploration of living beings through vibrational activities is called investigation into activity of the soul.

Q.7. Tell the kinds of vibrational activities of the soul?

Kinds of vibrational activities of the soul

Mind Vibration(4) Speech Vibration(4) Body Vibration(7)

Satyaman(Vibration in soul points for having right knowledge/faith Satyavachan(10 kinds of true speech) Audarik(Vibration of the soul due to gross body)Audarik

misra(Vibration in body due to karmic aid during completion of body)

Asatyaman(falsehood, wrong doing) Asatyavachan (speech just opposite to true speech) Vaikriyik (Vibration in the soul points of transformable body of deities and hellish beings)Vaikriyik mixed(A kind of karmic bondage for fluid body)

Ubhayaman(both true and false) Ubhayvachan (mixed) Aharak(Vibration in soul points while translocation of assimilative body)Aharak misra(Vibration in the soul's space points during completion of assimilative body)

Unubhayaman(neither true nor false) Unubhayavachan(neither true nor false, mute dialogue of gesture)
Aharak(Vibration in soul points while translocation of assimilative body)Aharak misra(Vibration in the soul's space points during completion of assimilative body)

Kaarmaan(Karmic bodily activities)

Mindless beings have mute dialogue of gesture, conscious beings have inviting etc. language.

Q.8. What are ten kinds of truths? Tell their names.

Ans. Regional truth, consensual truth, truth of installation of Lord Arihant in artificial idols, physique making truth, description by general outline(look), truth related to conviction, empirical truth, truth pertaining to probability, psychical truth (true statement), truth with comparison- these are ten kinds of truth.Mixture

Q.9. How many mute languages with gesture are there? Which are these?

Ans. There are 9 mute languages with gesture- inviting, instructional, requesting, oblivious, injuncting, informatory, language of determination, suspicious, desire expressing, and two gestural languages of irrational beings like Indras.

Q.10. How many vibrations are there of omniscient lord?

Ans. There are 7 vibrations of omniscient lord- true speech, mute speech of gesture, true gestural mental vibrations, gross body soul vibrations, karmic vibration due to body completion, karmic bodily activities.

Q.11. What is audarik kaay yog (vibration of the soul due to gross body)?

Ans. The body which is constituted by gross matter particles is called audarik sharir (physical body) or which is constituted by seven virile, prevents something or is prevented by something is called physical body. The vibration of the soul due to this body is called audarik kaay yog.

Q.12. What is audarik misra kaay yog?

Ans. Vibration in body due to karmic aid during completion of body is called audarik misra kaay yog.

Q.13. What is vaikriyak kaay yog?

Ans. Vibration in the soul points of transformable body of deities and hellish beings is called vaikriyak kaay yog.

Q.14. What is vaikriyik misra kaay yog?

Ans. Vibrationin the body formed by the mixed particles of both Karmic and fluid bodies is called vaikrik misra kaay yog.

Q.15. What is Aharak misra kaay yog?

Ans. Vibration in the soul's space points during completion of assimilative body is called Aharak misra kaay yog.

Q.16. What is Aahaarak kaay yog?

Ans. Vibration in soul points while translocation of assimilative body is called Aahaarak kaay yog. The body of one hand length, pure white in complexion, free of seven virile and free of skeleton structure emitting from the mind of the saint staged in the 6th stage of spiritual development is called assimilative body and the vibration in soul points of that body is called Aahaarak kaay yog.

Q.17. What is Karmaan Kaay Yog?

Ans. Karmic aggregate of knowledge obscuring etc. 8 karmas is called Karmic body. The vibrations produced by this body is called Karmaan kaay yog(Karmic bodily activities).

Q.18. What are the durations of various bodily vibrarions?

Ans. The duration of Audarik kaay yog(vibration of the soul due to gross body)- from completetion of the body to the end of single sensed being and others - Antarmuhoort,

Duration of Audarik misra kaay yog(vibration in the body due to karmic aid during completion of gross body- from birth to completion of the body- Antarmuhoort,

Duration of Vaikriyik kaay yog(Vibrations in the soul points of transformable body of celestial and hellish beings)- lowest- single time unit, highest- Antarmuhoort,

Duration of Vaikrik misra kaay yog(Karmic bondage for fluid body)- Antarmuhoort,

Duration of Aaharak kaay yog(Vibrations in soul points while translocation of trans locational body)- lowest- single unit time, highest- Antarmuhoort,

Duration of Aaharak misra kaay yog(Vibration in soul points during the completion of translocational body)- Antarmuhoort,

Duration of Kaarmaan Kaay yog(Karmic bodily activities)- In transmigratory motion of the soul- 1,2 or 3 time and this vibration remains at the time of omniscient overflow in different stages of spiritual development.

Q.19. What is called vikriya(transformation)?

Ans. Forming various sizes leaving natural size is called transformation.

Q.20. How many kinds are of transformation?

Ans. Transformation is of two kinds- 1. Prathak (Separate), 2. Aprathak(inclusive).

Q.21. What is separated transformation?

Ans. Various transformations into different bodies etc. except for own body are called separated transformations.

Q.22. What is called inclusive transformation?

Ans. Transforming own body into various forms is called inclusive transformation.

Q.23. What kind of transformation is done by the celestial and hellish beings holding transformational bodies?

Ans. The celestial and hellish beings holding transformational bodies do both kinds of transformation- separate as well as inclusive.

Q.24. Which beings are the holder of physical bodies and do transformation?

Ans. Gross fire bodied and air bodied, universal monarch of land of action and remaining human beings having physical bodies and conscious complete sub-humans and humans and subhumans of land of enjoyment do transformation.

Q.25. What kind of transformation is done by above kinds of beings?

Ans. Leaving gross fire bodied and air bodied and monarch remaining human beings and conscious complete subhuman beings do inclusive transformation. Monarch and human and subhuman beings of land of enjoyment do both kinds of transformations- separate as well as inclusive.

Q.26. How many vibrations can take place at a time?

Ans. Only one vibration can take place at a time.

Q.27. What is called ayogi(non-vibratory)?

Ans. Those for whom auspicious inauspicious vibrations are not responsible for their virtues and sins and who have incomparable and infinite powers are called non-vibratory.

Q.28. How many kinds are bodies? Tell their names?

Ans. There are five kinds of bodies- 1. Physical, 2. Transformational, 3. Assimilative, 4. Electric, 5. Karmic.

Q.29. What is the highest position of all these five bodies?

Ans. The highest position of Physical(gross) body- 3 Palya, Transformational body- 33 Sagar, Assimilative body- Antarmuhoort, Electric body- 66 Sagar, Karmic body- normal to 70 Koda Kodi Sagar.

Q.30. How many maximum beings of Assimilative vibratory bodies and Assimilative mixed vibratory bodies can exist at a time?

Ans. Assimilative vibratory body beings – 54, and assimilative mixed vibratory bodies- 27 at the most can exist at a time.

V. वेद मार्गणा

प्रश्न 1. वेद किसे कहते हैं?

उत्तर : वेद कर्म के उदय से होने वाले भावों को वेद कहते हैं।

प्रश्न 2. वेद कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर : वेद दो प्रकार के होते हैं- (1) द्रव्य वेद (2) भाव वेद।

प्रश्न 3. द्रव्य वेद किसे कहते हैं?

उत्तर : निर्माण व आगोपांग नामकर्म के उदय से जो शरीर की रचना होती है उसे द्रव्य वेद कहते हैं अथवा लिंग से पहचान करना भी द्रव्य वेद है।

प्रश्न 4. भाव वेद किसे कहते हैं?

उत्तर : चारित्र मोहनीय कर्म के वेद नो कषाय के उदय व उदीरणा से उत्पन्न अभिलाषा अथवा परिणाम को भाव वेद कहते हैं। अर्थात् अन्तरंग भावों से पहचान करना भाव वेद हैं।

प्रश्न 5. वेद मार्गणा किसे कहते हैं?

उत्तर : वेदों के द्वारा जीवों की खोज करना, वेद मार्गणा है।

प्रश्न 6. भाव वेद किसकी पर्याय है?

उत्तर : भाव वेद जीव की पर्याय है।

प्रश्न 7. द्रव्य वेद किसकी पर्याय है?

उत्तर : द्रव्य वेद पुद्गल की पर्याय है।

प्रश्न 8. भाव वेद कितने गुणस्थान तक होता है?

उत्तर : तीनों वेद नवें गुणस्थान तक होते हैं।

प्रश्न 9. द्रव्य वेद कितने गुणस्थान तक होते हैं?

उत्तर : द्रव्य वेद में पुरुषवेद - चौदहवें गुणस्थान तक तथा स्त्री वेद व नपुंसक वेद 5वें गुणस्थान तक होता है।

प्रश्न 10. वेद के कितने भेद हैं?

उत्तर : वेद के तीन भेद हैं- (1) पुरुष वेद (2) स्त्री वेद (3) नपुंसक वेद।

प्रश्न 11. पुरुष वेद किसे कहते हैं?

उत्तर : जिस वेद कर्म के उदय से स्त्री के साथ रमण करने की इच्छा हो वह पुरुष वेद है।

प्रश्न 12. स्त्री वेद किसे कहते हैं?

उत्तर : जिस वेद कर्म के उदय से पुरुष के साथ रमण करने की इच्छा हो वह स्त्री वेद है।

प्रश्न 13. नपुंसक वेद किसे कहते हैं?

उत्तर : जिस वेद कर्म के उदय से स्त्री व पुरुष दोनों के साथ रमण करने की इच्छा हो वह नपुंसक वेद है।

प्रश्न 14. किन जीवों के कौन सा वेद होता है?

उत्तर : नारकियों के नपुंसक वेद, देवों के पुरुष व स्त्री वेद, मनुष्यों के तीनों वेद, तिर्यंचों के तीनों वेद। सम्मूर्च्छनों के नपुंसक वेद होता है।

प्रश्न 15. अपगत वेद किसे कहते हैं?

उत्तर : पुरुष, स्त्री, नपुंसक वेद के परिणामों से रहित जीवों को अपगत वेद कहते हैं। अपगत वेदी जीव अपनी आत्मा से ही उत्पन्न होने वाले अनन्त व सर्वोत्कृष्ट सुख को भोगते हैं। जो कि 9वें गुणस्थान के अपगत वेद भाग से गुणस्थानातीत सिद्ध तक रहता है।

प्रश्न 16. तीनों वेदों की संख्या कितनी-कितनी है?

उत्तर : पुरुष वेदी - असंख्यात [स्त्री वेदी से कम और देवों से कुछ अधिक] स्त्री वेदी = असंख्यात (देवियों से कुछ अधिक) नपुंसक वेदी-अनन्त होते हैं।

प्रश्न 17. सबसे कम जीव किस वेद व सबसे ज्यादा जीव किस वेद में होते हैं?

उत्तर : सबसे कम जीव - पुरुष वेद में और सबसे ज्यादा जीव नपुंसक वेद में होते हैं।

प्रश्न 18. पुरुष वेदी का जघन्य व उत्कृष्ट काल कितना है?

उत्तर : पुरुष वेदी का जघन्य-अन्तर्मुहूर्त, उत्कृष्ट-शत पृथक्त्व [700-800 सागर] काल होता है।

प्रश्न 19. स्त्री वेदी का जघन्य व उत्कृष्ट काल कितना है?

उत्तर : स्त्री वेदी का जघन्य-अन्तर्मुहूर्त, उत्कृष्ट-पल्योपम शत पृथक्त्व [700-800 पल्य] काल होता है।

प्रश्न 20. नपुंसक वेदी का जघन्य व उत्कृष्ट काल कितना है?

उत्तर : नपुंसक वेदी का जघन्य-क्षुद्रभव, उत्कृष्ट-अनन्तकाल होता है।

प्रश्न 21. पुरुष वेदी व स्त्री वेदी का जघन्य व उत्कृष्ट अन्तर कितना है?

उत्तर : पुरुष व स्त्री वेदी का जघन्य - क्षुद्रभव, उत्कृष्ट-असंख्यात पुद्गल परावर्तन स्वरूप (अनन्तकाल) अन्तर होता है।

प्रश्न 22. नपुंसक वेदी का जघन्य व उत्कृष्ट अन्तर कितना है?

उत्तर : नपुंसक वेदी का जघन्य-अन्तर्मुहूर्त, उत्कृष्ट-शत पृथक्त्व सागर [700-800 सागर] अन्तर होता है।

V. Investigation into Gender

Q.1. What is called gender(ved)?

Ans. The dispositions arising due to rise of gender karma are called ved or gender or sex.

Q.2. How many kinds are of genders?

Ans. Genders are of two kinds- 1. Dravya ved(physical gender), 2. Bhaava ved(dispositional gender).

Q.3. What is called physical gender?

Ans. The constitution of body due to rise of physique making karmas of limbs and sub-limbs and formation is called physical gender or identifying by gender is also physical gender.

Q.4. What is called dispositional gender?

Ans. The desire and effect produced due to rise of gender of conduct deluding karma and premature fruition are called dispositional gender. Or identifying through internal dispositions is also dispositional gender.

Q.5. What is called investigation into gender?

Ans. To explore living beings by their genders is called investigation into genders.

Q.6. Of whom is dispositional form of gender?

Ans. Dispositional gender is the form of living being.

Q.7. Whose modification is physical gender?

Ans. Physical gender is the modification of non-living matter.

Q.8. Up to which stage of spiritual development dispositional gender occurs?

Ans. All the three genders occur up to the ninth stage of spiritual development.

Q.9. Up to which stage of spiritual development physical gender occurs?

Ans. Masculine gender in Physical gender occurs up to fourteenth stage of spiritual development and feminine and neuter genders of physical gender occur up to fifth stage of spiritual development.

Q.10. How many kinds are of gender?

Ans. There are three kinds of gender- 1. Masculine gender(male gender), 2. Feminine gender(female gender), 3. Neuter gender.

Q.11. What is called masculine gender?

Ans. With the rise of which gender name karma, there occurs the desire to enjoy females, is known as masculine gender.

Q.12. What is called feminine gender?

Ans. With the rise of which gender name karma, there occurs the desire to enjoy males, is known as feminine gender.

Q.13. What is called neuter gender?

Ans. With the rise of which gender name karma, there occurs the desire to enjoy both males and females, is called neuter gender.

Q.14. Which living beings have which gender?

Ans. Hellish beings have neuter gender, celestial beings have both masculine and feminine genders, human beings have all the three genders, sub-human beings also have all the three genders. Spontaneous generations have neuter gender.

Q.15. What is called apagat ved(subdued gender)?

Ans. Beings without modifications of masculine, feminine and neuter genders are called beings of subdued gender. Subdued kind of beings enjoy infinite and excellent pleasures appearing out of their own souls. These exist from the part of ninth stage of spiritual development related to subdued gender to no stage which is found in all living beings even in liberated souls.

Q.16. What is the total number of all the three genders?

Ans. Masculine gender- innumerable (less than feminine and more than celestial), feminine- innumerable(more than goddesses), neuter- infinite.

Q.17. Which gender has the lowest number of beings and which gender has the highest number of beings?

Ans. Masculine has the lowest number of beings while neuter has the highest number of beings.

Q.18. What is the lowest and the highest duration of masculine gender beings?

Ans. The lowest duration of masculine gender is Antarmuhoort, and the highest is shat prathakatva(700-800 Sagar).

Q.19. What is the lowest and the highest duration of feminine gender beings?

Ans. The lowest duration of the feminine gender beings is Antarmuhoort and the highest is Palyopam shat prithakatva(700-800 Palya).

Q.20. What is the lowest and the highest duration of neuter gender beings?

Ans. The lowest duration of the neuter gender beings is kshudra bhav and the highest is infinite duration.

Q.21. What is the difference between the highest and the lowest duration of masculine and feminine genders?

Ans. The lowest of both the male and female is kshudra bhav, and the highest of both is innumerable matter transformational form(infinite duration).

Q.22. What is the difference between the highest and the lowest duration of neuter gender?

Ans. The highest is shat prathaktva Sagar(700-800 Sagar) and the lowest is Antermuhoort difference.

VI. कषाय मार्गणा

प्रश्न 1. कषाय किसे कहते हैं?

उत्तर : जो आत्मा को कसे अर्थात् दु:ख दे उसे कषाय कहते हैं।

प्रश्न 2. कषाय मार्गणा किसे कहते हैं?

उत्तर : कषाय के माध्यम से जीवों की खोज करना कषाय मार्गणा है।

प्रश्न 3. कषाय की परिभाषा को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए?

उत्तर : जीव के सुख-दुख रूप अनेक प्रकार के धान्य को उत्पन्न करने वाले तथा जिसकी संसार रूप मर्यादा अत्यन्त दूर है, ऐसे कर्मरूपी क्षेत्र (खेत) का यह कर्षण करता है इसलिए इसको कषाय कहते हैं।

प्रश्न 4. कषाय के कितने भेद होते हैं?

उत्तर : सामान्य से कषाय के भेद 1, विशेष से - 4 भेद, क्रोधादि चौकड़ी की अपेक्षा से 16 भेद, चौकड़ी व नो कषाय सहित भेद 25, उदय स्थान की अपेक्षा से असंख्यात लोक प्रमाण भेद होते हैं।

प्रश्न 5. कषाय के चार भेद बताइए?

उत्तर : (1) क्रोध (2) मान (3) माया (4) लोभ।

प्रश्न 6. कषाय के 16 भेद बताइए?

उत्तर : अनन्तानुबन्धी - क्रोध, मान, माया, लोभ। अप्रत्याख्यानावरण - क्रोध, मान, माया, लोभ।
प्रत्याख्यानावरण - क्रोध, मान, माया, लोभ। संज्वलन - क्रोध, मान, माया, लोभ।

प्रश्न 7. नो कषाय कौन सी होती हैं?

उत्तर : हास्य, रति, अरति, शोक, भय जुगुप्सा, स्त्री वेद, पुरुष वेद, नपुंसक वेद ये नो कषायें होती हैं।

प्रश्न 8. कषाय के 25 भेद बताइए?

उत्तर : क्रोधादि चौकड़ी की अपेक्षा से 16 भेद + 9 नो कषाय = 25 भेद।

प्रश्न 9. अनन्तानुबन्धी कषाय किसे कहते हैं?

उत्तर : जो सम्यक्त्वाचरण चारित्र का अर्थात् तत्त्वार्थ श्रद्धान रूप सम्यक्त्व का घात करती है तथा जो अनन्त संसार का बन्ध कराये उसे अनन्तानुबन्धी कषाय कहते हैं।

प्रश्न 10. अनन्तानुबन्धी कषाय कौन से गुणस्थान तक रहती है?

उत्तर : अनन्तानुबन्धी कषाय पहले व दूसरे गुणस्थान में रहती है।

प्रश्न 11. अनन्तानुबन्धी कषाय का काल कितना है?

उत्तर : मिथ्यात्व के साथ अनन्त काल व मिथ्यात्व के बिना उत्कृष्ट काल 6 आवली और जघन्य काल 1 समय होता है।

प्रश्न 12. अनन्तानुबन्धी कषाय का वासना काल बताइए?

उत्तर : जो कषाय 6 महीने से आगे निकल जाए, उसे अनन्तानुबन्धी कषाय कहते हैं। जैसे किसी व्यक्ति की किसी दूसरे व्यक्ति से लड़ाई हो गई बाद में बिना क्षमा माँगे किसी अन्य कार्य में व्यस्त हो गया और भूल गया, बाद में पुन: वह व्यक्ति सामने आ गया तो उसकी कषाय जागृत हो गयी तो वह जिस समय लड़ाई हुई थी उसी समय से उसकी वासना बनी हुई कहलायेगी।

प्रश्न 13. अप्रत्याख्यानावरण कषाय किसे कहते हैं?

उत्तर : जो कषाय देशचारित्र का घात करे अर्थात् किंचित् मात्र त्याग न होने दे उसे अप्रत्याख्यानावरण कषाय कहते हैं।

प्रश्न 14. अप्रत्याख्यानावरण कषाय कितने गुणस्थान तक होती है?

उत्तर : यह कषाय 1 से 4 गुणस्थान तक रहती है।

प्रश्न 15. अप्रत्याख्यानावरण कषाय का वासना काल बताइए?

उत्तर : जो कषाय 6 महीने के भीतर-भीतर रहती है वह अप्रत्याख्यानावरण कषाय है।

प्रश्न 16. प्रत्याख्यानावरण कषाय किसे कहते हैं?

उत्तर : जो कषाय सकल चारित्र का घात करे अर्थात् पूर्ण त्याग न होने दे उसे प्रत्याख्यानावरण कषाय कहते हैं।

प्रश्न 17. प्रत्याख्यानावरण कषाय कितने गुणस्थान तक होती है?

उत्तर : यह कषाय 1 से 5 गुणस्थान तक होती है।

प्रश्न 18. प्रत्याख्यानावरण कषाय का वासना काल बताइए?

उत्तर : जो कषाय 15 दिन में समाप्त हो जाये वह प्रत्याख्यानावरण कषाय है।

प्रश्न 19. संज्वलन कषाय किसे कहते हैं?

उत्तर : जो कषाय यथाख्यात चारित्र का घात करे अर्थात् जो संयम के साथ भी प्रज्वलित रहे उसे संज्वलन कषाय कहते हैं।

प्रश्न 20. संज्वलन कषाय कितने गुणस्थान तक रहती है?

उत्तर : यह कषाय 1-10 गुणस्थान तक रहती है।

प्रश्न 21. संज्वलन कषाय का वासना का काल बताइए?

उत्तर : जो कषाय अन्तर्मुहूर्त में खत्म हो जाये वह संज्वलन कषाय है।

प्रश्न 22. अकषायी किसे कहते हैं?

उत्तर : जो स्वयं को, दूसरे को तथा दोनों को ही बाधा देने और बन्धन करने तथा असंयम पैदा करने में निमित्तभूत क्रोधादि कषाय से रहित हैं उन्हें अकषायी कहते हैं।

प्रश्न 23. अकषायी जीव कौन से हैं?

उत्तर : 11वें गुणस्थान से सिद्ध भगवान तक के सभी जीव कषाय मल रहित अकषायी होते हैं।

प्रश्न 24. कौन-कौन सी गति में कितनी-कितनी कषायें हो सकती हैं?

उत्तर : मनुष्य गति व तिर्यंच गति में सभी 25 कषायें, देव गति में

नपुसंक वेद बिना 24 कषायें, नरक गति में पुरुष व स्त्री वेद बिना 23 कषायें हो सकती हैं।

प्रश्न 25. कौन-कौन सी इन्द्रिय जीवों में कौन-कौन सी कषायें हो सकती हैं?

उत्तर : एकेन्द्रिय से असंज्ञी पंचेन्द्रिय तक के सभी जीवों में पुरुष व स्त्री वेद बिना 23 कषायें व संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों में सभी 25 कषायें पायी जाती हैं।

प्रश्न 26. त्रस व स्थावर काय जीवों में कितनी-कितनी कषायें पायी जाती हैं?

उत्तर : त्रस काय जीवों में सभी 25 कषायें, स्थावर काय जीवों में पुरुष व स्त्री वेद बिना 23 कषायें पायी जाती हैं।

प्रश्न 27. कौन-कौन से ज्ञान में कितनी-कितनी कषायें पायी जाती हैं?

उत्तर : तीनों अज्ञान में 25 व मति, श्रुत अवधि ज्ञान में 21 कषायें व मन:पर्यय ज्ञान में अनन्तानुबन्धी व अप्रत्याख्यानावरण प्रत्याख्यानावरण चतुष्क के बिना 13 कषायें व केवलज्ञानी जीव कषाय रहित होते हैं।

प्रश्न 28. कौन सी कषायों में कितने-कितने जीव होते हैं?

उत्तर : अनन्तानुबन्धी कषाय में - अनन्त जीव, अप्रत्याख्यानावरण व प्रत्याख्यानावरण कषाय में असंख्यात जीव, संज्वलन कषाय में संख्यात जीव होते हैं। अकषायी में - अनन्त जीव होते हैं।

प्रश्न 29. सभी कषायों का जघन्य व उत्कृष्ट काल कितना है?

उत्तर : सभी कषायों का जघन्य काल-एक समय, उत्कृष्ट काल-अन्तर्मुहूर्त है।

VI. Investigation into Passion

Q.1. What is called passion?

Ans. That which causes pain to soul is called passion.

Q.2. What is called investigation into passion?

Ans. To explore living beings by medium of passions is investigation into passion.

Q.3. Explain the definition of passion giving examples?

Ans. That which ploughs the field of karmas and creates number of causes like pains and pleasures in the lives of living beings and of which worldly limit is far away, is called passion.

Q.4. What are the kinds of passions?

Ans. From general point of view, there is only 1. Specifically – 4 kinds, in respect of anger etc. 16 kinds, chaukadi and quasi-passion 25 kinds, in respect to appearing space innumerable kinds.

Q.5. Tell the four kinds of passions?

Ans. 1. Anger, 2. Ego, 3. Illusion, 4. Greed.

Q.6. Tell 16 kinds of passions?

Ans. Passions which lead to infinite births- anger, ego, illusion and greed. Obscuration of partial renunciation- anger, ego, illusion and greed.Intense type of passion which hinders complete abstinence, complete conduct etc.- anger, ego, illusion and greed. Gleaming passion- anger, ego, illusion and greed.

Q.7. Which are quasi-passions?

Ans. Laughter, sensual pleasure, displeasure, sorrow, fear, aversion, feminine gender, masculine gender and neuter gender- these nine are quasi-passions.

Q.8. Tell 25 kinds of passions?

Ans. 16 kinds in respect of anger etc. chaukadi+ 9 quasi passions= 25 kinds.

Q.9. What is called Anantaanubandhi kashaay (passions which lead to infinite births)?

Ans. That which destroys right conduct or faith in fundamental principles and which forms bond with this infinite universe is called passion which leads to infinite births.

Q.10. Up to which stage of spiritual development does anantaanubandhi kashaay exist?

Ans. Anantaanubandhi kashay(passions which lead to infinite births) exists in the 1st stage and 2nd stage of spiritual development.

Q.11. What is the duration of anantaanubandhi kashaay(passions which lead to infinite births)?

Ans. With wrong belief it is for infinite duration, and if it is free of wrong belief then its highest duration is 6 Avali and the lowest is 1 unit of time.

Q.12. What is the period of thoughts full of passions of Anantaanubandhi kashaay(passions which lead to infinite births)?

Ans. The passion that continues for more than six months is called passion which lead to infinite births.

Q.13. What is called Apratyakhyanavaran kashaay(passion obscuring partial vows)?

Ans. The passion which destroys conduct of householder, in other words which prevents even a very small sacrifice, is called apratyakhyanavaran kashaay(passion obscuring partial vows).

Q.14. Up to which stage of spiritual development does apratyakhyanavaran kashay exist?

Ans. Apratyakhyanavaran kashaay(passion obscuring partial vows) exists from the 1st stage of spiritual development to 4th stage of spiritual development.

Q.15. Tell the period of passionful thoughts of apratyakhyanavaran kashaay(passion obscuring partial vows)?

Ans. The passion which remains up to six months is the passion which obscures partial vows.

Q.16. What is called pratyakhyanavaran kashaay(passions which obscure right conduct)?

Ans. The passion which destroys conduct devoid of all attachments and possessions or prevents complete sacrifice, is called pratyakhyanavaran kashaay.

Q.17. Up to which stage of spiritual development does pratyakhyanavaran kashaay exist?

Ans. This passion exists from 1st stage of spiritual development to 5th stage of spiritual development.

Q.18. Tell the period of thoughts with full of passions of pratyakhyanavaran kashaay?

Ans. The passion which gets finished withing 15 days is pratyakhyanavaran kashaay(passions which obscure right conduct).

Q.19. What is Sanjvalan kashaay(a passion which disturbs perfect conduct)?

Ans. The passion which destroys passionless perfect conduct or which remains alive along with restraint is called sanjvalan kashaay(a passion which disturbs perfect conduct).

Q.20. Up to which stage of spiritual development does sanjvalan kashaay exist?

Ans. This passion exists from 1st stage of spiritual development to 10th stage of spiritual development.

Q.21. Tell the period of thoughts full of passions of sanjvalan kashaay(a passion which disturbs perfect conduct)?

Ans. The passion which gets finished within Antarmuhoort is sanjvalan kashaay.

Q.22. What is called passion free soul?

Ans. Those who do not become tool to the self and for others in forming bonds and creating non-restraint like anger etc., are called passion free souls.

Q.23. Which are passion free living beings?

Ans. All the living beings belonging to 11th stage of spiritual development to liberated souls are passion free living beings.

Q.24. How many passions are there in various states of beings?

Ans. In human and sub-human destinies all 25 passions, in celestial destiny free of neuter gender 24 passions, and in hellish conditions free of male and female genders 23 passions.

Q.25. Which passions can exist in various sensed living beings?

Ans. From one sensed to non-conscious five sensed living beings without male and female genders 23 passions, and in conscious five sensed living beings all 25 passions can be found.

Q.26. How many passions are found in mobile and immobile beings?

Ans. In mobile beings all 25 kinds of passions, and in immobile living beings without male and female genders 23 passions are found.

Q.27. How many passions are found in various kinds of knowledge?

Ans. In all three kinds of ignorance- 25 passions, in scriptural clairvoyance knowledge-21 passions and in telepathy without life long lasting, obscuration of partial renunciation, obscuring complete abstinence and complete conduct- 13 passions and omniscient are free from all kinds of passions.

Q.28. How many living beings are there in various passions?

Ans. In life long lasting passion- infinite living beings, in both partial renunciation obscuring and complete abstinence and complete conduct obscuring- innumerable living beings, and gleaming passion-numerable living beings. In passion free infinite beings.

Q.29. What is the lowest and the highest duration of all passions?

Ans. The lowest duration of all the passions is single unit time, and the highest duration is Antarmuhoort.

VII. ज्ञान मार्गणा

प्रश्न 1. ज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर : जो जानता है अथवा जिसके द्वारा जाना जाये वह ज्ञान है।

प्रश्न 2. ज्ञान मार्गणा किसे कहते हैं?

उत्तर : ज्ञान के द्वारा जीवों की खोज करना ज्ञान मार्गणा है।

प्रश्न 3. ज्ञान के कितने भेद हैं? नाम बताइए।

उत्तर : ज्ञान के दो भेद हैं - (1) परोक्ष ज्ञान (2) प्रत्यक्ष ज्ञान।

प्रश्न 4. परोक्ष ज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर : जो इन्द्रिय और मन की सहायता द्वारा पदार्थों को अस्पष्ट जाने उसे परोक्ष ज्ञान कहते हैं।

प्रश्न 5. परोक्ष ज्ञान कौन-कौन से हैं?

उत्तर : मति ज्ञान व श्रुत ज्ञान परोक्ष ज्ञान हैं।

प्रश्न 6. प्रत्यक्ष ज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर : जो मन और इन्द्रिय की सहायता के बिना केवल आत्मा के द्वारा पदार्थों को स्पष्ट जानें उसे प्रत्यक्ष ज्ञान कहते हैं।

प्रश्न 7. प्रत्यक्ष ज्ञान कौन-कौन से हैं?

उत्तर : अवधि ज्ञान, मन:पर्यय ज्ञान, केवलज्ञान प्रत्यक्ष ज्ञान हैं।

प्रश्न 8. एक जीव के कम से कम व अधिक से अधिक कितने ज्ञान हो सकते हैं?

उत्तर : एक जीव के कम से कम - एक ज्ञान [केवलज्ञान], अधिक से अधिक - 4 ज्ञान [मति, श्रुत, अवधि, मन:पर्यय ज्ञान] हो सकते हैं।

प्रश्न 9. अपर्याप्त अवस्था में कितने व कौन-से ज्ञान हो सकते हैं?

उत्तर : कुअवधि व मन:पर्यय ज्ञान अपर्याप्त अवस्था में नहीं होता, शेष चार ज्ञान व दो अज्ञान हो सकते हैं और पर्याप्त अवस्था में पाँच ज्ञान व तीन अज्ञान हो सकते हैं।

प्रश्न 10. ज्ञानावरणी कर्म के क्षयोपशम से कौन-कौन से ज्ञान होते हैं?

उत्तर : ज्ञानवरणी कर्म के क्षयोपशम से मति, श्रुत, अवधि, मन:पर्यय ज्ञान होते हैं।

प्रश्न 11. ज्ञानवरणी कर्म के क्षय से कौन-सा ज्ञान होता है?

उत्तर : ज्ञानवरणी कर्म के क्षय से केवलज्ञान होता है।

प्रश्न 12. कुमति ज्ञान या मत्याज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर : मिथ्यात्व सहित ज्ञान को, झूठे ज्ञान को कुमतिज्ञान या मत्याज्ञान कहते हैं।

प्रश्न 13. कुश्रुत ज्ञान या श्रुताज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर : कुमति के साथ होने वाले ज्ञान को, कुश्रुतज्ञान या श्रुताज्ञान कहते हैं।

प्रश्न 14. कुअवधि ज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर : कुमति व कुश्रुत के साथ होने वाले अवधि ज्ञान को कुअवधि ज्ञान कहते हैं।

प्रश्न 15. कुअवधि ज्ञान का दूसरा नाम क्या है?

उत्तर : कुअवधि ज्ञान का दूसरा नाम विभंगावधि ज्ञान है।

प्रश्न 16. कुअवधि ज्ञान किन-किन अंगों से तथा अवधिज्ञान किन-किन अंगो से होता है?

उत्तर : कुअवधिज्ञान नाभि के नीचे के अशुभ चिह्नों से होता है। जैसे - मेंढक, कच्छप आदि किंतु नाभि से ऊपर के अंगों से अथवा सर्वांग से अवधिज्ञान होता है।

प्रश्न 17. कौन-कौन सा ज्ञान किन-किन गुणस्थानों में पाया जाता है?

उत्तर : मति, श्रुत, व अवधि ज्ञान - 4 से 12 गुणस्थान में।

मन:पर्यय ज्ञान - 6 से 12 गुणस्थान में।

केवलज्ञान - 13वें व 14वें गुणस्थान में।

कुमति व कुश्रुतज्ञान - पहले व दूसरे गुणस्थान में।

कुअवधिज्ञान - पहले व दूसरे गुणस्थान में।

प्रश्न 18. कौन-कौन सी गति में कौन-कौन से ज्ञान हो सकते हैं?

उत्तर : मनुष्य गति में पाँच ज्ञान व तीन अज्ञान, तिर्यंच, नरक, देव गति में - मन:पर्यय व केवलज्ञान बिना तीन ज्ञान व तीन अज्ञान हो सकते हैं।

प्रश्न 19. कौन सी इन्द्रिय में कौन सा ज्ञान हो सकता है?

उत्तर : एकेन्द्रिय से असंज्ञी पंचेन्द्रिय तक = कुमति व कुश्रुत अज्ञान।
सभी संज्ञी पंचेन्द्रियों में = पाँच ज्ञान व तीन अज्ञान।

प्रश्न 20. मतिज्ञानी आदि जीवों की संख्या कितनी-कितनी होती हैं?

उत्तर : मति व श्रुत ज्ञानी जीवों की संख्या = पल्य के असंख्यातवें भाग प्रमाण होती है।

अवधिज्ञानियों की संख्या = मतिज्ञानियों की संख्या - अवधिज्ञान से रहित मनुष्य व तिर्यंचों की संख्या।

मन:पर्यय ज्ञानियों की संख्या = संख्यात मनुष्य।

केवलज्ञानियों की संख्या = सिद्ध राशि से कुछ अधिक अर्थात् अनन्त।

कुमति व कुश्रुत अज्ञानियों की संख्या = संसारी जीव राशि से कुछ कम अर्थात् अनन्त।

विभंगज्ञानियों की संख्या = असंख्यात जगत् श्रेणी प्रमाण अर्थात् देवों से कुछ अधिक।

VII. Knowledge investigation

Q.1. What is called knowledge?

Ans. That which knows or through which things are known, is knowledge.

Q.2. What is knowledge investigation?

Ans. To explore living beings through knowledge is knowledge investigation.

Q.3. How many are the kinds of knowledge? Tell their names.

Ans. There are two kinds of knowledge- 1. Indirect knowledge, 2. Direct knowledge.

Q.4. What is called indirect knowledge?

Ans. To know about substance lacking vividness through mind and senses is indirect knowledge.

Q.5. What are examples of indirect knowledge?

Ans. Sensory and scriptural knowledge are indirect knowledge.

Q.6. What is called direct knowledge?

Ans. To know about substance clearly without seeking the help of mind and senses but through the vision of soul is known as direct knowledge.

Q.7. What are examples of direct knowledge?

Ans. Clairvoyance, telepathy, and omniscient knowledge are the examples of direct knowledge.

Q.8. How many kinds of knowledge a living being can have at a time?

Ans. A living being can have at least one kind of knowledge at a time- omniscience, and at the most- 4 kinds of knowledge(sensory, scriptural, clairvoyance and telepathy) at a time.

Q.9. What kinds and how many knowledge can be had in incomplete stage of living being?

Ans. Wrong clairvoyance knowledge and telepathy can not be had in incomplete stage, remaining four knowledge and two ignorance can be had, and in complete stage five kinds of knowledge and three kinds of ignorance can be had.

Q.10. What kinds of knowledge can be occurred due to annihilation cum subsidence of knowledge obscuring karma?

Ans. Sensory, scriptural, clairvoyance and telepathy knowledge are occurred due to annihilation cum subsidence of knowledge obscuring karma.

Q.11. What kind of knowledge is produced due to decay of knowledge obscuring karma?

Ans. Omniscience knowledge is obtained due to decay of knowledge obscuring karma.

Q.12. What is called false sensual knowledge or matyagyaan?

Ans. Knowledge with wrong sensual belief or false knowledge is called kumati or matyagyaan.

Q.13. What is called kusrut knowledge or srutagyaan?

Ans. The knowledge with wrong concepts about scriptures after listening bad tales is called kusrut or sruta knowledge.

Q.14. What is called wrong clairvoyance knowledge?

Ans. The clairvoyance knowledge that occurs along with wrong sensual beliefs and wrong scriptural knowledge is called wrong clairvoyance knowledge.

Q.15. What is another name of wrong clairvoyance knowledge?

Ans. The another name of wrong clairvoyance is vibhang knowledge(para clairvoyance).

Q.16. From which organs does wrong clairvoyance knowledge come?

Ans. This comes from the lower inauspicious limbs/signs below nave. For example- frogs, tortoise etc.

Q.17. Which kind of knowledge is found in which stage of spiritual development?

Ans. Sensory, scriptural and clairvoyance knowledge is found from 4th to 12th stages of spiritual development. Telepathy knowledge from 6th to 12th stages. Omniscience in 13th and 14th stages. Wrong sensory and wrong scriptural in 1st and 2nd stages. Wrong clairvoyance in 1st and 2nd stages of spiritual development.

Q.18. Which kinds of knowledge can be there in which destinies?

Ans. In human destiny- three kinds of knowledge and three kinds of ignorance(wrong knowledge), in sub-human, celestial and hellish destinies- telepathy and omniscience free of three kinds of knowledge and three kinds of wrong knowledge.

Q.19. Which sense has which kind of knowledge?

Ans. From one sensed to unconscious five sensed= wrong sensory and wrong scriptural ignorance. In all five sensed= five kinds of knowledge and three kinds of wrong knowledge.

Q.20. What is the number of living beings in different kinds of knowledge?

Ans. The number of sensory and scriptural knowledge holders= innumerable part of a palya.

Number of clairvoyance knowledge holders = number of sensory knowledge holder- no. of human beings lacking clairvoyance knowledge and sub-human beings. Number of telepathy holders- numerable human beings. No.of omniscience knowledge holders- some more than the number of liberated ones or infinite. Number of wrong sensory knowledge holders and wrong scriptural knowledge holders- some less than the number of worldly living beings or infinite. Number of para clairvoyance holders- innumerable universal series in measurement or some more than the number of celestial beings.

मतिज्ञान मार्गणा (क)

प्रश्न 1. मतिज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर : इन्द्रिय और अनिन्द्रिय (मन) की सहायता से अभिमुख और नियमित पदार्थ का जो ज्ञान होता है उसको मतिज्ञान कहते हैं।

प्रश्न 2. मतिज्ञान का दूसरा नाम क्या है?

उत्तर : मतिज्ञान का दूसरा नाम आभिनिबोधिक ज्ञान है।

प्रश्न 3. मतिज्ञान के कितने भेद हैं?

उत्तर : मतिज्ञान के चार भेद हैं- अवग्रह, ईहा, आवाय, धारणा।

प्रश्न 4. अवग्रह मतिज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर : पदार्थ और इन्द्रियों का योग्य क्षेत्र में सम्बन्ध होने पर अर्थात् दर्शन के पश्चात् सामान्य अवलोकन अर्थात् सर्वप्रथम जानने को अवग्रह मतिज्ञान कहते हैं।

प्रश्न 5. ईहा मतिज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर : जिस पदार्थ को अवग्रह ने ग्रहण किया है उसी के किसी विशेष अर्थ को जानने की आकांक्षा रूप जो ज्ञान होता है उसे ईहा मतिज्ञान कहते हैं।

प्रश्न 6. आवाय मतिज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर : ईहा ज्ञान के अनन्तर वस्तु के विशेष चिह्नों को देखकर जो निर्णय लिया जाता है वह आवाय मतिज्ञान है।

प्रश्न 7. धारणा मतिज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर : निर्णीत वस्तु का कालान्तर में भी विस्मरण न हो उसे धारणा मतिज्ञान कहते हैं।

प्रश्न 8. मतिज्ञान के चारों भेदों को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : पानी में डूबे हुए व्यक्ति का कोई अंग देखकर ऐसा आभास होना की 'कुछ' है यह अवग्रह ज्ञान है, 'वह क्या है' ऐसी उहापोह होना 'ईहा ज्ञान' है, पुरुष है अथवा स्त्री है ऐसा निर्णय कर लेना 'आवाय ज्ञान' है, कालान्तर में देखकर पुनः स्मरण में आ जाना कि यह वही है, यह 'धारणा ज्ञान' है।

प्रश्न 9. अवग्रह मतिज्ञान के कितने भेद हैं?

उत्तर : अवग्रह मतिज्ञान के दो भेद हैं- (1) व्यंजनावग्रह (2) अर्थावग्रह।

प्रश्न 10. व्यंजनावग्रह किसे कहते हैं?

उत्तर : जो ज्ञान प्राप्य अर्थ के विषय में होता है उसे व्यंजनावग्रह कहते हैं।

प्रश्न 11. अर्थावग्रह किसे कहते हैं?

उत्तर : जो ज्ञान अप्राप्य अर्थ के विषय में होता है उसे अर्थावग्रह कहते हैं।

प्रश्न 12. व्यंजनावग्रह व अर्थावग्रह में क्या विशेषताएँ हैं?

उत्तर : * पहले व्यंजनावग्रह होता है, बाद में अर्थावग्रह होता है।
* व्यंजनावग्रह चक्षु और मन से नहीं होता, शेष चार इन्द्रिय से होता है। अर्थावग्रह तो पाँचों इन्द्रिय और मन से होता है।

प्रश्न 13. मतिज्ञान के विषयभूत पदार्थ के 12 भेद कौन-कौन से हैं?

उत्तर : बहु, एक, बहुविध, एकविध, क्षिप्र, अक्षिप्र, अनि:सृत, नि:सृत, अनुक्त, उक्त, ध्रुव, अध्रुव ये मतिज्ञान के विषयभूत पदार्थ के 12 भेद है।

प्रश्न 14. बहु, बहुविध आदि पदार्थों की क्या परिभाषा है?

उत्तर : बहु - एक जाति के बहुत से व्यक्तियों को/वस्तुओं को बहु कहते हैं।

एक - एक पदार्थ या व्यक्ति को।
बहुविध - बहुत प्रकार के पदार्थ को।
एकविध - एक प्रकार के पदार्थ को।
क्षिप्र - शीघ्र
अक्षिप्र - मंद
अनि:सृत - गूढ़ अर्थात् ढका हुआ, नि:सृत - प्रकट रूप से।
अनुक्त - बिना कहा हुआ, उक्त - कहा हुआ।
ध्रुव - अचल अर्थात् बहुत काल तक स्थायी।
अध्रुव - चंचल/विनाशीक।

प्रश्न 15. मतिज्ञान के कुल कितने भेद होते हैं?

उत्तर : मतिज्ञान के 336 भेद होते हैं।

प्रश्न 16. मतिज्ञान के 336 भेदों को स्पष्ट कीजिए?

उत्तर : मतिज्ञान के चारों भेद पाँच इन्द्रिय व मन के निमित्त से होता है, इस प्रकार मतिज्ञान 4X6=24 प्रकार का होता है। यह 24 प्रकार का मतिज्ञान बहुआदिक 12 पदार्थों का होता है अत: 24X12=288 भेद। ये 288 भेद अर्थ रूप पदार्थ के होते हैं।

व्यंजन पदार्थ का केवल अवग्रह होता है ईहा आदि नहीं होता है और चार इन्द्रियों से ही होता है, चक्षु व मन से नहीं होता है। अत: 1X4=4 भेद।

ये 4 भेद बहुआदिक 12 पदार्थों का होता है। अत: 4X12=48 भेद। अत: कुल मतिज्ञान के भेद हुए=288+48=336 भेद।

(A) Knowledge investigation

Q. 1 What is called sensory knowledge?

Ans. The sensory knowledge are caused by sense and the mind. It is a indirect proof.

Q. 2 What is the second name of sensory knowledge?

Ans. Induction is the second name of sensory knowledge.

Q. 3 How many kinds of sensory knowledge?

Ans. There are four kinds of sensory knowledge –

1. speculation, 2. apprehension. 3. judgement and

4. retention

Q. 4 What is called Speculation?

Ans. When matter and the senses are related in the proper field, that is after seeing, general observation, that is knowing first, is called avagroha.

Q. 5 What is called Apprehension?

Ans. The knowledge which is in the form of desire to know a particular meaning of the substance which has been accepted by the Avagraha is called the sensory knowledge.

Q. 6 What is called Judgement?

Ans. The decision which is taken by looking at the special signs of the thing which is infinite in the knowledge of Iha that is Aavaya sensory knowledge.

Q. 7 What is called Retention?

Ans. Perception of the decided thing not to be for gotten even after it's called Dharna sensory knowledge.

Q. 8 Explain the four diffrences of philosophy with examples?

Ans. Seeing a part of a person immersed in water, having such a feeling that there is 'something' It is 'Avagraha knowledge', 'What is it', having such a sense of humor is Iha

knowledge', deciding whether it is a man or a woman is 'Avay knowledge' seeing after a while and coming back to remember that it is the same this conception is the Dharna.

Q. 9 How many kinds of speculation?

Ans. There are two kinds of speculation.

1. Consonant indistinct 2. Economics

Q. 10. Who is called Indistinct? (Meaning)

The knowledge which is about the attainable meaning is called Indistinct.

Q.11. Who is called Arthavagraha?

Ans. Knowledge which is about unattainable meaning is called Arthavagraha.

Q. 12 What are the characteristics of Vyanjanavgrah and Arthavagraha?

Ans. * First there is Vyanjanavgraha then there is Arthavagraha

* Vyanjanavgraha is not caused by the eyes and the mind the remaining four are caused by the senser. Arthavagraha is derived from the five senses and the mind.

Q. 13 What are the twelve kinds of the subject matter of sensory?

Ans. Quick knowledge, hidden, unexpressed lasting and their opposites leis, single, slow knowledge, exposed, expressed and transient.

Q. 14 What is the definition of quick, hidden etc.?

Ans. Many kinds, quick knowledge, hidden, unexpressed, lasting less, single, slow knowledge, exposed, expressed and transend.

Q. 15 How many kinds are sensary knowledge there in totality?

Ans. There are 336 kinds in sensory knowledge.

Q. 16 Explain the 336 difference of sensory knowledges?

Ans. The four kinds of sensory knowledge are due to the five senses and mind.Thus, there are $4 \times 6 = 24$ types of sensory knowledge. 12 substances, including multiples, so $24 \times 12 = 288$ kinds, these 288 kinds are of meaning form matter.

There is only avagraha of vyanjan, there is no Iha etc. and it is done only by the four senses, not with the eyes and the mind, so $1 \times 4 = 4$ kinds. These 4 kinds are of the quick etc. 12 substances, so $4 \times 12 = 48$ kinds therefore, the total kinds of sensory were = 288 + 48 336 kinds.

श्रुतज्ञान मार्गणा (ख)

प्रश्न 1. श्रुतज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर : मतिज्ञान के विषयभूत पदार्थ का अवलम्बन कर उससे सम्बन्धित भिन्न पदार्थ का ज्ञान, श्रुतज्ञान कहलाता है। श्रुतज्ञान नियम से मतिज्ञानपूर्वक ही होता है।

प्रश्न 2. श्रुतज्ञान के कितने भेद हैं?

उत्तर : श्रुतज्ञान के दो भेद हैं - (1) अंग प्रविष्ट (2) अंग बाह्य।

प्रश्न 3. अंग प्रविष्ट किसे कहते हैं?

उत्तर : बारह अंगों को अंग प्रविष्ट कहते हैं।

प्रश्न 4. अंग प्रविष्ट के कितने भेद हैं?

उत्तर : अंग प्रविष्ट के 12 भेद है। [द्वादशांग]

प्रश्न 5. अंग बाह्य किसे कहते हैं?

उत्तर : द्वादशांग के पदों से शेष बचे अक्षर जो अंग रूप व पद रूप न बन सके उन्हें अंग बाह्य कहते हैं।

प्रश्न 6. द्वादश अंग कौनसे हैं? नाम बताइए।

उत्तर : आचारांग, सूत्रकृतांग, स्थानांग, समवायांग, व्याख्याप्रज्ञप्ति, ज्ञातृधर्मकथांग, उपासकाध्ययनांग, अन्तःकृतदशांग, अनुत्तरौपपादिकदशांग, प्रश्नव्याकरणांग, विपाकसूत्रांग, दृष्टिवादांग।

प्रश्न 7. कौन से अंग में कितने-कितने पद हैं?

उत्तर : प्रथम अंग से बारहवें अंग तक क्रमशः - 18 हजार, 36 हजार, 42 हजार, 1 लाख 64 हजार, 2 लाख 28 हजार, 5 लाख 56 हजार, 11 लाख 70 हजार, 23 लाख 28 हजार, 92 लाख 44 हजार, 93 लाख 16 हजार, 1 करोड़ 84

लाख, 1 अरब 8 करोड़ 68 लाख 56 हजार पाँच पद हैं।

प्रश्न 8. पद किसे कहते हैं?

उत्तर : किसी अर्थ विशेष को सूचित करने वाले अक्षरों के समूहों को पद कहते हैं।

प्रश्न 9. पद कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर : पद तीन प्रकार के होते हैं- अर्थ पद, प्रमाण पद, मध्यम पद।

प्रश्न 10. अर्थ पद किसे कहते हैं?

उत्तर : जितने अक्षरों के द्वारा अर्थ का ज्ञान होता है वह अर्थ पद है।

प्रश्न 11. प्रमाण पद किसे कहते हैं?

उत्तर : आठ अक्षर से निष्पन्न हुआ पद प्रमाण पद कहलाता है।

प्रश्न 12. मध्यम पद किसे कहते हैं?

उत्तर : 1634 करोड़ 83 लाख 7 हजार 888 अक्षरों का एक मध्यम पद होता है।

प्रश्न 13. द्वादशांग में कौनसा पद ग्रहण किया है?

उत्तर : द्वादशांग में मध्यम पद को ग्रहण किया है जिसमें 16348307888 अक्षर होते हैं।

प्रश्न 14. सम्पूर्ण श्रुतज्ञान में कितने अक्षर होते हैं?

उत्तर : सम्पूर्ण श्रुतज्ञान में एक कम अट्टी प्रमाण [द्विरूप वर्गधारा का छठवाँ स्थान -1] अथवा बादाल^2 $(4294967296)^2-1$ = 18446744073709551615 [एक लाख चौरासी हजार चार सौ सड़सठ कोड़ाकोड़ी चवालीस लाख तिहत्तर सौ सत्तर करोड़ पंचानवे लाख इक्यावन हजार छः सौ पन्द्रह] अथवा 184 शंख, 46 पद्म, 74 नील, 40 खरब, 73 अरब, 70 करोड़, 95 लाख, 51 हजार, 615 अक्षर होते हैं।

प्रश्न 15. अंग बाह्य में कितने अक्षर हैं?

उत्तर : अंग बाह्य में 8 करोड़ 1 लाख 8 हजार 175 अक्षर है।

प्रश्न 16. अंग प्रविष्ट में कितने अक्षर हैं?

उत्तर : द्वादशांग के सम्पूर्ण पदों को मध्यम पदों की संख्या से गुणा करने पर (112 करोड़ 83 लाख 58 हजार 5 × 1634 करोड़ 83 लाख 7 हजार 888 = 18446744073629443440) प्राप्त संख्या ही अंग प्रविष्ट के अक्षर हैं इसी को द्वादशांग कहते हैं।

प्रश्न 17. कौन से अंग में किसका वर्णन है?

उत्तर : (1) आचारांग में - कैसे चलना है? कैसे बैठना है? आदि मुनिश्वरों के समस्त आचरण का वर्णन है।

(2) सूत्रकृतांग में - ज्ञान विनय, छेदोपस्थापना, स्वसमय-परसमय का सूत्रों द्वारा वर्णन किया है।

(3) स्थानांग में - एक से लेकर उत्तरोत्तर एक-एक बढ़ते स्थानों का [जैसे संग्रहनय से आत्मा एक है, व्यवहारनय से संसारी व मुक्त दो प्रकार है।] वर्णन है।

(4) समवायांग में - सम्पूर्ण पदार्थों के समवाय का वर्णन है।

(5) व्याख्याप्रज्ञप्ति में - 'जीव नित्य है कि अनित्य' आदि प्रश्नों के समाधान का वर्णन है।

(6) ज्ञातृधर्मकथांग में - तीर्थंकर के धर्म की कथा व गणधर देव द्वारा किये गये प्रश्नों के उत्तरों का वर्णन है।

(7) उपासकाध्ययनांग में - श्रावक की 11 प्रतिमा एवं व्रत, शील, आचार आदि का वर्णन है।

(8) अन्त:कृतदशांग में - अंत:कृत केवली का वर्णन है।

(9) अनुत्तरौपपादिक दशांग में - प्रत्येक तीर्थ में उपसर्ग सहनकर 5 अनुत्तर विमानों में गए 10-10 जीवों का वर्णन है।

(10) प्रश्नव्याकरणांग में - आक्षेपणी, विक्षेपणी, संवेगनी व निर्वेदनी नामक 4 कथाओं का तथा तीन काल संबंधी लाभ-

अलाभ, जीवित-मरण आदि संबंधी प्रश्नों के उपायों का वर्णन है।

(11) विपाकसूत्रांग में - इसमें पुण्य-पाप रूप कर्मों के फलों का वर्णन है।

(12) दृष्टिवादांग में - 363 कुवादियों के मतों एवं उनके निराकरण का वर्णन है।

प्रश्न 18. 12वें दृष्टिवाद अंग के कितने भेद हैं?

उत्तर : 12वें दृष्टिवाद अंग के पाँच भेद है- (1) परिकर्म, (2) सूत्र, (3) प्रथमानुयोग, (4) पूर्वगत, (5) चूलिका।

प्रश्न 19. परिकर्म दृष्टिवाद अंग के कितने प्रभेद हैं?

उत्तर : परिकर्म के 5 भेद हैं - चन्द्रप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति, जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति, द्वीपसागरप्रज्ञप्ति, व्याख्याप्रज्ञप्ति।

प्रश्न 20. इन प्रज्ञप्तियों में कितने-कितने पद हैं तथा इनमें किनका वर्णन है?

उत्तर :

प्रज्ञप्तियाँ	पदों की संख्या	वर्णन
(1) चन्द्रप्रज्ञप्ति	36 लाख 5 हजार	चन्द्रमा का विमान, आयु, परिवार, गति, वृद्धि-हानि आदि का वर्णन
(2) सूर्यप्रज्ञप्ति	5 लाख 3 हजार	सूर्य की आयु, परिवार, गति, वृद्धि-हानि आदि का वर्णन
(3) जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति	3 लाख 25 हजार	जम्बूद्वीप में स्थित मेरु, कुलाचल, तालाब आदि का वर्णन
(4) द्वीपसागरप्रज्ञप्ति	52 लाख 36 हजार	असंख्यात द्वीपसमुद्रों संबंधी स्वरूप का विवेचन
(5) व्याख्याप्रज्ञप्ति	84 लाख 36 हजार	रूपी अरूपी जीव अजीव द्रव्यों का भव्य अभव्य भेद प्रमाण

प्रश्न 21. सूत्र किसे कहते हैं?

उत्तर : जो अल्पाक्षरों में अधिक अर्थ को लिए होता है उसे सूत्र कहते हैं।

प्रश्न 22. प्रथमानुयोग किसे कहते हैं?

उत्तर : जो 63 शलाका पुरुषों का, उनके वंश आदि का तथा अन्य-अन्य महापुरुषों का वर्णन करता है उसे प्रथमानुयोग कहते हैं इसमें 5000 पद हैं।

प्रश्न 23. पूर्वगत दृष्टिवाद अंग के कितने प्रभेद हैं?

उत्तर : पूर्वगत दृष्टिवाद अंग के 14 भेद हैं - 1. उत्पाद पूर्व, 2. अग्रायणीय, 3. वीर्यप्रवाद, 4. अस्तिनास्तिप्रवाद, 5. ज्ञानप्रवाद, 6. सत्यप्रवाद, 7. आत्मप्रवाद, 8. कर्मप्रवाद, 9. प्रत्याख्यान प्रवाद, 10. विद्यानुवाद, 11. कल्याणवाद, 12. प्राणवाद, 13. क्रियाविशाल, 14. लोकबिन्दुसार।

प्रश्न 24. चूलिका दृष्टिवाद अंग के कितने भेद हैं?

उत्तर : चूलिका दृष्टिवाद अंग के पाँच भेद है- जलगता, स्थलगता, मायागता, आकाशगता, रूपगता।

प्रश्न 25. अंग बाह्य श्रुतज्ञान के कितने भेद हैं?

उत्तर : अंग बाह्य श्रुतज्ञान के 14 भेद है- सामायिक, चतुर्विंशतिस्तव, वंदना, प्रतिक्रमण, वैनयिक, कृतिकर्म, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, कल्पव्यवहार, कल्पाकल्प, महाकल्प्य, पुंडरिक, महापुंडरिक, निषिद्धिका।

।। श्रुतज्ञान वर्णन समाप्त ।।

14 पूर्व श्रुत ज्ञान के भेदों का वर्णन

	नाम	वस्तु की संख्या	पदों की संख्या	वर्णन
1.	उत्पाद	10	1 करोड़	वस्तु के उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य आदि अनेक धर्मों का
2.	आग्रायणीय	14	96 लाख	द्वादशांग में प्रधानभूत 700 सुनय, और दुर्नय का और 7 तत्त्व, 9 पदार्थ, 6 द्रव्य आदि का
3.	वीर्यप्रवाद	8	70 लाख	आत्मवीर्य, परवीर्य, उभयवीर्य, बलवीर्य, तपोवीर्य, गुणवीर्य, पर्यायवीर्य आदि अनेक प्रकार के वीर्य (सामर्थ्य) का
4.	अस्तिनास्ति प्रवाद	18	60 लाख	स्यादस्ति, स्यादनास्ति आदि सप्तभंगी का
5.	ज्ञानप्रवाद	12	1 कम 1 करोड़	5 ज्ञान व 3 कुज्ञान के स्वरूप, संख्या, विषय, फल का
6.	सत्यप्रवाद	12	6 अधिक 1 करोड़	वचन गुप्ति, वचन संस्कार के कारण, वचन के प्रयोग, 12 प्रकार की भाषा, बोलने वाले जीवों के भेद, बहुत प्रकार के असत्य वचन, 10 प्रकार के सत्य वचन आदि का
7.	आत्मप्रवाद	16	26 करोड़	"जीव वेत्ता, विष्णु, भोक्ता, बुद्ध आदि है"-इस रूप से आत्मा का
8.	कर्मप्रवाद	20	1 करोड़ 80 लाख	कर्म का
9.	प्रत्याख्यान	30	84 लाख	पुरुष के संहनन, बल, द्रव्य, भाव आदि की अपेक्षा से सदोष वस्तु का 1 काल की मर्यादा रहित अथवा यावज्जीवन त्याग, उपवास विधि, उसकी भावना, 5 समिति, 3 गुप्ति आदि का

	नाम	वस्तु की संख्या	पदों की संख्या	वर्णन
10.	विद्यानुवाद	15	1 करोड़ 10 लाख	700 अल्पविद्या, 500 महाविद्या, 8 निमित्त ज्ञान का
11.	कल्याणवाद	10	26 करोड़	63 शलाका पुरुषों के गर्भावतरण कल्याण आदि महोत्सवों का, उनके कारणभूत 16 कारण भावना, तपश्चरणादि क्रिया। चन्द्रमा सूर्य ग्रह नक्षत्र इनका गमन विशेष, ग्रहण शकुन फल आदि का
12.	प्राणावाद	10	13 करोड़	शरीर चिकित्सा आदि अष्टांग आयुर्वेद, भूतिकर्म, विष विद्या, प्राणायाम आदि के भेद-प्रभेदों का
13.	क्रिया-विशाल	10	9 करोड़	लेखन आदि 72 कला, स्त्रियों के 64 गुण, शिल्पादि विज्ञान गर्भाधानादि 84 क्रिया, सम्यग्दर्शनादि 108 क्रिया, नित्य नैमैत्तिक क्रिया का
14.	लोक-बिन्दुसार	10	12 करोड़ 50 लाख	तीन लोक का स्वरूप, गणित, मोक्ष का स्वरूप, मोक्ष को ले जाने वाली क्रिया एवं मोक्ष सुख आदि का
	कुल जोड़	195 वस्तु	95 करोड़ 95 लाख 5	कुल प्राभृत = 195 वस्तु x 20 = 3900 प्राभृत

14 पूर्व का वर्णन

क्र.	नाम	वस्तु संख्या प्राभृत	प्राभृत प्राभृताकुल	कुल पदों की संख्या
1.	उत्पाद	10x20 = 200	200x24 = 4800	1 करोड़
2.	आग्रयणीय	14x20 = 280	280x24 = 6720	96 लाख
3.	वीर्यप्रवाद	8x20 = 160	160x24 = 3840	70 लाख
4.	अस्तिनास्ति	18x20 = 360	360x24 = 8640	60 लाख
5.	ज्ञानप्रवाद	12x20 = 240	240x24 = 5760	1 कम 1 करोड़
6.	सत्यप्रवाद	12x20 = 240	240x24 = 5760	1 करोड़
7.	आत्मप्रवाद	16x20 = 320	360x24 = 8640	26 करोड़
8.	कर्मप्रवाद	20x20 = 400	400x24 = 9600	1 करोड़ 8 लाख
9.	प्रत्याख्यान	30x20 = 600	600x24 = 14400	84 लाख
10.	विद्यानुवाद	15x20 = 300	300x24 = 7200	1 करोड़ 10 लाख
11.	कल्याणवाद	10x20 = 200	200x24 = 4800	26 करोड़
12.	प्राणावाद	10x20 = 200	200x24 = 4800	13 करोड़
13.	क्रिया विशाल	10x20 = 200	200x24 = 4800	9 करोड़
14.	लोकबिन्दुसार	10x20 = 200	200x24 = 4800	12 करोड़ 50 लाख
	कुल	195=3900	93600	95 करोड़ 50 लाख 5 (9550,00005)

एक-एक पूर्व में वस्तुओं की संख्या अलग अलग है।

एक-एक वस्तु में 20-20 प्राभृत होते हैं एक-एक प्राभृत में 24-24 अनुयोग दार या प्राभृत प्राभृत होते है।

इस प्रकार कुल वस्तुऐं 195 कुल प्राभृत = 3900

कुल प्राभृत प्राभृत 93600

प्रश्न - वस्तु किसे कहते है?

उत्तर-अध्याय को वस्तु कहते हैं, जैसे किसी पुस्तक में अध्याय होते हैं, उसी प्रकार अलग-अलग पूर्व में अलग-अलग वस्तुओं की संख्या है।

प्राभृत-अध्याय के भी अन्तर अध्याय को प्राभृत कहते हैं एक-एक वस्तु में 20-20 प्राभृत होते हैं।

अन्तराध्याय में भी किसी एक विषय का कथन करने वाला अधिकार/एक प्राभृत में 24-24 प्राभृत-प्राभृत होते हैं।

अंग बाह्य श्रुत ज्ञान के 14 भेदों का वर्णन

	भेद	वर्णन
1.	सामायिक	नाम, स्थापनादि छह भेदों द्वारा समताभाव के विधान का
2.	चतुर्विंशति स्तव	24 तीर्थंकरों के नाम, संस्थान, ऊँचाई, पंच महाकल्याणक, 34 अतिशयों का स्वरूप एवं तीर्थंकरों की वंदना की विधि एवं सफलता का
3.	वंदना	एक तीर्थंकर के अवलम्बन से प्रतिमा, चैत्यालय इत्यादि की स्तुति का
4.	प्रतिक्रमण	दु:षमादि काल और 6 संहननों से युक्त स्थिर तथा अस्थिर स्वभाव वाले पुरुषों का आश्रय लेकर दैवसिक, रात्रिक आदि 7 प्रकार के प्रतिक्रमणों का
5.	वैनयिक	दर्शन विनय, ज्ञान विनय आदि 5 प्रकार की विनयों का
6.	कृतिकर्म	पंच परमेष्ठी की पूजा आदि विधि का
7.	दशवैकालिक	दशवैकालिको (विशिष्ट काल में होने वाली विशेषता) का एवं मुनियों की आचार विधि और गोचर विधि का
8.	उत्तराध्ययन	4 प्रकार के उपसर्गों को कैसे सहन करना चाहिए आदि प्रश्नों के उत्तरों का
9.	कल्प्यव्यवहार	साधुओं के योग्य आचरण का एवं अयोग्य आचरण के होने पर प्रायश्चित्त विधि का (कल्प्य–योग्य, व्यवहार=आचार)
10.	कल्प्याकल्प्य	द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अपेक्षा मुनियों के लिए योग्य और अयोग्य का
11.	महाकल्प्य	काल और संहनन का आश्रय कर साधुओं के योग्य द्रव्य और क्षेत्रादि का
12.	पुंडरीक	4 प्रकार के देवों में उत्पत्ति के कारण स्वरूप दान, पूजा, तपश्चरण, अकाम निर्जरा, सम्यग्दर्शन और कार्यों का
13.	महापुंडरीक	समस्त इन्द्र और प्रतीन्द्रों में उत्पत्ति के कारण रूप तपोविशेषादि आचरण का
14.	निषिद्धिका	प्रमाद जन्य दोषों के निराकरण करने रूप बहुत प्रकार के प्रायश्चित्तों का

श्रुतज्ञान के भेद

1. पर्यायज्ञान
2. पर्याय समास श्रुतज्ञान
3. अक्षर श्रुतज्ञान
4. अक्षर समास श्रुतज्ञान
5. पद श्रुतज्ञान
6. पद समास श्रुतज्ञान
7. संघात श्रुतज्ञान
8. संघात समास श्रुतज्ञान
9. प्रतिपत्ति श्रुतज्ञान
10. प्रतिपत्ति समास श्रुतज्ञान
11. अनुयोग श्रुतज्ञान
12. अनुयोग समास श्रुतज्ञान
13. प्राभृत–प्राभृत श्रुतज्ञान
14. प्राभृत–प्राभृत समास श्रुतज्ञान
15. प्राभृत श्रुतज्ञान
16. प्राभृत समास श्रुतज्ञान
17. वस्तु श्रुतज्ञान
18. वस्तु समास श्रुतज्ञान
19. अंग प्रविष्टि श्रुतज्ञान
20. अंग बाह्य श्रुतज्ञान

Scriptural Knowledge Investigation (B)

Q.1 What is called scriptural knowledge?

Ans. The knowledge of different substances related to the substance falling under cognitive knowledge is called scriptural knowledge. Scriptural knowledge occurs only through cognitive knowledge as per rule.

Q.2. How many kinds are of scriptural knowledge?

Ans. There are two kinds of scriptural knowledge- 1. Knowledge through Primary texts, 2. Knowledge through Subsidiary texts.

Q.3. What is knowledge through primary texts?

Ans. Twelve fundamental texts are called Primary Texts. Knowledge through them.

Q.4. How many divisions are of primary texts?

Ans. There are twelve parts of primary texts. (Dwadshang).

Q.5. What is called subsidiary texts?

Ans. The remaining letters from the verses of Dwadshang which could not become text form and stanza form are called subsidiary texts.

Q.6. Which are the twelve texts? Tell their names.

Ans. Acaarang (Manual on Ideal Ascetic Conduct), Sutrakrataang (Manual on Heretical Views), Sthaanang (Manual on Possibilities), Samavayaang (Manual on Combinations), Vyakhyapragyapti (Manual on Detailed Explanations), Gyatradharmakathaang (Manual on Stories on Virtues and Valours), Upasakaadhyayanaang (Manual on Ideal Lay Conduct), Antahkrit Dashaang (Manual on Ten End Makers), Anuttaraupapadik Dashaang (Manual on Ten Arisers in the Highest Heaven), Prasnavyakaranaang (Manual on Questions and Explanations), Vipaaksutraang (Manual on Fruition of Deeds), Drushtivaadang (Manual on Disputation of Views).

Q.7. Which text has how many stanzas?

Ans. From First Text to twelfth text respectively- 18 thousand, 36 thousand, 42 thousand, 1 lakh 64 thousand, 2 lakh 28 thousand, 5 lakh 56 thousand, 11 lakh 70 thousand, 23 lakh 28 thousand, 92 lakh 44 thousand, 93 lakh 16 thousand, 1 crore 84 lakh, 1 billion 8 crore 68 lakh 56 thousand and 5 stanzas.

Q.8. What is called pad (stanza)?

Ans. A group of letters that conveys some specific meaning or sense.

Q.9. How many types are there of pad?

Ans. There are three kinds of pad (stanzas)- arthapad, pramaanpad, madhyam pad.

Q.10. what is called arthapad?

Ans. Number of letters to form a meaningful phrase (group of letters) is called artha pad.

Q.11. What is called pramaan pad?

Ans. A pad accomplished with eight letters is called pramaan pad.

Q.12. What is called madhyam pad?

Ans. A madhyam pad is constituted of 1634 crore 83 lakh 7 thousand 888 letters.

Q.13. Which position has been taken in Dwadshang.

Ans. In Dwadshang has taken middle position in which there are 16348307888 characters.

Q.14. How many total letters are there in complete twelve texts(Dwadshaang)?

Ans. Atti unit of measurement less one (The sixth place of dyadic square sequence – 1) or Baadaal^2 (A large mathematical quantity)(4294967296^2) 1 = 18446744073709551615 (One lakh eighty four thousand four hundred sixty seven crore x crore forty four lakh

seventy three hundred seventy crore ninety five lakh fifty one thousand six hundred fifteen) or 184 shankh, 46 padma, 74 neel, 40 kharab, 73 arab, 70 crore, 95 lakh, 51 thousand, 615.

Q.15. How many letters are there in subsidiary text?

Ans. In subsidiary text, there are 8 crore 1 lakh, 8 thousand, 175 letters.

Q.16. How many letters are there in primary texts?

Ans. Multiplying total number of terms in Dvaadshaang with number of medium terms (112 crore 83 lakh 58 thousand 5 x 1634 crore 83 lakh 7 thousand 888 = 18446744073629443440) and the number obtained is the number of letters in primary texts.

Q.17. Which text describes what?

Ans.

1. Acaarang (Manual on Ideal Ascetic Conduct)- Total ideal conduct of saints. How to move? How to sit? Etc.
2. Sutrakrataang (Manual on Heretical Views)- Description in formulae of Knowledge of reverence, how to follow 28 basic virtues, self-absorption, absorbed in the non-self.
3. Sthaanang (Manual on Possibilities)- Description of stages increasing gradually from one (for example- from synthetic point of view soul is one, from conventional stand point soul is both worldly and liberated).
4. Samavayaang (Manual on Combinations)- describes intimate relation among all substances.
5. Vyakhyapragyapti (Manual on Detailed Explanations)- soul is eternal or transient- the solution of such questions is described.
6. Gyatradharmakathaang (Manual on Stories on Virtues and Valours)- Religious tales about teerthankaras and the answers given to the closest disciples of teerthankaras by them are described.

7. Upasakaadhyayanaang (Manual on Ideal Lay Conduct)- Description of 11 stages of renunciation, vows, chastity and conduct etc. of house holders.

8. Antahkrit Dashaang (Manual on Ten End Makers)- There is description of inner omniscient in it.

9. Anuttaraupapadik Dashaang (Manual on Ten Arisers in the Highest Heaven)- Description of ten-ten living beings who after facing misfortunes in each holy places leave by the best space vehicles.

10. Prasnavyakaranaang (Manual on Questions and Explanations)- Description of achchepani (Stories containing right knowledge refuting wrong knowledge), vichchepani (Speech preaching right principles) , sanvedani (Tale creating religious sentiments)and nivrvegani (detachment producing story) named four tales and the solutions of three period related questions- profit-loss, life-death etc.

11. Vipaaksutraang (Manual on Fruition of Deeds)- Describes the results of virtuous and sinful karmas.

12. Drushtivaadang (Manual on Disputation of Views)- The views of 363 bad disputants and their solutions are described.

Q.18 How many parts are there of 12th Drushtivaad Text?

Ans. There are five parts of 12th Drushtivaad text-1. Parikarma (Mathematics), 2. Sutra (canonical aphorism/ formula), 3. Prathmanuyog (Biographical exposition), 4. Poorvagat (A part of scriptural knowledge), 5. Chulika (Appendix).

Q.19. How many sub-parts are there of Parikarma Drushtivaad?

Ans. There are five sub-parts of Parikarma- Chandrapragyapti (Description of the Moon), Suryapragyapti (Description of the Sun), Jambudweeppragyapti (Description of Rose Apple Tree Island), Dweepsagarpragyapti (Description

of islands and oceans), Vyakhyapragyapti (Description of Explanations) (these all are the types of scriptural knowledge).

Q.20. How many terms are there in these Pragyaptis and what do they describe?

Ans.

Pragypatis	No. of terms	Description
Chandrapragyapti	36 lakh 5 thousand	Moon spaceship, age, family, motion, profit-loss
Suryapragyapti	5 lakh 3 thousand	of Sun Age, family, motion, profit-loss etc.
Jambudweeppragyapti	3 lakh 25 thousand	Meru situated in Jambudweep, Kulachal, pond
Dweepsagarpragyapti	52 lakh 36 thousand	The nature and structures of innumerable islands
Vyakhyapragyapti	84 lakh 36 thousand	Living and non-living beings, evidence of Salvation able and non- salvation able.

Q.21. How many sub-parts are of Poorvagat Drushtivaad?

Ans. Thee are 14 sub-parts of Poorvagat Drushtivaad- Utpaad purva (Ancient Text on Creation), Agraayaniya (Ancient text on scriptural overview), Viryapravad (Lecture on Great Men), Astinaastipravaad (Lecture on Seven Predicates), gyaanpravaad (Lecture on knowledge), Satyapravaad (Lecture on the truths), Aatmapravaad (Lecture on the soul), Karmapravaad (Lecture on Karmas), Pratyakhyaanpravaad (Text on Penance and salf-control), Vidyaanuvaad (Explanation of the sciences), Kalyaanvaad (Major events in the lives of Teerthankaras and other gretamen), Praanvaad (Text on Saving Lives), Kriyavishaal (Text on Human Skills), Trilokbindusaar (Text on Liberated Beings).

Q.22. How many sub-parts are there of Chulika Drushtivaad text?

Ans. There are five sub-parts of Chulika Drushtivaad Text- Jalagata (Appendix on Sea travel), Sthalagata (Appendix on Terrestrial Travel), Mayagata (Appendix on Spells), Akashgata (Appendix on Aerial Travel), Roopgata (Appendix on Disguise).

Q.23. What is called Sutra?

Ans. These are canons or principles in aphoristic style (in short). The 363 false philosophies are critically examined by the omniscient Bhagwaan Mahaveer.

Q.24. What is called Prathamanuyog (expositions related to mythology)?

Ans. That which describes 63 great personalities, their clan etc. and other great men also is called Prathamanuyoga.

Q.25. How many kinds are there of subsidiary scriptural texts?

Ans. There 14 kinds of subsidiary scriptural texts- Samayik (equanimity), Chaturvishtistav (Eulogy of twenty four Jinas), Vandana (Act of offering salutations), Pratikraman (penitence), Vainayik (indeterminate opinion), Krutikarma (reverential conduct of saints), Dashvaikalik (describes food management of saints), Uttaradhyayan (subsidiary studies), Kalpavyavahar (Proper conduct), Kalpaakalp (description of proper and improper conduct for saints etc.), Mahaakalpya (Description of repentance for saints etc. for moral or immoral conduct), Pundarik (Name of the 6th Narayana- a protecting deity), Mahapundarika (A large pond situated at Rukmi Mountain), Nishiddhika (Place of salvation of Lord Arihant).

अवधिज्ञान मार्गणा (ग)

प्रश्न 1. अवधिज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर : द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, भव की अपेक्षा से जिसके विषय की सीमा हो उसे अवधिज्ञान कहते हैं।

प्रश्न 2. अवधिज्ञान का पर्यायवाची नाम बताइए?

उत्तर : अवधिज्ञान का पर्यायवाची नाम सीमाज्ञान है।

प्रश्न 3. अवधिज्ञान के कितने भेद हैं?

उत्तर : अवधिज्ञान के दो भेद हैं- (1) भवप्रत्यय (2) गुणप्रत्यय।

प्रश्न 4. भवप्रत्यय अवधिज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर : नरकादि भव ही जिसका कारण हो उसे भव प्रत्यय अवधिज्ञान कहते हैं।

प्रश्न 5. गुण प्रत्यय अवधिज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर : जो सम्यग्दर्शनादि अथवा विशेष चारित्र आदि के निमित्त से उत्पन्न होता है उसे गुण प्रत्यय अवधिज्ञान कहते हैं।

प्रश्न 6. भवप्रत्यय अवधिज्ञान किन-किन जीवों के होता है?

उत्तर : यह अवधिज्ञान देव, नारकी और तीर्थंकरों के होता है।

प्रश्न 7. गुणप्रत्यय अवधिज्ञान किन-किन जीवों के होता है?

उत्तर : गुणप्रत्यय अवधिज्ञान पर्याप्त मनुष्य व संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचों के होता है।

प्रश्न 8. भवप्रत्यय अवधिज्ञान कहाँ से उत्पन्न होता है?

उत्तर : भवप्रत्यय अवधिज्ञान सर्वांग से उत्पन्न होता है।

प्रश्न 9. गुणप्रत्यय अवधिज्ञान कहाँ से उत्पन्न होता है?

उत्तर : गुणप्रत्यय अवधिज्ञान नाभि के ऊपर शंख, कमल, वज्रादि शुभ चिह्नों से उत्पन्न होता है।

प्रश्न 10. गुणप्रत्यय अवधिज्ञान के कितने भेद हैं?

उत्तर : गुणप्रत्यय अवधिज्ञान के छः भेद हैं- अनुगामी, अननुगामी, अवस्थित, अनवस्थित, वर्धमान, हीयमान।

प्रश्न 11. उपर्युक्त 6 प्रकार के गुणप्रत्यय अवधिज्ञान को परिभाषित कीजिए।

उत्तर : अनुगामी - वह अवधिज्ञान जो अन्य क्षेत्र/भव में साथ जाए।

अननुगामी - वह अवधिज्ञान जो अन्य क्षेत्र/भव में साथ न जाए।

अवस्थित - जो अवधिज्ञान स्थिर रहे, न घटे न बढ़े।

अनवस्थित - जो अवधिज्ञान घटता-बढ़ता रहे।

वर्धमान - जो अवधिज्ञान बढ़ता हुआ हो।

हीयमान - जो अवधिज्ञान घटता हुआ हो।

प्रश्न 12. सामान्य से अवधिज्ञान के कितने भेद हैं?

उत्तर : सामान्य से अवधिज्ञान के तीन भेद हैं- (1) देशावधि, (2) परमावधि, (3) सर्वावधि।

प्रश्न 13. देशावधि ज्ञान कितने प्रकार का होता हैं?

उत्तर : यह गुणप्रत्यय व भवप्रत्यय दो प्रकार का होता हैं।

प्रश्न 14. परमावधि व सर्वावधि ज्ञान कितने प्रकार का होता हैं?

उत्तर : ये दोनों अवधिज्ञान नियम से गुणप्रत्यय ही हुआ करते हैं।

प्रश्न 15. देशावधिज्ञान के स्वामी कौन हैं? अर्थात् यह किन-किन जीवों के होता है?

उत्तर : यह ज्ञान जघन्य से संयमी या असंयमी मनुष्य और तिर्यंच व उत्कृष्ट से सकल संयमी जीवों के होता है।

प्रश्न 16. परमावधि व सर्वावधिज्ञान के स्वामी कौन हैं?

उत्तर : ये दोनों अवधिज्ञान चरमशरीरी महाव्रती के ही होते हैं।

प्रश्न 17. कौन सा अवधिज्ञान प्रतिपाति व कौनसा अप्रतिपाति होता है?

उत्तर : देशावधिज्ञान प्रतिपाति व परमावधि और सर्वावधिज्ञान अप्रतिपाति होते हैं।

प्रश्न 18. प्रतिपाति व अप्रतिपाति क्या कहलाता है?

उत्तर : प्रतिपाति - सम्यक्त्व व चारित्र से च्युत होना अर्थात् मिथ्यात्व, अव्रती अवस्था को प्राप्त होना।

अप्रतिपाति - सम्यक्त्व व चारित्र से च्युत न होना अर्थात् मिथ्यात्व, अव्रती अवस्था को प्राप्त न होना।

प्रश्न 19. अवधिज्ञान द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव व भव की अपेक्षा से जघन्य व उत्कृष्ट से कितना-कितना जानता है?

उत्तर :	**जघन्य**	**उत्कृष्ट**
द्रव्य	पुद्गल परमाणु को	महास्कंध को
क्षेत्र	घनांगुल के असंख्यातवे भाग को	असंख्यात योजन को
काल	आवली के असंख्यातवे भाग को	असंख्यात सागर को
भाव	छोटे-छोटे परिणामों को	असंख्यात लोकप्रमाण को
भव	1 भव को	असंख्यात भव को

Clairvoyance Investigation (C)

Q.1. What is called Clairvoyance?

Ans. Visualizing things and events in mind in regard to matter, space, period, feeling, and destiny up to a particular limit which are either out of sight or going to happen in future is called clairvoyance.

Q.2. Tell synonymous name of avadhi gyaan?

Ans. Synonymous name of avadhi gyaan is seema gyaan (knowledge withing limit).

Q.3. How many kinds are of clairvoyance?

Ans. There are two kinds of clairvoyance- 1. Bhav pratyay (Inherent clairvoyance), 2. Guna pratyay (virtuous clairvoyance).

Q.4. What is called Inherent clairvoyance?

Ans. The reason of which is hellish destiny etc. is bhav pratyaya (inherent clairvoyance).

Q.5. what is called virtuous clairvoyance?

Ans. That which is created through right-faith or specific conduct is called virtuous clairvoyance.

Q.6. Which living beings have inherent clairvoyance?

Ans. This type of clairvoyance occurs to celestial beings, hellish beings and teerthankaras.

Q.7. Which living beings have virtuous clairvoyance?

Ans. This occurs to complete five sensed and conscious five sensed sub-human beings.

Q.8. From where does inherent clairvoyance occur?

Ans. Inherent clairvoyance occurs from Sarvaang (all limbs).

Q.9. From where does virtuous clairvoyance occur?

Ans. Virtuous clairvoyance occurs from auspicious signs like conch, lotus, thunderbolt etc.found in the upper part of the body (above navel).

Q.10. How many kinds are of virtuous clairvoyance?

Ans. There are six kinds of virtuous clairvoyance- anugaami (favourable), ananugaami (unfavorable), avasthit (fixed), anavasthit (unfixed), vardhamaan (growing), Hiyamaan (decreasing).

Q.11. Define all the above six kinds of virtuous clairvoyance?

Ans. Anugaami- The clairvoyance which goes to the other destiny also.

Ananugaami- The clairvoyance which does not go to the other destiny.

Avasthit- Remains steady, neither increases nor decreases.

Anavasthit- Which increases and decreases also.

Vardhamaan – which is increasing.

Hiyamaan- Which is decreasing.

Q.12. How many kinds of clairvoyance from general point of view?

Ans. There are three kinds of clairvoyance from general point of view- 1. Deshaavadhi (Partial clairvoyance), 2. Paramaavadhi (supreme clairvoyance), 3. Sarvaavadhi (Perfect clairvoyance).

Q.13. How is partial clairvoyance?

Ans. This is of both kinds- inherent as well as virtuous.

Q.14. How are supreme clairvoyance and perfect clairvoyance?

Ans. Both of these two from the rule of clairvoyance are virtuous in form.

Q.15. Who are the owners of partial clairvoyance? Or For which living beings does it occur?

Ans. This knowledge occurs from the lowest point of view to restraint or unrestraint human beings and sub-human beings and from the highest point of view to complete restraint living beings.

Q.16. Which living beings have supreme clairvoyance and perfect clairvoyance?

Ans. These both occur to ultimate bodied great votaries.

Q.17. Which clairvoyance is falling clairvoyance and which is rising clairvoyance?

Ans. Partial clairvoyance is falling clairvoyance and supreme and perfect clairvoyance are rising clairvoyance.

Q.18. What are called Pratipaat and Apratipaat?

Ans. Pratipaat (falling) – Detaching from right-faith and right-conduct and adopting wrong-faith and not observing religious practices.

Apratipaat (Rising)- Not detaching from right-faith and right-conduct and not adopting the stage of wrong-faith and irreligious practices.

Q.19. How much is the lowest and the highest clairvoyance in respect to matter, space, time, feeling and destiny-

Ans.

	The lowest The highest
Matter	Matter particles Largest aggregate
Space	Innumerable part of ghanangul Innumerable yojan
Time/period	innumerable part of Avali Innumerable Sagar
Feeling/sense	Little thought activities Innumerable measure of universe
Destinies	1 destiny innumerable destinies

मन:पर्यय व केवलज्ञान मार्गणा (घ)

प्रश्न 1. मन:पर्यय ज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर : द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, भव की मर्यादा सहित दूसरे के मन में स्थित विचारों को स्पष्ट रूप से जानना मन:पर्यय ज्ञान है।

प्रश्न 2. मन:पर्यय ज्ञान के कितने भेद हैं?

उत्तर : मन:पर्यय ज्ञान के दो भेद हैं- (1) ऋजुमति मन:पर्यय ज्ञान, (2) विपुलमति मन:पर्यय ज्ञान।

प्रश्न 3. ऋजुमति मन:पर्यय ज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर : दूसरे के मन में स्थित सरल पदार्थों को जो जाने वह ऋजुमति मन:पर्यय ज्ञान है।

प्रश्न 4. विपुलमति मन:पर्यय ज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर : दूसरे के मन में स्थित सरल व कुटिल पदार्थों को जो जाने वह विपुलमति मन:पर्यय ज्ञान है।

प्रश्न 5. ऋजुमति व विपुलमति मन:पर्यय ज्ञान की विशेषताएँ बताइए?

उत्तर : * ऋजुमति ज्ञान प्रतिपाती है, विपुलमति ज्ञान अप्रतिपाति है।

* ऋजुमति ज्ञान में विपुलमति ज्ञान से विशुद्धता कम पायी जाती है।

* ऋजुमति ज्ञान ईहामति ज्ञानपूर्वक होता है, जबकि विपुलमति ज्ञान मतिज्ञानपूर्वक हो यह नियम नहीं है।

* ऋजुमति ज्ञान वर्तमान में चिंतित त्रिकाल विषयक पदार्थ को जानता है, जबकि विपुलमति ज्ञान भूत-भविष्यत-वर्तमान तीनों काल में चिंतित त्रिकाल संबंधी पदार्थ को जानता है।

* ऋजुमति ज्ञान दूसरे के मन में चिंतवन रूप स्थित पदार्थ को जानता है, जबकि विपुलमति ज्ञान दूसरे के मन में स्थित चिंतित, अचिंतित व अर्द्धचिंतित पदार्थ को जानता है।

प्रश्न 6. मन:पर्यय ज्ञान जघन्य व उत्कृष्ट से कितना-कितना जानता है?

उत्तर :

	जघन्य	**उत्कृष्ट**
द्रव्य	पुद्गल परमाणु के अनंतवें भाग को	असंख्यात पुद्गल परमाणु को
क्षेत्र	पृथक्त्व कोस	45 लाख योजन
काल	वर्ष पृथक्त्व	असंख्यात काल
भाव	आवली प्रमाण	असंख्यात लोक प्रमाण
भव	7-8 भव को	असंख्यात भव को

प्रश्न 7. केवलज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर : त्रिकालवर्ती समस्त द्रव्य, गुण और उनकी अनंत पर्याय को एक साथ या युगपत् जानता है वह केवलज्ञान कहलाता है।

प्रश्न 8. केवलज्ञान कैसा होता है?

उत्तर : केवलज्ञान सम्पूर्ण, समग्र, केवल, प्रतिपक्षरहित, सर्वपदार्थगत और लोकालोक में अन्धकार रहित होता है।

प्रश्न 9. केवलज्ञान किसकी सहायता से जानता है?

उत्तर : यह ज्ञान असहाय है इसे किसी की भी सहायता की आवश्यकता नहीं है।

Telepathy and Omniscience Investigation (D)

Q.1. What is called Telepathy?

Ans. To know the thoughts of the other's mind clearly without asking keeping limitations of matter, space, time, feelings and body form is telepathy. In short, reading the mind of the other.

Q.2. How many kinds are of telepathy?

Ans. There are two kinds of telepathy- 1. Direct telepathy (rijumati), 2. Complex telepathy (vipulamati).

Q.3. What is called Rijumati manah paryaay gnaan (Direct telepathy)?

Ans. To know easy thoughts in the mind of the other is direct telepathy.

Q.4. What is called vipulamati manah paryaay gnaan (Complex telepathy)?

Ans. To know both easy as well as crooked thoughts of the other is complex telepathy.

Q.5. Tell the properties of direct and complex telepathies?

Ans.

1. Direct telepathy is definitive knowledge; complex telepathy is undecisive knowledge.
2. Direct telepathy lacks in purity in comparison to complex telepathy.
3. Direct telepathy occurs on speculation while complex telepathy occurs only on speculation is not a rule.
4. Direct telepathy knows only three stages condition of the substance at present only while complex telepathy knows three stages of the substances in all three phases of time- present, past and future.
5. Direct telepathy knows only the thought process of the other being, while complex telepathy knows not only thought process, but also partially thought and unthought things in the mind of the other.

Q.6. How much telepathy knows as the lowest and the highest?

Ans.

	The lowest
	The highest
Matter	Infinitieth part of the innumerable matter-particle
matter-particles	
Space	Prathktva kosa
	45 lakh yojan
Time	Varsh prathaktva
	Innumerable time
Feeling	Avali measurement
	Innumerable universe measurement
Destinies	7-8 body forms
Innumerable body forms	

Q.7. What is called omniscience?

Ans. To know all substances completely in their three-time phase(present, past, future), their properties and their infinite body forms simultaneously is omniscience.

Q.8. How is omniscience?

Ans. Omniscience is complete, whole, only, opposition-free, for all substances and free of darkness in this universe and beyond.

Q.9. With what help does omniscience know?

Ans. Omniscience is unassisted, it does not need any help.

VIII. संयम मार्गणा

प्रश्न 1. संयम किसे कहते हैं?

उत्तर : पाँच इन्द्रियों व मन को वश में करना तथा षट्कायिक जीवों की रक्षा करना संयम है।

प्रश्न 2. संयम मार्गणा किसे कहते हैं?

उत्तर : संयम के द्वारा आत्मा या जीवों की खोज करना संयम मार्गणा है।

प्रश्न 3. संयम मार्गणा के कितने भेद हैं? नाम बताइए।

उत्तर : संयम मार्गणा के 7 भेद हैं – (1) असंयम, (2) संयमासंयम, (3) सामायिक, (4) छेदोपस्थापना, (5) परिहार विशुद्धि, (6) सूक्ष्म साम्पराय, (7) यथाख्यात चारित्र।

प्रश्न 4. संयम के कितने प्रकार का होता हैं?

उत्तर : संयम पाँच प्रकार का होता हैं–1. सामायिक 2. छेदोपस्थापना 3. परिहार विशुद्धि 4. सूक्ष्मसांपराय 5. यथाख्यात।

प्रश्न 5. असंयम किसे कहते हैं?

उत्तर : पाँच इन्द्रियों और मन को वश में नहीं करना और षट्काय जीवों की रक्षा नहीं करना अर्थात् प्राणी संयम व इन्द्रिय संयम से रहित होना असंयम है।

प्रश्न 6. असंयम कौन से गुणस्थान में रहता है?

उत्तर : असंयम एक से चार गुणस्थान में रहता है।

प्रश्न 7. असंयम कौन सी कषाय के उदय में रहता है?

उत्तर : असंयम अप्रत्याख्यानावरण व अनंतानुबन्धी कषाय के उदय में रहता है।

प्रश्न 8. असंयमी जीवों की संख्या कितनी है?

उत्तर : असंयमी जीवों की संख्या कुछ कम संसारी जीव राशि प्रमाण अर्थात् अनंत है।

प्रश्न 9. संयमासंयम किसे कहते हैं?

उत्तर : ❋ सम्यग्दर्शन के साथ 12 व्रतों से युक्तपने को संयमासंयम कहते हैं।

❋ त्रस हिंसा का त्याग करके जो संयम भाव होता है तथा स्थावर हिंसा का त्याग न होने से असंयम भाव होता है, वह संयम+असंयम= संयमासंयम कहलाता है।

❋ अप्रत्याख्यानावरण कषाय के सर्वघाती स्पर्धकों का उदयाभावी क्षय और प्रत्याख्यानावरण कषाय के सर्वघाती स्पर्धकों का उदय तथा संज्वलन कषाय के देशघाती स्पर्धकों का उदय संयमासंयम कहलाता है।

प्रश्न 10. 12 व्रत कौनसे हैं?

उत्तर : 5 अणुव्रत, [अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, परिग्रह परिमाण]
3 गुणव्रत [दिगव्रत, देशव्रत, अनर्थदण्डव्रत]
4 शिक्षाव्रत [सामायिक, प्रोषधोपवास, भोगोपभोग परिमाण, अतिथि संविभाग]

प्रश्न 11. संयमासंयम के अन्य नाम बताइए?

उत्तर : देशसंयम, विरताविरत, देशविरत ये संयमासंयम के ही नाम है।

प्रश्न 12. संयमासंयम कौन से गुणस्थान में रहता है?

उत्तर : संयमासंयम पाँचवें गुणस्थान में रहता है।

प्रश्न 13. संयमासंयम कौन सी कषाय के उदय में रहता है?

उत्तर : संयमासंयम प्रत्याख्यानावरण कषाय के उदय में रहता है।

प्रश्न 14. संयमासंयमी जीवों की संख्या कितनी हैं?

उत्तर : संयमासंयमी जीवों की संख्या पल्योपम के असंख्यातवे भाग प्रमाण है।

प्रश्न 15. संयमासंयमी मनुष्य कितने होते हैं?

उत्तर : संयमासंयमी मनुष्य 13 करोड़ हो सकते हैं।

प्रश्न 16. सामायिक संयम किसे कहते हैं?

उत्तर : सभी प्रकार के सावद्य (पाप क्रिया) योग को त्यागकर द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव में समता भाव रखना सामायिक संयम है।

प्रश्न 17. सामायिक संयम कौन से गुणस्थान में रहता है?

उत्तर : सामायिक संयम 6वें से 9वें गुणस्थान तक रहता है।

प्रश्न 18. सामायिक संयम कौन सी कषाय के उदय में रहता है?

उत्तर : सामायिक संयम बादर संज्वलन कषाय के उदय में रहता है।

प्रश्न 19. सामायिक संयमी जीवों की संख्या कितनी है?

उत्तर : इसमें 6वें से 9वें गुणस्थानवर्ती जीवों की संख्या आती है।
5,93,98,206 + 2,96,99,103 + 897 + 897 = 8,90,99,103

प्रश्न 20. छेदोपस्थापना संयम किसे कहते हैं?

उत्तर : प्रमाद के वश व्रतों में जो दोष लगे हैं उनको प्रायश्चित आदि के द्वारा फिर से व्रतों की स्थापना करना छेदोपस्थापना संयम है। छेद अर्थात् भंग होना, उपस्थापना अर्थात् पुनः शुद्ध करके स्थापित करना।

प्रश्न 21. छेदोपस्थापना संयम कौन से गुणस्थान में रहता है?

उत्तर : छेदोपस्थापना संयम 6वें से 9वें गुणस्थान तक रहता है।

प्रश्न 22. छेदोपस्थापना संयम कौन सी कषाय के उदय में रहता है?

उत्तर : छेदोपस्थापना संयम बादर संज्वलन कषाय के उदय में रहता है।

प्रश्न 23. छेदोपस्थापना संयमी जीवों की संख्या कितनी है?

उत्तर : सामायिक संयम के समान - 8,90,99,103 है।

प्रश्न 24. परिहार विशुद्धि संयम किसे कहते हैं?

उत्तर : सदाकाल हिंसारूप सावद्य के त्याग से प्राप्त विशिष्ट शुद्धता को परिहार विशुद्धि संयम कहते हैं।

प्रश्न 25. परिहार विशुद्धि संयम कौन से गुणस्थान में रहता है?

उत्तर : परिहार विशुद्धि संयम 6वें व 7वें गुणस्थान में रहता है।

प्रश्न 26. परिहार विशुद्धि संयम कौन सी कषाय के उदय में रहता है?

उत्तर : परिहार विशुद्धि संयम बादर संज्वलन कषाय के उदय में रहता है।

प्रश्न 27. परिहार विशुद्धि संयम किसको व कैसे होता है?

उत्तर : जन्म से लेकर 30 वर्ष तक सदा सुखी रहकर पुनः दीक्षा ग्रहण करके श्री तीर्थंकर केवली के पादमूल में 8 वर्ष तक प्रत्याख्यान पूर्वक प्रत्याख्यान नामक नौवें पूर्व का अध्ययन करने वाले जीव के यह संयम होता है। यह जीव तीन संध्याकालों को छोड़कर प्रतिदिन दो कोस तक गमन करता है, रात्रि को गमन नहीं करता और इसके वर्षाकाल में गमन करने का या नहीं करने का कोई नियम नहीं होता है।

प्रश्न 28. परिहार विशुद्धि संयम का काल कितना है?

उत्तर : परिहार विशुद्धि संयम का काल जघन्य-अन्तर्मुहूर्त, उत्कृष्ट-38 वर्ष कम एक कोटि पूर्व है।

प्रश्न 29. परिहार विशुद्धि संयमी जीवों की संख्या कितनी है?

उत्तर : परिहार विशुद्धि संयमी जीवों की संख्या 6997 है।

प्रश्न 30. सूक्ष्म सम्पराय संयम किसे कहते हैं?

उत्तर : जहाँ सूक्ष्म लोभ कषाय का वेदन उपशमक व क्षपक जीव करता है वहाँ सूक्ष्म साम्पराय संयम होता है।

प्रश्न 31. सूक्ष्म साम्पराय संयम कौन से गुणस्थान में होता है?

उत्तर : सूक्ष्म साम्पराय संयम 10वें गुणस्थान में होता है।

प्रश्न 32. सूक्ष्म साम्पराय संयम कौन सी कषाय के उदय में रहता है?

उत्तर : सूक्ष्म साम्पराय संयम सूक्ष्म संज्वलन लोभ कषाय के उदय में रहता है।

प्रश्न 33. सूक्ष्म साम्पराय संयमी जीवों की संख्या कितनी है?

उत्तर : सूक्ष्म साम्पराय संयमी जीवों की संख्या उपशामक 299 + क्षपक 598 = 897 होती है।

प्रश्न 34. यथाख्यात संयम किसे कहते हैं?

उत्तर : मोहनीय कर्म के संपूर्ण क्षय अथवा उपशम से आत्मा का जैसा स्वभाव है वैसा ही अनुभव होना यथाख्यात संयम है।

प्रश्न 35. यथाख्यात संयम कौन-से गुणस्थान में रहता है?

उत्तर : उपशम यथाख्यात - 11वें में, क्षायिक यथाख्यात = 12 वें से 14वें गुणस्थान तक रहता है।

प्रश्न 36. यथाख्यात संयम कौन सी कषाय के उदय में रहता है?

उत्तर : यहाँ सभी कषायों का उपशम अथवा क्षय हो जाता है, इसलिए किसी भी कषाय का उदय नहीं रहता है।

प्रश्न 37. यथाख्यात संयमी जीवों की संख्या कितनी है?

उत्तर : 11वें गुणस्थान में = 299, 12वें गुणस्थान में - 598, 13वें गुणस्थान में = 898502, 14वें गुणस्थान में - 598 कुल जीव = 8,99,997 है।

प्रश्न 38. देशविरति के 11 भेद (11 प्रतिमा) बताइए।

उत्तर : दर्शनप्रतिमा, व्रतप्रतिमा, सामायिकप्रतिमा, प्रोषधोपवासप्रतिमा, सचित्तत्यागप्रतिमा, रात्रिभुक्तित्यागप्रतिमा, ब्रह्मचर्यव्रतप्रतिमा,

आरम्भत्यागप्रतिमा, परिग्रहत्यागप्रतिमा, अनुमतित्यागप्रतिमा, उद्दिष्टत्यागप्रतिमा।

प्रश्न 39. कौन से वेद में कौन–कौन सी संयम मार्गणा पायी जाती हैं?

उत्तर : स्त्री वेद में – 4 संयम [असंयम, संयमासंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना]
पुरुष वेद में – सातों संयम। (द्रव्य से) किन्तु भाव से 5 संयम ही पाये जाते हैं।*
नपुंसक वेद में – 4 संयम (असंयम, संयमासंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना)

प्रश्न 40. परिहार विशुद्धि संयम के साथ कौन सा ज्ञान नहीं होता?

उत्तर : परिहार विशुद्धि संयम के साथ मन:पर्यय ज्ञान नहीं होता।

प्रश्न 41. संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तक के कौन–कौन सी संयम मार्गणा हो सकती हैं?

उत्तर : संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तक के असंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना, यथाख्यात संयम मार्गणा हो सकती है।

* यहाँ द्रव्य भाव से तात्पर्य है चूंकि पुरुषवेद नोवें गुणस्थान तक ही होता है और वह भाव से होता है उसमें पाँच संयम (असं., संयमासंयम, सामा., छेदो. परिहा.) पाये जाते हैं किंतु द्रव्य पुरुषवेद चौदहवें गुणस्थान तक पाया जाता है अत: सूक्ष्म सांपराय व यथाख्यात संयम को और मिलाकर द्रव्य पुरुष वेद के साथ सात संयम होते हैं।

VIII. Restraint Investigation

Q.1. What is called restraint?

Ans. To control over all the five senses and mind and to protect six kinds of body forms of living beings is restraint.

Q.2. What is called restraint investigation?

Ans. To explore soul or living beings with the help of restraint is restraint investigation.

Q.3. How many are the kinds of restraint? Tell their names.

Ans. There are seven kinds of restraint- 1. Non-restraint (asanyam), 2. Discipline cum indiscipline (sanyamasanyam), 3. Samayik (equanimity), 4.Chhedopasthaapana (repentance for maintaining restraint), 5. Parihaar vishuddhi (purificatory course), 6. Sukshm Saamparaay (subtle passion), 7. Yathakhyat chaaritra (Passionless perfect conduct).

Q.4. What is non-restraint?

Ans. Not to control over five senses and the mind and not to protect six kinds of body forms of living beings or without desisting from harming other beings and desisting from sensual pleasures is non-restraint.

Q.5. At which stage of spiritual development non-restraint is found?

Ans. Non-restrained is found from the 1st stage to 4th stages of spiritual development.

Q.6. On the rise of which passion does non-restraint occur?

Ans. Non-restraint occurs on the rise of partial vow preventing and infinite-bonding passions.

Q.7. What is the number of non-restraint beings?

Ans. The number of non-restraint beings is some less than number of worldly living beings or infinite.

Q.8. What is called discipline cum indiscipline?

Ans.

1. Observing 12 vows along with right faith is called discipline cum indiscipline.
2. Restraint after giving up violence of sub-human beings is discipline cum indiscipline.
3. Non-operational destruction of all destructive karmic super variform of partial vow preventing passion and the rise of all destructive karmic super variform of penance and self-control preventing and rise of partial destructive karmic super variform of gleaming passion is discipline cum indiscipline.

Q. 9.

Q.10. Which are twelve vows?

Ans. 5 Anuvrat (minor vows- non-violence, truth, non-stealing, celibacy, limiting possessions)

3 Supporting vows (area limiting vow, partial vow, purposeless violence limiting vow)

4 trainee's vows (equanimity, monkhood exposure vow, limit of enjoyable and repeatedly enjoyable, self-less offering to unexpected guests)

Q.11. Tell the other names of discipline cum indiscipline (sanyamaasanyam) ?

Ans. Partial restraint (desh sanyam), restrained non-restrained (viratavirat), limiting moving area (desh virat) are the names of sanyamaasanyam.

Q.12. In which stage of spiritual development does discipline cum indiscipline exist?

Ans. Discipline cum indiscipline exists in the 5th stage of spiritual development.

Q.13. In rise of which passion does discipline cum indiscipline exist?

Ans. Discipline cum indiscipline exists in the rise of renunciation obscuring.

Q.14. How much is the number of discipline cum indiscipline living beings?

Ans. The number of discipline cum indiscipline beings is innumerable part of Palyopam.

Q.15. How many are the discipline cum indiscipline human beings?

Ans. Discipline cum indiscipline human beings are 13 crore.

Q.16. What is equanimity restraint?

Ans. Giving up all kinds of sinful activities maintaining equanimity in matter, space, time, and feelings is equanimity restraint.

Q.17. In which stage of spiritual development does equanimity restraint exist?

Ans. Equanimity restraint exists from 6th to 9th stages of spiritual development.

Q.18. In the rise of which passion does equanimity restraint exist?

Ans. Equanimity restraint exists in the rise of gross gleaming passion.

Q.19. What is the number of equanimity restraint beings?

Ans. Total number of beings from 6th to 9th stage of spiritual development falls under it. 5,93,97,206 + 2,96,99,103 + 897 + 897 = 8,90,99,103.

Q.20. What is called repenting for maintaining restraint?

Ans. Repenting for the faults which are imposed on vows due to negligence or laziness and re-form them is chhedosthaapana (repenting for maintaining restraint).

Q.21. In which stage of spiritual development does chhedosthapana sanyam exist?

Ans. Chhedosthapana sanyam exists from 5th to 9th stage of spiritual development.

Q.22. In the rise of which passion does chhhedopasthapana sanyam exist?

Ans. Chhedopasthapana sanyam exists in the rise of gross gleaming passion.

Q.23. What is the number of chhedopasthapana sanyami beings?

Ans. Similar to equanimity restraint – 8,90,99,103.

Q.24. What is Parihar Vishuddhi sanyam (purificatory course restraint)?

Ans. The purity obtained by giving up regular sinful violent form is called Parihar Vishuddhi sanyam.

Q.25. In which stage of spiritual development does Parihar vishuddhi sanyam exist?

Ans. Parihar vishuddhi sanyam exists in 6th and 7th stages of spiritual development.

Q.26. In rise of which passion does Parihar vishuddhi sanyam exist?

Ans. Parihaar vishuddhi sanyam exists in the rise of gross gleaming passion.

Q.27. How and to whom does parihaar vishuddhi sanyam occur?

Ans. This sanyam occurs to the being whoby being always happy from birth to 10 years, after taking initiation againstudying pretentiously the ninth ancient text named Pratyakhyan for 8 years in the footsteps of Lord Teerthankar.This being leaving three twilight times moves for two kos every day, does not move during night and there is no rule about movement during rainy season.

Q.28. What is the duration of parihaar vishuddhi sanyam?

Ans. The lowest duration of parihaar vishuddhi sanyam is Antarmuhoort and the highest 38 years less one koti poorva.

Q.29. What is the number of beings belonging to parihaar vishuddhi sanyam?

Ans. The number of parihaar vishuddhi sanyam beings is 6997.

Q.30. What is called suksma samparaay sanyam (subtle passioned restraint)?

Ans. Where destruction of subtle greed passion is done by subsider or destroyer being, there occurs suksma samparaay sanyam (subtle passioned restraint).

Q.31. In which stage of spiritual development does suksma samparaay exist?

Ans. Suksma samparaay sanyam exists in the 10th stage of spiritual development.

Q.32. In the rise of which passion does suksma samparaay sanyam exist?

Ans. Suksma samparaay sanyam exists in the rise of subtle gleaming greed passion (suksma sanjvalan lobh kashay).

Q.33. What is the number of beings belonging to suksma samparaay sanyam(subtle passioned restraint)?

Ans. The number of suksma samparaay beings is– subsider= 299 + destroyer= 598 = 897.

Q.34. What is called Yathakhyat sanyam (revelation of absolute conduct)?

Ans. To experience the natural nature of soul owing to complete decay or destruction of deluding karma is called yathakhyat sanyam.

Q.35. In which stage of spiritual development does yathakhyat sanyam exist?

Ans. Subsidence yathakhyat sanyam exists in 11th and destructive yathakhyat sanyam exists from 12th to 14th stages of spiritual development.

Q.36. In the rise of which passion does yathakhyat sanyam exist?

Ans. Up to this stage, subsidence or destruction of all the passions has already taken place, therefore, there is no question of rise of any remaining passion.

Q.37. What is number of yathakhyat sanyam beings?

Ans. In the 11th stage of spiritual development = 299, 12th stage of spiritual development = 598, 13th stage of spiritual development= 898502, 14th stage of spiritual development= 598, total no. of yathakhyat sanyami beings= 8,99,997.

Q.38. Tell eleven kinds of partial abstinence (desh virati).

Ans. Darshan Pratima (Faith stage of renunciation), Vrat Pratima (vow stage of renunciation), samayik Pratima (equanimity stage of renunciation), Proshadhopavas Pratima (Fasting regularly stage of renunciation), sachitta tyag Pratima (refraining from eating uncooked vegetable stage of renunciation), Ratri bhukti tyag Pratima (Avoiding eating at night time stage of renunciation), Brahmcharya vrat Pratima (Celebacy vow renunciation), Aarambha tyaag Pratima (Giving up worldly engagements and occupation stage of renunciation), Parigrah tyag Pratima (Non-possession stage of renunciation), Anumati tyag Pratima (Refraining from giving up advice in family or business related matters type renunciation), Udhisht tyag Pratima (Not to consume food specially made for him type of renunciation).

Q.39. Which sanyam maargana (restraint investigation) is found in which gender?

Ans. In feminine gender- 4 sanyam (non-restraint, restraint cum non-restrant, equanimity, repentance for maintaining restraint).

In masculine gender- all the seven kinds of restraints.

In Neuter gender- 4 sanyam (asanyam, sanyamaasanyam, samayik, chhedosthapana).

Q.40. Which kind of knowledge doe not occur with purificatory course restraint (Parihar vishuddhi sanyam)?

Ans. Telepathy knowledge does nor with Parihar vishuddhi sanyam (purificatory course restraint).

Q.41. Which kind of Sanyam Margana (restraint investigation)can occur with conscious incomplete five sensed being?

Ans. Asanyam (non-resraint), Samayik (equanimity), chhedopasthapana (repentance for maintaining restraint), yathakhyat sanyam (revelation of absolute conduct) can occur.

IX. दर्शन मार्गणा

प्रश्न 1. दर्शन किसे कहते हैं?

उत्तर : ❋ विषय और विषयी का सन्निपात [मेल] होने पर ज्ञान के पूर्व जो सामान्य आभास होता है उसे दर्शन कहते हैं।

❋ सामान्य-विशेषात्मक पदार्थों का विकल्प रहित स्वरूप मात्र जैसा है वैसा जीव के साथ स्वपरसत्ता का अवभासन दर्शन है।

❋ जो देखता है, जिसके द्वारा देखा जाता है या देखना मात्र दर्शन है।

प्रश्न 2. दर्शन मार्गणा किसे कहते हैं?

उत्तर : दर्शन मार्गणा के द्वारा जीवों की खोज करना दर्शन मार्गणा है।

प्रश्न 3. दर्शन मार्गणा के कितने भेद हैं?

उत्तर : दर्शन मार्गणा के 4 भेद हैं- (1) चक्षुदर्शन, (2) अचक्षुदर्शन, (3) अवधिदर्शन, (4) केवलदर्शन।

प्रश्न 4. चारों प्रकार के दर्शनों को परिभाषित कीजिए।

उत्तर : चक्षु दर्शन - चक्षु इन्द्रिय से होने वाले सामान्य अवलोकन को चक्षु दर्शन कहते हैं।

अचक्षु दर्शन - चक्षु इन्द्रिय के अलावा अन्य इन्द्रिय व मन से होने वाले सामान्य अवलोकन को अचक्षु दर्शन कहते हैं।

अवधिदर्शन - अवधिज्ञान से पहले पदार्थों का जो सामान्य अवलोकन होता है उसे अवधिदर्शन कहते हैं।

केवलदर्शन - केवलज्ञान के साथ पदार्थों का जो सामान्य अवलोकन होता है उसे केवलदर्शन कहते हैं।

प्रश्न 5. कौन सा दर्शन कौन से गुणस्थान तक होता है?

उत्तर : चक्षु व अचक्षु दर्शन - पहले से 12वें गुणस्थान तक।

अवधिदर्शन - 4 से 12 गुणस्थान तक, केवलदर्शन - 13वें, 14वें गुणस्थान में और सिद्धों में होता है।

प्रश्न 6. कौन से दर्शन के जीवों की संख्या कितनी-कितनी होती है?

उत्तर : चक्षु दर्शनी जीवों की संख्या - असंख्यात जगत् श्रेणी प्रमाण

अचक्षु दर्शनी जीवों की संख्या - अनन्त

अवधि दर्शनीयों की संख्या - पल्य का असंख्यातवाँ भाग

केवल दर्शनीयों की संख्या - अनंत

प्रश्न 7. अवधिदर्शन की क्या विशेषता है?

उत्तर : मिथ्यात्व के साथ कुअवधिज्ञान तो हो सकता है लेकिन कुअवधि दर्शन नहीं होता है।

प्रश्न 8. चक्षु व अचक्षु दर्शन की क्या विशेषता है?

उत्तर : ये दोनों दर्शन मतिज्ञान के पहले ही होते हैं।

Perception/ Faith (System of Philosophy) Investigation (IX)

Q.1. What is darshan (perception/ faith)?

Ans. The general idea which is formed before getting proper knowledge on the basis of mixing up of the subject and the subject matter is called darshan (perception).

Doubt free nature of general and specific substances exactly as it is, in the same manner sensing of self and alien existence of beings as it is, is

The one who sees, seen by or merely seeing is dashan.

Q.2. What is called darshan maragana?

Ans. Exploring living beings with the help of seeing, observing or faith is darshan margana.

Q.3. How many are the kinds of darshan?

Ans. There are four kinds of darshan- 1. Chakshu darshan (Seeing by eyes) (ocular perception), 2. Achakshu darshan (Non-ocular perception), 3. Avadhi darshan (Clairvoyant perception), 4. Keval darshan (Perfect perception).

Q.4. Define all four kinds of darshan.

Ans. **Chakshu darshan** (ocular perception)- General observation done by eyes is called chakshu darshan. **Achakshu darshan**(non-ocular perception)- General observation done by mind and the senses other than eyesis called achakshu darshan. **Avadhi darshan** (clairvoyant perception)- The general observation of substances before clairvoyance is called clairvoyant perception.**Keval darshan** (Perfect perception)- The general observation of substances along with omniscience is called Perfect perception.

Q.5. Which darshan occurs up to which stage of spiritual development?

Ans. Chakshu and achakshu darshan (ocular and non-ocular perceptions)- from 1st to 12th stage of spiritual development, Avadhi darshan (clairvoyant perception)- 4th to 12th stages of spiritual development. Keval darshan (Perfect perception)- 13th, 14th and liberated souls.

Q.6. Which perception has what number of beings?

Ans. Number of beings belonging to ocular perception- innumerable length of universe measurement.

Number of beings belonging to Non-ocular perception- infinite.

Number of beings belonging to clairvoyant perception- innumerable part of palya.

Number of beings belonging to perfect perception- infinite.

Q.7. What is the specialty of wrong clairvoyant perception?

Ans. Wrong clairvoyance knowledge can occur with wrong-belief but wrong clairvoyant perception cannot.

Q.8. What is the specialty of ocular and non-ocular perception?

Ans. These two perceptions occur only before cognitive knowledge.

X. लेश्या मार्गणा

प्रश्न 1. लेश्या किसे कहते हैं?

उत्तर : ❊ जीव जिसके द्वारा पाप और पुण्य को स्वयं से (आत्मा से) लिप्त करता है उसे लेश्या कहते हैं।

❊ कषायों से अनुरंजित योगों की परिणति को लेश्या कहते हैं।

प्रश्न 2. लेश्या मार्गणा किसे कहते हैं?

उत्तर : लेश्या के द्वारा जीवों की खोज करना लेश्या मार्गणा है।

प्रश्न 3. कषाय व योग से कितने व कौन-कौन से कर्मबंध होते हैं?

उत्तर : कषाय व योग से 4 प्रकार के कर्मबंध होते हैं - प्रकृति, प्रदेश, स्थिति, अनुभाग।

प्रश्न 4. योगों से कौन से कर्मबंध होते हैं?

उत्तर : योगों से प्रकृति बंध व प्रदेश बंध होते हैं।

प्रश्न 5. कषायों से कौन से कर्मबंध होते हैं?

उत्तर : कषायों से स्थिति बंध व अनुभाग बंध होते हैं।

प्रश्न 6. लेश्याओं के कितने भेद हैं?

उत्तर : लेश्याओं के दो भेद हैं- (1) द्रव्य लेश्या, (2) भाव लेश्या।

प्रश्न 7. द्रव्य लेश्या किसे कहते हैं?

उत्तर : वर्ण नामकर्म के उदय से जो शरीर का वर्ण होता है उसे द्रव्य लेश्या कहते हैं।

प्रश्न 8. भाव लेश्या किसे कहते हैं?

उत्तर : ❊ मोहनीय कर्म के उदय, क्षयोपशम, उपशम या क्षय से जो जीव के प्रदेशों की चंचलता होती है उसे भाव लेश्या कहते हैं।

❊ आत्मा की परिणति [अंतरंग परिणामों] को भाव लेश्या कहते हैं।

प्रश्न 9. द्रव्य लेश्या के कितने भेद हैं?

उत्तर : द्रव्य लेश्या के छः भेद हैं- कृष्ण, नील, कापोत, पीत, पद्म, शुक्ल। इनमें से प्रत्येक के उत्तर भेद इन्द्रियों से प्रकट होने की अपेक्षा से - संख्यात भेद हैं, स्कंधों के भेदों की अपेक्षा से - असंख्यात भेद हैं, परमाणु भेद की अपेक्षा से - अनंत व अनंतानंत भेद हैं।

प्रश्न 10. भाव लेश्या के कितने भेद हैं?

उत्तर : भाव लेश्या के असंख्यात लोक प्रमाण भेद हैं।

प्रश्न 11. वर्ण की अपेक्षा कौन सी लेश्या का कौन सा वर्ण होता है?

उत्तर : कृष्ण लेश्या का - भ्रमर के समान काला, नील लेश्या का - नीलम [नीलमणि] के समान।

कापोत लेश्या का - कबूतर के समान, पीत लेश्या का - स्वर्ण के समान।

पद्म लेश्या का - कमल के समान, शुक्ल लेश्या का - शंख के समान वर्ण होता है।

प्रश्न 12. किस गति में कौन सी द्रव्य लेश्या होती है?

उत्तर : ❊ सभी नारकी-कृष्ण वर्ण के होते हैं।

❊ कल्पवासी देवों की - जैसी भाव लेश्या होती है, वैसी ही द्रव्य लेश्या होती है।

❊ भवनत्रिक देवों की व सभी देवों का विक्रिया से बना शरीर, मनुष्य व तिर्यंचों (कर्मभूमिज) के छहों लेश्या होती हैं।

❊ उत्तम भोगभूमिज मनुष्य व तिर्यंचों के - सूर्य के समान वर्ण

* मध्यम भोगभूमिज मनुष्य व तिर्यंचों के - चन्द्र के समान वर्ण

* जघन्य भोगभूमिज मनुष्य व तिर्यंचों के - हरित वर्ण

* बादर पृथ्वी व वनस्पति कायिकों के - छहों लेश्या

* बादर अपकायिक जीवों के - शुक्ल लेश्या [शुक्ल वर्ण]

* बादर अग्निकायिक जीवों के - पीत लेश्या [पीत वर्ण]

* बादर वायुकायिक जीवों में घनोदधिवात वलय में - गौमूत्र के समान वर्ण

* घनवात वलय में - मूँग के समान वर्ण

* तनुवात में - वर्ण प्रकट नहीं है, अव्यक्त है।

* सभी सूक्ष्म जीवों के - कापोत वर्ण।

* सभी जीवों का विग्रह गति में - शुक्ल वर्ण।

*मिश्र शरीरों में [पर्याप्ति प्रारम्भ के प्रथम समय से शरीर पर्याप्ति की पूर्णता तक] - कापोत लेश्या होती है।

प्रश्न 13. कौन सी लेश्याएँ शुभ हैं, कौन सी अशुभ?

उत्तर : शुभ लेश्याएँ - पीत, पद्म, शुक्ल।

अशुभ लेश्याएँ - कृष्ण, नील, कापोत।

प्रश्न 14. कृष्ण आदि छह लेश्याओं को उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए?

उत्तर : एक बार छह पथिक वन के मध्य में मार्ग से भ्रष्ट होकर फलों से पूर्ण किसी वृक्ष को देखकर अपने-अपने मन में विचार करते हैं और कहते हैं कि -

लेश्या	विचार एवं वचन
1. कृष्ण	वृक्ष को मूल से उखाड़कर फल खाऊँगा।

2. नील	वृक्ष को स्कंध से काटकर फल खाऊँगा।
3. कापोत	वृक्ष की बड़ी-बड़ी शाखाओं को काटकर फल खाऊँगा।
4. पीत	वृक्ष की छोटी-छोटी शाखाओं को काटकर फल खाऊँगा।
5. पद्म	वृक्ष के फलों को तोड़कर खाऊँगा।
6. शुक्ल	वृक्ष से स्वयं टूटे फलों को खाऊँगा।

प्रश्न 15. कृष्ण लेश्या का लक्षण क्या है?

उत्तर : कृष्ण लेश्या वाला जीव प्रचंड तीव्र क्रोधी, तीव्र बैरी, विषयों में लम्पटता, आलस्य से युक्त, धर्म और दया से रहित, दुष्ट, मानसिक असंतोषी, तामस प्रवृत्ति वाले होते हैं।

प्रश्न 16. नील लेश्या का लक्षण क्या है?

उत्तर : नील लेश्या वाला जीव मंदबुद्धि वाला, आलस्य से भरा हुआ, विषयाभिलासी, अति निद्रालु, धन-धान्यादिक में अतितीव्र लालसा, झूठ बोलना, पर की निंदा करना, दुःख देना, शोक व भय से ग्रसित होना, दूसरों का अपमान करना आदि लक्षण पाये जाते हैं।

प्रश्न 17. कापोत लेश्या का लक्षण क्या है?

उत्तर : मात्सर्य (ईर्ष्या भाव), पैशून्य (चुगली), आत्मप्रशंसा करना, युद्ध में मरने के भाव, स्तुति करने वालों पर संतुष्ट होकर उन्हें खूब दान देना आदि लक्षण पाये जाते हैं।

प्रश्न 18. पीत लेश्या का लक्षण क्या है?

उत्तर : कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य, सेव्य-असेव्य, कार्य-अकार्य, सबमें समदर्शी, दान देने में प्रीतिवंत, मन-वचन-काय से कोमल आदि लक्षण पाये जाते हैं।

प्रश्न 19. पद्म लेश्या का लक्षण क्या है?

उत्तर : त्यागी, भद्रपरिणामी, शुद्ध भाव, कष्ट व उपद्रव को सहने वाला, बुद्धिमानी, सात्विक आहार करने वाला, देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति में रुचि आदि लक्षण पाये जाते हैं।

प्रश्न 20. शुक्ल लेश्या का लक्षण क्या है?

उत्तर : पक्षपात से रहित, सर्वजीवों से मैत्री भाव, समता भाव, पाप कार्यों में उदासीनता, इष्टानिष्ट में राग-द्वेष से रहित, मोक्ष मार्ग में रुचि आदि शुभ लक्षण पाये जाते हैं।

प्रश्न 21. कौन सी लेश्या का कौन जीव स्वामी है?

उत्तर : नारकी जीव - तीनों अशुभ लेश्याओं के,
तिर्यंच व मनुष्य - छहों लेश्याओं के, भवनत्रिक देव-अशुभ लेश्या व पीत के तथा वैमानिक देव - तीनों शुभ लेश्याओं के स्वामी होते हैं।

प्रश्न 22. नरकों में लेश्याएँ किस प्रकार से पायी जाती हैं?

उत्तर : प्रथम पृथ्वी में - जघन्य कापोत, दूसरी में - मध्यम कापोत, तीसरी में - उत्कृष्ट कापोत, जघन्य नील, चौथी में - मध्यम नील, पंचम में - उत्कृष्ट नील, जघन्य कृष्ण, षष्ठम् में - मध्यम कृष्ण, सप्तम पृथ्वी में - उत्कृष्ट कृष्ण लेश्या पायी जाती है।

प्रश्न 23. तिर्यंचों व मनुष्यों में लेश्याएँ किस प्रकार से पायी जाती हैं?

उत्तर : * एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय, अपर्याप्तक असंज्ञी तिर्यंचों में, लब्ध्यपर्याप्तक कर्मभूमिया मनुष्य व संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचों में, मिथ्यात्व-सासादन गुणस्थानवर्ती निर्वृत्यपर्याप्तक मनुष्य व तिर्यंचों में - तीनों अशुभ लेश्या।
पर्याप्तक असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचों में - तीन अशुभ व पीत लेश्या।

नोट- गोम्मटसार जीवकाण्ड गाथा नं.-530

* पर्याप्तक कर्मभूमिज तिर्यंच व मनुष्यों में - छहों लेश्याएँ।
* निर्वृत्यपर्याप्तक सम्यग्दृष्टि भोगभूमिया तिर्यंच व मनुष्यों में - जघन्य कापोत।
* पर्याप्तक भोगभूमिज जीवों में - तीन शुभ लेश्याएँ पायी जाती हैं।

प्रश्न 24. देवों में लेश्याएँ किस प्रकार पायी जाती हैं?

उत्तर : * अपर्याप्त भवनत्रिक देवों में - तीन अशुभ लेश्याएँ।
* पर्याप्त भवनत्रिक देवों में - जघन्य पीत लेश्या।
* वैमानिक पर्याप्त व अपर्याप्त देवों में - सौधर्म-ऐशान में- मध्यम पीत, सानत कुमार-माहेन्द्र स्वर्ग में - उत्कृष्ट पीत व जघन्य पद्म, ब्रह्म स्वर्ग से महाशुक्र तक - मध्यम पद्म, शतार-सहस्रार स्वर्ग में - उत्कृष्ट पद्म व जघन्य शुक्ल, आनत स्वर्ग से अच्युत स्वर्ग में, नवग्रेवैयक में - मध्यम शुक्ल, नव अनुदिश व 5 अनुत्तर में - उत्कृष्ट शुक्ल लेश्या पायी जाती है।

प्रश्न 25. गुणस्थान की अपेक्षा से कौन सी लेश्या के स्वामी कौन होते हैं?

उत्तर : कृष्ण, नील, कापोत लेश्या - एक से चार गुणस्थान तक।
पीत, पद्म लेश्या - एक से सात गुणस्थान तक।
शुक्ल लेश्या - एक से तेरह गुणस्थान तक।
लेश्या से रहित - 14वें गुणस्थान में।

प्रश्न 26. कौन सी लेश्या में कितने जीव पाये जाते हैं?

उत्तर : * कृष्ण, नील, कापोत लेश्या में - अनंतानंत जीव [इनमें भी सबसे ज्यादा जीव कृष्ण लेश्या में, इससे कम नील लेश्या में, सबसे कम कापोत लेश्या में होते हैं]

❊ पीत, पद्म, शुक्ल लेश्या में – असंख्यात जीव [इनमें भी सबसे ज्यादा जीव पीत लेश्या में, इससे कम पद्म लेश्या में, सबसे कम शुक्ल लेश्या में होते हैं]

शुक्ल लेश्या में – पल्य के असंख्यातवें भाग जीव पाये जाते हैं।

प्रश्न 27. कौन सी लेश्या का काल कितना है?

उत्तर : ❊ सभी लेश्या का जघन्य काल – अन्तर्मुहूर्त।

❊ कृष्ण व शुक्ल लेश्या का उत्कृष्ट काल – कुछ अधिक 33 सागर।

❊ नील लेश्या का उत्कृष्ट काल – कुछ अधिक 17 सागर।

❊ कापोत लेश्या का उत्कृष्ट काल – कुछ अधिक 7 सागर।

❊ पीत लेश्या का उत्कृष्ट काल – कुछ कम 2½ सागर।

❊ पद्म लेश्या का उत्कृष्ट काल – कुछ कम 18½ सागर है।

प्रश्न 28. कौन सी लेश्या का कितना अन्तर है?

उत्तर : सभी लेश्या का जघन्य अन्तर = अन्तर्मुहूर्त।

❊ कृष्ण लेश्या का उत्कृष्ट अन्तर = 8 वर्ष + 10 अन्तर्मुहूर्त कम 1 पूर्व कोटि + 33 सागर

❊ नील लेश्या का उत्कृष्ट अन्तर = 8 वर्ष + 8 अन्तर्मुहूर्त कम 1 पूर्व कोटि + 33 सागर

❊ कापोत लेश्या का उत्कृष्ट अन्तर = 8 वर्ष + 6 अन्तर्मुहूर्त कम 1 पूर्व कोटि + 33 सागर

❊ पीत लेश्या का उत्कृष्ट अन्तर = आवली के असंख्यातवें भाग पुद्गल परावर्तन स्वरूप अनंत काल+संख्यात हजार वर्ष+6 अन्तर्मुहूर्त

❊ पद्म लेश्या का उत्कृष्ट अन्तर = आवली के असंख्यातवें भाग पुद्गल परावर्तन स्वरूप अनंत काल + संख्यात हजार वर्ष + (2 सागर + पल्य का असंख्यातवां भाग) + 5 अन्तर्मुहूर्त

❊ शुक्ल लेश्या का उत्कृष्ट अन्तर = असंख्यात पुद्गल परावर्तन + संख्यात हजार वर्ष + (2 सागर + पल्य का असंख्यातवां भाग) + 7 अन्तर्मुहूर्त।

प्रश्न 29. लेश्या कौन सा भाव है?

उत्तर : लेश्या औदयिक भाव है।

प्रश्न 30. लेश्या रहित जीव कौन होते हैं?

उत्तर : लेश्या रहित 14वें गुणस्थानवर्ती जीव व सिद्ध भगवान होते हैं।

Chapter 10

Investigation of Attitudes of Beings

(Leshya Margana)-X

Q.1. What is called leshya (aura/ colouration)?

Ans. By which the being indulges self (soul) with sins or virtues is called aura or coloration.

The culmination of the vibrations coloured with passions is leshya (aura/ coloration)

Q.2. What is called investigation of attitudes of beings?

Ans. To explore beings with the help of aura is leshya margana (investigation of attitudes of beings).

Q.3. How many and what kind of karmic bonds take place with passions and vibrations?

Ans. There are four kinds of karmic bondage take place with passions and vibrations- Configurational karmic bondage (prakruti), Karmic space-pointel bondage(Pradesh), Durational karmic bondage (sthiti), Fruition karmic bondage (anubhag).

Q.4. Which karmic bondage takes place with vibrations?

Ans. Vibrations form Prakruti and Pradesh bandh (Configurational and karmic space pointel bonds).

Q.5. Which karmic binds take place with passions?

Ans. Passions form Durational and fruition karmic bonds.

Q.6. How many kinds are of aura?

Ans. There are two kinds of aura- 1. Dravya leshya (physical aura), 2. Bhaava leshya (Volitional aura).

Q.7. What is called physical aura?

Ans. With the rise of color body karma, there is certain color of body which is called Physical aura.

Q.8. What is called Bhaav Leshya (volitional aura)?

Ans. The fickleness in the space points of the being due to rise, annihilation cum subsidence, subsidence or destruction is called bhaav leashya (volitional aura).

The maturity of the soul (inner change of state) is called Bhaav lashya (volitional aura).

Q.9. How many are the kinds of dravya leshya (physical aura)?

Ans. There six kinds of physical aura- black, blue, grey, yellow, pink, white. Each of these has post kinds in respect of appearance from the senses – numerable kinds, in respect of kinds of molecules – innumerable kinds, from atomic point of view- infinite and infinite times of infinite kinds.

Q.10. How many kinds are of volitional aura (bhaav leshya)?

Ans. There are innumerable universe measurement kinds of volitional aura.

Q.11. In respect of colors, which aura has which color?

Ans. Krashna leshya – black like bumble-bee, neel leshya- blue like sapphire.

Kapot leshya- grey like pigeon, peet leshya- yellow like gold.

Padma leshya- pink like lotus, Shukla leshya- white like conch.

Q.12. Which destiny has which kind of aura?

Ans. A. All hellish beings- krashna leshya

B. Heavenly celestial beings- as it is volitional aura so it is physical aura

C. All residential celestial beings and transformation bodies of celestial beings, human beings and sub-human beings all have all the six auras.

D. Human beings and sub-human beings dwelling in the superior land of enjoyment- aura same as the Sun

E. Human beings and sub-human beings dwelling in the land of medium land of enjoyment- aura same as Moon

F. Human beings and sub-human beings dwelling in the lowest land of enjoyment – Green aura

G. Gross earth bodied and botanical bodied beings- all six auras

H. Gross water bodied beings – white aura (white color)

I. Gross fire bodied beings – peet aura (yellow color)

J. Gross air bodied beings in humid atmosphere – same as cow-urine color

K. Beings in Ghanvaat (atmosphere) – aura like green pulse

L. Beings in thin air covering of the universe- aura is not clear, unexpressed

M. All micro beings- kapot leshya (grey aura)

N. All beings in transmigrated body form- Shukla aura (white color)

O. All mixed beings (From the begning of complete development of body to the completetion of it) – Kapot leshya (grey colour).

Q.13. Which auras are auspicious and which are inauspicious?

Ans. Auspicious auras – Yellow, Pink, White

Inauspicious auras – black, blue, grey.

Q.14. Explain with examples black etc. all the six auras?

Ans. Once six visitors passing through a forest diverted from their path and seeing a tree laden with fruits start thinking separately –

Aura (color)	Thought occurring in mind and the statement
Krishna	I will eat fruits uprooting the tree.
Blue	I will cut the tree at stem and eat fruits.
Grey	I will cut all the big branches of the tree and eat fruits.

Yellow	I will cut all the small branched of the tree and eat fruits
Pink	I will eat fruits plucking from the tree.
White	I will eat the fruits fallen from the tree.

Q.15. What is the symptom of Krishna aura?

Ans. The being belonging to Krishna leshya is fiercely angry, intense hater, lustful in pleasures, full of laziness, devoid of righteousness and mercy, wicked, mentally dissatisfied, dark natured.

Q.16. What is the symptom of neel leshya?

Ans. The being belonging to neel leshya is mentally weak, full of laziness, desirous of pleasures, sleepy, strongly desirous of grains, cattle and wealth, liar, denigrator, pain causer, afflicted with fear and grief, derogatory.

Q.17. What is the symptom of kapot leshya?

Ans. In the being belonging to Kapot leshy following symbols are found- jealous, back biter, self-appreciative, thinker of self-killing in battle, good donor to his worshippers or sycophants.

Q.18. What is the symptom of peet leshya?

Ans. Equanimity in duty- without duty, consumable-unconsumable, work- without work; fond of donation giving, soft in mind, speech and body etc symptoms are found in peet leshya.

Q.19. What is the symbol of padma leshya?

Ans. The symptoms of padma leshya being is abdicator, auspicious natured soul, purity of thoughts, tolerance of pains and disturbances/ misfortunes, wise, genuine food taker, interest in supreme beings, scriptures and preceptor etc. are found in the beings belonging to padma leshya.

Q.20. What is the symbol of Shukla leshya (white aura)?

Ans. Free of partiality, friendly to all beings, sense of equality, disinterest in sinful deeds, free of attachment and aversion

in desired and undesired, interest in salvation etc. auspicious symptoms are found in beings belonging to Shukla leshya.

Q.21. Which is the master of which leshya?

Ans. Hellish beings – of all the three inauspicious leshyas,

Human and sub-human beings – all the six leshyas,

Residential celestial beings – inauspicious leshya,

Heavenly celestial beings – all the three auspicious leshyas.

Q.22. How are the leshyas found in various hells?

Ans. In the first Prithvi – the lowest grey, in the second – medium grey, in the third – the highest grey, the lowest blue, in the fourth – medium blue, in the fifth – the highest blue, the lowest black, in the sixth – medium black, in the seventh – the highest black aura are found.

Q.23. How are leshyas found in human beings and sub-human beings?

Ans. One sensed, mutilated, incomplete unconscious sub-human beings, absolutely non-developable human beings dwelling in land of action and five sensed conscious sub-humans, wrong faith- downfall second stage of spiritual development placed, completed formative senses human beings and sub-human beings- all the three inauspicious leshyas are found.

Five sensed unconscious completed sub-human beings – Three inauspicious and yellow leshyas,

Completed human and sub- human beings of land of action – all the six leshyas,

Completing right faithed human and sub-human beings of land of enjoyment- the lowest kapot (grey) leshya,

Completed beings of land of enjoyment – three inauspicious leshyas are found.

Q.24. How are leshyas found in celestial beings?

Incomplete residential celestial beings – three inauspicious leshyas (auras),

Complete residential celestial beings – the lowest peet leshya (yellow aura)

Complete and incomplete empyrean celestial beings – First and second heaven celestial beings – medium peet leshya (medium yellow aura), celestial beings of third and fourth heaven – the highest- peet leshya and the lowest – pink leshya, from Brahm swarg to Mahashukra (from fifth heaven beings to tenth heaven beings) – medium pink leshya, Sataar-Sahastraar swarg (celestial beings of 11^{th} and 12^{th} heaven) – the highest- pink leshya, the lowest- white, celestial beings of 13^{th} to 16^{th} heavens and neck dwellings- medium Shukla leshya (white), celestial beings of nav anudish (sub-directional heavens) and five excellents – the highest Shukla leshya (white) are found.

Q.25. Which leshay has which master in respect to stages of spiritual development?

Ans. Krishna, neel, kaapot leshya (black, blue and grey auras)- from 1^{st} to 4^{th} stage of spiritual development,

Peet, padma leashya (yellow and pink aura)- from 1^{st} to 7^{th} stages of spiritual development,

Shukla leshya (white aura) – from 1^{st} to 13^{th} stages of spiritual development,

Free of any leshya (aura) – 14^{th} stage of spiritual development are found.

Q.26. How many beings are found in which leshya (aura)?

Ans. In Krishna, neel, kaapot leshyya (black, blue, grey auras) – infinite times infinite beings (among the highest number is in black, less than it in blue, and the lowest in grey aura),

Peet, padma, Shukla leshya – innumerable beings (among them the highest in number is in yellow, less than it in pink, and the least are in white aura are found).

Q.27. What is the duration of which leshya (aura)?

Ans. The lowest duration of all leshyas (all kinds of auras) is Antarmuhoorta (less tah 48 minutes),

The highest duration of krihsna and Shukla leshyas (black and white auras) is some more than 33 sagar

The highest duration of neel leshya (blue aura) is some more than 17 sagar,

The highest duration of kaapot leshya (grey aura) is some more than 7 sagar,

The highest duration of peet leshya (yellow aura) is some less than 2 and half sagar,

The highest duration of padma leshya (pink aura) is some less than 18 and half sagar.

Q.28. Which leshya has what difference?

Ans. The highest difference of all the leshyas (auras)- Antarmuhoorta

The highest difference of Krishna leshyas (black auras) = 8 years + 10 antarmuhoort less 1 purva koti + 33 sagar,

The highest difference of neel leshyas (blue auras) = 8 years + 8 antarmuhoort less 1 purva koti + 33 sagar,

The highest difference of kaapot leshyas (grey auras) = 8 years + 8 antarmuhoort less 1 purva koti + 33 sagar,

The highest difference of peet leshyas (yellow auras) = Innumerable part of Avali (time of blinking of an eye) body form due to transformation infinite duration + numerable thousand years + 6 antarmuhoort,

The highest difference of padma leshya (pink aura) = Innumerbale part of Avali (time of blinking an eye) body form due to transformation infinite duration + numerable thousand years + (2 sgar + innumerable part of palya) + 5 antarmuhoorta

The highest difference of Shukla leshya (white aura) = innumerable matter transformation + numerable thousand years + (2 sagar + innumerable part of palya) + 7 antarmuhoorta.

Q.29. What kind of disposition is leshya (aura/ coloration)?

Ans. Leshya (aura) is a feeling developed by karmic fruition.

Q.30. Which beings are free of leshya (aura)?

Ans. The beings belonging to the 14th stage of spiritual development and liberated souls (siddha bhagwan) are leshya (aura) free.

XI. भव्य मार्गणा

प्रश्न 1. भव्य किसे कहते हैं?

उत्तर : जिन जीवों में सम्यग्दर्शन प्राप्त करने की योग्यता पायी जाती है तथा संसार का विच्छेद करने की सामर्थ्य जिनके अन्दर है वे भव्य कहलाते हैं।

प्रश्न 2. भव्य मार्गणा किसे कहते हैं?

उत्तर : भव्य व अभव्य के द्वारा जीवों की खोज करना भव्य मार्गणा है।

प्रश्न 3. भव्य जीवों के कितने भेद हैं?

उत्तर : भव्य जीवों के तीन भेद हैं- (1) निकटभव्य, (2) दूरभव्य, (3) दूरानुदूर भव्य।

प्रश्न 4. निकट भव्य किसे कहते हैं?

उत्तर : जो जीव अल्पकाल में ही मुक्ति को प्राप्त करने योग्य हो उन्हें निकटभव्य कहते हैं। जैसे - बंध्यापने के दोष से रहित स्त्री जो योग्य सामग्री मिलने पर पुत्र उत्पन्न करने की योग्यता रखे।

प्रश्न 5. दूरभव्य किसे कहते हैं?

उत्तर : जो जीव बहुत काल में मुक्ति को प्राप्त करने योग्य हो उन्हें दूरभव्य कहते हैं।

प्रश्न 6. दूरानुदूर भव्य किसे कहते हैं?

उत्तर : जो जीव अनंतानंत काल के बाद भी मुक्ति को प्राप्त नहीं करेंगे अथवा जिन्हें मुक्ति प्राप्ति के साधन मिलेंगे ही नहीं उन्हें दूरानुदूर भव्य कहते हैं।

* जैसे - विधवा स्त्री जो पुत्र उत्पत्ति की योग्यता होने पर भी कभी पुत्र उत्पन्न नहीं कर सकती।
* जैसे - कई सुवर्ण सहित पाषाण ऐसे होते हैं उनके कभी भी मैल के नाश करने की सामग्री नहीं मिलती, वैसे ही कई भव्य

ऐसे हैं जिनके कभी भी कर्ममल नाश करने की सामग्री नियम से नहीं होती है।

प्रश्न 7. अभव्य किसे कहते हैं?

उत्तर : जिन जीवों में सम्यग्दर्शन आदि मुक्ति को प्राप्त करने की योग्यता नहीं पायी जाती है, भले ही इन जीवों को मुक्ति प्राप्ति के साधन मिल जाए फिर भी मुक्ति को प्राप्त नहीं होंगे ऐसे जीव अभव्य कहलाते है।

जैसे - बंध्या स्त्री कभी पुत्र उत्पन्न नहीं कर सकती।

प्रश्न 8. सिद्ध जीव भव्य होते हैं या अभव्य?

उत्तर : जो जीव कुछ नवीन ज्ञानादिक अवस्था को प्राप्त होने वाले नहीं हैं इसलिए भव्य भी नहीं हैं और अनंतचतुष्टय रूप हुए हैं इसलिए अभव्य भी नहीं हैं, ऐसे मुक्ति सुख के भोक्ता अनंत संसार से रहित हुये वे जीव भव्य भी नहीं हैं और अभव्य भी नहीं हैं, जीवत्व पारिणामिक के धारक हैं।

प्रश्न 9. भव्य व अभव्य जीवों के कौन-कौन से गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : भव्य जीवों के 1 से 14 गुणस्थान हो सकते हैं, अभव्य जीव नियम से मिथ्यादृष्टि ही होते हैं।

प्रश्न 10. भव्य व अभव्य जीवों की संख्या कितनी है?

उत्तर : अभव्य जीव = जघन्य युक्तानन्त प्रमाण है।
भव्य जीव = संपूर्ण जीव राशि - अभव्य राशि [संपूर्ण संसारी जीवराशि में से अभव्य राशि का प्रमाण घटाने पर जो शेष रहे]

।। भव्य मार्गणा समाप्त ।।

Investigation into beings Worthy of Liberation-XI

Q.1. What is called bhavya?

Ans. The bings in whom the ability and quality of obtaining right faith is found and who have the capability of worldly detachment are called bhavya (worthy of liberation).

Q.2. What is called bhavya margana (investigation of worthy of liberation)?

Ans. To explore beings through capable and incapable for liberation is bhavya margana.

Q.3. How many are the kinds of beings worthy of liberation (bhavya jeev)?

Ans. There are three kind of beings worthy of liberation- 1. Worthy of liberation in near future, 2. Worthy of liberation at far time, 3. Worthy of liberation at distant time.

Q.4. Who are called Nikat bhavya?

Ans. The beings who are able to get liberation in near future, are called nikat bhavya. For example- a woman free of barrenness is eligible to give birth to son on getting appropriate modes.

Q.5. Who are called door bhavya?

Ans. The beings who are capable of attaining liberation in long time are called Door bhavya.

For example- Widow lady who has the ability to produce son but can never give birth to a son.

There many rocks which contain gold in them, but the material to clean them is never found, in the same manner there are number of beings worthy to be liberated but do not get enough substance to get the impurity of their karmas destroyed as per rule.

Q.6. Who is called worthy to be liberated at a distant time?

Ans. The beings who will not attain liberation even after infinite

times infinite durationor those who will never get modes to attain liberation, they are called worthy to be liberated at a distant time.

Q.7. Who is called incapable for liberation (abhavya) ?

Ans. The beings who do not have eligibility to attain right faith etc. liberation , although these beings get the modes to attain liberation, yet they will never attain liberation, such beings are called abhavya (incapable for liberation). For example- barren woman can never give birth to a son.

Q.8. Are liberated beings bhavya (worthy to be liberated) or abhavya (not eligible to get liberated)?

Ans. The beings who are not getting new knowledgeable state, therefore, they are neither eligible to be liberated nor abhavya (incapable for liberation) since they are infinite foursome. Such enjoyers of attaining pleasure of liberation, though they are detached of this infinite universe, they are neither bhavya nor abhavya, they are holder of living inherent nature of the soul.

Q.9. Which are the stages of spiritual development of bhavya and abhavya beings?

Ans. There can be 1st to 14th stages of spiritual development for bhavya beings, abhavya beings, as a rule, have wrong-faith.

Q.10. What is the number of bhavya (worthy to be liberated) and abhavya (not worthy to be liberated) beings?

Ans. Abhavya beings = the lowest infinity type of measurement.

Bhavya beings = total number of beings – number of abhavya beings (On subtracting quantity of abhavya beings from the total number of worldly beings, the remaining quantity.)‘

XII. सम्यक्त्व मार्गणा

प्रश्न 1. सम्यक्त्व किसे कहते हैं?

उत्तर : ❊ जिनेन्द्र देव द्वारा कहे 6 द्रव्य, 5 अस्तिकाय, 7 तत्त्व, 9 पदार्थ का श्रद्धान, रुचि, यथावत् प्रतीति करना सम्यक्त्व है।
❊ श्रद्धा गुण की स्वभाव पर्याय को सम्यक्त कहते हैं।
❊ प्रशम, संवेग, अनुकम्पा, आस्तिक्य आदि गुणों की प्रकटता को सम्यक्त्व कहते हैं।

प्रश्न 2. चारों अनुयोगों की अपेक्षा से सम्यक्त्व को परिभाषित कीजिए।

उत्तर : **प्रथमानुयोग** – धर्म और धर्म के फल में हर्ष मनाना, संसार शरीर भोगों से वैराग्य होना सम्यक्त्व है।
करणानुयोग – सात प्रकृतियों का उपशम, क्षय, क्षयोपशम होना सम्यक्त्व है।
चरणानुयोग – सम्यक्त्वाचरण चारित्र का पालन करना, 8 अंग व 25 दोषों से रहित सम्यक्त्व को धारण करना सम्यक्त्व है।
द्रव्यानुयोग – भेद-विज्ञान करना सम्यक्त्व है।

प्रश्न 3. द्रव्य किसे कहते हैं?

उत्तर : गुण व पर्याय के समूह को द्रव्य कहते हैं।

प्रश्न 4. द्रव्य कितने होते हैं? नाम बताइए।

उत्तर : द्रव्य छः होते हैं – जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश, काल।

प्रश्न 5. छहों द्रव्यों का स्वरूप बताइए?

उत्तर : जीव द्रव्य– जिसमें चेतना, ज्ञान-दर्शन पाया जाता है उन्हें जीव द्रव्य कहते हैं।

पुद्गल द्रव्य – जिसमें रूप, रस, गंध, वर्ण पाया जाता है उन्हें पुद्गल द्रव्य कहते हैं।
धर्म द्रव्य – जो गमन करते हुए जीव व पुद्गल द्रव्य को गमन करने में सहकारी हो उसको धर्म द्रव्य कहते हैं।
अधर्म द्रव्य – जो ठहरे हुए जीव व पुद्गल द्रव्य को ठहरने में सहकारी हो उसको अधर्म द्रव्य कहते हैं।
आकाश द्रव्य – जो सम्पूर्ण द्रव्यों को स्थान देने में सहायक हो उसको आकाश द्रव्य कहते हैं।
काल द्रव्य – परिणमन करते हुए द्रव्यों में जो सहकारी हो उसको काल द्रव्य कहते हैं।

प्रश्न 6. गुण किसे कहते हैं?

उत्तर : जो द्रव्य के सम्पूर्ण अवस्था में तथा सम्पूर्ण कालों में व सम्पूर्ण भागों में पाया जाता है उसे गुण कहते हैं।

प्रश्न 7. पर्याय किसे कहते हैं?

उत्तर : जो प्रत्येक समय में नवीन-नवीन उत्पन्न होती है उस द्रव्य के परिणमन को पर्याय कहते हैं।

प्रश्न 8. अस्तिकाय किसे कहते हैं?

उत्तर : जो अस्ति भी है और काय भी है उन्हें अस्तिकाय कहते हैं। अस्ति-स्थित/उपस्थित/सत्ता, काय – बहुप्रदेशी द्रव्य को काय कहते हैं अथवा दो या दो से अधिक प्रदेशों के समूह को काय कहते हैं।

प्रश्न 9. अस्तिकाय कितने होते हैं?

उत्तर : अस्तिकाय 5 होते हैं – काल द्रव्य को छोड़कर शेष 5 द्रव्य अस्तिकाय हैं। क्योंकि ये बहुप्रदेशी होने से काय हैं और स्थित होने से अस्ति हैं, अतः इन्हें अस्तिकाय कहा है।

प्रश्न 10. काल द्रव्य अस्तिकाय क्यों नहीं है?

उत्तर : काल द्रव्य एक प्रदेशी होने के कारण काय नहीं है, स्थित होने से अस्ति है इसलिए काल द्रव्य अस्ति है, काय नहीं है।

प्रश्न 11. पुद्गल परमाणु भी एक प्रदेशी है तो उसे अस्तिकाय क्यों कहा?

उत्तर : पुद्गल परमाणु में स्कंध होने की शक्ति है अत: उपचार से उसे अस्तिकाय कहा है।

प्रश्न 12. तत्त्व किसे कहते हैं?

उत्तर : सारभूत वस्तु को तत्त्व कहते हैं। जैसे – दूध में घी, फलों में जूस, आत्मा में ज्ञान।

प्रश्न 13. सारभूत किसे कहते हैं?

उत्तर : वस्तु के अंतिम निचोड़ को सारभूत कहते हैं।

प्रश्न 14. प्रयोजनभूत तत्त्व कितने होते हैं?

उत्तर : प्रयोजनभूत तत्त्व सात होते हैं – जीव, अजीव, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा, मोक्ष।

प्रश्न 15. सातों तत्त्वों का स्वरूप बताइए?

जीव – जिसमें चेतना पायी जाती है उसे जीव कहते हैं।

अजीव – जिसमें चेतना नहीं पायी जाती है उसे अजीव कहते हैं।

आस्रव – कर्मों का आना अथवा बंध के कारणों को आस्रव कहते हैं।

बंध – कर्मों का आत्मा से संबंध होना बंध है। जैसे–दूध–पानी की तरह।

संवर – कर्मों का रुकना संवर है।

निर्जरा – कर्मों का एकदेश खिरना निर्जरा है।

मोक्ष – कर्मों का सम्पूर्ण नष्ट होना मोक्ष है।

प्रश्न 16. पदार्थ किसे कहते हैं?

उत्तर : इन सात तत्त्वों में पुण्य–पाप मिलाने पर 9 पदार्थ हो जाते हैं।

प्रश्न 17. पाप किसे कहते हैं?

उत्तर : जो आत्मा को मलिन करे, वह पाप है।

प्रश्न 18. पुण्य किसे कहते हैं?

उत्तर : जो आत्मा को पवित्र करे, वह पुण्य है।

प्रश्न 19. प्रशम किसे कहते हैं?

उत्तर : कषायों में उद्वेग उत्पन्न नहीं होने देना, उनका उपशम करना [दबाना] प्रशम कहलाता है।

प्रश्न 20. संवेग किसे कहते हैं?

उत्तर : धर्म व धर्म के फल में हर्ष होना, संसार–शरीर–भोगों से वैराग्य होना संवेग कहलाता है।

प्रश्न 21. अनुकम्पा किसे कहते हैं?

उत्तर : दु:खी जीवों पर दया करना अनुकम्पा है।

प्रश्न 22. आस्तिक्य किसे कहते हैं?

उत्तर : दृढ़ श्रद्धान को आस्तिक्य कहते हैं।

प्रश्न 23. सम्यक्त्व मार्गणा किसे कहते हैं?

उत्तर : सम्यक्त्व के द्वारा जीवों की खोज करना सम्यक्त्व मार्गणा है।

प्रश्न 24. सम्यक्त्व मार्गणा के कितने भेद हैं?

उत्तर : सम्यक्त्व मार्गणा के छ: भेद हैं – (1) मिथ्यात्व (2) सासादन (3) मिश्र (4) उपशम (5) क्षयोपशम (वेदक) (6) क्षायिक।

प्रश्न 25. मिथ्यात्व किसे कहते हैं?

उत्तर : जो जीव जिनेन्द्र देव के कहे हुए सम्यक् आप्त, आगम, पदार्थ का श्रद्धान नहीं करता, किन्तु कुगुरुओं के कहे हुए या बिना

कहे हुए भी मिथ्या आप्त, आगम, पदार्थ का श्रद्धान करता है उसको मिथ्यादृष्टि कहते हैं।

प्रश्न 26. मिथ्यात्व कितने प्रकार का होता है?

उत्तर : मिथ्यात्व दो प्रकार का होता है- (1) गृहीत मिथ्यात्व, (2) अगृहीत मिथ्यात्व।

प्रश्न 27. गृहीत मिथ्यात्व किसे कहते हैं?

उत्तर : जो दूसरों के उपदेश आदि से ग्रहण कराया जाता है, उसे गृहीत मिथ्यात्व कहते हैं।

प्रश्न 28. अगृहीत मिथ्यात्व किसे कहते हैं?

उत्तर : अनादिकाल से जो संस्कार रूप चले आ रहे तत्त्वों का समीचीन अश्रद्धान अगृहीत मिथ्यात्व कहलाता है।

प्रश्न 29. सासादन सम्यक्त्व किसे कहते हैं?

उत्तर : प्रथमोपशम अथवा द्वितीयोपशम सम्यक्त्व के काल में उत्कृष्ट 6 आवली जघन्य से एक समय शेष रह जाने पर परिणामों के गिरने से अनंतानुबंधी चतुष्क [क्रोध, मान, माया, लोभ] में से किसी एक का उदय होने पर सम्यक्त्व से च्युत हो गया किन्तु मिथ्यात्व प्रकृति का उदय न होने से मिथ्यात्व को प्राप्त नहीं हुआ है, वह सासादन सम्यक्त्व है।

प्रश्न 30. सम्यग्मिथ्यात्व सम्यक्त्व किसे कहते हैं?

उत्तर : जो न तो सम्यक्त्व रूप और न ही मिथ्यात्व रूप परिणाम होते हैं किन्तु मिले-जुले परिणाम होते हैं, इसी को सम्यग्मिथ्यात्व सम्यक्त्व कहते हैं। जैसे - दही-गुड़ का मिला-जुला स्वाद।

प्रश्न 31. उपशम सम्यक्त्व किसे कहते हैं?

उत्तर : अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, मिथ्यात्व इन सातों कर्मों के दब जाने से [उपशम हो जाने से]

जो निर्मल परिणाम होता है अथवा श्रद्धान रूप निर्मल परिणाम होता है उसे उपशम सम्यक्त्व कहते हैं।

प्रश्न 32. उपशम सम्यक्त्व के कितने भेद हैं?

उत्तर : उपशम सम्यक्त्व के दो भेद हैं- (1) प्रथमोपशम सम्यक्त्व, (2) द्वितीयोपशम सम्यक्त्व।

प्रश्न 33. प्रथमोपशम सम्यक्त्व किसे कहते हैं?

उत्तर : दर्शन मोहनीय की 7 अथवा 5 प्रकृतियों को दबाकर जो निर्मल परिणाम होते हैं उसे प्रथमोपशम सम्यक्त्व कहते हैं।

प्रश्न 34. 5 व 7 प्रकृतियाँ कौन-कौन सी हैं?

उत्तर : 5 प्रकृतियाँ - मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी चतुष्क।
7 प्रकृतियाँ-मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, अनन्तानुबंधी चतुष्क।

प्रश्न 35. 5 व 7 प्रकृति का उपशम कौन करता है?

उत्तर : अनादि मिथ्यादृष्टि जब प्रथम बार सम्यक्त्व प्राप्त करता है, तब वह 5 प्रकृतियों को दबाता है तथा सादि मिथ्यादृष्टि जीव 7 अथवा 5 दोनों प्रकृतियों को दबाता है।

प्रश्न 36. उपशम सम्यग्दृष्टि जीव 5 व 7 प्रकृति को कब दबाता है?

उत्तर : ❊ अनादि मिथ्यादृष्टि अथवा अनादि जैसा सादि मिथ्यादृष्टि 5 प्रकृतियों को दबाता है।

❊ सादि मिथ्यादृष्टि जिसके सम्यक्त्व व सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृति की स्थिति पृथक्त्व सागर रह गई है तो ऐसा जीव नियम से उपशम सम्यक्त्व करता है, वह 7 प्रकृतियों को दबाता है।

प्रश्न 37. प्रथमोपशम सम्यक्त्व की विशेषताएँ बताइए?

उत्तर : ❊ अनादि मिथ्यादृष्टि को तथा सादि मिथ्यादृष्टि जो अनादि जैसा ही 26 प्रकृति की सत्ता वाले को ही प्रथमोपशम सम्यक्त्व प्राप्त होता है।

❊ प्रथमोपशम सम्यक्त्व कर्मभूमि में एक भव में एक बार ही होता है लेकिन असंख्यात वर्ष की उम्र वाले तिर्यंच, मनुष्य, देव, नारकी को एक भव में असंख्यात बार हो सकता है।

❊ प्रथमोपशम सम्यक्त्व में मरण भी नहीं होता है।

प्रश्न 38. द्वितीयोपशम सम्यक्त्व किसे कहते हैं?

उत्तर : चारित्र मोहनीय की 21 प्रकृतियों को दबाकर जो निर्मलता, विशुद्धता होती है उसे द्वितीयोपशम सम्यक्त्व कहते हैं।

प्रश्न 39 द्वितीयोपशम सम्यक्त्व की विशेषताएँ बताइए?

उत्तर : ❊ यह सम्यक्त्व केवल कर्मभूमि के मनुष्यों को होता है।

❊ यह सम्यक्त्व एक भव में सिर्फ 2 बार ही होता है।

❊ इस सम्यक्त्व में मरण हो सकता है। मरण करके नियम से देवगति में ही जाते हैं।

प्रश्न 40. उपशम सम्यक्त्व को कौन से जीव प्राप्त कर सकते हैं?

उत्तर : चारों गतियों में से किसी भी गति का जीव हो सकता है, गर्भज, संज्ञी, पर्याप्त, मंदकषायी, जाग्रत, साकार उपयोग सहित, शुभ लेश्या का धारक, करणलब्धि रूप परिणाम हो, वे ही जीव उपशम सम्यक्त्व को प्राप्त कर सकते हैं।

प्रश्न 41. लब्धि किसे कहते हैं?

उत्तर : प्राप्ति को लब्धि कहते हैं।

प्रश्न 42. लब्धि कितनी होती हैं?

उत्तर : लब्धि पाँच होती हैं- (1) क्षयोपशमलब्धि, (1) विशुद्धिलब्धि, (3) देशनालब्धि, (4) प्रायोग्यलब्धि, (5) करणलब्धि।

प्रश्न 43. पाँचों लब्धियों को परिभाषित कीजिए।

उत्तर : क्षयोपशम लब्धि - ऐसे परिणामों की प्राप्ति जिनके द्वारा प्रति समय प्रशस्त प्रकृतियों का अनुभाग बढ़ता हुआ तथा अप्रशस्त प्रकृतियों का अनुभाग घटता हुआ उदय को प्राप्त हो वह क्षयोपशम लब्धि है।

विशुद्धि लब्धि - ऐसे परिणामों की प्राप्ति जिनके द्वारा प्रति समय प्रशस्त प्रकृतियों की स्थिति बढ़ती हुई व अप्रशस्त प्रकृतियों की स्थिति घटती हुई बंध हो वह विशुद्धि लब्धि है।

देशना लब्धि - अरिहंत, आचार्य, उपाध्याय व साधु का समागम, देशना की प्राप्ति व धारण करने की शक्ति देशना लब्धि है।

प्रायोग्य लब्धि - कर्मों की पूर्व सत्ता एवं नवीन बंध अंत:कोड़ाकोड़ी सागर प्रमाण रह जाना इत्यादि योग्य अवस्थाओं का होना प्रायोग्य लब्धि है।

करण लब्धि - अध:करण, अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण रूप परिणामों का होना करण लब्धि है।

प्रश्न 44. क्या सभी लब्धियाँ सभी जीवों को प्राप्त हो सकती हैं?

उत्तर : नहीं, प्रारम्भ की चार लब्धियाँ तो भव्य-अभव्य सभी जीवों के हो सकती हैं, परन्तु करणलब्धि भव्य के ही होती है, करणलब्धि की प्राप्ति होने पर नियम से सम्यक्त्व होता ही है।

प्रश्न 45. क्षयोपशम (वेदक) सम्यक्त्व किसे कहते हैं?

उत्तर : ❊ दर्शन मोहनीय की सम्यक्त्व प्रकृति का उदय होने पर जो

तत्त्वार्थ श्रद्धान चल, मलिन व अवगाढ़ दोष से सहित होता है उसे वेदक/क्षयोपशम सम्यक्त्व कहते हैं।

* जब सर्वघाती स्पर्धक देशघाती रूप उदय होकर आये उसे क्षयोपशम सम्यक्त्व कहते हैं।

* सम्यक्त्व प्रकृति का उदय और शेष छ: प्रकृतियों के अनुदय [उपशम] को क्षयोपशम सम्यक्त्व कहते हैं।

प्रश्न 46. क्षयोपशम सम्यक्त्व की विशेषताएँ बताइए?

उत्तर : * क्षयोपशम सम्यक्त्व को वेदक सम्यक्त्व भी कहा जाता है।

* क्षयोपशम सम्यक्त्व की लास्ट सीढ़ी कृतकृत्य वेदक है।

* क्षयोपशम सम्यक्त्व कर्म के उदय से होता है इसलिए छूट जाता है।

* क्षयोपशम सम्यक्त्व में मरण होने पर कोई भी जीव देव व मनुष्य गति में जायेगा क्योंकि नरक गति व तिर्यंच गति में जाते समय क्षयोपशम सम्यक्त्व छूट जाता है।

नोट- मनुष्य से मनुष्य वेदक सम्यक्त्व के साथ नहीं होता कृतकृत्य वेदक के साथ हो सकता है देव यदि वेदक सम्यग्दृष्टि है तो वह मनुष्य हो सकता है।

* कृतकृत्य वेदक सम्यक्त्वी चारों गतियों में जा सकता है।

प्रश्न 47. चल, मलिन, अवगाढ़ दोष किसे कहते हैं?

उत्तर : चल - आप्त-आगम-पदार्थों के विषय में चंचलपना।
मलिन - शंकादि मल सहित सम्यक्त्व।
अवगाढ़ - आप्तादि की प्रतीति (रुचि) में शिथिलता।

प्रश्न 48. सर्वघाती प्रकृति किसे कहते हैं, कौन सी प्रकृति सर्वघाती है और क्यों?

उत्तर : जो प्रकृति सम्पूर्ण गुण का घात करती है वह सर्वघाती कहलाती है। जैसे - मिथ्यात्व व अनंतानुबंधी। क्योंकि स्वभाव स्वरूप श्रद्धागुण का [सम्यक्त्व का] मिथ्यात्व व अनंतानुबंधी पूर्ण रूप से घात करती है इसलिए ये प्रकृतियाँ सर्वघाती कहलाती हैं।

प्रश्न 49. देशघाती किसे कहते हैं, कौनसी प्रकृतियाँ देशघाती हैं और क्यों?

उत्तर : जो प्रकृति सम्पूर्ण गुण का घात न करके अंशमात्र का घात करती है वह देशघाती कहलाती है। जैसे - सम्यक्त्व प्रकृति। क्योंकि सम्यक्त्व प्रकृति का उदय रहते हुए भी सम्यक्त्व का घात तो नहीं होता लेकिन चल, मलिन, अवगाढ़ दोष लगते रहते हैं। यद्यपि देशघाती प्रकृतियाँ बहुत हैं लेकिन सम्यक्त्व का प्रकरण होने से उसे ही ग्रहण किया है।

प्रश्न 50. कृतकृत्य वेदक सम्यक्त्व किसे कहते हैं?

उत्तर : दर्शन मोहनीय की क्षपणा करने वाला जीव मिथ्यात्व व सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृति का क्षय कर देता है तथा सम्यक्त्व प्रकृति की 8 वर्ष प्रमाण स्थिति रह जाती है तब उसे कृतकृत्य वेदक संज्ञा प्राप्त होती है।

प्रश्न 51. 8 वर्ष की स्थिति वाली सम्यक्त्व प्रकृति का क्षय कितने समय में करता है?

उत्तर : 8 वर्ष की स्थिति वाली सम्यक्त्व प्रकृति का क्षय स्थितिकांडक घात के द्वारा अन्तर्मुहूर्त में क्षय कर देता है।

प्रश्न 52. क्षायिक सम्यग्दृष्टि के3 या 4 भव किस प्रकार बनते हैं?

उत्तर : ❊ नरक गति व देव गति की अपेक्षा तीन भव बनते हैं। जैसे – कोई जीव ने नरक आयु का बंध कर लिया और बाद में क्षायिक सम्यक्त्व किया तो वह पहले नरक जायेगा वहाँ से मनुष्य बनकर मोक्ष जायेगा। इस प्रकार 3 भव प्राप्त हुए इसी प्रकार देव का लगा लेना चाहिए।

❊ किसी जीव ने मनुष्य अथवा तिर्यंच आयु का बंध कर लिया, बाद में क्षायिक सम्यक्त्व किया तो वह भोगभूमि जायेगा, वहाँ से देवगति में जायेगा, वहाँ से चय कर मनुष्य होकर मोक्ष जायेगा। चूँकि एक भव वर्तमान का भी गिनना चाहिए इस प्रकार 4 भव प्राप्त हुए।

प्रश्न 53. मिथ्यात्व को सम्यक्त्व का भेद क्यों माना गया?

उत्तर : ❊ मिथ्यात्व व सम्यक्त्व दोनों ही श्रद्धा गुण की पर्याय है, स्वभाव पर्याय सम्यक्त्व है, तो विभाव पर्याय मिथ्यात्व है, इसलिए मिथ्यात्व को सम्यक्त्व के भेदों में लिया है।

❊ सम्यक्त्व का संबंध दर्शन मोहनीय से है और दर्शन मोहनीय के उदय से मिथ्यात्व होता है और उपशम, क्षय, क्षयोपशम से सम्यक्त्व बनता है, इसलिए मिथ्यात्व को सम्यक्त्व का भेद माना है।

प्रश्न 54. अपर्याप्तक अवस्था में कौन से सम्यक्त्व हो सकते हैं?

उत्तर : अपर्याप्तक अवस्था में मिश्र सम्यक्त्व बिना 5 सम्यक्त्व हो सकते है।

प्रश्न 55. कौन सी गति में कौन–कौन से सम्यक्त्व पाये जाते हैं?

उत्तर : चारों गतियों में पर्याप्त अवस्था में तो छहों सम्यक्त्व पाये जाते हैं परन्तु अपर्याप्त अवस्था में नरक गति में – 3 सम्यक्त्व

[मिथ्यात्व, क्षयोपशम, क्षायिक], तिर्यंच गति में – 4 सम्यक्त्व [मिथ्यात्व, सासादन, क्षयोपशम, क्षायिक], देव गति में – मिश्र बिना 5 सम्यक्त्व, मनुष्य गति में – 4 सम्यक्त्व [तिर्यंच के समान] पाये जाते हैं।

❊ नरक गति व तिर्यंच गति में जाते समय क्षयोपशम सम्यक्त्व छूट जाता है। किन्तु कृतकृत्य वेदक की अपेक्षा वहाँ वेदक सम्यक्त्व पाया जाता है।

प्रश्न 56. कौन सी इन्द्रिय में कौन सा सम्यक्त्व हो सकता है?

उत्तर : एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय असैनी तक के जीवों के एक मिथ्यात्व सम्यक्त्व ही होता है और सैनी पंचेन्द्रिय के छहों सम्यक्त्व हो सकते हैं।

प्रश्न 57. कौन से सम्यक्त्व का काल एक जीव की अपेक्षा से कितना–कितना है?

उत्तर :

सम्यक्त्व	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
मिथ्यात्व [सादि सांत]	अन्तर्मुहूर्त	अर्द्धपुद्गल परावर्तन
सासादन	1 समय	6 आवली
मिश्र	अन्तर्मुहूर्त	अन्तर्मुहूर्त
उपशम	अन्तर्मुहूर्त	अन्तर्मुहूर्त [जघन्य से संख्यात गुणा]
क्षयोपशम	अन्तर्मुहूर्त	66 सागर
क्षायिक	अन्तर्मुहूर्त	साधिक 33 सागर (8 वर्ष कम 2 कोटि पूर्व+33 सागर)

प्रश्न 58. कौन सा सम्यक्त्व अधिक से अधिक कितनी बार हो सकता है?

उत्तर : सासादन व मिश्र सम्यक्त्व – असंख्यात बार

औपशमिक व क्षायोपशमिक सम्यक्त्व – असंख्यात बार
क्षायिक सम्यक्त्व – 1 बार

प्रश्न 59. कौन से सम्यक्त्व में जीवों की संख्या कितनी है?

उत्तर : मिथ्यात्वी को छोड़कर सभी सम्यक्त्वी जीवों की संख्या = पल्य के असंख्यातवे भाग है।
इनमें भी सबसे अधिक क्षयोपशम सम्यग्दृष्टि, इनसे कम क्षायिक सम्यग्दृष्टि, इनसे कम उपशम सम्यग्दृष्टि, इनसे कम मिश्र सम्यग्दृष्टि, इनसे कम सासादन सम्यग्दृष्टि होते है।
और मिथ्यात्वी की संख्या = सम्पूर्ण संसारी – शेष 5 सम्यक्त्वी की संख्या = अनंतानंत

प्रश्न 60. नाना जीवों की अपेक्षा कौन से सम्यक्त्व का काल कितना है?

उत्तर : मिथ्यात्व का = सर्वकाल, सासादन का = जघन्य = 1 समय, उत्कृष्ट = पल्य का असंख्यातवाँ भाग।
मिश्र का = जघन्य = अन्तर्मुहूर्त, उत्कृष्ट = पल्य का असंख्यातवाँ भाग।
उपशम का = जघन्य = अन्तर्मुहूर्त, उत्कृष्ट = पल्य का असंख्यातवाँ भाग, क्षयोपशम व क्षायिक का काल = सर्वकाल।

प्रश्न 61. उपशम सम्यक्त्व का अन्तर काल कितना है?

उत्तर : नाना जीवों की अपेक्षा = जघन्य = एक समय, उत्कृष्ट = 7 अथवा 24 रात्रि–दिन

एक जीव की अपेक्षा = जघन्य = पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग, उत्कृष्ट = उपार्ध पुद्गल परावर्तन [अर्द्ध पुद्गल परावर्तन से अन्तर्मुहूर्त कम]

प्रश्न 62. क्षयोपशम सम्यक्त्व का अन्तर काल कितना है?

उत्तर : नाना जीवों की अपेक्षा = निरन्तर
एक जीव की अपेक्षा = जघन्य – अन्तर्मुहूर्त, उत्कृष्ट – उपार्ध पुद्गल परावर्तन।

प्रश्न 63. क्षायिक सम्यक्त्व का अन्तर काल कितना है?

उत्तर : क्षायिक सम्यक्त्व का अन्तर काल नाना व एक जीव अपेक्षा = निरन्तर।

प्रश्न 64. मिथ्यात्व सम्यक्त्व का अन्तर काल कितना है?

उत्तर : नाना जीवापेक्षा = निरन्तर
एक जीव की अपेक्षा = जघन्य – अन्तर्मुहूर्त, उत्कृष्ट – 132 सागर

प्रश्न 65. सासादन सम्यक्त्व का अन्तर काल कितना है?

उत्तर : नाना जीवापेक्षा = जघन्य – एक समय, उत्कृष्ट–पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग
एक जीव अपेक्षा = जघन्य – पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग, उत्कृष्ट – उपार्ध पुद्गल परावर्तन

प्रश्न 66. मिश्र सम्यक्त्व का अन्तर काल कितना है?

उत्तर : नाना जीवापेक्षा = जघन्य – एक समय, उत्कृष्ट – पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग

एक जीव की अपेक्षा = जघन्य अन्तर्मुहूर्त, उत्कृष्ट – उपार्ध पुद्गल परावर्तन।

।। सम्यक्त्व मार्गणा समाप्त ।।

XII. Investigation right belief

Q.1. What is called samyaktva (right belief)?

Ans. Practicing 6 substances, 5 substances having bodies of magnitude, 7 realities or nature of things, faith in nine substances, interest, systemic inclination is right belief.

Natural modification of property of faith is called right belief.

Exposure of prasham (spiritual calmness), samvega (mental flow in right direction), anukampa (compassion), substance having body of magnitude is called right belief.

Q.2. Define right-faith in respect of four disquisitions.

Ans. Pathamanuyoga (Biographical exposition)- Showing happiness in religion and its consequences, detachment from worldly pleasures is right- faith.

Karunanuyoga (technical exposition) – Subsidence, destruction, annihilation cum subsidence of seven natures is called right- faith.

Charananuyoga (conduct exposition) – Following right conduct, holding faith in 8 principle scriptures and free from 25 flaws is right-faith.

Dravyanuyoga (Expositions related to metaphysics) – using science of discrimination is right faith.

Q.3. What is called dravya (matter)?

Ans. Group of properties and body forms is called dravya (matter).

Q.4. How many are the dravyas? Tell their names.

Ans. Dravyas are of six class- jeeva (living beings), pudgal (non-living matter), dharm (motion), adharm (rest), akash (space), kaal (time).

Q.5. Tell the nature of six matters/ realities?

Ans. Jeeva (soul)- In whom consciousness, knowledge perception are found are called jeeva.

Pudgal (matter, non-living)- In whom look, delicacy, taste, smell, color are found are called pudgal.

Dharma (motion)- those while in motion are helpful in making jeev and pudgal also in motion, are called dharma.

Adharma (rest)- That which is helpful in making jeev and pudgal in rest, is called adharma.

Akash (space)- Which is helpful in giving space to all the dravyas (matters/realities) is called space substance.

Kaal (time factor)- which is helpful in transformation of substances is called time factor.

Q.6. what is called guna (property/ quality/ attribute)?

Ans. That which is found in complete state of matter, at all the time and in all the parts is called attribute.

Q.7. what is called paryay (body form)?

Ans. That which every time occurs in new body form, the transformation of that substance is called paryay (body form).

Q.8. What is called astikaay (substance having a body of magnitude)?

Ans. That which is asti and kaay also are called astikaay. Asti – situated/present/eexistence, kaay- multi space pointed matter is called kaay or group of two or more space points is also called kaay.

Q.9. How many are the astikaay?

Ans. There are five astikaay (substance having more than one existence)- leaving time factor remaining five matters are astikaay. It is because being multi space pointed, these are kaay and being situated, these are asti, therefore these are called astikaay.

Q.10. Why kaal drvya (time factor) is not astikaay?

Ans. Being single space pointed kaal davya is not kaay, being situated (static) it is asti, therefore, kaal dravya is asti and not astikaay.

Q.11. When pudgal parmanu (Non-living matter particle) is also ek pradeshi (single space point of soul), why is it called asikaay (substance with magnitude)?

Ans. Pudgal parmaanu has the power of becoming skandh (aggregate particles), therefore, practically it is called astikaay (substance with magnitude).

Q.12. What is called tattva (essence)?

Ans. Essence of the matter is called tattva. For example- ghee in milk, juice in fruits, knowledge in soul.

Q.13. What is called Saarbhut (essential)?

Ans. The ultimate conclusion of matter is called saarbhut.

Q.14. How many are the prayojanbhut tattva (functional elements)?

Ans. Functional elements are seven- jeev (soul), ajeev (non-soul), aasrav (influx), bandh (bondage), sanvar (stoppage), nirjara (shedding), moksha (salvation).

Q.15. Tell the nature of seven elements?

Ans. Jeev (soul)- in whom consciousness is found are called jeev.

Ajeev (non-soul)- In which consciousness is not found are called ajeev.

Aasrav (influx)- coming of karmas or the causes of bond formation are called aasrav.

Bandh (bondage)- The relation of karma with soul is bond. For example- relation like milk with water.

Sanvar (stoppage)- Stoppage of influx of karmas is sanvar.

Nirjara (shedding)- Partial shedding of karmas is shedding or nirjara.

Moksha (salvation)- Complete destruction of karmas is moksha (salvation).

Q.16. What is called substance/ matter?

Ans. Adding virtues and vices to these seven elements become nine substances/matters.

Q.17. What is called paap (sin)?

Ans. That which corrupts the soul is sin.

Q.18. what is called punya(virtue)?

Ans. That which purifies the soul is called virtue.

Q.19. What is called prasam (spiritual calmness)?

Ans. Preventing the intensity in passions and subsiding them is called prasam (spiritual calmness).

Q.20. What is called samvega (mental agitation or instinct)?

Ans. Enjoying religion and religious outcomes; detaching from the worldly affairs and pleasure of the body is called samvega (mental agitation or instinct).

Q.21. What is called anukampa (compassion)?

Ans. Showing mercy on the painful beings is anukampa (compassion).

Q.22. What is called astikya (having religious faith or belief in religion)?

Ans. The being having rigid faith in religion is called astikya.

Q.23. What is called samyaktva margana (investigating right faith)?

Ans. To explore living beings through right faith is called samyaktva margana.

Q.24. How many are the kinds of samyaktva margana?

Ans. There six kinds of samyaktva margana- 1. Mithyatva (Wrong-belief), 2. Sasadan (downfall from right faith to wrong faith), 3. Misra (Mixed), 4. Upasama (subsidence), 5. Kshayopasama (vedak)(destruction cum subsidence). 6. Kshayik (destructive).

Q.25. What is called mithyaatva (wrong belief)?

Ans. The being who does not follow the real spiritual ways, scriptures, substances as preached by Lord Jinendra Dev,

but follows the wrong ways, wrong scriptures, wrong substances as told or untold by wrong preceptors is called wrong-faith believer.

Q.26. How many kinds are of mithyatva (wrong belief)?

Ans. Mithyatva is of two kinds- 1. Grahit mithyatva (assumed wrong belief), 2. Agrahit mithyatva (intuitional perversity).

Q.27. What is called grahit mithyatva?

Ans. That which is made to accept by preaching by others is called grahit mithyatva (assumed wrong belief).

Q.28. What is called agrahit mithyatva (intuitional perversity)?

Ans. Expedient distrust in Traditions which have been in practice since time immemorial or intrue principles is agrahit mithyatva (intuitional perversity).

Q.29. What is called sasadan samyaktva (Falling down right faith)?

Ans. Diverting from the right faith due to rise of any one of the four passions leading to endless mundane existence (anger, ego, illusion, geed) during first subsidence or second subsidence right faith duration in the highest when 6 avali remains and in the lowest when single unit time remains, however, the being does not get to wrong faith, is sasadan right faith (falling down right faith).

Q.30. What is called samymithyatva samyaktva (Right cum wrong faith right faith)?

Ans. When the thoughts are neither in right faith form nor in wrong faith form, they are in the mixed form which is called samyamithyatva samyakva (right cum wrong faith type right faith). For example- mixed taste of curd and jaggery.

Q.31. What is called upasama samyaktva (subsidence right faith)?

Ans. Pious thoughts which occur as the result of subsidence of the seven karmas - passions (anger, ego, illusion, greed), samyaktva (right faith), samyamithyatva (right cum wrong faith), mithyatva (wrong faith) or occurrence of pious thoughts of faith is called upasama samyaktva (subsidence right faith).

Q.32. How many are the kinds of upasama samyaktva (subsidence right belief)?

Ans. There are two kinds of upasama samyaktva (subsidence right faith)- 1. First subsidence, 2. Second subsidence.

Q.33. What is called prathamopasama (First subsidence)?

Ans. Pious thoughts occurring by subsiding 7 or 5 natures of right belief deluding karmaare called prathamopasama (first subsidence).

Q.34. Which are 5 and 7 natures?

Ans. 5 natures- mithyatva (wrong belief), Anantanubandhi chatushka (four passions leading to endless mundane existence),

7 natures- mithyatva (wrong belief), samyamithyatva (right cum wrong belief), samyaktva (right belief), Anantanubandhi chatushka (four passions leading to endless mundane existence).

Q.35. Who subsides 5 and 7 natures?

Ans. Being having beginningless wrong faith when first time obtain right faith, he subsides 5 natures and being with beginning subsides 7 or 5 both natures.

Q.36. When does upasam samygdrushti (the being with subsidence right faith) subsides 5 and 7 natures?

Ans. Anaadi mithyadrashti (beginning less wrong faith believer) or saadi mithyadrashti(wrong faith believer with beginning) if just like anaadi mithyadrashti, subsides 5 natures.

Wrong faith believer whose nature of right faith or right cum wrong faith remains only prathaktva sagar, such being as per rule does upasama samyktva (subsidence right faith), such person subsides 7 natures.

Q. 37. Tell the chief characteristics of prathamopasama samyaktva (first subsidence right faith).

Ans. Only beginning less wrong faith believer and wrong faith believer with beginning if he is like anaadi mithyadrashti having 26 natured existence gets first subsidence right belief.

First subsidence right faith occurs only once in a single destiny, however, sub-human, human, celestial and hellish beings of innumerable age can have innumerable times in single destiny.

There is no death in first subsidence right faith.

Q.38. What is called dvitiyopasama samyaktva (second subsidence right faith)?

Ans. The purity and piousness of thoughts by subsiding 21 natures of conduct deluding is called second subsidence right faith.

Q.39. Tell the properties of second subsidence right faith?

Ans. This right faith occurs only to human beings belonging to land of action.

This kind of right faith occurs only twice in a single destiny.

There may be death in this right faith. As a rule the dead goes only to celestial destiny.

Q.40. Which kind of beings can get subsidence right faith?

Ans. Any being of any of the four destinies can get, embryo rational, completed, being with slow passions, awake, with determinate cognition, holder of auspicious aura, efficient in attaining right perception within antarmuhoort, only such beings can get subsidence right belief.

Q.41. What is called labdhi (attainment)?

Ans. Attainment is called labdhi.

Q.42. How many are the labdhi (attainments)?

Ans. Attainments are five- 1.Kshyopasama (Annihilation cum subsidence), 2. Vishuddhi (Self-purification), 3. Deshana (Discourses), 4. Prayogya (Competence), 5. Karan (Efficiency).

Q.43. Define all the five attainments.

Ans. Annihilation cum subsidence attainment- Obtaining thoughts through which karmic manifestation of auspicious natures increase, and karmic manifestation of inauspicious natures decrease, this is subsidence cum annihilation attainment.

Self-purification- Getting thoughts through which condition of auspicious natures increases and condition of inauspicious nature decreases- this is vishuddhi labdhi.

Discourse attainment- Meeting of omniscient lord, head ascetic, preceptor ascetic, receiving discourses and power of adopting them is deshna labdhi.

Competence attainment – the earlier existence of karmas and new bondages, remaining crore of crore sagar measurement etc. eligible conditions is Prayogya labdhi.

Attainment of efficiency- Having thoughts like slow progressive, process of self-meditation, process to attain right belief suppressing deluding karmas is karan labdhi.

Q.44. Can all attainments accrue to all living beings?

Ans. No, four attainments of the beginning can be accrued by auspicious and inauspicious all living beings, however, attainment of efficiency is accrued by only auspicious being; after getting karan labdhi, as per rule, right faith definitely occurs.

Q.45. What is called kshayopasama (vedak) samyaktva (annihilation cum subsidence right belief)?

Ans. When the faith in the realities due to rise of right faith nature of faith deluding karma is unsteady, foul and deep, is called vedak/kshayopasama samyaktva (annihilation cum subsidence right faith).

When karmic variforms (sarvaghati spardhak) rise in partial destructive form (deshghati roop), is called kshayopasama samyaktva.

The rise of right faith nature and subsidence of remaining six natures take place is called kshayopasama samyaktva.

Q.46. Tell the qualities of kshayopasama samyaktva (annihilation cum subsidence right faith).

Ans. Kshayopasama samyaktva is also called destructive right faith(vedak samyaktva).

The last step of kshayopasama samyaktva is destruction of satisfaction owing to performed duties (krutkrutya vedak).

Kshayopasama right faith occurs due to rise of karmas and so it is left out.

In case of death in kshayopasama samyaktva, the being leaves either for celestial destiny or human destiny because on reaching hellish destiny or sub-human destiny kshayopasama samyakta is lost.

However, destroyer of satisfaction owing to duty performance can attain all the four destinies.

Q.47. what are called chal, malin, avgaadh flaws (unsteady, evil, unconcerned in omniscience)?

Ans. Chal (unsteady)- fickleness in regard to the matters of omniscience and scriptures.

Malin (filthy)- right faith with evils like doubt etc.

Avagaardh (looseness in interest of attaining omniscience)- looseness of interest in attaining omniscience etc.

Q.48. What is called sarvaghati (all destructive), which nature is all-destructive and why?

Ans. The nature which destroys all the virtues, is called sarvaghati. For example- wrong-belief and passions leading to endless mundane existence. It is because they destroy the natural form of faith virtue (right faith), these are called sarvaghati.

Q.49. What is called deshghati (partially destructive), whch natures are partially destructive and why?

Ans. The nature which destroys not the entire virtue but a part of it, are called partially destructive. For example- right faith nature. It is because even on rise of right faith nature right faith is not destroyed but some flaws like unsteadiness, filthiness, and looseness in interestare imposed. Although there are numerous partially destructive natures, yet only right faith is considered.

Q.50. Who is called krutkrit vedak (destroyer of religious pleasure)?

Ans. The being who deteriorates right belief deluding karma destroys wrong faith and right cum wrong faith nature and when the condition of right faith nature remains for 8 years, then it gets the name of krutkrit vedak.

Q.51. In how much time the right faith nature for 8 years condition is destroyed?

Ans. It destroys the right faith for 8 years condition within antarmuhoort through destructive karmic state (sthitikandak ghat).

Q.52. How are 3 or 4 destinies of kshayik samyagdrushti (destructive right faith) formed?

Ans. In respect of hellish destiny and celestial destiny, three destinies are formed. For example- some being has formed a bond for hellish age and then practiced destructive right faith , then he will first go to the hell. From their transforming into human being he will go to moksha (salvation). In this way he attains three destinies. The same case is with beings in celestial destiny.

Some being has formed a bond of either human destiny or sub-human destiny, then practiced destructive right faith so he will go to land of pleasure, from there he will go to celestial destiny, from there transforming into human destiny, he will go to moksha (salvation). Since there is also a destiny of the present, so he attains four destinies.

Q.53. Why mithyatva (wrong faith) is considered as a kind of samyaktva (right faith)?

Ans. Because mithyatva and samyaktva (wrong faith and right faith) both are the forms of virtue of faith; natural form is right faith while unnatural form is wrong faith, therefore, mithyatva is considered as a kind of right faith.

Samyaktva (right faith) is related to right faith deluding and with the rise of faith deluding occurs wrong faith and right faith is formed with subsidence, destruction and annihilation cum subsidence, therefore, mithyatva is considered as a kind of right faith.

Q.54. Which kinds of right faith can occur in incomplete state?

Ans. In incomplete state 5 kinds of right faith can occur leaving mixed right faith.

Q.55. Which kinds of samyaktva are found in which destiny?

Ans. All the six kinds of right faith are found in complete state of all the four destinies, however, in incomplete state of hellish destiny- 3 samyaktva (wrong, destruction cum subsidence, destructive), tiryanch gati (sub-human destiny)- 4 right faith (wrong, lingering, subsidence cum annihilation, destructive), in celestial destiny- five right belief leaving mixed, in human destiny- 4 samyaktva(same as for sub-human) are found.

Annihilation cum subsidence right faith gets lost while leading to hellish or sub human destiny. But, in regard to destroyer of religious pleasure, there destructive samyaktva is found.

Q.56. Which sense can have which kind of samyaktva (right faith)?

Ans. Only wrong right faith can be had by one sensed to five sensed irrational beings and all the six kinds of right faith can be had by rational five sensed beings.

Q.57. What is the duration of right faith in respect of single being?

Ans. Samyaktva(right faith) The lowest duration The highest duration

Wrong faith (with beginning and end) Antarmuhoort Half matter transformation

Lingering Single unit time 6 Avali

Mixed Antarmuhoort Antarmuhoort

Subsidence anatarmuhoort Antarmuhoort

(numerable times to The lowest)

Annihilation cum subsidence Antarmuhoort 66 Sagar

Destructive antarmuhoort Some more than 33 sagar

(8 years less 2 kti purva + 33 sagar)

Q.58. Which kind of right faith can occur how much times at the most?

Ans. Lingering and mixed right faith- Innumerable times,

Subsidence and subsidence cum destructive innumerable times,

Destructive 1 time.

Q.59. How much is the number of beings in which kind of right faith?

Ans. The number of beings leaving wrong-faith believer = innumerable part of Palya,

Among them, maximum number is of annihilation cum subsidence right faith, some less than it is of subsidence right faith, less than these mixed right faith, less than it is of lingering right faith beings.

And the number of wrong-faith believers = total worldly beings – number of remaining five right faith believers = infinite times infinite.

Q.60. How much is the duration of right faith in respect of various kinds of beings?

Ans. Wrong faith- all the time, lingering- the lowest- 1 unit of time, the highest- innumerable part of palya.

Mixed- the lowest- antarmuhoort, the highest- inummerable part of palya.

Subsidence- the lowest- antarmuhoort, the highest- innumerable part of palya,

Annihilation cum subsidence and annihilation- all the time.

Q.61. What is the duration of difference of subsidence right faith?

Ans. In respect of various beings, the lowest- 1 unit of time, the highest- 7 or 24 night-days

In respect of single being, the lowest- innumerable part of playopam, the highest- sub half matter transformation (antarmuhoort less than half matter transformation).

Q.62. What is the duration of difference of annihilation cum subsidence right faith?

Ans. In respect of various beings- continuous,

In respect of single being, the lowest- antarmuhoort, the highest- sub half matter transformation

Q.63. What is the duration of difference for Destructive right faith?

Ans. In respect of various and single being – continuously.

Q.64. What is the duration of difference of wrong right faith?

Ans. In respect of various beings- continuously,

In respect of single being- the lowest- innumerable part of palyopam, the highest- sub half matter transformation(matter's cyclic change period).

Q.65. What is duration of difference for lingering right faith?

Ans. In respect of various beings, the lowest- single unit time, the highest- innumerable part of palyopam,

In respect of single being, the lowest- innumerable part of palyopam, , the highest- sub half matter's cyclic change period.

Q.66. What is the duration of difference of mixed right faith?

Ans. Inrespect of various beings, the lowest- single unit tme, the highest- innumerable part of palyopam,

In respect of single being, the lowest- antarmuhoort, the highest- sub half matter's cyclic change period.

XIII. संज्ञी मार्गणा

प्रश्न 1. संज्ञी किसे कहते हैं?

उत्तर : नो इन्द्रियावरण कर्म के क्षयोपशम को या तज्जन्य ज्ञान को संज्ञा कहते हैं, यह संज्ञा जिसके हो उसको संज्ञी कहते हैं।

प्रश्न 2. यहाँ नो का अर्थ क्या है?

उत्तर : यहाँ नो का अर्थ है – कारण अर्थात् मन इन्द्रियों के साथ कार्य करने में कारण है इसलिए इसे नो इन्द्रिय कहते हैं। नो इन्द्रिय यानी मन।

प्रश्न 3. संज्ञी मार्गणा किसे कहते हैं?

उत्तर : संज्ञी–असंज्ञी जीवों के द्वारा जीवों की खोज करना संज्ञी मार्गणा है।

प्रश्न 4. संज्ञी मार्गणा के कितने भेद हैं?

उत्तर : संज्ञी मार्गणा के दो भेद हैं– (1) संज्ञी, (2) असंज्ञी।

प्रश्न 5. संज्ञी मार्गणा का स्वरूप क्या है?

उत्तर : मन से सहित जीव को संज्ञी कहते हैं। पंचेन्द्रिय संज्ञी जीव मन सहित ही होते हैं।

प्रश्न 6. असंज्ञी मार्गणा का स्वरूप क्या है?

उत्तर : मन से रहित एवं शेष इन्द्रियों के ज्ञान से युक्त जीव को असंज्ञी कहते हैं। एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय असंज्ञी जीवों तक सभी जीव मन रहित ही होते हैं।

प्रश्न 7. संज्ञी–असंज्ञी के अन्य नाम बताइए?

उत्तर : संज्ञी – ैनी, समनस्क।
असंज्ञी – असैनी, अमनस्क।

प्रश्न 8. संज्ञी जीवों की विशेषताएँ बताइए?

उत्तर :
- हित–अहित, हेय–उपादेय शिक्षादिक कार्यों को मन के अवलंबन से ग्रहण करें।
- कार्य–अकार्य का विचार करें।
- तत्त्व–अतत्त्व का भेद करें।
- नाम से बुलाने पर आए अर्थात् आलाप करें।

प्रश्न 9. असंज्ञी जीवों की विशेषताऐं बताइए।

उत्तर : असंज्ञी जीव मन से रहित होने के कारण शिक्षादि के ग्रहण से रहित होते हैं और विचारों से भी रहित होते हैं, हित–अहित, हेय–उपादेय आदि का कोई विचार नहीं होता है।

प्रश्न 10. संज्ञी व असंज्ञी जीव कौन–कौन से गुणस्थान में पाये जाते हैं?

उत्तर :
- असंज्ञी जीव सिर्फ मिथ्यात्व गुणस्थान में होते हैं।
- संज्ञी जीव – 1 से 12वें गुणस्थान तक होते है।
- 13वें व 14वें गुणस्थान में न संज्ञी, न असंज्ञी हैं और संज्ञी भी है, असंज्ञी भी है। केवली भगवान के द्रव्य मन होता है, भाव मन नहीं होता है।

प्रश्न 11 कौन सी गति में संज्ञी व असंज्ञी जीव पाये जाते हैं?

उत्तर : नारकी, देव, मनुष्य तो नियम से संज्ञी पंचेन्द्रिय ही होते हैं। तिर्यंच जीव संज्ञी व असंज्ञी दोनों होते हैं।

प्रश्न 12. संज्ञी व असंज्ञी जीवों की संख्या कितनी है?

उत्तर : संज्ञी जीव = समस्त देव + नारकी + मनुष्य + संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच
अर्थात् असंख्यातासंख्यात [देवों के प्रमाण से कुछ अधिक]
असंज्ञी जीव = कुल संसारी जीव – संज्ञी जीवों की संख्या
अर्थात् अनंतानंत जीव।

।। संज्ञी मार्गणा समाप्त ।।

XIII. Investigating Beings with consciousness (sangyiya margana)

Q.1. What is called sangyiya (beings with consciousness)?

Ans. The annihilation cum subsidence of quasi sensory deluding karma (no indriyavaran karma) or tajjanya knowledge is called rational, and the being with rationality is called sangyiya (being with consciousness).

Q.2. What is the meaning of no here?

Ans. Meaning of no is – cause, or mind is the cause to make the senses work, therefore, it is called no sensory. No senses means mind.

Q.3. What is called sangyiya margana (investigating beings with consciousness)?

Ans. To explore living beings through consciousness or unconsciousness is sangyiya margana.

Q.4. How many kinds are of sangyiya margana?

Ans. There are two kinds of sangyiya margana- 1. Consciousness, 2. Unconsciousness.

Q.5. What is the nature of sangyiya margana (beings with consciousness)?

Ans. The living being with mind is called being with consciousness. Five sensed rational beings are with mind.

Q.6. What is the nature of asangyiya margana?

Ans. The being without mind and with remaining senses is called asanyiya. All the unconscious beings from one sensed to five sensed are without mind.

Q.7. Tell the other names of sangyiya and asangyiya?

Ans. Sangyiya- Saini, samanask.

Asangyiya- asaini, amanask.

Q.8. Tell the specialties of conscious beings?

Ans. Acceptance with mind of favorable-unfavorable, abandonable-useful educative works,

Consider workable or not workable.
Learn reality and unreality.
Come on calling names otherwise shout out.

Q.9. Tell the qualities of unconscious beings?

Ans. Beings without consciousness are not able to get education etc. being without mind and hence they do not have their ideas, consideration of favorable-unfavorable, useful or abandonable etc.

Q.10. In which stages of spiritual development sangyiya and asangyiaya are found?

Ans. Asangyiya jeev (unconscious beings) are found only in mathyatva gunstahn (stage of wrong-belief of spiritual development)

Sabgyiya jeev (conscious beings) are found from 1st to 12th stages of spiritual development.

In 13th and 14th stages of spiritual development, neither sangyiaya nor asangyiya are found but both sangyiya and asangyiya are found. Omniscient lord has only physical mind and not psychical mind.

Q.11. In which destinies both sangyiya and asangyiya jeevas (conscious and unconscious beings) are found?

Ans. Hellish beings, celestial beings and human beings are, as a rule, are conscious five sensed beings. Sub-human beings are both sangyiya and asangyiya (conscious and unconscious).

Q.12. What is the number of both sangyiya and asangyiya living beings?

Ans. Sangyiya jeev (conscious beings)= all celestial beings+ hellish beings+ human beings+ conscious five sensed beings or innumerable of innumerable (some more than the measurement of celestial beings)

Asangyiya jeev (unconscious beings)- total number of worldly beings – number of conscious beings or infinite of infinite beings.

XIV. आहार मार्गणा

प्रश्न 1. आहार किसे कहते हैं?

उत्तर : औदारिक, वैक्रियक, आहारक इन तीन शरीर नामक नामकर्म में से किसी के भी उदय से जो शरीर रूप, वचन रूप और द्रव्य मन रूप होने योग्य नोकर्म वर्गणा का ग्रहण करना आहार है।

प्रश्न 2. आहार मार्गणा किसे कहते हैं?

उत्तर : आहारक–अनाहारक द्वारा जीवों की खोज करना आहार मार्गणा है।

प्रश्न 3. आहार मार्गणा के कितने भेद हैं?

उत्तर : आहार मार्गणा के दो भेद हैं– (1) आहारक (2) अनाहारक।

प्रश्न 4. आहारक किसे कहते हैं?

उत्तर : 3 शरीर व 6 पर्याप्तियों के योग्य पुद्गल वर्गणाओं को जो ग्रहण करता है वह आहारक है।

प्रश्न 5. अनाहारक किसे कहते हैं?

उत्तर : 3 शरीर व 6 पर्याप्तियों के योग्य पुद्गल वर्गणाओं को जो ग्रहण नहीं करता है वह अनाहारक है।

प्रश्न 6. आहारक व अनाहारक के स्वामी कौन–कौन से जीव होते हैं?

उत्तर : आहारक जीव = सर्व जीव – अनाहारक जीव [शेष सभी जीव आहारक होते हैं]

अनाहारक जीव = विग्रहगति को प्राप्त चारों गति वाले जीव, प्रतर व लोकपूरण समुद्घात केवली जीव, अयोग केवली जिन, सिद्ध जीव।

प्रश्न 7. आहारक जीवों का एक जीव की अपेक्षा से जघन्य व उत्कृष्ट काल कितना है?

उत्तर : जघन्य काल – क्षुद्रभव में से विग्रह गति के 3 समय कम अर्थात् लगभग एक सेकण्ड का चौबीसवाँ भाग।

उत्कृष्ट काल – सूच्यंगुल का असंख्यातवाँ भाग अर्थात् असंख्यात कल्पकाल।

प्रश्न 8. अनाहारक जीवों का एक जीव की अपेक्षा से जघन्य व उत्कृष्ट काल कितना है?

उत्तर : जघन्य काल = एक समय [विग्रहगति में]
उत्कृष्ट काल = तीन समय [विग्रहगति व केवली समुद्घात की अपेक्षा] अथवा अन्तर्मुहूर्त [अयोग केवली की अपेक्षा]

प्रश्न 9. आहारक व अनाहारक जीवों की संख्या कितनी–कितनी होती है?

उत्तर : अनाहारक = अनंतानंत
आहारक = कुल संसारी – अनाहारक राशि अर्थात् अनंतानंत [जो कि अनाहारक से असंख्यात गुणी है।]

प्रश्न 10. विग्रहगति किसे कहते हैं?

उत्तर : मरण के पश्चात् एक शरीर से दूसरे शरीर को प्राप्त करने की बीच की अवधि को विग्रहगति कहते हैं। अधिक से अधिक 3 समय तक जीव विग्रहगति में रह सकता है। चौथे समय में तो वह जीव दूसरा शरीर धारण कर ही लेता है नियम से।

प्रश्न 11. आहारक–अनाहारक में कौन से गुणस्थान होते हैं?

उत्तर : आहारक में – 1 से 13 गुणस्थान।

अनाहारक में – 1,2,4,13 व 14वें गुणस्थान वाले जीव और सिद्ध जीव।

प्रश्न 12. समुद्घात किसे कहते हैं?

उत्तर : मूल शरीर को छोड़े बिना कार्मण–तैजस व आहारक शरीर रूप उत्तर शरीरों के साथ जीव के प्रदेशों का मूल शरीर से बाहर निकलना, समुद्घात है।

प्रश्न 13. समुद्घात कितने प्रकार से होता हैं?

उत्तर : समुद्घात दो प्रकार से होता है- (1) एक दिशा में होने वाला समुद्घात, (2) 10 दिशा में होने वाला समुद्घात।

प्रश्न 14. समुद्घात के कितने भेद हैं?

उत्तर : समुद्घात के 7 भेद होते हैं- कषाय, वेदना, वैक्रियक, मारणांतिक, तैजस, आहारक, केवली।

प्रश्न 15. सातों समुद्घात को परिभाषित कीजिए।

उत्तर : कषाय समुद्घात - क्रोधादि कषाय के निमित्त से।
वेदना समुद्घात - बहुत पीड़ा के निमित्त से।
वैक्रियक समुद्घात - विक्रिया के निमित्त से।
मारणांतिक समुद्घात - मरण से पहले नवीन पर्याय धारण करने के क्षेत्र तक आत्मप्रदेशों का फैलना।
तैजस समुद्घात - नगरादिक को जलाने वाले अशुभ रूप अथवा भला करने वाले शुभ रूप तैजस शरीर के साथ।
आहारक समुद्घात - प्रमत्त गुणस्थान वाले के आहारक शरीर के साथ।
केवली समुद्घात - आयु कर्म की स्थिति के बराबर शेष 3 अघातियाँ कर्मों की स्थिति बराबर करने के लिए केवली के दंड-कपाटादि करते समय।

प्रश्न 16. एक दिशा में होने वाले समुद्घात कौन-कौन से हैं?

उत्तर : आहारक समुद्घात व मारणांतिक समुद्घात।

प्रश्न 17. 10 दिशा में होने वाले समुद्घात कौन-कौन से हैं?

उत्तर : वेदना, कषाय, वैक्रियक, तैजस, केवली समुद्घात।

।। आहार मार्गणा समाप्त ।।

XIV . Investigation expressed about Assimililative, Non-assimilative Stage of Beings

Q.1. What is called Aaahaar(Food)?

Ans. To accept quasi karma particles eligible to become form of body, speech and matter due to rise of any one of the three physique making karmas- physical, fluid (transformational), assimilative is food.

Q.2. What is called aahaar margana?

Ans. To explore about assimilative and non-assimilative stages of beings is called aahaar margana.

Q.3. How many are the knds of aahaar margana?

Ans. There are two kinds of aahaar margana- 1. Assimilative, 2. Non- assimilative.

Q.4. What is called aahaarak?

Ans. The one who accepts 3 Physical and 6 matter particles eligible to complete, is aahaarak (assimilative).

Q.5. What is called anaahaarak (non-assimilative)?

Ans. The who does not accept 3 physcial and 6 matter particles eligible to complete, is anahaarak.

Q.6. Which living beings are the masters of assimilative and non-assimilative?

Ans. Masters of assimilative = all beings – non-assimilative beings (remaining all beings are assimilative)

Masters of non-assimilative = Transmigratory beings of all four destinies, area extricated and universally pervaded soul points of omniscient beings, omniscient at the 14^{th} stage of spiritual development, liberated beings.

Q.7. What is the lowest and the highest duration of assimilative beings in respect of single being?

Ans. The lowest duration –3 time less than transmigration from petty destiny or 24^{th} part of a second.

The highest duration- innumerable part of suchyangula or innumerable kalpakaal.

Q.8. What is the lowest and the highest duration of non-assimilative beings in respect of single beings?

Ans. The lowest duration = single unit time (in respect of transmigratory condition)

The highest duration = three units of time (in respect of transmigratory state and universal pervasion of the souls points of omniscient)

Antarmuhoort (in respect of omniscient at the 14th stage of spiritual development).

Q.9. What is the numbers of assimilative and non-assimilative beings?

Ans. Non-assimilative = infinite of infinite

Assimilative + Total worldly beings – non-assimilative number or infinite of infinite (which is innumerable times of non-assimilative).

Q.10. What is called vigrahgati (transmigratory state)?

Ans. The duration of transmigration from one body to the other body after death is called vigrahgati. The being can stay in transmigratory duration only for 3 units of time at the most. As a rule, in the fourth unit of time the being attains a new body.

Q.11. Which stages of spiritual development are in assimilative and non-assimilative?

Ans. In assimilative – 1st to 13th stages of spiritual development,

In non-assimilative- Beings and liberated souls in 1st, 2nd, 4th, 13th and 14th stages of spiritual development.

Q.12. What is called samudghaat (overflow)?

Ans. Without leaving original physical body emanating secondary bodies along with space points of the being owing to electric overflow is called samudghat (overflow).

Q.13. With how many ways does samudghat (overflow) happen?

Ans. It happens with 2 ways- 1. Overflow only in one direction, 2. Overflow in 10 directions.

Q.14. How many kinds are of samudghaat (overflow)?

Ans. 7 kinds- kashay (passion), vedana(pain), vaikriyak(transformational), maarnaantik(death bad over flow), Taijas (electric overflow), aahaarak (assimilative overflow), kevali (omniscient overflow).

Q.15. Define all the seven samdghaat(overflows)?

Ans. Kashay (passion overflow)- for the sake of anger etc. passions.

Vedana (pain overflow)- for the sake of intense pain.

Vaikriyak (fluid overflow)- for the sake of transformation.

Maaranaantik(death bad overflow)- Expansion of space points to the field of new destiny before death.

Taijas (electric overflow)- Either for the good objective of welfare or for the bad objective of burning town etc. with electric overflow.

Aahaarak (assimilative)- with the assimilative body of the restraint stage of spiritual development.

Kevali(omniscient overflow)- During violent activities (punishment, guile etc.) to bring the condition of 3 non-destructive karmas equal to life span determining karma.

Q.16. Which are the one dimensional samudghaat (overflow)?

Ans. Aahaarak samudghaat (assimilative overflow) and maaranaantic samudghaat (death bed overflow).

Q.17. Which are ten dimensional samudghaat (overflow)?

Ans. Vedana(Pain overflow), kashaay (passion overflow), Vaikriyak (fluid overflow), Taijas (electric overflow), kevali (omniscient overflow).

अध्याय–7

उपयोग

प्रश्न 1. उपयोग किसे कहते हैं?

उत्तर : ❊ जीव का जो भाव वस्तु को [ज्ञेय को] ग्रहण करने के लिए प्रवृत्त होता है उसको उपयोग कहते हैं।

❊ चैतन्य अनुविधायी आत्मा के परिणाम को उपयोग कहते हैं।

❊ वस्तु के ग्रहण रूप चैतन्य के परिणमन को उपयोग कहते हैं।

प्रश्न 2. अनुविधायी का क्या अर्थ है?

उत्तर : साथ–साथ रहने वाले, अनुसरण करने वाले परिणाम को अनुविधायी कहते हैं।

प्रश्न 3. उपयोग के कितने भेद हैं?

उत्तर : उपयोग के दो भेद हैं– (1) ज्ञानोपयोग (2) दर्शनोपयोग।

प्रश्न 4. ज्ञानोपयोग किसे कहते हैं?

उत्तर : साकार [सविकल्प] को ज्ञानोपयोग कहते हैं अथवा जीवादि पदार्थों का विशेष रूप से ग्रहण करना ज्ञानोपयोग है।

प्रश्न 5. दर्शनोपयोग किसे कहते हैं?

उत्तर : अनाकार [निर्विकल्प] को दर्शनोपयोग कहते हैं अथवा जीवादि पदार्थों का सामान्य रूप अवलोकन करना अथवा विषय–विषयी के संनिपात को दर्शनोपयोग कहते हैं।

प्रश्न 6. ज्ञानोपयोग के कितने भेद हैं?

उत्तर : ज्ञानोपयोग के 8 भेद हैं– 5 सम्यग्ज्ञान [मति, श्रुत, अवधि, मन:पर्यय, केवलज्ञान]

3 मिथ्याज्ञान [कुमति, कुश्रुत, कुअवधिज्ञान]

प्रश्न 7. दर्शनोपयोग के कितने भेद हैं?

उत्तर : दर्शनोपयोग के 4 भेद हैं–चक्षु, अचक्षु, अवधि व केवलदर्शन।

प्रश्न 8. छद्मस्थ जीवों की अपेक्षा से दोनों प्रकार के उपयोग का काल कितना है?

उत्तर : छद्मस्थ जीवों की अपेक्षा से दोनों प्रकार के उपयोग का काल मात्र अन्तर्मुहूर्त है।

प्रश्न 9. केवली व सिद्धों की अपेक्षा से दोनों प्रकार के उपयोग का काल कितना है?

उत्तर : अनन्त काल है।

प्रश्न 10. एक जीव के एक समय में कितने उपयोग हो सकते हैं?

उत्तर : एक जीव के एक समय में एक ही उपयोग हो सकता है परन्तु लब्धि रूप से एक समय में सभी उपयोग हो सकते हैं।

प्रश्न 11. केवलज्ञानी के एक समय में कितने उपयोग होते हैं?

उत्तर : केवलज्ञानी के एक साथ दोनों [ज्ञानोपयोग व दर्शनोपयोग] उपयोग होते हैं।

प्रश्न 12. लब्धि और उपयोग में क्या अन्तर है?

उत्तर : ❊ लब्धि अर्थात् प्राप्ति रूप, उपयोग अर्थात् जिस समय में जो अनुभव हो रहा हो, वह उपयोग है।

❊ जहाँ लब्धि है वहाँ उपयोग हो, न हो यह जरूरी नहीं है परन्तु जहाँ उपयोग है वहाँ लब्धि तो है ही।

प्रश्न 13. दर्शनोपयोग व ज्ञानोपयोग कैसा है?

उत्तर : दर्शनोपयोग स्व प्रकाशक है, ज्ञानोपयोग पर प्रकाशक है और दोनों उपयोग जहाँ हो वह स्व–पर प्रकाशक है।

Chapter-7
Cognition

Q.1 What is called cognition?

Ans. *The reasoning of the living being to accept something, that reasoning is cognition.
*Conscious obedient soul condition is cognition.
*Transition of conscious form an acceptable thing is cognition.

Q.2 What is the meaning of anuvidhai (follower/obedient)?

Ans. The condition of living together, follower is anuvidhai.

Q.3. What are the kinds of cognition?

Ans. There are two kinds of cognition-1. Cognitive consciousness,2. Functional consciousness of pure sensation.

Q.4. What is cognitive consciousness?

Ans. Determinate is called cognitive consciousness. Or, accepting specifically living being matters etc is cognitive consciousness.

Q.5. What is functional consciousness of pure sensation?

Ans. Indeterminate or formless is called functional consciousness of pure sensation. Or general observation of living beings etc. matters, or intention of sensual enjoyer is called functional consciousness of pure sensation.

Q.6. What are the kinds of cognitive consciousness?

Ans. There are 8 kinds of cognitive consciousness- 5 right knowledge (perception, scriptural, clairvoyance, telepathy, omniscience) 3 wrong knowledge (wrong perception, wrong scriptural, wrong clairvoyance).

Q.7. What are the kinds of functional consciousness of pure sensation?

Ans. There are four kinds of functional consciousness of pure sensation- perception with vision, perception except for vision, clairvoyance, omniscience.

Q.8. What is the duration of cognition?

Ans. Duration of both the cognitions is merely antarmuhoort.

Q.9. What is the duration of both the cognitions in respect of omniscient and liberated souls?

Ans. Infinite duration.

Q.10. How many cognitions of a single being occur at a time?

Ans. Only single cognition at a time can take place, however, in attainment form all cognitions can take place at a time.

Q.11. What number of cognitions occur to an omniscient at a time?

Ans. Both of the cognitions (cognitive consciousness and functional consciousness of pure sensation) occur to an omniscient at a time.

Q.12. What is the difference between attainment and cognition?

Ans. * Attainment means acceptance form of cognition, in other words whatever is felt at a time is cognition.
*Where is attainment, there is cognition and there may not be cognition, it is not essential, however, where is cognition, there must be attainment.

Q.13. How are cognitive consciousness and functional consciousness of pure sensation?

Ans. Cognitive consciousness is self-enlightened, but functional consciousness of pure sensation is enlightened by other, and where ever both the cognitions are there, these are self-enlightened as well as enlightened by other.

बहुचर्चित कृतियाँ

1. सचित्र भक्तामर स्तोत्र
2. सचित्र कल्याण मंदिर स्तोत्र
3. श्रुत मंथन महाकाव्य
   (जीवन है पानी की बूँद पर आधारित)
4. भक्ति प्रबोधिनी टीका (संस्कृत)
5. कल्याण प्रबोधिनी टीका (संस्कृत)
6. सर्वोदयी टीका (अंग्रेजी) भाग–1–2
7. सिद्धान्त प्रबोधिनी टीका (प्राकृत)
8. भक्तामर महामंडल विधान (वृहद्)
9. कल्याण मंदिर महामण्डल विधान (वृहद्)
10. श्री जिन सहस्रनाम महामण्डल विधान (वृहद्)
11. सिद्धान्त दिग्दर्शिका
12. उच्चारणाचार्य चरित्र
13. होनी अनहोनी
14. जीवन है पानी की बूँद
15. बूँद–बूँद में सागर
16. अंतस् का पराग
17. समंदर की लहरें
18. भक्ति की छलक
19. आस्था के स्वर
20. भक्तामर स्तोत्र
21. तन्मयता की बेला
22. श्रावक ज्ञान मंजरी
23. कल्याण मंदिर स्तोत्र
24. सामायिक पाठ
25. विराग सुमन
26. विराग वंदना (विराग शतक)
27. रत्नत्रय विधान
28. शांतिनाथ विधान
29. भक्तामर विधान
30. खजाने के मोती
31. तासीर के मंजर
32. गा लो गुरु गुणगान
33. गुनगुनाता संदेश
34. अनुभूतियों के भँवर
35. गजब की लाइनें
36. असरदार लाइनें
37. जिनसहस्रनाम स्तोत्र
38. Philosophy of Karma
39. Moral Science for Children-I
40. Moral Science for Children-II

41. **Moral Science for Children-III**

42. **English Quotation**

43. **What is Truth**

44. **Know your future**

45. **What is Life**

46. **Moral Science**
(The Complete Book of Jainism for children)

47. ऐसा क्यों? भाग–1

48. जिन्दगी क्या है?

49. सच क्या है?

50. स्वर्ग यहाँ नरक यहाँ

51. जब मिल जायें रे

52. हकीकत का पैगाम

53. जमाने का सच

54. अपना भविष्य जानो

55. जानिए सम्यक् दीपावली

56. दैनिक कर्त्तव्य

57. बोलती कविताएँ

58. सच्ची बात–1

59. सच्ची बात–2

60. मेरी पहेली का जवाब दो–1

61. मेरी पहेली का जवाब दो–2

62. तत्त्वार्थ सूत्र
(प्राकृत,संस्कृत,अंग्रेजी,हिन्दी भाषा में अर्थ सहित)

63. गुरु महिमा (गुरु पूजन)

64. सम्मेद शिखर वंदना

65. छहढाला प्रश्नोत्तरी

66. प्रतिक्रमण हिंदी (श्रमण व श्रावक)

67. भक्तामर अखण्ड पाठ

68. ऐसा क्यों?–2

69. ऐसा ही है

70. चंबल के चंदन (काव्यमय जीवनगाथा)

71. आचार्य परमेष्ठी विधान (हिंदी, बुंदेली)

72. **Philosophy of Soul** जीव विज्ञान